CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रामाणिक इस्लामी हदीस

ज़ादे सफ़र

(रियाज़ुस्सालिहीन)

[प्रथम खण्ड]

5766

भुवन वाणी ट्रस्ट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वतज़व्वदू फ़अिन्न ख़ैरज़्ज़ादित्तक़्वा

ज़ादेसफ़र

(रियाज़ुस्सालिहीन)

[प्रथम खण्ड]

इमामे नववी रह्मतुल्लाहे अलै शारेहे सहीह मुस्लिम की मक़्बूल
किताब 'रियाज़ुस्सालिहीन' का सलीस तर्जुमा मय
ज़रूरी हवाशी व तश्रीही उनवानात

उर्दू तर्जुमा—
अमतुल्ला तस्नीम

देवनागरी रस्मुल्ख़त—
नन्दकुमार अवस्थी

प्रकाशक
भुवन वाणी ट्रस्ट
'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक—भुवन वाणी ट्रस्ट लखनऊ-३

प्रथम संस्करण—जून, १९७३

देवनागरी-लिप्यन्तरणकार—नन्दकुमार अवस्थी

मूल्य—१५.०० रुपया

LUCKNOW KITAB GHAR LUCKNOW (15/-)

BHUVAN VANI TRUST LUCKNOW

राजकीय संग्रहालय, लखनऊ
क्रमसंख्या 5766
प्राप्ति तिथि
विभाग
श्रेणी
STATE MUSEUM, LUCKNOW.

मुद्रक:—
वाणी प्रेस,
'प्रभाकरनिलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
विषय प्रवेश—नन्दकुमार अवस्थी	१-८
तआरुफ़—मौलाना मुहम्मद मन्जूर नुअ़मानी	१०
मुक़द्दमा—मौलाना सय्यद सुलेमान नदवी	१२
इख़्लास और नीयत	१३
तौब:	१९
सब्र	३४
सदाक़त व रास्ती	४८
ग़ौर और ध्यान	५१
ख़ुदा का अदब व लिहाज़	५७
यक़ीन व तवक्कुल	६०
साबितक़दमी और इस्तिक़ामत	६७
मख़्लूक़ात के बारे में ग़ौर करना	६८
ख़ैर और आख़िरत के कामों में सब्क़त	७०
अल्लाह के रास्ते में कोशिशें	७३
आख़िरी उम्र में ज़ियाद: नेक अमल की तरग़ीब	८०
नेकियों के मुख़्तलिफ़ और मुतअ़द्दिद तरीक़े	८३
अ़िबादत व इताअ़त में एतिदाल	९०
आमाल की मुहाफ़ज़त और निबाह	९६
सुन्नत और उसके आदाब की मुहाफ़ज़त	९८
अल्लाह की इताअ़त और उसकी दावत का जवाब	१०४
बिद्अ़ात की मुमानिअ़त	१०७
अच्छी या बुरी राह और दस्तूर	१०९
नेकी या बदी की पेशवाई	१११
नेकी और परहेज़गारी पर मदद	११३
आ़म ख़ैरख़्वाही	११४
नेकी का हुक्म और बुराई की मुमानिअ़त	११६
ख़ुदरा फ़ज़ीहत दीगराँ नसीहत	१२३
अमानत की अदायगी	१२४
ज़ुल्म	१२८
मुसलमानों की अ़िज़्ज़त और उनके हुक़ूक़	१३५
मुसलमानों के उ़यूब की पर्द:पोशी	१४०
मुसलमानों की हाजतरवाई	१४२
सिफ़ारिश	१४३
लोगों के दरमियान मुसालहत	१४४
कमज़ोर व ग़रीब मुसलमानों की फ़ज़ीलत	१४७
यतीमों, मिस्कीनों और लड़कियों के साथ नर्मी	१५०
औरतों के साथ हुस्ने सुलूक	१५५
बीवी पर शौहर का हक़	१५८
घरवालों पर ख़र्च	१६०
महबूब चीज़ का ख़र्च करना	१६२
अपने घरवालों को नेकी का हुक्म	१६३
पड़ोसी का हक़	१६५
वालदैन के साथ सुलूक	१६८
नाफ़रमानी और रिश्त: तोड़ना	१७७
बाप के दोस्तों और बीवी के अज़ीज़ों से सुलूक	१७९
रसूलुल्लाह (स़०) के अह्ले बत (र०) का अकराम	१८१
उ़लमा और बड़ों और बुज़ुर्गों की तौक़ीर	१८३
नेक लोगों की मुलाक़ात, सुहबत और उनसे मुहब्बत	१८७
अल्लाह के लिए मुहब्बत और उसके अहकाम	१९३
अल्लाह की महबूबिय्यत की अ़लामात और उसके इख़्तियार करने की तरग़ीब	१९८
मुसलमानों, नेकबख़्तों और कमज़ोरों की तकलीफ़ और मिस्कीनों को देने पर वईद	२०१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
ज़ाहिरी हालत पर अहकाम का इज्रा और भेदों का अल्लाह के हवाले करना	२०२
खौफ़े ख़ुदा	२०५
उम्मीद व रजा	२१२
अल्लाह से उम्मीद	२२५
खौफ़ व उम्मीद	२२६
अल्लाह के खौफ़ और उसके शौक़ में रोना	२२८
फ़क़्र व ज़ुह्द	२३२
फ़ाक़ः, तंगी और क़नाअत की फ़ज़ीलत और नफ़्सपरस्ती की बुराई	२४४
क़नाअत	२५७
अपने हाथ की मेहनत की कमाई से खाना	२६३
जूद व सख़ावत	२६४
बुख्ल व हिर्स की मुमानिअत व मज़म्मत	२७०
ईसार व ग़मख्वारी	२७१
दीन का शौक़, रह्मत व बर्कत की हिर्स	२७३
शुक्रगुज़ार दौलतमन्द	२७४
मौत की याद	२७६
ज़ियारते-क़ुबूर	२८२
इहतियात और वरा	२८४
फ़ित्नः के ज़माने में गोशःनशीनी	२८६
मआशिरत व इख़्तिलात	२८८
तवाज़ुअ और अहले ईमान की खातिरदारी व एज़ाज़	२८८
गुरूर व खुदपसन्दी	२९२
अच्छे अख़्लाक़	२९६
बुर्दबारी, संजीदगी और नर्मी	२९८
मुआफी और जाहिलों से इअ्राज़	३०२
दीन की बेहुर्मती और खिलाफ़ेशरअ काम पर ग़ज़ब और जलाल	३०४
रिआया के साथ नर्मी और खैरख्वाही का हुक्म	३०६
आदिल हाकिम	३०८
हाकिम की इताअत खिलाफ़े-शरअ उमूर के अलावा ज़रूरी है	३०९
उहदः और हुकूमत	३१२
लाइक़ और नेक मुआविन इन्तिख़ाब करना चाहिए	३१३
शर्म व हया	३१४
रज़ादारी	३१५
ईफ़ा अहिद और वादे का पास	३१७
अच्छी आदत और मामूल की पाबन्दी	३१९
गुफ़्तुगू, वाज़ व नसीहत के आदाब	३२०
साफ़ और वाज़िह तरीक़े पर बात करनी चाहिए	३२१
वक़ार व सुकून	३२३
मेहमानों की तवाज़ुअ	३२४
बशारत और मुबारकबाद	३२५
रुख़्सत और वसिय्यत	३३०
मश्वुरः और इस्तिख़ारः	३३२
अच्छे कामों में दाहिने हाथ का इस्तिअमाल	३३४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय-प्रवेश

देवनागरी लिपि में अ़; ह़; स, स़; ज़, ज, ज; त, त़ का व्यवहार अ़रबी भाषा के शास्त्रीय उद्धरणों में प्रयोग के लिए है। साधारणतः उर्दू भाषा के लिप्यन्तरण के लिए इनके स्थान पर क्रमशः अ, ह, स, ज़ और त का उपयोग है।

अरबी फ़ारसी (देवनागरी वर्णमाला)			
स़ ث	त ت	ब ب	अ ا ء
द د	ख़ خ	ह़ ح	ज ج
स س	ज़ ز	र ر	ज ذ
त ط	ज़ ض	स़ ص	श ش
फ़ ف	ग़ غ	अ़ ع	ज ظ
म م	ल ل	क ک	क़ ق
य ی	ह ه ۂ	व و	न ن
अ़रबी लिपि के फ़ारसी अक्षरों के लिए उर्दू-देवनागरी वर्णमाला का चार्ट देखिए ।			त़ ة

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उर्दू - देवनागरी वर्णमाला

ट	ٹ	त	ت	प	پ	ब	ب	अ	ا
ख़	خ	ह	ح	च	چ	ज	ج	स	ث
ड़	ڑ	र	ر	ज़	ذ	ड	ڈ	द	د
स	ص	श	ش	स	س	झ़	ژ	ज़	ز
ग़	غ	अ़	ع	ज़	ظ	त	ط	ज़	ض
ल	ل	ग	گ	क	ک	क़	ق	फ़	ف
य	ی	ह	ہ	व	و	न	ن	म	م
				य	ے				
झ	جھ	ठ	ٹھ	थ	تھ	फ	پھ	भ	بھ
ख	کھ	ढ़	ڑھ	ढ	ڈھ	ध	دھ	छ	چھ
आ	آ	उ	اُ	इ	اِ	अ	اَ	घ	گھ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाणी, भाषा और लिपि

मन के भावों और उद्गारों को मुख से प्रकट करना, यही वाणी है। पशु, पक्षी अथवा मनुष्यों में जब कोई वर्ग एक प्रकार की वाणी बोलता है, उस बोली से परस्पर भावों को कहता, सुनता और समझता है, तब वाणी के उस प्रकार को उस विशिष्ट-वर्ग की भाषा की संज्ञा दी जाती है। और उसी भाषा को जब चिह्नों-आकृतियों में लिख कर प्रकट किया जाता है, तब उन्हीं चिह्नों और आकृतियों को उस भाषा-विशेष की लिपि कहा जाता है।

कुछ विद्वानों के मत से धरातल पर पृथक्-पृथक् भूखण्डों में विभिन्न समयों पर मानवों की सृष्टि और विकास होता रहा है। वे सब एक ही स्थान पर एक ही मानव से उत्पन्न नहीं हैं। फलतः उन सब की भाषाएँ भी एक दूसरे से बिलकुल पृथक् और स्वतंत्र हैं। इन पृथक्कुलों को ये विद्वान् आर्य, मंगोल, सेमेटिक, हेमेटिक, द्रविड़ आदि की संज्ञा देते हैं।

किन्तु भारतीय मत की घोषणा इसके विपरीत है, और इस्लामी तथा ख्रीष्ट मान्यता भी उसका अनुमोदन करती है। इस मत के अनुसार सारी मानव जाति एक ही मूल पुरुष मनु अथवा आदम की सन्तान हो कर मानव अथवा आदमी कहलायी। कालान्तर में विभिन्न भूखण्डों में फैलने, एक दूसरे से अलग-अलग होने और वहाँ की विशिष्ट जलवायु और संस्कारों से प्रभावित होने के फल-स्वरूप वह मानव जाति अनेक रूप, रंग, आकार और बोलियों में विभक्त होती गयी। यह परिवर्त्तन लाखों वर्षों से चलते आ रहे हैं और इसलिए उन मानव-समूहों के रूप, रंग, आकार और बोलियों के अन्तर भी इतने सघन हो गये हैं कि ज्ञान की उपेक्षा करनेवाले और केवल तर्क, अनुमान, प्रयोग, अनुसंधान आदि भौतिक साधनों को ही ज्ञान मान कर उन पर निर्भर रहनेवाले पाश्चात्य विद्वानों तथा उनके अनुवर्ती भारतीयों का भ्रमित हो जाना स्वाभाविक ही है। यह बात इनसे ओझल हो जाती है कि कितना भी बड़ा वैषम्य इन जातियों के लक्षणों में दिखायी देता हो, उनकी आकृतियों और भाषाओं में कुछ ऐसे तथ्य लाखों वर्ष बाद भी झलकते हैं जो सारी मानव-जाति को किसी पुरातनकाल में एक मूल मानव का पितृत्व प्रदान करते हैं।

भारतीय वाङ्मय के सृष्टिक्रम-सम्बन्धी विशाल ज्ञानकोश को विस्तार-भय से किनारे भी रख दें, तो भी जन-साधारण की समझ में आनेवाली कुछ बातें तो हमारे मत की पुष्टि करती ही हैं। उदाहरण के लिए—

(१) द्रविड़कुल की भाषाएँ आर्यकुल की भाषाओं से पाश्चात्य मत में मूलतः पृथक् मानी गयी हैं। किन्तु संस्कृत की वर्णाक्षरी, उनका वर्गीकरण तथा लिपि का बायें से दाहिने लिखा जाना उनके समान ही है। इसके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विपरीत, आर्यकुल की अनेक भाषाओं का खरोष्ठी लिपि में (दायें से बायें) लिखा जाना और वर्णों की संख्या, क्रम, वर्गीकरण आदि में संस्कृत से बड़ा अन्तर है। (२) अ़रबी और संस्कृत की शब्दावली और लिपि में नाममात्र को भी मेल नहीं है, किन्तु उनके व्याकरण में बड़ी समानता है; जबकि संस्कृत का अपने आर्यकुल ही की फ़ारसी भाषा के व्याकरण से साम्य नगण्य-सा है। (३) उत्तर-पश्चिम में सुदूरस्थ ईरान की अवेस्ता और गाथाओं की भाषा में असुर का अहुर उच्चारण है। बीच के पूरे आर्यावर्त्त में इसका अभाव होने के बाद उत्तर-पूर्व में असम प्रदेश में फिर दस को दह और गोसाईं को गोहाईं बोलते हैं। (४) नेपाल के आदिम निवासी आर्यकुल के रूप, आकृति से सर्वथा भिन्न हैं। किन्तु वहाँ कुछ ही समय से आबाद आर्यकुल के राज-परिवार तथा राना-परिवार की आकृतियों पर नेपाली प्रभाव प्रत्यक्ष है; आदि, आदि।

भारतीय भाषाएँ

अस्तु, जब मानवमात्र एक मनु (आदम) की सन्तान हैं और आज पृथ्वी पर उपलब्ध विविध भाषाओं और बोलियों का आदि-स्रोत एक है, तब भारत के निवासियों और भारतीय भाषाओं को मूलतः पृथक् मानना, उनका बुनियादी वर्गीकरण करना, कहाँ तक समुचित है। जहाँ तक हिन्दी, उर्दू, गुरुमुखी, सिंधी, राजस्थानी, ओड़िया, बंगला, असमिया, गुजराती, मराठी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, सिंहली आदि भाषाओं, लिपियों अथवा बोलियों का सम्बन्ध है इन सब की वर्णमाला, शब्दावली, व्याकरण आदि में इतना अधिक साम्य है कि उनको एक परिवार से बाहर समझने की रत्ती-भर गुंजाइश नहीं। ये सभी प्राचीन संस्कृत की पौत्री और भारतीय जनपदों में शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्री आदि प्राकृत अथवा उनके अपभ्रंशों की पुत्रियाँ हैं। अलबत्ता भारत की दक्षिणी भाषाओं—मलयाळम, तेलुगु, कन्नड और तमिऴ—का शेष भारतीय भाषाओं और लिपियों से भेद अधिक दूर का है। किन्तु उनके अक्षरों का देवनागरी लिपि के समान ही वर्गीकरण तथा संस्कृत के तद्भव-तत्सम अनेक शब्दों का घुलन-मिलन उनको भी अन्य भारतीय भाषाओं के समीप ले आता है।

अ़रबी भाषा और लिपि

यह एक स्वाभाविक प्रश्न है कि अ़रबी तो भारतीय भाषा नहीं है! फिर इसके लिप्यन्तरण और अनुवाद की राष्ट्र के लिए क्या आवश्यकता है?

पाठकों को ज्ञात होना चाहिए कि इस्लाम के उदय से पूर्व भी भारत का अरब से व्यापारिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध रहा है। सीमाप्रान्त, सिन्ध, केरल और पश्चिमी समुद्र-तट के प्रदेशों का उनसे अति प्राचीन काल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से सम्पर्क, आवागमन और कारोबार रहा है। इसके बाद अरब, तुर्क, पठान और मुग़ल-शासन के अधीन लम्बे समय तक बने रहने के फलस्वरूप राज-काज ही नहीं, नित्य के व्यवहार में भी अरबी-लिपि का प्रयोग होने लगा। अरबी के शब्द तो हमारी बोलचाल में अपरिमित संख्या में समा गये हैं। सिन्धी, कश्मीरी, उर्दू और पश्तो—इन चार भाषाओं ने तो अपने देवनागरी लिपि के कलेवर को बदल कर अ़रबी जामा पहन लिया। हमारी शहरी और देहाती बोलचाल में हज़ारों ऐसे अ़रबी शब्दों की भरमार है जिनको लोग ठेठ हिन्दी की सम्पत्ति समझने लगे हैं, उनके अ़रबी-फ़ारसी होने की कल्पना भी नहीं करते। जैसे हलुवा, साइत (मुहूर्त्त), मेहरिया, हमेल, तरह, अन्दर, अगर, अचार, अजगर, अतलस, अबीर, अमीर, गरीब, अरक, मेवा, मल्लाह, मसखरा, मक्कर, लाला, लहास, स्याही, संदूक, रुमाल आदि। इसलिए अ़रबी विदेशी होते हुए भी हमारे बीच की भाषा और लिपि है।

उद्देश्य (भावनात्मक एकता)

उपर्युक्त भाषाई पहलुओं के अलावा, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक दृष्टि से भी सारा देश परस्पर ऐसा गुथ गया है कि उसमें एकात्म-भाव के सर्वत्र दर्शन होते हैं। उसके प्रभाव की छाप सभी भाषाओं के साहित्य पर मौजूद है। यह भी विचारणीय है कि लगभग छह करोड़ व्यक्तियों का एक समुदाय हाड़-मांस से सारे देश का अंग है; और उस समुदाय की धार्मिक भावना और निष्ठा का स्रोत अ़रबी ग्रंथों में ही मौजूद है। यह भी सत्य है कि उस समुदाय में ऐसे लोग भी बड़ी संख्या में हैं जो हिन्दी ही जानते हैं; अ़रबी न जानते हैं, न जानने की सम्भावना है। उनकी निष्ठा और धर्म के पक्ष को—उनके विशाल साहित्य को देवनागरी लिपि में हिन्दी-अनुवाद सहित प्रस्तुत करना राष्ट्र के हित के लिए एक पुनीत कर्तव्य है। धर्म ही वह मूल स्रोत है जिससे मानवमात्र और फलतः हमारा राष्ट्र परस्पर सम्बद्ध ही नहीं, वरन् 'एकरस' रह सकता है। हदीस (पैग़म्बर से प्राप्त वचन) का एक उद्धरण है—"मोमिन (धर्म पर दृढ़ व्यक्ति) की यह विशेषता होती है कि जब उसको ख़ुशी पहुँचती है तो (परमात्मा को) धन्यवाद देता है [उसका कृतज्ञ होता है]......और जब मुसीबत पहुँचती है तब सब्र (धैर्य और सन्तोष) करता है।"—[बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़]—विचार कीजिए, उपर्युक्त उद्धरण क्या किसी एक समुदाय की वस्तु है? क्या यहाँ विश्व का सर्वमान्य और तथाकथित सारे धर्मों का उद्घोष नहीं है? इसी प्रकार हदीसों में हमारे दैनिक जीवन के लिए अनेक पथनिर्देश हैं। इस लक्ष्य को सामने रखकर हदीसों के सर्वोत्कृष्ट प्रामाणिक संग्रह 'रियाज़ुस्सालिहीन-अ़रबी' के उर्दू

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुवाद 'ज़ादे सफ़र' का देवनानरी लिप्यन्तरण प्रस्तुत किया जा रहा है। अस्तु, अपने-अपने क्षेत्र में विभिन्न लिपियों के फलते-फूलते रहने के बावजूद, यह ज़रूरी है कि राष्ट्र में देवनागरी लिपि के माध्यम से प्रत्येक क्षेत्रीय भाषा और साहित्य को भारत के कोने-कोने तक पहुँचाया जाय।

अन्य लिपियों का विरोध नहीं

उपर्युक्त प्रयास से यह किसी प्रकार अभीष्ट नहीं कि भारत में प्रयुक्त अन्य लिपियों के शिक्षण अथवा प्रचार में ज़रा भी कमी हो। वह वैसे ही, वरन् अधिक फलती-फूलती रहें। किन्तु यह भी न भूलना चाहिए कि यदि हम इस देवनागरी लिप्यन्तरण की पद्धति से उस भाषा के अमूल्य साहित्य को देश में प्रसारित करने में उपेक्षा करते हैं, तो निश्चय ही गिने-चुने व्यक्तियों अथवा सीमित वर्ग को छोड़ कर सारे देश के जनसमुदाय से वह भाषा और साहित्य धीरे-धीरे दूर होता जायगा।

अ़रबी का उद्धरण

(१) अल्ह़म्दु लिल्लाहि[१] रब्बिल्[२]—अ़ालमीन[३] (१) अ़र्रह़्मानिर्[४]—रह़ीमि[५] (२) मालिकि[६] यौमिद्[७]-दीनि[८] (३) [क़ुर्आनशरीफ़—सूरे फ़ातिह़ः का अंश]

उपर्युक्त उद्धरण में 'अल्' अंग्रेज़ी के डिफ़िनिट आर्टिकिल 'दी'—The का पर्याय है। यही सन्धि होकर आगे 'अर्' के रूप में बदल कर आया है। इसके बाद 'हम्द' (प्रशंसा-स्तुति) को छोड़ कर कोई शब्द ऐसा नहीं है जिससे जनसाधारण परिचित न हो। क्रमशः देखिए—१ लिल्लाह, २ रब (स्वामी), ३ आलम् (संसार), ४ रह़मान, ५ रहीम, ६ मालिक, ७ यौम (दिन), ८ दीन (धर्म)। इस प्रकार थोड़े अध्ययन से अ़रबी भाषा भी उतनी ही प्रवेशगम्य है जितनी भारत की अन्य भाषाएँ। साथ ही सिन्धी, कश्मीरी, उर्दू के समझने में भी सहायक है।

ज़ादे सफ़र का लिप्यन्तरण

ज़ादे सफ़र में क़ुर्आन शरीफ़ और ह़दीसों के अ़रबी उद्धरणों में सन्देहपरक ध्वनि वाले अक्षरों, यथा ज़ाल, ज़ो, ज़े, ज़ाद, छोटी-बड़ी हे आदि को, पहचान के लिए पृथक् रूपों में दिया गया है। यह न देने से अर्थ अशुद्ध हो जायेंगे। § यथा हाजी और ह़ाजी के क्रमशः अर्थ हैं निन्दा (हजो) करनेवाला और तीर्थयात्री (ह़ज करनेवाला)। अलबत्ता अनुवाद

§ देवनागरी लिपि में अ़रबी का सम्पूर्ण क़ुर्आनशरीफ़ शुद्ध शास्त्रीय पद्धति पर सानुवाद लिप्यन्तरित हो चुका है। भुवन वाणी ४०५/१२८ चौपटियाँ रोड, लखनऊ-३ से प्राप्त करें। मूल्य ३५·००

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में भेद नहीं रखे गये हैं, क्योंकि उर्दू के उच्चारणों में छोटी-बड़ी हे आदि का अन्तर लिखने में तो है, लेकिन बोलने का अभ्यास नहीं है।

उर्दू में फ़ारसी की इज़ाफ़त

उर्दू साहित्य को देवनागरी लिपि में लिप्यन्तरित करते समय एक 'इज़ाफ़त' के विवाद को बड़ा महत्त्व दिया जाता है। सामासिक पदों में फ़ारसी में इज़ाफ़त का प्रयोग होता है। दीवाने ग़ालिब—ग़ालिब का दीवान, तीरो कमान—तीर और कमान। इनमें क्रमशः तत्पुरुष और द्वन्द्व समास हैं। इनमें 'दीवाने' का 'ने' और 'तीरो' का 'रो' ह्रस्व बोले जाते हैं। उनको दीर्घ अर्थात् हिन्दी की मात्रा के अनुरूप बोलने पर 'दीवाने' का अर्थ 'पागल' अर्थात् 'पागल ग़ालिब' हो जायगा न कि 'ग़ालिब का दीवान'। इन्हीं सामासिक फ़ारसी शब्दों में 'ह्रस्व' बोलने का नियम है।

इसको समझने के लिए अ़रबी भाषा का उदाहरण प्रस्तुत है। अ़रबी में 'क़ुर्आनुन् मजीदुन्' कर्मधारय समास है, अर्थात् 'पवित्र क़ुर्आन'। फ़ारसी वालों के सामने इसको बोलने के लिए दो विकल्प थे। या तो वह अ़रबी शैली पर 'क़ुर्आनुन् मजीदुन्' कहते, या अपनी निजी फ़ारसी-शैली पर 'क़ुर्आने मजीद' कहते जिसमें 'ने' का ह्रस्व उच्चारण होता है।

यही दो विकल्प हिन्दी और उर्दू वालों के लिए हैं। या तो अ़रबी की पद्धति पर 'क़ुर्आन् मजीदुन्' लिखें अथवा हिन्दोस्तानी सामासिक पद्धति पर 'क़ुर्आनमजीद' लिखें—इसमें दोनों शब्द परस्पर मिला कर लिखे जाएँगे। इसी प्रकार हिन्दोस्तानी आलिम बोलते भी हैं। अस्तु, बीच में तीसरी भाषा 'फ़ारसी' की पद्धति इख़्तिआर करने की ज़रूरत नहीं।

कहने का प्रयोजन यह कि या तो अ़रबी को अ़रबी और फ़ारसी को फ़ारसी शैली में लिखें-बोलें, या फिर अपने हिन्दोस्तानी तरीक़े पर बोलें, जैसे कि फ़ारसी वाले अपनी फ़ारसी शैली में अ़रबी को बोलते हैं। या तो अ़रबी के ढंग पर 'क़ुर्आनुन् मजीदुन्' लिखिए, या हिन्दोस्तानी ढंग पर 'क़ुर्आन-मजीद'; न कि फ़ारसी का तीसरा माध्यम 'क़ुर्आने मजीद' ग्रहण करें।

ह्रस्व 'े' और ह्रस्व 'ो' का देवनागरी स्वरूप

यह तो 'अ़रबी' के देवनागरी-लिप्यन्तरण की बात है। अब उसी सिद्धांत पर फ़ारसी शब्दों के सामासिक पदों को भी लीजिए। या तो हिन्दोस्तानी ढंग पर 'दीवान-ग़ालिब' लिखिए, और उसको ऊपर दी गयी दलील के अनुसार सही न मानने का कोई कारण नहीं; और या फिर 'फ़ारसी प्रयोग' होने के नाते फ़ारसी ढंग पर 'दीवाने ग़ालिब' लिखिए।

अब 'दीवाने ग़ालिब' के 'ने' और 'तीरो कमान' के 'रो' को ह्रस्व कैसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिखा जाय, यह समस्या कठिन नहीं, अति सरल है। दक्षिणी भाषाओं में भी 'ह्रस्व ए' और 'ह्रस्व ओ' के उच्चारण वर्तमान हैं। ज़ादेसफ़र के मौजूदा संस्करण के देवनागरी लिप्यन्तरण में दीर्घ को े, ो और ह्रस्व को ॅ, ॉ लिखा गया है। लेकिन भविष्य में कई कारणों से इन चिह्नों में सुधार की ज़रूरत पड़ी। अब से ह्रस्व एकार और ओकार के लिए ॆ, ॊ का प्रयोग किया जायगा। इसलिए फ़ारसी शैली पर ही लिखने के इच्छुकों को 'दीवानॆ ग़ालिब' और 'तीरॊ कमान' लिखना चाहिए।

ज़ादे सफ़र की महत्ता (अहम्मीयत)

क़ुर्आन शरीफ़ अल्लाह का कलाम है। इन पंक्तियों के लेखक ने इस विशाल धर्मग्रंथ को अ़रबी न जाननेवाले हिन्दी पाठकों की सुविधा के लिए देवनागरी लिपि में हिन्दी अनुवाद सहित सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया। हिन्दी भाषी मुस्लिम और ग़ैरमुस्लिम जनता ने उसका स्वागत किया और अनेक पाठकों ने अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के कलाम (वचनों) के जानने की जिज्ञासा प्रकट की।

इस संदर्भ में, मैंने सय्यद अबुल हसन अली अल् हसनी अल् मदनी मौलाना अली मियाँ साहब से राय ली। उन्होंने प्रामाणिक हदीस-संग्रह 'रियाज़ुस्सालिहीन' की बड़ी प्रशंसा की। इस संग्रह का अ़रब देशों में बड़ा सम्मान है। प्रस्तुत ग्रंथ के पृष्ठ १०-११ पर दो प्रख्यात मुस्लिम धर्माचार्यों ने इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये हैं।

'रियाज़ुस्सालिहीन' का उर्दू अनुवाद 'ज़ादे सफ़र' के नाम से मक्तबए इस्लाम, गुईनरोड, लखनऊ द्वारा प्रकाशित हुआ है। मौलाना अली मियाँ साहब की संस्तुति पर उपर्युक्त प्रकाशन संस्थान ने ज़ादे सफ़र का हिन्दी रूपान्तर प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की। मुझे यह स्वीकार है कि प्रस्तुत हिन्दी संस्करण में अशुद्धियाँ रह गयीं है। हमारी अनुभवहीनता और एक नये ढंग के प्रयोग को अपनाना ही इसका प्रमुख कारण है; उर्दू पुस्तक में भी अनेक अशुद्धियाँ और छपाई के दोष होने के कारण बाधाएँ पड़ीं। हम क्षमाशील पाठकों से निवेदन करते हैं कि इस संस्करण के समाप्त होते ही, अगले संस्करण में इन कमियों और अशुद्धियों का निवारण कर दिया जायगा।

अन्त में हम मौलाना जनाब अली मियाँ साहब, मक्तबए इस्लाम, लखनऊ और उन जिज्ञासु पाठकों के प्रति आभार प्रकट करते हैं जिनकी प्रेरणा और सलाह के परिणाम-स्वरूप 'ज़ादे सफ़र' का यह हिन्दी रूपान्तर आज प्रस्तुत हो सका है।

—नन्दकुमार अवस्थी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ज़ादे सफ़र

तर्जुमः रियाज़ुस्सालिहीन

[पैग़म्बर स० के अनुपम कथनों (हदीसों) का प्रामाणिक संग्रह]

संग्रहकर्त्ता

इमाम नववी र०

[देवनागरी लिप्यन्तरण]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तआरुफ़

(अज़् मौलाना मुहम्मद मन्ज़ूर साहिब नुअ़मानी मुदीर 'अल् फ़ुरक़ान'[1] लखनऊ)

पेश-नज़र किताब (ज़ादॆसफ़र) सातवीं सदी हिज्री के मशहूर मुहद्दिस[2] इमाम नववी की किताब "रियाज़ुस्सालिहीन" का तर्जुमः है। इमाम मौसूफ़ की यह किताब उन ख़ास किताबों में से है जो मुख़्तलिफ़ ज़मानों में मुसलमानों में ईमानी रूह और इस्लामी ज़िन्दगी पैदा करने के लिए लिखी गई हैं। मुमालिकॆ अरबीयः के दीनी हल्क़ों में यह किताब बहुत मक़्बूल और मुतदाविल[3] है। लेकिन हिन्दोस्तान में न मालूम क्यों इसका चर्चा ज़ियादः नहीं रहा। ज़रूरत थी कि यह किताब सलीक़ः से हमारी ज़बान उर्दू में भी मुन्तक़िल हो। अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इसकी तौफ़ीक़ हमारी एक बहन को मिली। उन्होंने तर्जुमः के अलावा कहीं-कहीं मज़ीद तौज़ीह[4] के लिए हवाशी[5] भी लिखे हैं और हदीसों पर तश्रीही उनवानात[6] भी क़ाइम किये हैं जिनसे मतलब और मक़्सद समझने में आम नाज़रीन को मदद मिल सकती है।

अल्लाह तआ़ला इनकी इस मिहनत को क़ुबूल फ़रमा कर इनके वास्ते ज़ादॆ आख़िरत बनाये और अपने बन्दों और बन्दियों को उससे नफ़ा उठाने की तौफ़ीक़ दे। आमीन्

मुहम्मद मन्ज़ूर नुअ़मानी

८—रमज़ानुल्मुबारक १३७१ हिज्री — अफ़ल्लाहु अन्हु

१ सम्पादक, 'अल् फ़ुरक़ान' २ हदीस (पैग़म्बर-कथन) के विद्वान् ३ प्रचलित ४ व्याख्या ५ टिप्पणियाँ ६ शीर्षक, हेडिंग।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीमि ।

मुक़द्दमः

(अज़् मौलाना सय्यद सुलेमान नदवी रहमतुल्ला अलैहि)

इमाम नववी अलमुतवफ़्फ़ा ६७६ हि० के, उम्मतॅ मर्हूमः पर बड़े-बड़े इहसानात हैं। मिन्जुमला उनके एक इनकी किताब रियाज़ुस्सालिहीन है। यह आमाल व अख़्लाक़ के फ़ज़ायल में बेहतरीन किताब है। इमाम ने इस किताब में आमाल ख़ैर और फ़ज़ायल हसनः को क़ुर्आन पाक और अहादीस सहीहः के ज़िम्न में बयान फ़र्माया है और उन हदीसों को एक जगह कर दिया है जिन पर अमल करने से मोमिन[1], सालेह[2] का दर्जा हसिल कर सकता है। कहीं-कहीं इमाम ने हदीसों के मतलब व माने और उलमा ने उनकी तशरीह व तफ़्सीर में बाज़ नुक्ते और लतीफ़े जो बयान किये हैं उनको लिखा है।

इस किताब में बड़ी ख़ूबी यह है कि इसके मुतालः करने वाले की क़ुव्वत, अमल में तहरीक होती है और हसनात के हुसूल और सइयेआत से इहतराज़ का शौक़ बढ़ता है और सालिहीन की तालीफ़ और मक़बूलीन की तस्नीफ़ का यह खुला हुआ समरः और बदीही नतीजा है। अगर इस किताब को फ़न्ने तसव्वुफ़ की मस्नून शक्ल की किताब कहा जाय तो बे-महल बात न होगी। तसव्वुफ़ और सुलूक का हासिल यह है कि दर्जा ईमान के हुसूल के बाद मरातिब ईमान और मदारिज तक़र्रुब-इलल्लाह में तरक़्क़ी हो और 'अस्साबिक़ूनस्साबिक़ून उलाअिकलमुक़र्रबून' की क़ुर्आनी बशारत के हुसूल की राहें खुलें और 'लायजालुल अब्दु यतक़र्रबु इलय्य बिन्नवाफ़िलि' की उस ख़ुशख़बरी की तशरीह हो जो इस हदीस पाक में मज़्कूर है।

---

१ ईमान रखने वाला २ संयमी, परहेज़गार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब जबकि इस मुल्क में मुसलमानों की मादरी ज़बान उर्दू है, ज़ुरूरत है कि ज़ुरूरी मज़्हबी किताबों को इस ज़बान में मुन्तक़िल किया जाय ताकि अ़रबी से महरूम भाई और बहनों को दीन की बातें मालूम हों§ और उन मुजर्रब और ख़ासुल्ख़ास नुस्ख़ों से आगाही हो जो हमारे तबीबे रूहानी और हाज़िक़े रब्बानी मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमꣳ ने हम जैसे मरीज़ों के लिए पहले ही से महफ़ूज़ फ़रमा दिये हैं। इन नुस्ख़ों के अ़त्तार उलमा किराम और मशायख़ अ़िज़ाम रह्महुमुल्ला: हैं।

हम को इस इज़्हार में बड़ी ख़ुशी है कि इमाम नववी की इस किताब रियाज़ुस्सालिहीन का तर्जुम: उसी घराने ने किया है जिसने सुन्नत की इशाअ़त और बिदअ़त के इज़ाले का काम एक सदी पहले से शुरू कर रखा है और जिनके अनवारेबर्कत मुल्क में हर जगह नुमायाँ हैं। 'अल्लाहुम्म ज़िद् फ़ज़िद् व ला तन्क़ुस' इस किताब का तर्जुम: इस घराने के मौजूद: चश्म व चिराग़ मौलाना डाक्टर सय्यद अब्दुल अली नाज़िम नदवतुल उलमा और मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी की बहन ख़्वाहर अज़ीज़ा ने किया है।

हमारी नई तालीमयाफ़्त: ख़वातीन ने सिर्फ़ 'अदबियात लतीफ़ा' को अभी तक अपने क़लम का जौलाँगाह बनाया है कि मुसलमान ख़वातीन की इलमी व अदबी ख़िदमतें इससे भी ज़ियाद: वसीअ़ मैदान की तालिब हैं और वह दीनी व अख़्लाक़ी तालीम व तर्बियत के कामों को बहुत ख़ूबी के साथ अन्जाम दे सकती हैं।

मुतर्जिम: मौसूफ़ा ने तर्जुमा में ज़बान की सलासत और रवानी का लिहाज़ रक्खा है। जगह-जगह हाशिये बढ़ाये हैं। हर हदीस का उनवान क़ायम किया है जिनसे हदीस के मग़्ज़े-सुख़न तक पहुचने में नाज़िर किताब को बड़ी आसानी हो जाती है। दुआ है कि यह किताब इस्लामी घरों में घर-घर फैले और मुसलमान मर्दों और औरतों की इस्लाह व तालीम में मुअस्सिर और बा-बरकत साबित हों।

वस्सलाम

१५ शाबान १३६५ हिज्री — हेच मदाँ सय्यद सुलेमान नदवी

---

§ ऐसेही सबब के मातहत इस वक़्त यह भी ज़ुरूही समझा गया कि इस बेशबहा किताब को देवनागरी लिपि में मुन्तक़िल (लिप्यन्तरित) किया जाय। —सम्पादक।

ꣳ परमेश्वर उनका कल्याण और त्राण करे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ।

ज़ादे सफ़र

इख़्लास[1] और नीयत[2]

आयात क़ुर्आनी

व मा' अुमिरू' अिल्ला लियअ़्बुदुल्लाह मुख़्लिसीन लहुद्दीन ला ० हुनफ़ा'अ व युक़ीमुस्सलात व युअ्तुज़्ज़कात व जालिक दीनुल् - क़य्यिमति ॰ । [पारः ३० सूरः ९८ आयत ५]

नहीं हुक्म दिया गया उनको मगर यह कि इख़्लास के साथ अल्लाह की इबादत करें, नमाज़ पढ़ें, ज़कात दें और यही ठीक दीन है ।

लंय्यनालल्लाह लुहूमुहा व ला दिमा'अुहा व लाकिंय्यनालुहुत्तक़्वा मिन्कुम् ॰ । [पारः १७ सूरः २२ आयत ३७]

न पहुँचेगा अल्लाह को उनका गोश्त और न ख़ून (यानी क़ुर्बानी का) लेकिन उसको तुम्हारे दिल का अदब पहुँचेगा ।

क़ुल् अिन् तुख़्फ़ू मा फ़ी सुदूरिकुम् औ तुब्दूहु यअ़्लम्हुल्लाहु ॰ [पारः ३ सूरः ३ आयत २९]

कह दो तुम किसी चीज़ को पोशीदः रक्खो या ज़ाहिर करो—अल्लाह उसको जानता है ।

---

१ सच्चाई, निष्कपटता २ भावना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहादीस[1]

(१) आमाल का दार-व-मदार नीयतों पर है

हज़्रत उमर र० इबनुल् ख़त्ताब से रिवायत[2] है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है—फ़रमाते थे कि तमाम अमल का दार व मदार नीयतों पर है। हर शख़्स को उसकी नीयत के मुताबिक़ मिलेगा; जो अल्लाह और उसके रसूल के लिए हिज्रत[3] करेगा तो उसकी हिज्रत अल्लाह और उसके रसूल के लिए होगी। और जो दुन्या के हुसूल[4] के लिए करेगा या किसी औरत से निकाह के लिए करेगा तो उसकी हिज्रत उसी के लिए होगी जिसके लिए तर्क-वतन[5] किया है [बुख़ारी, मुस्लिम]

(२) हश्र[6] अपनी-अपनी नीयतों पर होगा

हज़्रत आयशः र० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—एक लश्कर काबः पर हमला करेगा। जब मैदान में आ जायगा तो उनके अगले-पिछले लोग धँसा दिये जायँगे। मैंने कहा या रसूलुल्लाह उनके अगले-पिछले लोग कैसे धँसा दिये जायँगे हालाँकि उनमें बाज़ार के लोग होंगे और वह लोग भी होंगे जो हमला करने वालों के शरीक नहीं? आपने फ़रमाया—सब धँसा दिये जायँगे लेकिन अपनी-अपनी नीयतों के मुताबिक़ उठाये जायँगे [बुख़ारी, मुस्लिम]

नीयत और जिहाद[7] क़ियामत तक बाक़ी रहेंगें (३)

हज़्रत आयशः र० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—फ़तेह-मक्का के बाद (मक्का से) हिज्रत नहीं है [इस लिए कि वह दारुल्-इस्लाम हो गया है।] मगर नीयत और जिहाद बाक़ी रहेंगे। जब तुमको जिहाद के लिए उठाया जाय तो चल खड़े हो।

---

१ हदीस का बहुवचन, हदीसें २ आप्त वचन, परम्परा से सुने गये पैग़म्बर स० के कथन ३ देश-परित्याग ४ प्राप्ति ५ स्वदेश-त्याग ६ क़ियामत, महाप्रलय ७ धर्मयुद्ध।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(४) नीयत की बिना पर अमल में शिर्कत

हज़्रत जाबिर र० बिन अबदुल्लाः अन्सारी से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ किसी लड़ाई में थे। आप ने फ़रमाया कि कुछ लोग मदीना में रह गये हैं वह तुम्हारे साथ नहीं आये लेकिन अज्र में वह तुम्हारे शरीक हैं। उनको मरज़ ने रोक लिया। [बुख़ारी, मुस्लिम]

(५) माज़ूर[1], मुजाहिदीन[2] के साथ शरीक हैं

हज़्रत अनस र० से रिवायत है कि हम नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ग़ज़्वए तबूक से पलट रहे थे। आपने फ़रमाया कि कुछ लोग पीछे रह गये। न तुम्हारे साथ चले और न उन्होंने इस सफ़र की कोई घाटी तय की। मगर वह तुम्हारे साथ शरीक हैं। मरज़ ने उनको मजबूर कर दिया।

(६) बेटे को मिल जाने से बाप की ख़ैरात का सवाब नहीं जाता

हज़्रत अबू यज़ीद र० मअ़न बिन[3] यज़ीद से रिवायत है कि मेरे बाप ने सदक़े के लिए दीनार निकाले और मस्जिद में एक आदमी के पास रखा दिये। मैं मस्जिद में आया और मैंने उनको लिया और लेकर घर पलटा। मेरे बाप ने कहा, क़सम ख़ुदा की मैंने तुझे देने का इरादा नहीं किया था। फिर हम दोनों आपस में बहेस करते हुये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये। आपने फ़रमाया ऐ यज़ीद ! तुम्हारी नीयत का तुम्हें अज्र मिलेगा और ऐ मअ़न जो तुमने लिया वह तुम्हारा हो चुका। [बुख़ारी, मुस्लिम]

(७) अल्लाह की ख़ुशी के लिए बीवी को खिलाना भी सवाब व इबादत है

हज़्रत सअ़द र० बिन अबी बक़्क़ास से रिवायत है कि मेरे पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम् से मेरी अियादत के लिए हज्जतुल् वदाअ़ के साल तश्रीफ़ लाये और मैं सख़्त बीमार था। मैंने कहा, या रसूलुल्लाह ! आप देख रहे हैं मेरी बीमारी किस हद को पहुँच गई है। मैं बहुत मालदार हूँ और मेरे एक ही बेटी है। क्या मैं अपने माल का

---

१ लाचार २ जिहाद (धर्मयुद्ध) करने वाला ३ सुपुत्र।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दो तिहाई सदक़ः[1] कर सकता हूँ ? फ़रमाया—नहीं। मैंने कहा, या रसूलुल्लाह ! निस्फ़[2] ? फ़रमाया—नहीं। मैंने कहा एक तिहाई या रसूलुल्लाह ? फ़रमाया—हाँ, तिहाई भी बहुत है। तुम्हारा अपने वारिसों को मालदार छोड़ना उनको मुहताज छोड़ने से बेहतर है कि वह लोगों के सामने हाथ फैलायें; और देखो तुम अल्लाह की ख़ुशी के लिए जो कुछ ख़र्च करोगे अल्लाह की रज़ा[3] चाहते हुये, तो इसका अज्र तुमको मिलेगा; यहाँ तक कि जो लुक़्मा अपनी बीवी के मुँह में डालोगे उसका भी सवाब मिलेगा। मैंने कहा या रसूलुल्लाह ! क्या मैं अपने साथियों के बाद तक रहूँगा ? फ़रमाया तुम अपनी बक़ीया उम्र में जो अमल अल्लाह की रज़ा के लिए करोगे उसके सबब तुम्हारा दर्जा और बलंदी में तरक़्क़ी होगी। बहुत मुमकिन है कि तुम ज़िन्दः रहो। बाज़ को तुमसे नफ़ा पहुँचे और बाज़ को नुक़सान। फिर आपने फ़रमाया—ऐ अल्लाह ! मेरे साथियों के लिए उनकी हिज्रत आख़िर तक गुज़ार दे। उनको उलटे पाँव न पलटा, लेकिन बेचारे क़ाबिल-रहम तो सअद इब्नि ख़ौलः हैं, उन पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तरस खाते थे, इस लिए कि उन्होंने मक्का में वफ़ात[4] पाई। [बुख़ारी, मुस्लिम]

(८) अल्लाह तआला दिलों को देखता है

हज़्रत अबू हुरैरः र० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—बेशक अल्लाह तआला न तुम्हारे जिस्मों को देखता है, न तुम्हारी सूरतों को देखता है। उसकी नज़र तुम्हारे दिलों पर रहती है।

(९) जिहाद की नीयत

हज़्रत अबू मूसा र० अल् अशअरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसे आदमी के मुतअल्लिक़ पूछा गया जो बहादरी के लिए जिहाद करे या हमीयत[5] के लिए या दिखावे के लिए—इसमें अल्लाह के रास्ते में कौन सा है ? आपने फ़रमाया—अल्लाह का बोल बाला करने के लिए लड़ना ही सिर्फ़ अल्लाह के रास्ते में शुमार होगा। [बुख़ारी, मुस्लिम]

---

१ न्यौछावर २ आधा ३ प्रसन्नता ४ मृत्यु ५ लज्जा अथवा गौरव।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(१०) मुसलमान क़ातिल व मक़्तूल

हज़्रत अबू बक्र र० नुफ़ैअ् बिन अल् हारिस अल्सक़फ़ी से रिवायत है कि नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब दो मुसलमान अपनी तलवारों के साथ मुक़ाबिल हों तो क़ातिल व मक़्तूल दोनों दोज़ख़ में जायँगे। मैंने कहा, या रसूलुल्लाह! क़ातिल[१] का मुआमला तो समझ में आ गया लेकिन मक़्तूल[२] के बारे में हैरत[३] है। आप ने फ़रमाया कि वह अपने साथी के क़त्ल पर हरीस[४] था।

(११) जमाअत का सवाब क्यों ज़ियादः है

हज़्रत अबू हुरैरः र० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—घर पर और दूकान पर नमाज़ पढ़ने से जमाअत से नमाज़ पढ़ने का सवाब कुछ ऊपर बीसगुना ज़ियादः मिलता है। जो शख़्स अच्छी तरह वज़ू करे, फिर मस्जिद में आये और नमाज़ ही का इरादा करके घर से निकला हो तो हर क़दम पर उसका दर्जा बलंद किया जायगा और उसकी ख़ताएँ दूर की जायँगी। यहाँ तक कि मस्जिद में दाख़िल होगा तो नमाज़ में शुमार होगा और जब तक वह मस्जिद में नमाज़ की नीयत से रुका रहता है फ़िरिश्ते उसके हक़ में दुआ करते रहते हैं, कहते हैं ऐ अल्लाह! इस पर रहम कर और इसको बख़्श दे और इसकी तौबः[५] क़ुबूल कर जब तक बा-वज़ू[६] रहे। [बुख़ारी, मुस्लिम]

(१२) नेक काम की नीयत ही से सवाब मिल जाता है

हज़्रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास र० से रिवायत है—वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं और आँ हज़्रत अपने रब तबारक[७] व तआला से रिवायत फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने नेकियाँ और बुराइयाँ लिखीं फिर उनको ज़ाहिर कर दिया कि जिस शख़्स ने किसी नेकी का इरादः किया और उसको न किया तो अल्लाह तआला ने एक नेकी लिखी। और जिसने नेकी का इरादा भी किया और उसको कर गुज़रा तो अल्लाह तआला ने दस नेकियाँ लिखीं सात सौ गुना तक या उससे भी ज़ियादः और जिसने किसी बुराई का इरादा किया फिर उसको न

---

१ बध करने वाला २ जिसका बध किया गया हो ३ आश्चर्य ४ लालायित ५ पश्चात्ताप ६ मार्जन से शुद्ध ७ बरकत वाला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया तो अल्लाह् तआ़ला ने एक पूरी नेकी लिखी§ और अगर वह बुराई अमल में आगई तो एक ही बदी लिखी।

(१३) मक़्बूल अमल का वसीलः मुसीबत से नजात देता है

हज़्रत अब्दुल्लाह् र० बिन उमर र० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह् सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रमाते हुये सुना है कि तुमसे पहले तीन आदमी (कहीं) रवाना हुये। रास्ते में शाम हो गई। उन्होंने एक ग़ार में पनाह् ली। जब उसमें दाख़िल हुये तो एक पत्थर गिर पड़ा और ग़ार का दरवाज़ा बंद हो गया। उन लोगों ने कहा इस पत्थर से कोई नजात नहीं दे सकता; हाँ यह् कि अल्लाह् तआ़ला को अपने किसी अमल की याद दिलाते हुये पुकारो। उनमें से एक ने कहा कि ऐ अल्लाह् तआ़ला! मेरे माँ-बाप बूढ़े थे और मैं उनसे पहले अपने बीवी बच्चों को दूध नहीं पिलाता था। एक दिन मैं चारे की फ़िक्र में दूर तक चला गया और राह् में मुझको शाम हो गई। जब घर पलटा तो उनको सोता पाया। मैंने बुरा समझा कि उनको बे-आराम करूँ या उनसे पहले बीवी बच्चों को दूध पिलाऊँ। प्याला मेरे हाथ में था और मैं उनके जागने के इन्तिज़ार में रहा, यहाँ तक कि सुब्ह्[1] नमूदार हो गई और बच्चे मेरे पावँ पर लोट रहे थे, मैंने उनको दूध पिलाया। ऐ अल्लाह्! अगर यह काम मैंने तेरी ख़ुशी के लिए किया है तो इस पत्थर को हमसे दूर कर। पस थोड़ा पत्थर हट गया।

दूसरे ने कहा ऐ अल्लाह् तआ़ला! मेरी एक चचाज़ाद बहेन थी। वह् मुझको बहुत महबूब थी। एक रिवायत में है कि मैं उसको इतना चाहता था कि जैसे किसी मर्द को औरत से मुहब्बत हो सकती है। एक दिन मैंने बुलाया, उसने इन्कार किया, यहाँ तक कि क़हत[2] से परेशान होकर वह मेरे पास आई। मैंने उसको एक सौ बीस दीनार इस शर्त पर दिये कि वह मुझसे तख़्लियः[3] में मिले। वह् राज़ी हो गई। जब मैंने इरादा किया तो उसने कहा अल्लाह् से डर। मैं यह सुन कर बाज़ रहा, हालाँकि वह मुझे इन्तिहाई महबूब[4] थी। फिर मैंने उससे रुपया भी वापस नहीं लिया। ऐ अल्लाह! अगर मैंने यह काम तेरी रज़ा की

---

§ यह इसलिए कि गुनाह का इरादा करके बाज़ रहना भी नेकी है।

१ प्रातःकाल २ अकाल ३ एकान्त ४ प्रिय।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ख़्वाहिश में किया है तो हमें इस मुसीबत से रिहाई अ़ता फ़रमा। तो पत्थर खिसक गया मगर इतना ही कि निकल नहीं सके।

तीसरे ने कहा, ऐ अल्लाह! मैंने कुछ मज़्दूर काम के लिए बुलाये और उनको पूरी-पूरी मज़्दूरी दी। सिवा एक आदमी के कि वह चला गया था; मैंने उसकी मज़्दूरी से तिजारत की। कुछ अर्सः में तिजारत ख़ूब नफ़ा लाई। एक दिन वह आया और कहा अल्लाह के बंदे मेरी मज़्दूरी दे। मैंने कहा यह जितनी चीज़ें तुम देख रहे हो—ऊँट, गाय, बकरी ग़ुलाम सब तुम्हारे हैं और तुम्हारी मज़्दूरी से हैं। कहा, क्यों मुझसे मज़ाक़ करते हो। मैंने कहा मैं मज़ाक़ नहीं करता, यह हक़ीक़त है; तो वह सब लेकर चला गया। ऐ अल्लाह! अगर मेरी यह बात तुझे पसंद आई हो तो हमको इस तंगी से नजात अ़ता फ़रमा। पस वह पत्थर हट गया और सब निकल गये।

तौबः

तौबः के शराइत

उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि हर गुनाह पर तौबः वाजिब है। अगर गुनाह अल्लाह और बन्दे के दर्मियान है, किसी आदमी के मुतअ़ल्लिक़ नहीं है, तो उसकी तीन शर्तें हैं। अव्वल यह कि गुनाह से बाज़ आये; दूसरे यह कि अपने फ़ेल[1] पर नादिम[2] हो; तीसरे यह कि इरादः करे कि गुनाह की तरफ़ कभी न पलटेंगे। अगर इन तीन शर्तों में कोई पूरी न हुई तो तौबः सही नहीं है। अगर गुनाह आदमी के मुतअ़ल्लिक़ है तो उसकी चार शर्तें हैं। तीन तो वही जो ऊपर बयान हो चुकी हैं; चौथी यह कि जिसका जुर्म किया हो उसी से मुआफ़ करवाये, अगर माल हो तो उसको वापस करदे, अगर तुहमत[3] वग़ैरः की कोई सज़ा उस पर वाजिब होती है तो उसका मौक़ा दे या मुआफ़ कराये या ग़ीबत[4] की है तो उससे मुआ़मला साफ़ कर ले।

१ कर्म २ लज्जित ३ लाञ्छन, आरोप ४ चुग़ली।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आयात

व तूबू अिलल्लाहि जमीअन् अय्युहल् - मुअ्मिनून लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून । [पार: १८ सूर: २४ आयत ३१]

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की तरफ़ तुम सब मिल कर तौब: करो शायद कि तुम फ़लाह[1] पाओ ।

वस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्म तूबू अिलैहि [पार: १२ सूर: ११ आयत ६०]

अपने रब से बख़्शिश चाहो, फिर उसकी तरफ़ तौब: करो ।

या अय्युहल्लजीन आमनू तूबू अिलल्लाहि तौबतन् नसूहन् [पार: २८ सूर: ६६ आयत ८]

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की तरफ़ सच्ची तौब: करो ।

अहादीस

१४ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दिन में सत्तर-सत्तर और सौ-सौ मर्तबा तौब:[2] और इसतग़फ़ार[3] करते थे ।

हज़्रत अबू हुरैर: र० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है—फ़रमाते थे कि ख़ुदा की क़सम मैं अल्लाह से बख़्शिश चाहता हूँ और दिन में सत्तर मर्तब: से ज़ियाद: तौब: करता हूँ । [बुख़ारी]

हज़्रत अग़र बिन यसार अल्मुज़फ़्फ़ी र० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐ लोगो ! अल्लाह से तौब: करो और बख़्शिश चाहो; बेशक मैं दिन में सौ मर्तब: तौब: करता हूँ [मुस्लिम]

१६ अल्लाह की खुशी बन्दे की तौब: से

हज़्रत अबू हम्ज़: र० अनस बिन मालिक अल् अन्सारी ख़ादिमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत है—रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—अल्लाह तआ़ला अपने मोमिन बन्दे की तौब:

१ छुटकारा, मुक्ति २ पश्चात्ताप ३ छुटकारा (मुक्ति) की प्रार्थना ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से इतना ख़ुश होता है जैसा कि वह सवार जिसकी, सवारी मय खाने-पानी के किसी चटियल मैदान में खो जाय और वह मायूस होकर एक दरख़्त के नीचे सो जाय; जब आँख खुले तो देखे के कि वह सवारी खड़ी है। पस वह सवार लगाम पकड़ के ख़ुशी की शिद्दत में यों कहने लगे कि ऐ अल्लाह! तू मेरा बन्दा है, मैं तेरा रब हूँ, और यह ग़लती इन्तिहाई-मसर्रत[1] में उससे सादिर हुई।

३/१६ तौबः का दरवाज़ः क़ियामत तक के लिए खुला रहेगा

हज़्रत अबू मूसा अल् अश्अरी र० से रिवायत है—वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं—फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अपना हाथ रात को फैलाता है ताकि दिन का गुनहगार तौबः करले और अपना हाथ दिन को फैलाता है ताकि रात का गुनहगार तौबः करले यहाँ तक कि सूरज अपने डूबने की जगह से निकले। [मुस्लिम]

४/१७ सकरात[2] तक तौबः मुमकिन

हज़्रत अब्दुल्लाह र० बिन उमर बिन अल् खत्ताब से रिवायत है—वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवयात करते हैं—फ़रमाया—अल्लाह तआ़ला मोमिन बन्दे की तौबः उस वक़्त तक क़ुबूल करता है जब तक [मरते समय की] ख़रख़राहट शुरू न हो। [तिरमिज़ी]

६/१८ तौबः का दरवाज़ः बड़ा वसीअ़ है। सूरज के मग़्रिब की तरफ़ से निकलने के वक़्त तक खुला रहेगा

हज़्रत ज़िर र० बिन हुबैश से रिवायत है कि मैं सफ़वान बिन अस्साल के पास आया और मैंने चमड़े के मोज़े पर मस्ह[3] करने के मुतअ़ल्लिक़ दर्याफ़्त किया। उन्होंने कहा, ऐ ज़िर! तुमको कौन सी हाजत मुझ तक लाई? मैंने कहा, तलाश इल्म। उन्होंने कहा, उस तालिब-इल्म के लिए जो इल्म की तलब में निकले, फ़िरिश्ते अपने दोनो बाज़ू फैला देते हैं। मैंने कहा पायख़ानः-पेशाब के बाद चमड़े के मोज़े पर मस्ह करने के मुतअ़ल्लिक़ मेरे दिल में खटक है। आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों में हैं इसलिए मैं आप से पूछने आया हूँ, क्या आप ने इसके बारे में कुछ सुना है? कहा, हाँ, जब हम मुसाफ़िरत में

१ हर्षातिरेक २ मरणकाल ३ वज़ू (मार्जन) के समय गीला हाथ फेरना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होते थे तो हम को हुक्म देते कि तीन दिन और तीन रातें चमड़े के मोज़े पायख़ानः, पेशाब और सोने के बाद उतारने की ज़ुरूरत नहीं (इस पर मस्ह कर लेना काफ़ी है) सिवाय जिनाबत[1] की सूरत में (उसमें उतारना चाहिए)

मैंने कहा क्या आपने मुहब्बत के मुतअ़ल्लिक़ कुछ सुना है ? कहा, हाँ, हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ किसी सफ़र में थे। हम आपके पास थे कि एक एऽराबी[2] ने आपको बलंद आवाज़ से पुकारा, " या मुहम्मद स० ! " पस आपने उसी आवाज़ की तरह जवाब दिया, क्या कहते हो ? मैंने उससे कहा, अरे नेकबख़्त ! ज़रा अपनी आवाज़ को आहिस्तः कर। तू आँ-हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में है और आप के पास ज़ोर से बोलने की मुमानिअ़त है। कहा, मैं अपनी आवाज़ को आहिस्तः न करूँगा। फिर एऽराबी ने कहा कि आदमी, लोगों से मुहब्बत करता है, और वह उनके मर्तबः का नहीं होता। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया वह आदमी जो किसी के साथ मुहब्बत करता है क़ियामत में उसी के साथ होगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसी सिलसिले-गुफ़्तगू में मग़्रिब के दरवाज़े का ज़िक्र किया कि उसकी चौड़ाई की मसाफ़त[3] या यों फ़रमाया कि एक सवार उसकी चौड़ाई में चालीस या सत्तर साल चलेगा। अल्लाह तआ़ला ने उसको उस दिन पैदा किया जिस दिन आसमान व ज़मीन पैदा किये गये हैं, तौबः के लिए खुला है बन्द न होगा यहाँ तक कि सूरज मग़्रिब से निकले। (तिरमिज़ी वग़ैरः)

२ अल्लाह की तरफ़ रूजू की क़ीमत

हज़्रत अबू सई़द अल् ख़ुदरी र० से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगली क़ौम में एक आदमी था जिसने निन्नान्नबे ख़ून किये थे। उसने ज़मीन में सब से बड़े आलिम के मुतअ़ल्लिक़ दर्याफ्त किया। लोगों ने एक राहिब[4] का पता दिया, वह उसके पास आया और कहा कि मैंने निन्नान्नबे ख़ून किये हैं, क्या मेरी तौबः भी क़ुबूल हो सकती है ? कहा नहीं। उसने राहिब को भी क़त्ल कर दिया तो सौ पूरे हो गये। फिर रूए ज़मीन के सब से ज़ियादः जानने वाले के

---

१ विषय भोग (मैथुन) २ अरबनिवासी ३ फ़ासला ४ रास्ता दिखाने वाला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुतअल्लिक़ दर्याफ़्त किया§, लोगों ने एक मर्द आलिम का पता दिया; वह गया और कहा कि मैंने सौ आदमी क़त्ल किये हैं, क्या मेरी बख़्शिश हो सकती है ? कहा, हाँ ! कौनसी चीज़ तुम्हारे और तौब: के दर्मियान हायल[1] है। तुम फ़लाँ ज़मीन की तरफ़ जाओ, वहाँ कुछ लोग अल्लाह की इबादत करते हैं। तुम भी उनके साथ अल्लाह की इबादत करो और फिर इस ज़मीन की तरफ़ क़स्द न करना क्योंकि यह जगह तुम्हारे लिए बुरी हो गई है। ꣸ वह रवान: हुआ। आधा रास्ता तय हुआ था कि मौत का पैग़ाम आया। रह्मत के फ़िरिश्ते और अज़ाब के फ़िरिश्ते झगड़ने लगे। रह्मत के फ़िरिश्ते ने कहा कि यह ताइब[2] होकर और अपने दिल को ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्ज: करते हुये आया है। अज़ाब के फ़िरिश्ते ने कहा कि इसने कभी कोई नेक अमल नहीं किया। उसी वक़्त एक फ़िरिश्ता आदमी की सूरत में आया तो उन्होंने उसको अपने दर्मियान फ़ैसला करने वाला बनाया। उसने कहा, दोनों ज़मीनों को नापो, कौन ज़मीन इससे क़रीब है। उन्होंने नापा तो उस ज़मीन को ज़ियाद: क़रीब पाया जिसकी तरफ़ वह जा रहा था। तो रह्मत के फ़िरिश्ते ने रूह क़ब्ज़ की। [बुख़ारी, मुस्लिम]

एक सही रिवायत में है कि उस नेक बस्ती के क़रीब एक बालिश्त से ज़ियाद: था तो उसके रहनेवालों में शुमार किया गया।

---

§ इस अल्लाह के बन्दे के दिल में फाँसी की सी खटक थी जो उसको बेचैन किये हुये थी। उसका दिल बिलकुल मुर्द: नहीं हुआ था। इस ख़लिश[3] और जुस्तजू[4] ने उसकी मग़्फ़िरत[5] और मक़्बूलियत[6] का सामान कर दिया। दिल की यह फाँस और ख़लिश बड़ी मुबारक है। इसके न होने से हज़ारों महरूम रह गये और इसकी वज: से सौ बेगुनाह बन्दों का क़ातिल ख़ुदा की रह्मत से वासिल[7] हुआ।

꣸ जिस मुक़ाम और माहौल में आदमी ने बे-दीनी और गुनाह व ग़फ़लत की ज़िन्दगी गुज़ारी हो अक्सर औक़ात उस माहौल में इससे अपनी इस्लाह[8] और तब्दीली[9] बहुत मुश्किल होती है। 'मुक़ाम की तब्दीली' और 'अच्छा माहौल', 'अच्छे अमल' और 'अच्छी ज़िन्दगी' के लिए बहुत मददगार साबित होते हैं। यह भी हिज्रत की एक मसलहत है—फिर तौब: की क़ुबूलियत और असर के लिये ज़बानी तौब: के साथ अमली हरकत और कुछ ईसार[10] व कोशिश बहुत मुफ़ीद होती है।

---

१ बाधक २ तौब: करने वाला ३ उत्कण्ठा ४ खोज, गवेषणा ५ छुटकारा ६ स्वीकृत होने का ७ मुक्त, लीन ८ सुधार ९ परिवर्त्तन १० उत्सर्ग।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और एक सहीह रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने इस ज़मीन को हुक्म दिया कि दूर हो जा और उस ज़मीन को हुक्म दिया कि क़रीब हो जा और कहा दोनों ज़मीनों को नापो। जब नापा तो उस ज़मीन को एक बालिश्त क़रीब पाया। पस उसको बख़्श दिया।

और एक रिवायत में है कि उस आदमी ने अपने को घसीट कर उस ज़मीन के क़रीब किया।卐

२०/७ सच्चाई और इअ़तराफ़ क़ुसूर की बरकत:—

हज़्रत अब्दुल्लाह (रज़ियल्लाहु अन्हु) बिन कअ़ब बिन मालिक से रिवायत है कि (जब कअब बिन मालिक नाबीना[1] हो गये थे तो यही बेटे उनके साथ चलते थे) कि मैंने कअब बिन मालिक से सुना है ग़ज़वए तुबक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पीछे रह जाने का क़िस्सा यों बयान करते हैं कि मैं किसी गज़वह में कभी भी ग़ैर हाज़िर नहीं रहा सिवाये ग़ज़वए तुबूक और ग़ज़वए बदर के। और आपने ग़ज़वए बदर की अदमि-शिरकत[2] पर किसी पर अ़िताब[3] नहीं फ़रमाया। बात इतनी थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमान, क़ुरैश के क़ाफ़ले के इरादे से निकले थे। अल्लाह तआ़ला ने उनको और उनके दुश्मनों को बग़ैर किसी वक़्तिमुक़र्रर[4] के जमा कर दिया। और मैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अक़बा की रात§ (की मज्लिस) में शरीक हुआ था। जबकि हमने इस्लाम पर अह्द किया था और मैं अक़बा की इस शिरकत पर बदर की शिरकत को तरजीह[5] नहीं देता। अगरचे बदर लोगों में ज़्यादह मशहूर है।

卐 इससे उस अल्लाह के बन्दे की नीयत और कोशिश का पता चलता है कि आख़िर वक़्त तक वह हिम्मत नहीं हारा और कोशिश बन्द नहीं की—यही चीज़ अल्लाह को पसन्द है।

§ सन् १३, नबुव्वत के बाद ७३ मर्द और दो औरतें मदीनः से मक्कः आये ताकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने शहर में आने की दावत दें और आपकी मन्ज़ूरी हासिल करें। उन्हीं की पुरजोश और मुख़्लिसानः[6] तह्रीक[7] और अल्लाह तआ़ला के हुक्म से आपने मदीनः हिज्रत फ़रमायी। इसलिए इस मौक़े पर जो लोग शरीक हुये उनकी बड़ी फ़ज़ीलत[8] है।

---

१ नेत्रहीन २ सम्मिलित न होने ३ गुस्सा ४ समय-नियुक्ति ५ वरीयता ६ सच्ची ७ प्रेरणा ८ श्रेष्ठता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेरा क़िस्सा यह है कि जब मैं ग़ज़्व:-तबूक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पीछे रहा उस वक़्त मुझ में क़ुव्वत भी थी और फ़राग़त[1] भी। ख़ुदा की क़सम मेरे पास एक छोड़ इकट्ठा दो ऊँट कभी भी नहीं हुए थे लेकिन उस ग़ज़्व:[2] में मेरे पास एक छोड़ दो-दो सवारियाँ थीं। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी ग़ज़्व: का इराद: करते थे तो किसी और सिम्त[3] के मुतअ़ल्लिक दर्याफ़्त फ़रमाते थे। लोग समझते थे कि आपको उसी की तरफ़ जाना है, दफ़्अ़तन[4] आप दूसरी तरफ़ का रुख़ फ़रमा लेते। लेकिन इसको ज़ाहिर कर दिया क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस ग़ज़्व: की तैयारी सख़्त गर्मी में की। दूर का सफ़र था, ख़ुश्क व सख़्त मसाफ़त[5] थी और दुश्मनों की बड़ी तादाद का मुक़ाबला, इसलिए इस मुहिम[6] का इज़हार कर दिया था और उनको उस सिम्त की ख़बर दे दी थी ताकि पूरे तौर पर तैयारी कर लें। उस वक़्त मुसलमानों की तादाद बहुत हो चुकी थी और उनकी कोई फ़िहरिस्त न थी। अगर आदमी छुपना चाहता तो छुप जाता और किसी को गुमान भी न होता जब तक कि उसके बारे में अल्लाह की तरफ़ से 'वही' न नाज़िल होती।

आपने यह ग़ज़्व: उस वक़्त किया जब खजूर पक गये थे और साया बड़ा ख़ुशगवार हो गया था। और मुझे इसमें बड़ा मज़ा आता था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने और मुसलमानों ने सामान-सफ़र शुरू कर दिया। मैं हर रोज़ सुबह को इसी इराद: से आता कि मैं भी आपके साथ तैयारी करूँ लेकिन यूँ ही पलट जाता और कोई फ़ैसला न करता और अपने दिल में कहता था कि जब मैं इरादा करूँगा तो चला जाऊँगा। क्योंकि मैं इस पर क़ादिर[7] हूँ और बराबर मेरा यही हाल रहा; यहाँ तक कि सफ़र की हमा-हमी और सरगर्मी शुरू हो गयी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमान बिल आख़िर रवाना हो गये और अब तक मैंने कोई क़तई फ़ैसला नहीं किया था। सुबह को आता और कुछ इन्तिज़ाम किये बग़ैर पलट जाता। रोज़ाना यही कैफ़ियत रहती। यहाँ तक कि आँ हज़्रत और मुजाहिदीन तेज़ बढ़

१ फ़ुर्सत २ धर्मयुद्ध, जिहाद ३ सम्त, दिशा ४ अचानक ५ फ़ासला ६ युद्ध ७ समर्थ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गये और मेरे लिए जिहाद का वक़्त निकल गया§ फिर मैंने इरादः किया कि अब भी चला जाऊँ और आपको पा लूँ; काश मैं यही करता लेकिन यह भी न किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जाने के बाद जब मैं बाहर निकलता था तो मुझे रंज होता था कि मेरे शरीकॅ-हाल[1] वही लोग थे जो मुनाफ़िक़[2] थे या माज़ूर[3]; और मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने असना-इ-सफ़र[4] में याद नहीं फ़रमाया। तबूक पहुँचकर आपने लोगों से दर्याफ़्त फ़रमाया कि कअ़ब बिन मालिक को क्या हुआ। बनी सलमः के एक आदमी ने कहा या रसूलुल्लाह! उनको अपनी चादर और झुक-झुककर अपने पहलुओं को देखने में इसकी फ़ुर्सत ही कहाँ थी कि वह हमारे साथ आते। मआ़ज़ बिन जबल (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा, बुरी बात तुमने कही। क़सम ख़ुदा की या रसूलुल्लाह! उनमें सिवाय भलाई के और कुछ हम नहीं पाते। फिर आप ख़ामोश हो गये। और आप इसी हाल में थे कि एक सफ़ैदपोश आदमी गर्द उड़ाता हुआ आरहा था। आपने फ़रमाया, अबू ख़ुसैमः! तो वह अबू ख़ुसैमः ही थे। यह वही थे जिन्होंने एक साए खजूरों का सदक़ः किया तो उन पर मुनाफ़िक़ीन ने तन्ज़[5] किया था। हज़्रत कअ़ब कहते हैं कि जब मुझे यह ख़बर पहुँची कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तबूक से पलटने वाले हैं तो मुझे फ़िक्र शुरू हो गयी और मैं अपने दिल ही दिल में झूठी बातें गढ़ने लगा और मैंने कहा कि मैं कल आपकी नाराज़ी से क्यों कर बचूँगा और अपने घर वालों में हर साहबॅ-राय से इस बारे में मदद चाहता। जब यह ख़बर हुई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ ले आये तो मेरा सब सोचा-गढ़ा भूल गया और मैंने समझ लिया कि मैं झूठ बोलकर कभी नजात न पाऊँगा। पस मैंने सच बोलने की ठान ली और सुबह-सुबह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाये। आपकी आदत शरीफ़ थी कि जब किसी सफ़र से पलटते थे तो पहले मस्जिद में आते थे उसमें दो रकअ़तें पढ़कर फिर लोगों के पास बैठते थे। जब आप फ़ारिग़ हुए तो पीछे रह जाने वाले आकर आपसे अ़ुज़्र करने लगे और क़समें खाने

§ इससे यह नतीजा निकलता है कि आज-कल करने और सुस्ती या ताख़ीर[6] से आदमी बड़ी-बड़ी सआदतों[7] से महरूम[8] रह जाता है और काम का असली वक़्त निकल जाता है। हज़्रत कअ़ब के इस वाक़िअ: से यह सबक़ हासिल होता है।

१ संगी-साथी २ पाखण्डी, मन में कुछ ऊपर कुछ ३ लाचार ४ (जिहाद के) सफ़र के बीच में ५ व्यंग्य, कटाक्ष ६ ढील, देर ७ बरकतों ८ वञ्चित।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लगे। वह कुछ ऊपर अस्सी आदमी थे, आपने उनके ज़ाहिरी दावे क़ुबूल किये, उनसे बैअ़त ली। उनके लिए बख़्शिश चाही और उनके दिली भेदों को अल्लाह के सिपुर्द किया। फिर मैं आया, जब मैंने आपको सलाम किया तो आप ग़ुस्सः के अन्दाज़ में मुस्कुराये और फ़रमाया, आओ। मैं आया और आपके सामने बैठ गया। आपने फ़रमाया किस सबब से तुम शरीक न हो सके, क्या तुम्हारे पास सवारी न थी? मैंने अर्ज़ किया—या रसूलुल्लाह! क़सम ख़ुदा की अगर मैं किसी दुनिया वाले के पास बैठा होता तो उसकी नाराज़गी से उज़्र करके निकल जाता, इसलिए कि मुझमें बहस का माद्दः है। लेकिन मैं समझता हूँ कि अगर आज मैं आपसे झूठ बात कह दूँगा तो आप राज़ी हो जायँगे, मगर क़रीब है कि अल्लाह तआ़ला आपको नाराज़ कर दे। और अगर मैं आपसे सच्ची बात कह दूँ तो आप नाराज़ तो ज़रूर होंगे लेकिन मैं इसमें अल्लाह अज़्ज़ व जल के इन्आ़म की उम्मीद रखता हूँ। मेरे लिए कोई उज़्र[1] न था। वल्लाह मैं कभी इतना फ़ारिग़ुलबाल[2] नहीं था जितना कि इस मौक़े पर। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—उन्होंने तो सच्ची बात कह दी, जाओ यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे हक़ में कोई फ़ैसला करे। मैं उठा और मेरे साथ ही बनी सल्मः के कुछ लोग भी उठकर आये और कहने लगे हमको तो मालूम नहीं कि इससे पहले तुमने कोई गुनाह किया हो। तुम आ़जिज़ हो गये और कोई उज़्र न कर सके जैसे उज़्रख़्वाहों ने उज़्र पेश किये। अगर तुम भी कोई उज़्र कर देते तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तुम्हारे लिए बख़्शिश चाहना तुम्हारे गुनाह की मुआ़फ़ी के लिए काफ़ी हो जाता। इसी तरह वह बराबर मलामत करते रहे यहाँ तक कि मैंने इरादः किया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ पलट जाऊँ और झूठ बोल दूँ। फिर मैंने उनसे कहा क्या मेरी तरह कोई और भी है? बोले हाँ दो आदमी हैं। उन्होंने भी वही कहा जो तुमने कहा और उनसे भी वही कहा गया जो तुमसे कहा गया। मैंने कहा वह कौन हैं? बोले एक तो मुरारः बिन रबीअः हैं और दूसरे हिलाल बिन उमय्यः हैं। जब मैंने इन दोनों का ज़िक्र सुना तो घर चला आया क्योंकि उन्होंने ऐसे दो नेक आदमियों का ज़िक्र किया जो [जंग] बदर में शरीक थे; वह दोनों मेरे लिए अच्छा नमूना थे।

---

१ बहाना, आपत्ति २ निश्चिन्त।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म फ़रमा दिया कि हम तीनों से कोई बात न करे। तो लोग किनार:कश हो गये, और ऐसा रुख़ बदला गोया कभी जान-पहचान ही न थी। यहाँ तक कि मुझ पर मेरा नफ़्स तंग हो गया। और ज़मीन वह ज़मीन ही न रही जिसको मैं पहचानता था। इसी हालत में हम पर पचास रातें गुज़र गयीं। मेरे दोनों साथी तो अपने घरों में थककर बैठ गये और रोते रहे। लेकिन मैं जवान आदमी था, निकलता था, नमाज़ में शरीक होता था, बाज़ारों में फिरता था और हमसे कोई बात न करता§ था। मैं मस्जिद में आता और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम करता, नमाज़ के बाद आप अपनी मजलिस में तशरीफ़ रखते। मैं दिल में कहता क्या आपके होंटों को जवाब देने में हरकत हुई। फिर मैं आपके क़रीब नमाज़ पढ़ता और छुपी नज़र से आपको देखता‡। जब नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जिः होता[1] तो आप मुझको देखते और जब मैं आपकी तरफ़ मुतवज्जिः होता तो आप मुझसे एराज[2] फ़रमाते।

मुसलमानों की बेरुख़ी को मुद्दत हो गयी थी। एक दिन मैं अबू क़तादः की तरफ़ गया। वह मेरे चचाज़ाद भाई थे और मुझे बहुत महबूब थे। मैं उनके बाग़ की दीवार फाँद कर अन्दर पहुँचा और उनको सलाम किया। वल्लाह उन्होंने मेरे सलाम का जवाब तक न दिया। मैंने कहा, ऐ अबू क़तादः मैं तुमसे अल्लाह का वास्तः देकर पूछता हूँ क्या तुम नहीं जानते हो कि मुझे अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत है। वह ख़ामोश रहे। मैंने दुबारः क़सम दी मगर वह ख़ामोश रहे। फिर मैंने उनको क़सम दी, उन्होंने कहा अल्लाह और उसके रसूल ज़ियादः जानते हैं। उस वक़्त मेरी दोनों आँखों से आँसू गिर पड़े और मैं चला आया।

मैं मदीना के बाज़ार में फिर रहा था कि एक नब्ती अहिलॅ-शाम

§ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत[3], का हाल यह था कि आपने कअब से बोलने की मुमानिअत कर दी तो लोगों की ज़बानों पर क़ुफ़्ल चढ़ गये। और मदीना का आबाद शहर उनके हक़ में शहरॅ ख़मोशाँ[4] बन गया। एक आदमी भी उनसे बात करने और उनकी बात का जवाब देने का रवादार न था।

‡ इससे अन्दाज़ः होगा कि इस इताब (अ़िताब)[5] व सज़ा के बावजूद आँ-हज़ूत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कअब को क्या तअल्लुक़ और मुहब्बत थी।

१ उन्मुख, ध्यान लगाता २ विमुख ३ आज्ञा पालन ४ निर्वाक्-(मूक) नगर ५ प्रकोप।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के नब्तियों में से तिजारत का ग़ल्ला लेकर आया; कहता था कि कोई शख़्स मुझे कअ़ब बिन मालिक का पता दे सकता है ? लोग मेरी तरफ़ इशार: करने लगे। वह मेरे पास आया और ग़स्सान के बादशाह का एक ख़त दिया। मैंने उसको पढ़ा; उसमें लिखा था "मुझे ख़बर मिली है कि तुम्हारे आक़ा तुमसे नाराज़ हैं। तुम ज़िल्लत व नाक़द्री की जगह रहने पर मजबूर नहीं हो, तुम हमारे पास आओ, हम तुम्हारी ग़मख़्वारी करेंगे।" जब मैं उसको पढ़ चुका तो मेरे रंज की कोई हद न रही। मैंने कहा यह और भी मुसीबत है और मैंने उसको तनूर[1] में झोंक दिया†।

इसी हालत पर चालीस रातें गुज़रीं। वह्य (वही) अर्श: से नहीं आयी थी, नागाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक क़ासिद मेरे पास आया और कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुमको हुक्म देते हैं कि अपनी बीवी से अलग हो जाओ। मैंने कहा तलाक़ दे दूँ या क्या करूँ। कहा नहीं बल्कि अलग हो जाओ। और उनके क़रीब न हो। इसी तरह मेरे दोनों साथियों को भी हुक्म पहुँचा। मैंने अपनी बीवी से कहा कि तुम अपने मैके चली जाओ और वहीं रहो जब तक कि अल्लाह तआ़ला इस मुआमल: का फ़ैसला न करे। हिलाल बिन उमय्य: की बीवी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आयीं, कहा या रसूलुल्लाहु! इब्नि उमय्य: बूढ़े हैं और कोई ख़ादिम नहीं, क्या आप नापसन्द करते हैं कि मैं उनकी ख़िदमत करूँ। आपने फ़रमाया—नहीं, लेकिन वह तुमसे क़रीब न हों। उन्होंने कहा ख़ुदा की क़सम उनमें कोई हिस व हरकत[2] नहीं, जब से यह क़िस्स: हुआ है वह बराबर रोते ही रहते हैं।

मुझसे मेरे बाज़ घर वालों ने कहा कि तुम भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपनी बीवी के बारे में इजाज़त तलब करो जैसे हिलाल बिन उमय्य: की बीवी ने अपने शौहर की ख़िदमत की इजाज़त ली है। मैंने कहा मैं इजाज़त न माँगूंगा। मैं नहीं जानता कि आप

---

† यह बड़ी आज़मायश का मौक़ा है। हर शख़्स अपने दिल पर हाथ रखकर देखे। अैन उस हालत में कि मदीन: में कोई बात करने वाला नहीं है, एक बादशाह बुलाता है। उस शख़्स को अपने महबूब और सरदार की नाराज़गी और अ़िताब गवार: है और बादशाहों का एज़ाज़[3] व इक्राम[4] गवार: नहीं। वह उस ख़त को तनूर में झोंक देता है और कहता है ख़ुदा की शान ! अब इस क़ाबिल हो गया हूँ कि काफ़िर बादशाह मुझे पयाम[5] दे। "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" *।

---

१ तन्दूर, भट्ठी २ चेतना ३ सम्मान ४ प्रतिष्ठा, सत्कार ५ सँदेशा।

* हम अल्लाह ही के हैं और बेशक हमें उसी की ओर लौटना है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्या जवाब देंगे, इसलिए कि मैं जवान आदमी हूँ।* क़िस्सः मुख़्तसर—इसी हालत पर हमने दस रातें और गुज़ारीं तो पूरी पचास रातें हो गयीं। मैंने पचासवीं रात की सुबह को अपने घर की छत पर नमाज़ पढ़ी; मैं उसी हालत में बैठा था जिसका नक्शा अल्लाह ने खींचा है। मुझ पर मेरा नफ़्स[1] तंग हो गया था और ज़मीन, वुस्अत के बावजूद[2] मुझ पर तंग हो गयी थी कि मैंने कोहे-सिलअ़ से एक चीख़ सुनी, कोई बलन्द आवाज़ से कह रहा था, "ऐ कअ़ब बिन मालिक! तुमको बशारत[4] हो।" यह सुनते ही मैं सज्दे में गिर पड़ा और मैंने समझ लिया कि मसर्रत[5] की घड़ी आ गयी। सुबह की नमाज़ पढ़कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह अज़्ज़ व जल की तरफ़ से हमारी तौबः क़ुबूलियत का एलान किया। लोग हमको बशारत देने लगे और कुछ लोग मेरे दोनों साथियों की तरफ़ बशारत देने के लिए चले गये। एक घोड़सवार दौड़ता हुआ आया और एक अस्लम के क़बीलः का आदमी पैदल आया और पहाड़ पर चढ़ा। उसकी आवाज़ घोड़े से भी ज़ियादः तेज़ थी। जब वह मेरे पास आया और मुझको बशारत सुनाने लगा तो (ख़ुशी में) मैंने अपने दोनों कपड़े उतार कर उसको पहना दिये। वल्लाह मैं उस वक़्त उन्हीं दो कपड़ों का मालिक था। फिर मैंने दो कपड़े मुस्तआ़र[6] लिए और उनको पहनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास जाने के इरादे से चला। लोग मुझसे जूक़-जूक़[7] मिलते थे और तौबः की मुबारकबाद देते थे और कहते थे तौबः की क़ुबूलियत मुबारक§ हो। यहाँ तक कि मैं मस्जिद में आया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बैठे थे और लोग आपके गिर्द जमा थे। तलहः (र०) बिन अुबैदुल्लाः मुझको देखकर खड़े हो गये और बढ़कर मुझसे मुसाफ़हः[8] किया और मुबारकबाद दी। वल्लाह मुहाजिरीन में उनके सिवा कोई न खड़ा हुआ। मैं तलहः का यह इहसान नहीं भूल सकता। जब मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को सलाम किया तो आपने फ़रमाया (और आपका चेहरा मुबारक ख़ुशी से दमक रहा था)—"ज़िन्दगी का मुबारकतरीन दिन तुमको मुबारक हो।" मैंने

---

* अपना काम-काज ख़ुद कर सकता हूँ; उन दोनों की तरह बूढ़ा और कमज़ोर नहीं हूँ कि मुझे मददगार की ज़ुरूरत हो।

§ मालूम होता है यह वह लोग ही नहीं हैं जो कल तक बात ही [पेज ३१ पर]

---

१ अस्तित्व, जीवन २ विशाल होने पर भी।
४ मुबारकबाद ५ आनन्द ६ मंगनी ७ झुण्ड के झुण्ड ८ हाथ मिलाया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहा यह आपकी तरफ़ से है या अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से? फ़रमाया, नहीं बल्कि यह अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल की तरफ़ से है।

जब आप ख़ुश होते थे तो आपका चेहरा मुबारक ऐसा चमकता था गोया चान्द का एक टुकड़ा है। हम उसको पहचानते थे। जब आपके पास बैठा तो मैंने कहा या रसूलुल्लाह! मैं इस ख़ुशी में अपना माल सदक़: के तौर पर अल्लाह और उसके रसूल के लिए छोड़ता हूँ। आपने फ़रमाया, कुछ माल अपने लिए रोक रक्खो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने कहा ख़ैबर का हिस्स: मैंने अपने लिए रख छोड़ा है। और मैंने कहा या रसूलुल्लाह सल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! अल्लाह तआ़ला ने मुझको सच्चाई के सबब नजात दी; अब मेरी तौब: का यह नतीज: होना चाहिए कि जब तक ज़िन्द: रहूँ सच ही बोला करूँ और क़सम ख़ुदा की जबसे मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सच-सच कह दिया, आज के दिन तक झूठ बोलने का फिर इराद: नहीं किया और मेरे अ़िल्म में सच बोलने में किसी पर अल्लाह तआ़ला ने ऐसा फ़ज़्ल नहीं किया जैसा मुझपर फ़रमाया है। और मैं उम्मीद करता हूँ कि जब तक मैं ज़िन्द: रहूँगा अल्लाह तआ़ला मेरी हिफ़ाज़त करेगा।

जो आयत हम लोगों के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई थी वह यह थी:—

लक़त्ताबल्लाहु अ़लन्नबिय्यि वल्मुहाजिरीन वल्-अन्सारिल्लज़ीनत्-तबअ़ूहु फ़ी साअ़तिल्-अ़ुस्रति मिम्बअ़्दि मा काद यज़ीग़ु क़ुलूबु फ़रीक़िम्-मिन्हुम् सुम्म ताब अ़लैहिम्, इन्नहू बिहिम् रअ़ूफ़ुर्रहीमुन् ला (११७) व्व अ़लस्-सलासतिल्-

---

[पेज ३० से] नहीं करते थे। जब तौब: क़ुबूल की गयी और बात करने की इजाज़त मिल गयी तो यही लोग उठ-उठ कर और बढ़-बढ़ कर गले मिलते थे और निहायत मुहब्बत से मुबारकबाद देते। शाइर ने इन्हीं लोगों की तारीफ़ में कहा है:—

रहें हक़ में थी दौड़ और भाग उनकी
फ़क़त हक़ पॅ थी जिससे थी लाग उनकी।

भड़कती न थी ख़ुद ब ख़ुद आग उनकी
शरीअ़त के क़ब्ज़: में थी बाग उनकी।

जहाँ कर दिया नर्म नर्मा गये वह
जहाँ कर दिया गर्म गर्मा गये वह।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लज़ीन ख़ुल्लिफ़ू , हत्ता अिज़ा ज़ाक़त् अलैहिमुल् - अर्ज़ु बिमा रहुबत् व ज़ाक़त् अलैहिम् अन्फ़ुसुहुम् व ज़न्नू अल्ला मल्जअ मिनल्लाहि अिल्ला अिलैहि , सुम्म ताब अलैहिम् लियतूबू , अिन्नल्लाह हुवत्तव्वाबुर्रहीमु (११८) ★ या अय्युहल्लज़ीन आमनुत्तक़ुल्लाह व कूनू मअस्सादिक़ीन (११९)

अल्लाह तआला ने तवज्जु: फ़रमायी नबी पर और मुहाजिरीन और अन्सार पर और उन लोगों पर जिन्होंने तंगी के वक़्त में आपकी पैरवी की। क़रीब था कि उनमें से एक जमाअत के दिल फिर जाएँगे। फिर वह उन पर मेहरबान हुआ, बेशक वह मेहरबान है रहमवाला। और उन तीन शख़्सों पर जो पीछे रह गये यहाँ तक कि ज़मीन बावजूद वुस्अत के उन पर तंग हो गयी और उन पर उनका नफ़्स तंग हो गया और उन्होंने जान लिया कि नहीं पनाह मगर अल्लाह की तरफ़। फिर वह उनकी तरफ़ मुतवज्ज: हुआ ताकि वह तौब: करें, बेशक अल्लाह तौब: क़ुबूल करने वाला, रहमत वाला है। ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और सच्चों के साथ रहो। [पार: ११ सूर: ६ आयत ११७-११६]

वल्लाह इस्लाम के बाद सबसे बड़ा इनआम ख़ुदा तआला ने मुझ पर यह किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रूबरू मुझसे हक़ बात कहला दी। अगर मैं झूठ बोलता तो मेरा भी वही हश्र[1] होता जो झूठ बोलने वालों का हुआ। अल्लाह तआला ने झूठों के हक़ में बहुत ही सख़्त वईद[2] फ़रमायी है।

सयह्लिफ़ून बिल्लाहि लकुम् अिजन्क़लब्तुम् अिलैहिम् लितुऽरिज़ू अन्हुम् , फ़अऽरिज़ू अन्हुम् , अिन्नहुम् रिज्सुन् , ०व मअ्वाहुम् जहन्नमु , जज़ाअम् - बिमा कानू यक्सिबून (९५) यह्लिफ़ून लकुम् लितर्ज़ौ अन्हुम् , फ़अिन् तर्ज़ौ अन्हुम् फ़अिन्नल्लाह ला यर्ज़ा अनिल् - क़ौमिल् - फ़ासिक़ीन (९६)

अन्क़रीब वह तुमसे अल्लाह की क़समें खायेंगे जब तुम उनकी तरफ़ पलटोगे ताकि उनको दरगुज़र करो। पस तुम उनसे एराज़ करो[3], बेशक वह नापाक हैं। उनका ठिकाना दोज़ख़ है, इसका बदल: है जो

---

१ परिणाम २ दण्ड-व्यवस्था ३ मुंह फेर लो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उन्होंने कमाया। क़समें खायेंगे तुम्हारे सामने ताकि तुम राज़ी हो। अगर तुम राज़ी हुए तो अल्लाह फ़ासिक[1] लोगों से राज़ी नहीं होता।
[पार: ११ सूर: ६ आयत ६५-६६]

हज़्रत कअ़ब कहते हैं कि पीछे कर दिये जाने का मतलब यह है कि हमारा मुआमला कुछ दिनों के लिए उठा रक्खा था उन लोगों की निस्बत जिनके ज़ाहिरी हाल पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इक्तिफ़ा[2] की; जब उन्होंने क़सम खाई तो उनसे बैअ़त ली और उनके लिए बख़्शिश चाहीं और, हमारे काम को मुअख़्ख़र[3] कर दिया यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला इसमें फ़ैस्ल: करे। [बुख़ारी व मुस्लिम]

२८ तौब: की फ़ज़ीलत व क़ुबूलिय्यत[4]

हज़्रत अिम्रान बिन अल्हुसैन (र०) से रिवायत है कि जुहैन: की एक औरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई। कहा या रसूलुल्लाह मैंने ऐसा जुर्म किया है कि मैं सज़ा की मुस्तहक़ हो गयी। पस आप हद (शरअ़ी सज़ा) क़ाइम कीजिए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके वली को बुलाया और फ़रमाया, इसके साथ अच्छे सुलूक कर। जब उसके बच्चा पैदा हो जाये तो ले आना। विलादत[5] के बाद वह आई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि इसके कपड़े इस पर बाँध दो; फिर उसको संगसार[6] करने का हुक्म दिया तो वह संगसार कर दी गई; फिर आपने उसके जनाज़: पर नमाज़ पढ़ी। हज़्रत उमर (र०) ने कहा, या रसूलुल्लाह! आप इस पर नमाज़ पढ़ते हैं, यह तो गुनहगार थी। आपने फ़रमाया, इसने तौब: की। अगर इसकी तौब: अह्लॅ-मदीना के सत्तर आदमियों पर तक़सीम की जाये तो सबके लिए काफ़ी हो। तुमने इससे अफ़्ज़ल[7] किसी को देखा है जिसने अपनी जान अल्लाह के हुज़ूर में पेश कर दी? [मुस्लिम]

२९ आदमी की हवस[8] और तौब: का इम्कान[9]

हज़्रत इब्नि अब्बास (र०) और अनस (र०) बिन मालिक से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर आदम के बेटों को सोने की एक घाटी दी जाये तो वह चाहेंगे कि दो

---

१ गुनहगार, दुरात्मा २ काफ़ी समझा ३ पीछे ४ पश्चात्ताप की श्रेष्टता और स्वीकृति ५ [बच्चे के] जन्म ६ पथराव ७ श्रेष्ठ ८ लालसा ९ सीमा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घाटियाँ और मिल जायँ और उनके मुँह को सिवा मिट्टी के और कोई चीज़ नहीं भर सकती। और जो शख़्स तौबः करे तो अल्लाह तआ़ला उसकी तौबः क़ुबूल करता है। [बुख़ारी-मुस्लिम]।

१०/२१ क़त्ल के बाद तौबः और शहादत

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह सुब्हानहु तआ़ला ऐसे दो आदमियों पर हँसता है कि एक दूसरे को क़त्ल कर दें और दोनों जन्नत में दाख़िल हों। एक अल्लाह के रास्ते में जंग करता है और शहीद[1] हो जाता है। फिर दूसरा इस्लाम लाता है और अल्लाह के सामने क़त्ल से तौबः करता है। फिर वह भी शहीद हो जाता है।

सब्र*

या अय्युहल्लज़ीन आमनुस्बिरू व साबिरू व राबितू क़िफ़।

ऐ ईमानवालो! सब्र करो और थाम रक्खो एक दूसरे को और अ़िबादत में दिल लगाये रहो। [पारः ४ सूरः ३ आयत २००]

व लनब्लुवन्नकुम् बिशैअिम् - मिनल्ख़ौफ़ि वल्जूअ़ि व नक़्सिम् - मिनल्अम्वालि वल्अन्फ़ुसि वस्समराति त व बश्शिरिस्साबिरीन ला (१५५)

हम तुमको कुछ चीज़ों के साथ आज़मायेंगे—डर और भूक, मालों और जानों और फलों के नुक़सानात से; और ख़ुश-ख़बरी दो सब्र करने-वालों को। [पारः २ सूरः २ आयत १५५]

---

* संतोष—सब्र या संतोष के अर्थ आजकल उलटे यानी लाचारी से दब रहना लगाया जाता है। नहीं; दृढ़ता और संयम के साथ निर्भय निरुद्विग्न परिस्थिति पर क़ाइम रहने को सब्र कहते हैं।

---

१ बलिदान, वीरगति-प्राप्त।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अिन्नमा युवफ़्फ़स्साबिरून अज्रहुम् बिग़ैरि हिसाबिन् (१०)

सब्र करनेवालों को पूरा-पूरा अज्र[1] बग़ैर हिसाब के दिया जायेगा।

[पारः २३ सूरः ३९ आयत १०]

व लमन् सबर व ग़फ़र अिन्न ज़ालिक लमिन् अ़ज़्मिल्-अुमूरि (४३) ★

जिसने सब्र किया और मुआ़फ़ किया [तो] बेशक यह हिम्मत के काम हैं। [पारः २५ सूरः ४२ आयत ४३]

या' अय्युहल्लज़ीन आमनुस्तअ़ीनू बिस्सब्रि वस्सलाति त अिन्नल्लाह मअ़स्साबिरीन (१५३)

ऐ ईमान वालो! सब्र से और नमाज़ से मदद चाहो, बेशक अल्लाह साबिरों के साथ है। [पारः २ सूरः २ आयत १५३]

व लनब्लुवन्नकुम् हत्ता नअ़्लमल्-मुजाहिदीन मिन्कुम् वस्साबिरीन ला व नब्लुव अख़्बारकुम् (३१)

हम तुमको आज़मायेंगे यहाँ तक कि जान लें तुममें से कोशिश व जिहाद करने वालों को और साबिरों[2] को और आज़मायेंगे तुम्हारी ख़बरों को। [पारः २६ सूरः ४७ आयत ३१]

"अहादीस"

२४[1] सब्र की फ़ज़ीलत

हज़रत अबु मालिक (र०) बिन आसिम अल्‌अश्अ़री से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तहारत[3] निस्फ़[4] ईमान है। और अल्हम्दु लिल्लाह तराज़ू को भर देता है। और सुब्हानल्लाह वल्हम्दु लिल्लाह भर देते हैं जो कुछ आसमान व ज़मीन के दर्मियान है और नमाज़ नूर[5] है, सदकः[6] दलील[7] है, सब्र रौशनी है और क़ुर्आन हुज्जत[8] है तुम्हारे हक़ में या तुम्हारे ख़िलाफ़। हर शख़्स हर

---

१ बदला २ संतोषियों ३ पवित्रता, शौच ४ आधा ५ ज्योति ६ ख़ैरात ७ पथ-प्रदर्शक ८ प्रमाण, सनद।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रोज़ अपने नफ्स[1] का सौदा करता है; या तो उसको आज़ाद कर लेता है या उसको हलाक कर देता है। [मुस्लिम]

२/२८ सब्र से ज़ियादः किसी चीज़ में भलाई की गुन्जाइश नहीं

हज़्रत अब्रु सअीद (र०) सऽद बिन मालिक बिन सिनान अल्ख़ुदरी से रिवायत है कि चन्द अन्सारियों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया; आपने उनको दिया फिर उन्होंने माँगा, फिर आपने दिया; यहाँ तक कि जो कुछ आप के पास था सब दे दिया। फिर फ़रमाया—मैं तुमसे कुछ उठा नहीं रखता, जो ख़ुद्दार[2] रहना चाहेगा अल्लाह उसको ख़ुद्दार रक्खेगा और जो इस्तिग़्ना[3] चाहेगा अल्लाह उसको ग़नी[4] करेगा और जो सब्र करेगा अल्लाह उसको सब्र देगा और किसी को कोई चीज़ सब्र से ज़ियादः बेहतर और वसीअ नहीं दी गयी। [बुख़ारी, मुस्लिम]

३/२६ सब्र व शुक्र

सुहैब बिन सिनान (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—मोमिन का मुआमला भी ख़ूब है, यह मोमिन ही की ख़ुसूसियत है कि जब उसको ख़ुशी पहुँचती है तो शुक्र करता है; पस उसके लिए बेहतर होता है और जब मुसीबत पहुँचती है तो सब्र करता है तो यह उसके लिए बेहतर होता है। [मुस्लिम]

४/२७ मर्ज़ि वफ़ात[5] की बेचैनी और सब्र

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बीमार हुए और आपको बेचैनी हुई तो हज़्रत फ़ातिमः (र०) ने कहा, मेरे वालिद कैसे बेचैन हैं? आपने फ़रमाया—इसके बाद तुम्हारे वालिद कभी बेचैन न होंगे। जब आपकी वफ़ात हो गयी तो हज़्रत फ़ातिमः (र०) ने कहा, ऐ बाप! आपने अपने रब की दावत को क़ुबूल किया, ऐ बाप! जन्नतुल्फ़िर्दौस[6] आपका ठिकाना है, ऐ बाप! हम जिब्रील को आपकी वफ़ात की ख़बर देंगे। जब आप दफ़्न किये गये तो हज़्रत फ़ातिमः (र०) ने लोगों से कहा, तुमको रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि व सल्लम पर मिट्टी डालना कैसे अच्छा लगा। [बुख़ारी]

---

१ आत्मा २ स्वाभिमानी ३ निस्पृह भाव ४ निस्पृह ५ मृत्यु ६ सब से ऊँचा (बहिश्त)।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२८ औलाद के सद्मः पर सब्र

हज़्रत उसामः (र०) बिन ज़ैद बिन हारिसः ख़ादिमॆ-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके महबूब और महबूब के बेटे से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक साहबज़ादी ने आपके पास पैग़ाम भेजा कि मेरा बेटा क़रीब मर्ग है, आप तश्रीफ़ ले आइये। आपने सलाम कहला भेजा और फ़रमाया अल्लाह ही के लिए है जो उसने लिया और जो उसने दिया और हर चीज़ का उसके पास एक वक़्त मुक़र्रर है। सब्र करो और अज्र तलब करो। उन्होंने दरख़्वास्त की, आप ज़रूर तश्रीफ़ लाइये। यह सुनकर आप खड़े हो गये और आपके साथ सऽद बिन अुबादः (र०)। मआज़ बिन जबल (र०) और उबइ बिन कअ़ब (र०), ज़ैद (र०) बिन साबित और बहुत से लोग थे। आपको बच्चा उठाकर दिया गया, आपने गोद में लिया और उस वक़्त वह दम तोड़ रहा था; आपके आँसू निकल आये। हज़्रत सऽद ने कहा या रसूलुल्लाह यह क्या ?, फ़रमाया, यह रहमत है, अल्लाह तआला ने इसको अपने बन्दों के दिलों में रक्खा है। [बुख़ारी, मुस्लिम]

२९ हक़ पर सब्र व इस्तिक़ामत[1] की मिसाल

हज़्रत सुहैब (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—अगली क़ौम में एक जादूगर था। जब वह बूढ़ा हुआ तो बादशाह से कहला भेजा कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ, एक लड़के को भेज दीजिए ताकि मैं जादू सिखा दूँ। बादशाह ने एक लड़के को उसके पास भेज दिया; वह हर रोज़ साहिर[2] के पास जाने लगा। रास्तः में एक राहिब[3] का मकान पड़ता था, लड़का उसके पास आने-जाने लगा। कुछ देर उसके पास बैठना और उसकी बातें सुनना उसका मामूल हो गया। एक दिन साहिर ने ताख़ीर[4] पर उसको मारा, उसने राहिब से शिकायत की। राहिब बोला, जब तुझे साहिर से डर हो तो कह दे मुझे मेरे घर वालों ने रोक लिया था। और जब घर वालों से डरना तो कहना मुझे साहिर ने ठहरा लिया था। उसने यही किया और बराबर इसी हालत से आता-जाता रहा। एक दिन एक बड़ा जानवर रास्ते में आ गया, जिससे लोगों की आमद व रफ़्त बन्द हो गयी। लड़के ने कहा आज के दिन मैं जानूँगा कि साहिर अफ़ज़ल[5] है या राहिब। एक पत्थर उठाकर कहने लगा, ऐ अल्लाह ! अगर राहिब का काम साहिर के काम से अच्छा है तो

---

१ दृढ़ता २ जादूगर ३ ईसाई संन्यासी ४ देर होने ५ श्रेष्ठ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसको क़त्ल कर ताकि लोग अम्न[1] के साथ गुज़र जायें। यह कह कर पत्थर फेंका और उसको क़त्ल कर दिया; रास्तः साफ़ हुआ तो लोग अम्न के साथ गुज़र गये। यह राहिब के पास आया और उसको इस क़िस्सः की ख़बर दी। राहिब बोल उठा, मेरे बेटे! तू मुझसे भी अफ़ज़ल है। तेरा मुआमलः अब हद को पहुँच गया। मेरा ख़्याल है कि अन्क़रीब तू आज़माया जायगा, पस अगर तू आज़माइश में मुब्तिला किया जाय तो मेरा पता न देना।

ख़ुदा ने उस लड़के के हाथ में ऐसी शफ़ा दी थी कि वह मादरज़ाद अन्धे का, कोढ़ी का और तमाम अमराज़ का अिलाज करता था और लोग शफ़ा पाते थे। शुदः शुदः यह ख़बर मश्हूर हो गयी। उसको बादशाह के एक हमनशीन[2] ने भी सुना, जो नाबीना[3] था। वह बहुत से तहाइफ़[4] लेकर, उसके पास आया और कहने लगा, अगर तू मेरी आँखें अच्छी करदे तो यह सब तेरे लिए है। लड़के ने कहा, मैं किसी को शफ़ा नहीं देता, शफ़ा देने वाला अल्लाह है। अगर तू अल्लाह पर ईमान ले आये तो मैं अल्लाह तआ़ला से तेरे लिए शफ़ा की दुआ़ करूँगा। वह ईमान ले आया तो अल्लाह तआ़ला ने उसकी बसारत[5] पलटा दी। वह बादशाह के पास आया और हस्बॅमामूल[6] बैठ गया। बादशाह ने कहा, तेरी आँख किसने अच्छी की। कहा, मेरे परवरदिगार ने। बादशाह ने कहा, मेरे सिवा भी तेरा कोई ख़ुदा है? वह बोला, मेरा और तेरा परवरदिगार अल्लाह तआ़ला है। बादशाह ने उसको सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तला किया; यहाँ तक कि उसने लड़के का पता दिया। बादशाह ने लड़के को बुलाया और कहा तेरा सेहर इस हद को पहुँच गया कि तू मादर-ज़ाद अन्धेओ और मब्रूस[7] को अच्छा कर देता है। कहा मैं किसी को अच्छा नहीं कर सकता, शफ़ा देने वाला तो अल्लाह तआ़ला है। बादशाह ने उस पर भी सख़्ती की। उसने राहिब का पता दिया। बादशाह ने राहिब को बुलाया और कहा अपने दीन से पलट। राहिब ने इन्कार किया। बादशाह ने आरा मंगवाया और उसको राहिब के सर की मांग में रखकर सर के दो टुकड़े कर दिये। फिर अपने हमनशीन (हमनशीं) से कहा—अपने दीन से पलट; उसने भी इन्कार किया। उसके सर के भी दो टुकड़े कर दिये, फिर लड़के से कहा अपने दीन से पलट; उसने भी इन्कार किया तो बादशाह ने अपने ख़ुद्दाम[8] को बुलाया और कहा इसको फ़लाँ पहाड़

---

१ शान्ति, कुशल २ मुसाहिब, साथ बैठने वाला ३ अन्धा ४ तुहफ़े, भेटें ५ दृष्टि ६ नित्य के अनुसार ७ जन्मान्ध और सफ़ेद कोढ़ वाले ८ सेवकों।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर ले जाओ और जब पहाड़ की चोटी पर पहुँचना तो इससे दीन के बारे में कहना, अगर यह अपने दीन से पलट जाये तो ख़ैर वरनः इसको गिरा देना। वह उसको ले गये और पहाड़ की चोटी पर चढ़ाया। लड़के ने कहा ऐ अल्लाह तआला तू जिस तरह चाहे उनसे निपट ले। यह कहते ही पहाड़ काँपा और सब गिर पड़े, लड़का बादशाह के पास आया। बादशाह ने कहा तेरे साथी क्या हुए? कहा, अल्लाह तआला ने उनसे समझ लिया और मेरा कुछ न कर सके। बादशाह ने उसको दूसरे के हवाले कर दिया और कहा इसको कश्ती[1] में ले जाओ और जब बीच दरया में पहुँचे तो इससे दीन के मुतअल्लिक कहो। अगर यह अपने दीन से पलट जाये तो ख़ैर, वरनः दरया में छोड़ देना। लोग ले गये और जब वस्त[2] दरया में पहुँच गये तो लड़के ने कहा, ऐ अल्लाह! जिस तरह चाहे इनकी बला मुझसे टाल। कश्ती डगमगाई और वह सब डूब गये। लड़का बादशाह के पास आया। बादशाह ने कहा, तेरे साथी कहाँ रहे? लड़के ने कहा कि ख़ुदा ने मेरी मदद फ़रमायी और उनको दफ़अ किया। फिर लड़के ने कहा तू मुझको नहीं मार सकता जब तक कि मेरे कहे पर अमल न करे। बादशाह ने कहा, वह कैसे? लड़के ने कहा लोगों को एक चटियल मैदान में जमा करो और मुझको एक खजूर की पेड़ी में सूली दो और एक तीर अपने तरकश से लेकर उसको कमान के वस्त में रक्खो और कहो कि मैं लड़के के रब के नाम से शुरू करता हूँ, तो इस सूरत में तुम मुझ को मार सकोगे। बादशाह ने लोगों को एक चटियल मैदान में जमा किया और उसको खजूर की पेड़ी पर सूली दी। फिर एक तीर अपने तरकश से लेकर उसको कमान की वस्त में रखखा और कहा कि मैं लड़के के रब के नाम से शुरू करता हूँ; फिर उसको मारा। तीर उसकी कनपटी में लगा; उसने अपनी कनपटी पर हाथ रक्खा और मर गया। पस लोग बोल उठे—हम लड़के के रब पर ईमान लाये। बादशाह आया तो लोगों ने कहा लीजिए जिसका आपको डर था वही सामने आया; लोग ईमान ले आये। बादशाह ने कहा सड़क के किनारे एक खाई खोदी जाये और उसमें आग भड़काई जाये, फिर जो अपने दीन से न पलटे तो उससे कहा जाये कि इसमें कूदो। यही किया गया। एक औरत आई और उसके साथ उसका बच्चा था। औरत उसमें कूदने से हिचकिचाई। बच्चे ने कहा, ऐ माँ! सब्र कर, बेशक तू हक़ पर है। [मुस्लिम]

---

१ नाव २ बीच।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३७० मर्दान्गी पहली चोट पर सब्र करना है

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक औरत के पास से गुज़र हुआ जो एक क़ब्र के पास रो रही थी। आपने फ़रमाया अल्लाह से डर और सब्र कर। उसने कहा, आप अपना रास्त: पकड़िये, मेरी तरह अगर आपको मुसीबत पहुँचती तो आप जानते। लोगों ने उससे कहा वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे, तो वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवाज़े पर आयी और वहाँ दरबानों को न देखा; कहने लगी, मैंने आप को नहीं पहचाना था। आपने फ़रमाया, सब्र पहली चोट के वक़्त होता है।§

३७१ महबूब के सद्म: पर सब्र का सिल:[१]

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—मेरे उस मोमिन बन्दे के लिए जन्नत के सिवा और क्या सिल: हो सकता है कि जिसके महबूब को ले लूँ और वह सवाबे आख़िरत की ख़्वाहिश पर सब्र करे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

३७२ ताऊ़न[२] में सब्र और अज्र[३] की ख़्वाहिश के साथ मौत

हज़्रत आयश: (र०) से रिवायत हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि व सल्लम से ताऊ़न[२] के मुतअ़ल्लिक सवाल किया। आपने फ़रमाया कि वह अ़ज़ाब है। अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है भेजता है। अल्लाह तआ़ला ने इसको मोमिनों के लिए रहमत बना दिया। जब किसी बन्दे पर ताऊ़न वाक़िअ हो और वह अपने शहर में अज्र तलब करते हुए ठहरा रहे और यह समझ ले कि उसको कोई मुसीबत न पहुँचेगी मगर जो अल्लाह ने उसके लिए लिख दी है, तो उसको शहादत[४] का दर्ज: मिलेगा।ꣻ [बुख़ारी]

---

§ यानी ग़म की चोट खाते ही जिसने ख़ुदा का ख़ौफ़ और उसकी रहमत और सवाब की उम्मीद में सब्र किया वह क़ाबिलें तारीफ़ है, वर्न: रफ़्त:-रफ़्त: तो सब्र आ ही जाता है और ज़ख़्म भर जाता है। 'मुस्लिम' की एक रिवायत में है कि वह अपने बच्चे की क़ब्र पर रो रही थी।

ꣻ यही अमल की रूह है। जिससे अमल ज़मीन से आसमान को पहुँच जाता है। इसके बग़ैर अल्लाह के यहाँ अमल की कोई क़द्र व क़ीमत नहीं।

---

१ प्रतिफल २ प्लेग ३ प्रतिफल ४ वीरगति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

११ आँखें खोकर सब्र करने का दर्जः
३३

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है, फ़रमाते थे—बेशक अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल जब अपने किसी बन्दे की दो महबूब चीज़ों के साथ आज़माइश करता है (यानी उसकी आँखें जाती रहती हैं) और वह सब्र करता है, तो इनके एवज़ में जन्नत है। [बुख़ारी]

११ आरज़ः[१] पर सब्र करने का इनआम
३४

हज़्रत अ़ता (र०) बिन अबी रबाह से रिवायत है कि मुझसे इब्नि अब्बास (र०) ने कहा—क्या मैं दिखाऊँ तुमको एक जन्नत वाली औरत ? मैंने कहा, हाँ; कहा यह काली औरत है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई और कहा कि मुझे मिर्गी का दौरा पड़ता है जिससे मैं बरह्नः[२] हो जाती हूँ। आप अल्लाह तआ़ला से मेरे लिए दुआ कीजिए। आपने फ़रमाया, अगर तू सब्र करे तो तेरे लिए जन्नत है। और अगर तू चाहे तो मैं अल्लाह तआ़ला से तेरी आफ़िय्यत[३] की दुआ करूँ। उसने कहा मैं सब्र करूँगी लेकिन आप अल्लाह तआ़ला से इसकी दुआ कीजिए कि मैं बरह्नः न हूँ [बुख़ारी-मुस्लिम]

१२ ईज़ा[४] देने वाले के लिए दुआ
३८

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि गोया मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक नबी की हिकायत[५] बयान करते हुए देख रहा हूं। उन पर अल्लाह की तरफ़ से दुरूद और सलामती हो। उनकी क़ौम उनको मारती थी और ख़ूनाख़ून कर देती थी और वह अपने चेहरे से ख़ून पोछते जाते थे और कहते थे कि ऐ अल्लाह ! मेरी क़ौम को बख़्श दे, वह नहीं जानती (अज्ञान में है)। [बुख़ारी-मुस्लिम]

१३ मुसीबत गुनाहों का कफ़्फ़ारः[६] है
३८

हज़्रत अबू सअ़ीद (र०) और हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि वह रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं—आपने फ़रमाया कि मुसलमान को जो मुसीबत पहुँचती है ख़्वाह वह किसी क़िस्म की हो, बीमारी हो, रंज हो, ग़म हो, तकलीफ़ व ईज़ा हो, हत्ता

---

१ बीमारी २ नंगी ३ आरोग्य ४ कष्ट, दुःख ५ वार्त्ता ६ प्रायश्चित्।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कि उसके एक काँटा भी चुभे, अल्लाह तआ़ला उसके सिलः में उसकी ख़ताएँ मुआफ़ कर देता है। [बुख़ारी, मुस्लिम]

१४ मुसीबत इनायत-इलाही की दलील है

हज़्रत इब्नि मस्ऊ़द (र०) से रिवायत है कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। आपको हरारत[1] थी। मैंने कहा या रसूलुल्लाह! आपको हरारत और सख़्त हरारत है। फ़रमाया हाँ, मुझको ऐसी हरारत है जैसे तुममें से दो को हो। मैंने कहा यह इसलिए कि आप को दोहरा अज्र मिले। फ़रमाया हाँ, जिस मुसलमान को कोई मुसीबत पहुँचे, काँटे चुभने की हो या उससे ज़ियादः, अल्लाह तआ़ला उसके सबब उसकी बुराइयाँ दूर कर देता है, जिस तरह दरख़्त अपने पत्तों को झाड़ता है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—अल्लाह तआ़ला जब किसी के साथ भलाई करना चाहता है तो उसको किसी मुसीबत में मुब्तिलः करता है। [बुख़ारी]

मौत की आरज़ू न करे

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—जब तुममें से कोई किसी मुसीबत में मुब्तिलः हो तो मौत की आरज़ू न करे। अगर मजबूर हो जाये तो कहे ऐ अल्लाह! मुझको ज़िन्दः रख अगर ज़िन्दगी मेरे लिए बेहतर है; और मुझको मौत दे अगर मौत मेरे लिए बेहतर है। [बुख़ारी, मुस्लिम]

१६ अगलों की आज़माइशें और उनकी इस्तिक़ामत[2]

हज़्रत अबू अब्दुल्लाह (र०) ख़ब्बाब बिन अल्अरत्त से रिवायत है कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शिकायत की। आप एक चादर से टेक लगाये हुए काबः के साये में बैठे थे। हमने कहा, या रसूलुल्लाह! आप आप हमारे लिए मदद क्यों नहीं चाहते, आप हमारे लिए दुआ़ क्यों नहीं करते? आपने फ़रमाया—अगली उम्मतों में आदमी पकड़े जाते फिर उनके लिए गढ़े खोदे जाते थे और उसमें उनको लिटाया जाता था और आरा उनके

---

१ ज्वर-ताप २ दृढ़ता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सरों पर रखकर सर के दो टुकड़े कर दिये जाते थे और लोहे की कंघी उनके सरों में की जाती थी जो हड्डी और गोश्त में धँसती हुई निकल जाती थी। मगर यह तकलीफ़ें उनको दीन से नहीं हटाती थीं। ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआ़ला इस काम को ज़रूर पूरा करेगा यहाँ तक कि एक सवार सन्आ़ से हज़्-मौत की तरफ़ चलेगा और अल्लाह के सिवा किसी से न डरेगा§। हाँ भेड़िये का उसको अपनी बकरियों के लिए ख़तरः हो सकता है। लेकिन तुम जल्दबाज़ी करते हो। [बुख़ारी]

१६ हज़्रत मूसा अ० का सब्र

हज़्रत इब्नि मस्ऊ़द (र०) से रिवायत है कि हुनैन के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तक़्सीम[1] में कुछ लोगों को तर्जीह[2] दी। अक़्रअ बिन हाबिस को सौ ऊँट दिये, उ़यैनः बिन हुसैन को भी इसी तरह दिया, और कुछ लोगों को भी दिया। शुरफ़ाए अ़रब को उस दिन तक़्सीम में तर्जीह दी। एक आदमी ने कहा, यह तक़्सीम अद्ल[3] के साथ नहीं की गई। मैंने कहा, मैं इसकी ख़बर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़रूर दूँगा। जब मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और आपको ख़बर दी तो आपका चेहरा मुबारक सुर्ख़ हो गया; फिर आपने फ़रमाया कि अगर अल्लाह और उसका रसूल भी अद्ल न करे तो कौन अद्ल करेगा; और फ़रमाया, अल्लाह मूसा पर रह्म करे, इससे ज़ियादः तकलीफ़ उनको दी जाती थी और वह सब्र करते थे। मैंने दिल में कहा, अब मैं आपको कोई तकलीफ़दिः[4] बात न पहुँचाऊँगा।

१७ दुनिया में सज़ा का मिल जाना इनायत की दलील है

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—जब अल्लाह तआ़ला अपने किसी बन्दे पर भलाई का इरादः करता है तो दुनिया में उसके लिए सज़ा में जल्दी करता है और जब किसी बन्दे पर बुराई का इरादः करता है तो उसको ढील दे देता है

§ यह वाक़िअः पेश आया और इसी अरब में जिसमें दिन दहाड़े क़ाफ़िले लुटते थे, लोगों ने अपनी आँखों से देखा कि एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक बुढ़िया बेख़ौफ़ व ख़तर गुज़र जाती है और कोई टोकने वाला नहीं।

१ मालें-ग़नीमत (युद्ध में प्राप्त सम्पत्ति) का बँटवारा २ वरीयता, श्रेष्ठता ३ न्याय ४ पीड़ाकारक।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कि वह गुनाहों में और फँसे; यहाँ तक कि क़ियामत के दिन उसको पूरा-पूरा बदला देता है। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—बड़ी बला का बड़ा बदलः है; और अल्लाह तआला को जिन लोगों से मुहब्बत होती है उनकी आज़माइश करता है। पस जो शख़्स उससे राज़ी हो तो उसके लिए राज़ी होता है और जो नाराज़ हो तो उसके लिए नाराज़ी है। [तिर्मिज़ी]

१८/४१ एक सहाबियः का सब्र और अक़्ल

हज़रत अनस (र०) से रिवायत है कि अबू तलहः (र०) के एक लड़का था और वह बीमार था। अबु तलहः कहीं गये हुए थे; उनकी अदम मौजूदगी में लड़के का इन्तिक़ाल हो गया। जब वह पलटे तो पूछा मेरे लड़के का क्या हाल है। बीवी ने (जो उस लड़के की माँ थी) कहा कि वह पहले की बनिस्बत अब आराम से है। फिर खाना पेश किया, उन्होंने खाया फिर उनके साथ रहे-सहे और रात गुज़ारी। बाद में बीवी ने कहा कि लड़के को दफ़न कर दो। सुबह को अबू तलहः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये और आपको ख़बर दी, आपने फ़रमाया कि रात को तुम साथ रहे? अबू तलहः (र०) ने कहा—हाँ। आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! बर्कत दे; तो एक लड़का पैदा हुआ। हज़रत अनस (र०) कहते हैं कि मुझसे अबू तलहः(र०) ने कहा कि इसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ले जाओ और उसके साथ कुछ खजूरें। चुनांचे मैं लाया। आपने फ़रमाया, इसके साथ कुछ है? मैंने कहा हाँ खजूरें हैं। आपने उसको लेकर मुँह में रक्खा और कुचल कर उनके तालू में लगा दिया और अब्दुल्लाह (र०) नाम रक्खा।

बुख़ारी की एक रिवायत में है इब्नि उयैनः ने कहा कि एक बुज़ुर्ग ने मुझसे कहा कि मैंने अब्दुल्लाह के दस लड़के देखे और सब हाफ़िज़ क़ुर्आन थे।

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि अबू तलहः (र०) के लड़के का जब इन्तिक़ाल हुआ (जो उम्मि सुलैम र० से था) तो उम्मि सुलैम (र०) ने अपने घरवालों से कहा कि जब तक मैं न कहूँ अबू तलहः (र०) से न बताना। अबू तलहः (र०) आये, उन्होंने खाया-पिया, उम्मि सुलैम (र०) ने अच्छे कपड़े ओढ़े-पहने। अबू तलहः रात को रहे-सहे, जब उन्होंने देखा कि वह मुत्मइन हो गये तो उम्मि सुलैम (र०) ने कहा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऐ अबू तलहः ! लोगों ने किसी ख़ान्दान को कोई चीज़ आरियतन[1] दी, अब वह तलब करते हैं। क्या उन घरवालों को यह हक़ है कि वह वापस न करें, रक्खे रहें ? अबू तलहः (र०) ने कहा नहीं, कहा तो बस अपने लड़के से सब्र करो और अपने अल्लाह से सवाब के उम्मीदवार रहो। अबू तलहः (र०) ग़ुस्सः हुए और कहा, मुझसे पहले तो बतलाया नहीं, अब बतलाती हो। फिर आप (सल्लल्लाहु) के पास आये और इसका ज़िक्र किया। आपने फ़रमाया—अल्लाह उस रात में बर्कत दे। कहा, वह बच्चा पेट में था और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक सफ़र में थीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी सफ़र से तश्रीफ़ लाते तो रात को तश्रीफ़ नहीं लाते थे। जब मदीना के क़रीब हुए, उम्मि सुलैम को तकलीफ़ हुई। तो अबू तलहः (र०) ठहर गये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे बढ़ गये। अबू तलहः (र०) ने कहा, ऐ अल्लाह ! तू जानता है कि मुझे यह पसन्द है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ निकलूँ और आपके साथ दाख़िल हूँ, और मैं ठहर गया हूँ जैसा कि तू देख रहा है। उम्मि सुलैम (र०) ने कहा, ऐ अबू तलहः (र०), जैसी तकलीफ़ पहले होती थी इस वक़्त वैसी नहीं है। हज़्रत अनस (र०) कहते हैं कि हम लोग चले और उनको तकलीफ़ शुरू हुई, जब वह दोनों आये तो लड़का पैदा हुआ। मेरी माँ ने मुझसे कहा, अनस! इस बच्चे को इस वक़्त दाई के सिपुर्द न किया जाये, जब तक तुम इसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर न कर दो। सुबह मैंने बच्चे को उठाया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और ऊपर का क़िस्सा बयान किया।

११/४२ ग़ुस्सः को ज़ब्त करना और उसकी फ़ज़ीलत[2]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—बहादुर वह नहीं जो किसी को पछाड़ दे, बहादुर वह है जो ग़ुस्सः के वक़्त अपने नफ़्स को क़ाबू में रक्खे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२०/४३ ग़ुस्सः का अिलाज

हज़्रत सुलैमान बिन सुरद से रिवायत है कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठा था और दो आदमी लड़ रहे थे। उनमें

---

१ मंगनी २ श्रेष्ठता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का एक दूसरे को गाली दे रहा था और चेहरः सुर्ख़ था, रगें फूल रही थीं। आपने फ़रमाया कि मैं एक कलिमः जानता हूँ, अगर यह कहे तो ग़ुस्सः इससे दूर हो जाये। फ़रमाया—"अऊ़ज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्-रजीमि"। इसके सबब से जो ग़ुस्सः उसको आरहा है जाता रहेगा। उन्होंने उससे कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि "अऊ़ज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीमि" कहो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२१/४४ क़ुदरत के बावजूद ग़ुस्सः दबाने का इनआ़म

हज़्रत मुआज़ बिन जबल से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—जो अपने ग़ुस्से को ऐसे वक़्त में पी जाये कि वह अ़मल में ला सकता है तो अल्लाह तआ़ला उसको मख़्लूक़ के[1] रूबरू क़ियामत के दिन बुलाये गा, यहाँ तक कि उसको इख़्तियार देगा कि फ़राख़-चश्म[2] हूरों में से जिसको चाहे पसन्द कर ले। [अबू दाऊद, तिर्मिज़ी]

२२/४६ ग़ुस्सः न करने की वसीयत

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि मुझे वसीयत कीजिए; आपने फ़रमाया कि ग़ुस्सः न करना। उसने फिर यही कहा कि मुझे वसीयत कीजिए; आपने फ़रमाया कि ग़ुस्सः न करना§।

२३/४६ दुन्यावी मुसीबतें मुसलमान को गुनाहों से पाक व साफ़ कर देती हैं

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—मोमिन मर्द और मोमिनः औरतों पर उनकी जानों, मालों और औलाद में बराबर आज़माइशें रहती हैं। यहाँ तक कि वह अल्लाह तआ़ला से ऐसी हालत में मिलेंगे कि वह गुनाहों से पाक व साफ़ हो चुके होंगे। [तिर्मिज़ी]

२४/४७ जाहिलों से दरगुज़र करना[3] और क़ुर्आन की तामील[4] की एक मिसाल

हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन अब्बास से रिवायत है कि उ़यैनः बिन हुसैन आये और अपने भतीजे हुर बिन क़ैस के यहाँ उतरे। हज़्रत हुर

---

§ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर शख़्स के हालात और ज़रूरत के मुताबिक़ ख़ुसीसी नसीहत व हिदायत फ़रमाते थे। यह साहब ग़ालिबन ग़ज़बनाक और ग़ुस्सःवर आदमी थे; इनके लिए इसी ताक़ीद की ज़रूरत थी।

१ लोगों के २ बड़ी आँखों वाली ३ अनदेखा करना, टाल जाना ४ आज्ञापालन।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उन लोगों में थे जो हज़्रत उमर (र०) के नज़दीक रहते थे। हज़्रत उमर (र०) के मुक़र्रब[1] व हमनशीं[1] आलिम हुआ करते थे; ख़्वाह अधेड़ उम्र के हों या जवान। उ़यैनः ने कहा, ऐ मेरे भतीजे! अमीर के यहाँ तेरी इज़्ज़त है सो मेरे लिए इजाज़त तलब कर, उन्होंने इजाज़त चाही। हज़्रत उमर (र०) ने उनको इजाज़त दी। जब वह आये, कहा ऐ बिन अल् ख़त्ताब! तुम हमको ज़ियादः नहीं देते हो और हमारे दर्मियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसलः नहीं करते हो। हज़्रत उमर (र०) ग़ुस्सः हुए। क़रीब था कि उन पर हाथ उठायें। हज़्रत हुर (र०) ने कहा, या अमीरुल्मोमिनीन! अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रमाया—ख़ुज़िल् अ़फ़्व वअ्मुर् बिल्अ़ुर्फ़ि व अअ़्रिज़् अ़निल्जाहिलीन (मुआफ़ी इख़्तियार करो, नेकी का हुक्म दो और जाहिलों से एराज़[2] करो)।

बेशक यह जाहिल हैं। ख़ुदा की क़सम उमर (र०) यह आयत सुनकर बाल बराबर भी आगे नहीं बढ़े।‡

३८ ख़ुदग़र्ज़ी और बेइन्साफ़ी पर सब्र

हज़्रत इब्नि मस्ऊ़द (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अंन्क़रीब मेरे बाद ख़ुदग़र्ज़ी और बे इन्साफ़ी देखने में आयेगी और ऐसे उमूर[3] जिन को तुम नापसन्द करोगे। उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह! फिर आप हमें क्या हुक्म देते हैं? आपने फ़रमाया—जिसका तुम पर हक़ हो, अदा करना और तुम अपने हक़ के मिलने की दुआ़ करते रहना§।

हज़्रत उसैद बिन हुज़ैर (र०) से रिवायत है कि एक अन्सारी ने कहा, या रसूलुल्लाह! आप हमको कोई उहदः क्यों नहीं अता फ़रमाते

---

‡ यह ज़ब्ति नफ़्स बल्कि बेनफ़्सी और क़ुर्आन मजीद के इहतिराम की आ़ला मिसाल है। सिरे से ग़ुस्सः न आना इतना बड़ा कमाल नहीं मगर जोशेग़ज़ब में क़ुर्आन की आयत सुनते ही ठण्डा पड़ जाना अ़ब्दिय्यत (बन्दगी) का आ़ला नमूना है।

§ दो चीज़े हैं। अदायें-फ़राइज़[4] व मुतालबः हुक़ूक़[5]—इस्लाम में अदाये फ़र्ज़ पर ज़्यादः ज़ोर दिया गया है और मौजूदः तमद्दुन[6] व सियासत[7] में मुतालबः हुक़ूक़ पर। दोनों के नतायज में वही फ़र्क़ है जो लाज़िमन होना चाहिए।

---

१ पास बैठनेवाले, सभासद २ उपेक्षा ३ मसले ४ कर्तव्य ५ अधिकार ६ सभ्यता ७ राजनीति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जैसे फ़लाँ को अता फ़रमाया। आपने फ़रमाया—तुम अन्क़रीब मेरे बाद ख़ुदग़र्ज़ी और बेइन्साफ़ी देखोगे। पस सब्र करना यहाँ तक कि मुझसे हौज़ कौसर पर मिलो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

३६ दुश्मन से मुक़ाबल: की तमन्ना न करो, मुक़ाबल: हो तो सब्र से काम लो
हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन अबू अवफ़ा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दिन दोपहर ढले तक दुश्मनों से मुक़ाबल: का इन्तिज़ार किया। फिर फ़रमाया, ऐ लोगो! दुश्मनों से मिलने की आर्ज़ू न करना और आफ़ीयत[1] माँगना; अगर उनका सामना हो जाये तो फिर सब्र और साबितक़दमी से काम लेना। और जान लो कि जन्नत तलवारों के साये में है। फिर फ़रमाया कि अल्लाहुम्म मुन्ज़िलल्-किताबि व मुज्रियस्सहाबि व हाज़िमल्-अह्ज़ाबि अह्ज़िम्हुम् वन्सुर्ना अलैहिम् (ऐ अल्लाह किताब के उतारने वाले! और बादलों के दौड़ाने वाले! और लश्करों को हज़ीमत[2] देने वाले! इनको हज़ीमत दे और इन पर हमारी मदद फ़रमा।)

सदाक़त[3] व रास्ती[4]

आयात

या[1] अय्युहल्लज़ीन आमनुत्तक़ुल्लाह व कूनू मअस्सादिक़ीन।

ऐ ईमानवालो! अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ रहो।§

[पार: ११ सू० तौब: रु० १५।आयत ११६]

वस्सादिक़ीन वस्सादिक़ाति..........अज़ीमन्।

सच बोलने वाले मर्द और सच बोलने वाली औरतें।

[पार: २१ सू० अह्ज़ाबि रु० ५ आयत]

§ इस आयत में अच्छे और सच्चे लोगों की सुहबत इख़्तियार करने और उनके नक़्शेक़दम[5] पर चलने की ताकीद की है।

१ शान्ति २ पराजय ३ सच्चाई, ४ सदाचारिता ५ पदचिह्न।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फ़लौ सदक़ुल्लाह लकान ख़ैरल्लहुम् ज ।

अगर वह अल्लाह से सच्चाई का मुआमला करें तो यह उनके लिए बेहतर है। [पार: २६ सूरतु मुहुम्मदिन् रु० ३ आयत २१]

अहादीस

द१० रास्ती नेकी की रहबर[1] है

हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन मस्ऊद से रिवायत है—वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं। आपने फ़रमाया कि सच नेकी की तरफ़ हिदायत करता है और नेकी जन्नत की तरफ़ हिदायत करती है। आदमी सच बोलता है यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसको अपने पास सच्चों में लिखता है; और झूठ गुनाहों पर आमादः करता है और गुनाह दोज़ख़ की तरफ़ ले जाते हैं।* आदमी झूठ बोलता है। यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसको झूठों और लाग़ियों में लिख लेता है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

द२१ सच इत्मीनान[3] है

हज़्रत हसन (र०) बिन अली (र०) बिन अबीतालिब से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमाना याद है कि छोड़ दो जो तुमको शक में डाले और उस चीज़ को इख़्तियार करो जिससे तुम्हारे दिल में खटक न पैदा हो। पस बेशक सच इत्मीनान है, और झूठ शक है। [तिर्मिज़ी]

द३२ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम

हज़्रत अबू सुफ़यान (र०) से रिवायत है कि वह अपनी लम्बी हदीस में हिरक़्ल के क़िस्से में बयान करते हैं कि हिरक़्ल ने कहा, तुमको किस चीज़ का हुक्म देते हैं (यानी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)। अबू सुफ़यान कहते हैं, मैंने कहा हमको हुक्म देते हैं कि अल्लाह की

---

* मामूली रोज़मर्रः की बातों में छोटे-छोटे झूठ बोलने से अल्लाह के दफ़्तर में कज़्ज़ाबों[4] और लाग़ियों में उसका नाम दर्ज होता है।

---

१ राह दिखाने वाली २ डींगियों ३ तुष्टि ४ झूठों।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अिबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो और जो तुम्हारे बाप-दादा कहते हैं उसको छोड़ दो और हमको नमाज़ और सच्चाई, सद्क़:, सिल:रह्मी[1] और पाकदामनी[2] का हुक्म देते हैं। [बुख़ारी-मुस्लिम]

८४/३ सच्चे दिल से दुआ़ मक़बूल[3] होती है

हज़्रत सुहैल बिन हुनैफ़ (र०) से रिवायत है (वह बदरी थे) कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो अल्लाह तआ़ला से शहादत[4] का सच्चाई के साथ सवाल करेगा तो अल्लाह उसको शहीदों के मर्तब: को पहुँचाए गा, अगरचि: वह अपने बिस्तर पर मरे। [मुस्लिम]

८६/४ थोड़ा सा झूठ सारे सच को ग़ैर-मक़बूल[5] बना देता है

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि किसी नबी ने एक ग़ज़्व:[6] किया—उन पर अल्लाह का दुरूद और सलामती हो। उन्होंने कहा—मेरे साथ ऐसा आदमी न हो जिसने शादी की हो और न ऐसा कि जिसने घर बनाया हो और उसकी छतों को अभी न उठाया हो और न ऐसा कि जिसने बकरियाँ या उँटनियाँ ख़रीदी हों और उनके बच्चों का इन्तिज़ार§ हो। फिर उन्होंने कूच किया, अ़स्र के वक़्त या उससे पहले एक बस्ती के क़रीब हुए। सूरज से कहा कि तू भी अपने काम पर मामूर[7] है और हम भी मामूर हैं। फिर कहा ऐ अल्लाह! इसको ठहरा दे, पस वह ठहर गया, यहाँ तक कि अल्लाह ने उनको फ़तह दी। उन्होंने ग़नीमत[8] जमा की, आग आई कि उसको खाये और न खाया। उन्होंने कहा तुम में चोरी है, हर क़बील: का आदमी हमसे बैअ़त करे। जब बैअ़त की तो एक आदमी का हाथ उनके हाथ पर चिपक गया; फिर कहा तुममें चोरी है, तुम्हारा क़बील: मुझसे बैअ़त करे तो दो या तीन के हाथ उनके हाथ पर चिपक गये; फिर कहा तुममें चोरी है तो एक सोने का सर गाय के सर की तरह लाये और उसको रक्खा। फिर आग आई और उसको खा लिया और

§ इसलिए कि उनका दिल उन चीज़ों की तरफ़ अटका रहेगा। बेजिगरी[9] और यकसूई[10] के साथ जिहाद न कर सकेंगे। ज़िन्दगी उनको अ़ज़ीज़ होगी, मरने से गुरेज़[11] करेंगे और शहादत[12] का पूरा इश्तियाक़[13] न होगा।

१ सम्बन्धियों का ध्यान रखना २ सच्चरित्रता ३ स्वीकृत ४ वीरगति ५ अस्वीकृत, व्यर्थ ६ धर्मयुद्ध ७ नियुक्त ८ युद्ध में प्राप्त धन ९ निर्भयता १० निश्चितता, तल्लीनता ११ परहेज़ १२ प्राणोत्सर्ग १३ चाव, उत्कण्ठा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ग़नीमत हमसे पहले किसी के लिए जाइज़ न थी, अल्लाह ने जब हमारी कमज़ोरी और ज़ो'फ़[1] को देखा तो उसको हमारे लिए जाइज़ कर दिया ।§ [बुख़ारी-मुस्लिम]

८८ झूठ से तिजारत की बर्कत जाती रहती है

हज़्रत अबू ख़ालिद बिन हकीम बिन हिज़ाम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—ख़रीद व फ़रोख़्त करने वालों को इख़्तियार है जब तक अलग न हों अगर वह सच बोलें तो उनकी सौदागरी में बर्कत दी जायगी और अगर झूठ बोलें तो उनकी सौदागरी की बर्कत मिटा दी जायगी‡ ।

ग़ौर और ध्यान

आयात

अ़ल्लज़ी यराक ह़ीन तक़ूमु ला । व तक़ल्लुबक फ़िस्साजिदीन ।

वह तुमको देखता है जब तुम खड़े होते हो और नमाज़ियों में तुम्हारे फिरने और देख-भाल करने को ।

[पार: १९ सूरतुश्शुअ़रा'अि रु० ११ आयत २१८-२१९]

व हुव मअ़कुम् अैनमा कुन्तुम् ।

जहाँ कहीं तुम हो वह तुम्हारे साथ है ।

[पार: २८ सू० ह़दीद रु० १ आयत ४]

अिन्नल्लाह ला यख़्फ़ा अ़लैहि शैअुन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा'अि ।

§ पहल ज़माने में मालॅ ग़नीमत (युद्ध में प्राप्त शत्रु-धन) तक़सीम न होती थी । आसमानी आग आ कर उसे चट कर जाती थी । लेकिन जब लोग चोरी करने लगे तब उनकी इस कमज़ोरी पर अल्लाह ने रहम किया और मालॅ ग़नीमत बाँट लेने की इजाज़त दे दी ।

† अगर अलग हो गये तो सौदा हो चुका अब मुआ़मला फ़स्ख़[2] नहीं हो सकता ।

‡ एक चीज़ है रुपया की ज़ियादती और एक चीज है बर्कत । बर्कत यह है कि उससे मुतमत्तिअ[3] होने का उनको मौक़ा मिले, रुपया काम आये, नेक अमल की तौफ़ीक़ हो—यह नहीं होगा ।

१ पस्तगी २ बदला ३ फ़ायदः उठाना ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बेशक अल्लाह पर कोई बात नहीं छुपी, न ज़मीन की न आसमान की।
[पार: ३ सू० ३ आलि अिम्रान रु० १ आयत ५]

अिन्न रब्बक लबिल्मिर्सादि ॥।

बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता घात में है।
[पार: ३० सू० ८६ फ़ज्रि रु० १ आयत १४]

यअ़्लमु ख़ाअिनतल्-अअ़्युनि व मा तुख़्फ़िस्सुदूरु। वल्लाहु यक़्ज़ी बिल्हक़्क़ि ॥ वल्लज़ीन यद्अ़ून मिन् दूनिही ला यक़्ज़ून बिशैअिन् ॥ अिन्नल्लाह हुवस्समीअ़ुल्-बसीरु।

वह जानता है आखों की ख़ियानत को और जो दिलों में पोशीद: रहता है और अल्लाह हक़ के साथ फ़ैसला करता है और जो उसके सिवा दूसरे को पुकारते हैं वह किसी चीज़ के साथ फ़ैसल: नहीं करते, बेशक अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।
[पार: २४ सू०मुअ़्मिनि रु० २ आयत १६-२०]

अहादीस

[१] नमाज़ इस ध्यान के साथ कि हम ख़ुदा को देख रहे हैं, अगर हम उसको नहीं देखते तो वह हमको देख रहा है

हज़्रत उमर (र०) बिन अल्ख़त्ताब से रिवायत है कि एक रोज़ हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे। एक आदमी बहुत सफ़ेद कपड़े वाला और बहुत काले बाल वाला आया, उस पर सफ़र का निशान न था। हम लोग उसको नहीं पहचानते थे, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठ गया। अपने घुटने आपके घुटने से मिला दिये और अपनी हथेली आपके ज़ानू पर रख दी, और कहा—या मुहम्मद (र०)! मुझको इस्लाम के मुतअल्लिक़ ख़बर दीजिए। आपने फ़रमाया, इस्लाम यह है कि कहो अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अन्न मुहम्मदर्-रसूलुल्लाहि। नमाज़ पढ़ो, ज़कात दो और रमज़ान के रोज़े रक्खो। अगर इस्तिताअ़त[1] हो तो ख़ानें काबा का हज करो। कहा, आपने सच फ़रमाया। हज़्रत उमर (र०) कहते हैं कि हम लोगों को हैरत हुई कि पूछता भी है और तस्दीक़ भी

१ सामर्थ्य।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करता है। फिर कहा कि ईमान के बारे में ख़बर दीजिए। आपने फ़रमाया, अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके फ़िरिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके पैग़म्बरों और आख़िरत के दिन पर और अच्छी-बुरी तक़दीर पर। कहा आपने सच कहा, अब इहसान के मुतअ़ल्लिक़ बतलाइए। फ़रमाया, अल्लाह की अ़िबादत इस तरह करो गोया तुम अल्लाह को देख रहे हो, अगर तुम उसको नहीं देखते तो वह तुमको देखता है। कहा, क़ियामत के मुतअ़ल्लिक़ मुझ को ख़बर दीजिए। आपने फ़रमाया, जिससे पूछा जा रहा है वह सायल[1] से ज़ियादः नहीं जानता। कहा, अच्छा उसकी निशानियाँ क्या हैं? कहा लौण्डी अपनी मालिका को पैदा§ करे और नंगे पाँव फिरने वाले, नंगे बदन, मुहताज लोग, बकरी चराने वाले एक दूसरे से बढ़-बढ़कर महल बनाएँ। फिर वह चले गये। बाद में आपने फ़रमाया, ऐ उमर (र०) तुम जानते हो यह सायल कौन था? मैंने कहा अल्लाह और उसके रसूल ज़ियादः जानते हैं। आपने फ़रमाया, वह जिबरील थे, तुम्हारे पास आये थे ताकि तुमको तुम्हारा दीन सिखायें।

८७[2] अल्लाह का ख़ौफ़

हज़्रत अबू ज़र (र०) और हज़्रत मआ़ज़ बिन जबल (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जहाँ भी तुम हो अल्लाह से डरो और बुराई के बाद नेकी करो। वह उस बुराई को मिटा दे गी और लोगों के साथ अच्छे इख़्लाक़ से पेश आओ।

८८[3] अल्लाह की याद उसी से सवाल उसी से इस्तमदाद[2]

हज़्रत इब्नि अ़ब्बास (र०) से रिवायत है कि एक रोज़ मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे था। आपने फ़रमाया, ऐ लड़के! मैं तुझको चन्द बातें सिखा दूँ। अल्लाह के हुक्मों की निगहदाश्त कर[3], वह तेरी हिफ़ाज़त करेगा; अल्लाह को याद कर, तू उसको अपने सामने पायेगा; और जब सवाल करना तो अल्लाह ही से सवाल करना, और जब मदद चाहना तो उसी से मदद चाहना, और जान ले कि अगर

§ इससे लौंडियों की कसरत और उसकी औलाद की तरक़्क़ी की तरफ़ इशारः है।

१ प्रश्नकर्ता २ मदद मांगना ३ सुरक्षा कर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सारी दुनिया इस बात पर इत्तिफ़ाक़ करे कि तुझको नफ़ा पहुँचाये तो तुझको कुछ नफ़ा नहीं पहुँचा सकती मगर वही जो तेरे लिए अल्लाह ने लिख दिया है। और अगर सारी दुनिया इस बात पर इत्तिफ़ाक़ करे कि तुझको नुक़सान पहुँचाये तो नुक़सान नहीं पहुँचा सकती मगर वही जो अल्लाह ने तेरे लिए लिख दिया है। क़लम उठा लिये गये और सहीफ़े ख़ुश्क कर दिये गये। और एक रिवायत में है कि अल्लाह का ध्यान रक्खो, तुम उसको अपने सामने पाओगे; और आराम के ज़माने में अल्लाह से तअल्लुक़ पैदा कर लो, मुसीबत के वक़्त काम आयेगा। और याद रक्खो जो तुमसे चूक गया वह तुम्हें पहुँचने वाला ही न था और जो पहुँचा वह ख़ता ही नहीं हो सकता था। याद रक्खो कि सब्र के साथ मदद है, मुसीबत के साथ कुशाइश[1] है और मुश्किल के साथ आसानी है।

६४ बाज़ आमाल को मामूली समझना

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि तुम अमल करते हो और वह तुम्हारी निगाह में बाल से ज़ियादह हक़ीक़त नहीं रखते और हम उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अह्द[2] में हलाक कर देने वाले आमाल में शुमार करते थे।

६० अल्लाह की ग़ैरत[3]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—अल्लाह तआला को ग़ैरत आती है, और अल्लाह तआला की ग़ैरत यह है कि इन्सान वह अमल करे जो अल्लाह ने उस पर हराम किया था।

६८ अपनी साबिकः[4] हालत याद रखना

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि बनी इस्राईल के ज़माने में तीन आदमी थे। एक कोढ़ी, दूसरा गंजा, तीसरा अन्धा। अल्लाह तआला ने उनकी

---

† यानी गुज़िश्तः वाक़िआत पर अफ़सोस न करो। जो कुछ हुआ वह होने वाला ही था और जो नहीं हुआ वह होता ही नहीं। अफ़सोस से क्या हासिल (कैला तअ्सौ अला मा फ़ा तकुम् व ला तफ़रहू बिमा आताकुम्) (अब मुक़द्दर है, जो रह गया उस पर हस्रत[5] न करो जो मिला उस पर इतराओ नहीं)।

---

१ वृद्धि २ ज़माने में ३ लज्जा ४ बीती हुई ५ दुःख, निराशा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आज़माइश का इरादः किया, उनके पास एक फ़िरिश्ता भेजा। फ़िरिश्ता पहले सफ़ेद दाग़ वाले के पास आया और कहा, तुझे कौन सी चीज़ महबूब[1] है ? उसने कहा अच्छा रंग और अच्छी जिल्द। और मुझ से यह बीमारी दूर हो जाये जिसकी वजह से लोग मुझसे नफ़रत करते हैं। फ़िरिश्तः ने उसके बदन पर हाथ फेरा तो अच्छी जिल्द और अच्छा रंग नसीब हुआ। कहा, कौन सा माल तुझे पसन्द है ? कहा, ऊँट या गाय (रावी को शक है)। फ़िरिश्ता ने एक गाभिन उँटनी दी और बरकत की दुआ की। फिर गंजे के पास आया और कहा तू क्या चाहता है ? कहा, मैं चाहता हूँ कि मेरा गंज दूर हो जाये जिसके सबब से लोग मुझसे परहेज़ करते हैं, और अच्छे बाल की ख़्वाहिश है। फ़िरिश्तः ने उस के सर पर हाथ फेरा तो उसका गंज दूर हो गया और अच्छे बाल निकल आये। कहा, कौन सा माल तुझे मर्ग़ूब[2] है ? कहा, गाय। पस एक गाभिन गाय उसको दी और बर्कत की दुआ की। फिर अन्धे के पास आया और कहा, तेरी क्या ख़्वाहिश है ? कहा, मैं चाहता हूँ कि अल्लाह तआला मेरी आखों को बीनाई[3] अता फ़रमाये ताकि मैं लोगों को देख सकूँ। फ़िरिश्ता ने उसकी आँखों पर हाथ फेरा तो उसकी बसारत[4] पलट आई। कहा, तुमको कौन सा माल पसन्द है ? कहा, बकरी। पस उसको एक गाभिन बकरी दी। कुछ अर्सः बाद इन तीनों के जानवरों से मैदान भर गये। चन्द दिन बाद फ़िरिश्ता उसी सूरत और उसी हैअत (सूरत) में कोढ़ी के पास आया और कहा कि मैं ग़रीब आदमी हूँ, मेरी राह खोटी हुई, मैं आज के दिन नहीं पहुँच सकता। तुझे अल्लाह का वास्ता देकर सवाल करता हूँ कि जिसने तुझको अच्छी जिल्द और अच्छी खाल इनायत की, उस मुझको रास्ते का ख़र्च दे ताकि मैं पहुँच जाऊँ। सफ़ेद दाग़ वाले ने कहा मुझ पर बहुत हुक़ूक हैं। फ़िरिश्ता बोला ग़ालिबन मैं तुझको पहचानता हूँ तू फ़क़ीर था और मब्रूस भी। लोग तुझसे नफ़रत करते थे। अल्लाह तआला ने तुझ पर इहसान किया। कहा, वाह यह दौलत मेरे घर में बाप-दादों से चली आती है। फ़िरिश्ते ने कहा, अगर तू झूठा है तो ख़ुदा तुझको वैसा ही कर दे। फिर गंजे के पास आया और वैसा ही सवाल किया जैसे कोढ़ी से किया था। गंजे ने वही जवाब दिया। फ़िरिश्ता ने कहा, अगर तू झूठा है तो ख़ुदा तुझको वैसा ही कर दे। फिर अन्धे के पास आया और कहा—मैं ग़रीब

---

१ प्रिय २ रुचिकर ३ दृष्टि ४ ज्योति ५ यानी मुझ पर बहुत ज़िम्मेदारियाँ हैं ६ सफ़ेद कोढ़ का रोगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आदमी हूँ, अपने वतन नहीं पहुँच सकता, तुझको अल्लाह का वास्ता देता हूँ जिसने तुझको बसारत अता फ़रमायी, मुझको रास्ते का ख़र्च दे ताकि मैं पहुँच जाऊँ। उसने कहा, बेशक मैं अन्धा था, अल्लाह तआ़ला ने मेरी आँखों को रौशन किया, तेरा जितना जी चाहे ले और जितना चाहे छोड़। ख़ुदा की क़सम मैं आज के दिन तुझसे न झगड़ूँगा, जिस चीज़ को तू ख़ुदा के नाम पर ले लेगा। फ़िरिश्ते ने कहा तेरा माल तुझे मुबारक हो, अल्लाह ने महिज़ आज़माइश[1] की थी। पस तुझसे अल्लाह राज़ी हुआ और तेरे उन दोनों साथियों से नाराज़ हुआ। [बुख़ारी-मुस्लिम]

६७ नफ़्स का एहतिसाब[2]

हज़रत शद्दाद (र०) बिन औस से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अक़्लमन्द वह शख़्स है जो अपने नफ़्स का जाइज़ः[3] ले और आख़िरत के लिए अमल करे; पीछे रह जाने वाला वह है जो अपने नफ़्स को ख़्वाहिशों के पीछे डाल दे और अल्लाह से बड़ी-बड़ी उम्मीदें लगाये बैठा रहे। [तिर्मिज़ी]

६८ लायानी[5] बात से एहतिराज़[6]

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, आदमी के इस्लाम की एक बड़ी ख़ूबी यह भी है कि उस चीज़ को छोड़ दे जो उसके मतलब की न हो।† [तिर्मिज़ी]

---

† जो न दुनिया की ज़रूरियात में से हो, न उस पर कोई सवाब मिलता हो, न उससे उसका बराहेरास्त कुछ तअ़ल्लुक़ हो। अल्लाह से डरना जैसा हक़ है, बड़ा मुश्किल काम है।

१ परीक्षा मात्र २ इन्द्रियनिग्रह ३ जाँच, देखभाल ४ अन्तिम फ़ैसले का दिन ५ व्यर्थ ६ बचना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ख़ुदा का अदब व लिहाज़

आयात

या' अय्युहल्लजीन आमनुत्तक़ुल्लाह हक़्क़ तुक़ातिही ।

ऐ ईमानवालो ! अल्लाह का लिहाज़ करो जैसा उसका लिहाज़ रखना चाहिए । § [पार: ४ सूर: आलि अिम्रान रु. ११ आ. १०२]

फ़त्तक़ुल्लाह मस्ततत़्तुम् वस्मअ़ू व अतीअ़ू व अन्फ़िक़ू ख़ैरल्-लिअन्फ़ुसिकुम् त व मंय्यूक़ शुह्ह नफ़्सिही फ़अुला'अिक हुमुल्-मुफ़्लिहून ।

अल्लाह का लिहाज़ करो जितनी तुम इसकी ताक़त रखते हो और सुनो और इताअ़त करो और ख़र्च करो । तुम्हारी जानों के लिए बेहतर होगा और जो अपनी ज़ान को बुख़्ल[1] से बचाये पस वह लोग कामयाब हैं । [पार: २८ सूर: तग़ाबुनि रु. २ आ. १६]

या' अय्युहल्लजीन आमनुत्तक़ुल्लाह व क़ूलू क़ौलन् सदीदंय्युस्लिह् लकुम् अ़अ़मालकुम् व यग़्फ़िर्लकुम् जुनूबकुम् त व मंय्युतिअ़िल्लाह व रसूलहू फ़क़द् फ़ाज़ फ़ौज़न् अ़ज़ीमन् ।

ऐ ईमानवालो ! अल्लाह का लिहाज़ करो और दुरस्त बात कहो, तुम्हारे अमलों को सवाँर देगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा और जिसने अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त[2] की, वह मुराद को पहुँचा । [पार:२२ सूर: अह्ज़ाबि रु. ६ आ. ७०-७१]

व मंय्यत्तक़िल्लाह यज्अ़ल्लहू मख़्रजंव्व यर्ज़ुक़्हु मिन् हैसु ला यह्तसिबु त ।

---

§ इस आयत ने तश्रीह कर दी कि आदमी जितना अल्लाह का ख़ौफ़ व लिहाज़ कर सके वही हक़ है ।

---

१ कंजूसी २ आज्ञापालन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जो अल्लाह का लिहाज़ करेगा अल्लाह उसके लिए निकलने की जगह कर देगा और ऐसी जगह से रिज़्क़[1] देगा जहाँ से उसको गुमान न होगा। [पार: २८ सूरतुत्तलाक़ि रु. १ आ. २-३]

अिन् तत्तक़ुल्लाह यज्अ़ल् लकुम् फ़ुर्क़ानंव्व युकफ़्फ़िर् अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व यग़्फ़िर्लकुम् ॥ वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीमि।

अगर तुम अल्लाह का लिहाज़ करोगे तो तुम्हारे लिए दलील[2] कर देगा और तुम्हारी बुराइयों को दूर कर देगा और तुमको बख़्श देगा। वह बड़ा फ़ज़्ल वाला है। [पार: ६ सूर: अन्फ़ालि रु. ४ आ. २६]

अहादीस

६७ सब में मुअज़्ज़ज़[3] वह है जो सब से ज़ियादः ख़ुदा से डरनेवाला है

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा गया कि लोगों में बुज़ुर्ग कौन है? आपने फ़रमाया, जो ज़ियादः परहेज़गार है। उन्होंने कहा कि हम इसके मुतअ़ल्लिक़ नहीं पूछते; फ़रमाया, यूसुफ़ नबी अल्लाह और नबी अल्लाह के बेटे, और नबी अल्लाह के पोते और नबी अल्लाह के परपोते। उन्होंने कहा, हम उनके मुतअ़ल्लिक़ नहीं सवाल करते; फ़रमाया, क्या तुम अ़रब के ख़ान्दानों के मुतअ़ल्लिक़ पूछते हो? तो जाहिलीयत में जो शरीफ़ थे वह इस्लाम में भी शरीफ़ हैं, जब वह दीन की समझ पैदा करें।@ [बुख़ारी-मुस्लिम]

६८ दुनिया और औरतें इहतियात की चीज़ें हैं।

हज़रत अबू सअ़ीद (र०) अल्ख़ुदरी से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, दुनिया मीठी है और सब्ज़ है, अल्लाह तुमको इसमें जानशीं बनायेगा और वह देखेगा कि तुम कैसे अ़मल करते हो और

@ ख़ान्दानी शराफ़त और मौरूसी व नसली ख़ुसूसियात मुन्तक़िल होती[4] हैं। किसी मज़हब व मिल्लत की ख़ुसूसियत नहीं, अल्बत्ता जिहालत उन पर ख़ाक डाल देती है। दीन का सही अ़िल्म हासिल हो जाय तो उन पर जिला[5] हो जाती है।

१ रोज़ी २ रास्ता दिखाना ३ प्रतिष्ठित ४ बदलती रहती ५ प्रकाश, चमक।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुनिया से डरो और औरतों से डरो पहला फ़ितना बनी इस्राईल में औरतों की ज़ात से पैदा हुआ। [मुस्लिम]

६६[3] रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ

हज़्रत इब्नि मस्अूद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे सवाल करता हूँ, हिदायत[1] का और परहेज़गारी[2] का और पाकदामनी[3] का और इस्तिग़्ना[4] का। [मुस्लिम]

६७[4] क़सम खाने के बाद भी ज़ियादः परहेज़गारी की बात पर अमल करना चाहिए

हज़्रत अदी (र०) बिन हातिम से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि जिस किसी ने किसी बात पर क़सम खाई फिर ज़ियादः परहेज़गारी की बात देखी तो परहेज़गारी को इख़्तियार करे§। [मुस्लिम]

६८[6] जन्नत में दाख़िलः के शराइत

हज़्रत अबू उमामः (र०) अलबाहिली से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है—हज्जतुल्वदाअ[5] में ख़ुतबः फ़रमा रहे थे कि अल्लाह से डरो और पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ो और महीने के रोज़े रक्खो और अपने मालों की ज़कात अदा करो, अपने हाकिमों† की इताअत[6] करो; अपने रब की जन्नत में दाख़िल किये जाओगे। [तिर्मिज़ी]

---

§ और क़सम का कफ़्फ़ारः[7] दे दे यानी तीन मिस्कीनों[8] को मुतवस्सित खाना या कपड़े दे दे।

† यानी ख़लीफ़ः और ख़लीफ़ः की तरफ़ से जो हाकिम मुक़र्रर हों।

---

१ पथ-प्रदर्शन २ आत्मसयंम ३ सदाचार ४ निस्पृहता ५ आख़री हज्ज ६ आज्ञापालन ७ प्रायश्चित्त ८ दीनों।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यक़ीन व तवक्कुल[1]

आयात

व लम्मारअल्-मुअ्मिनूनल्-अह्ज़ाब ला क़ालू हाज़ा मा वअ्दनल्लाहु व रसूलुहू व सदक़ल्लाहु व रसूलुहू ज व मा ज़ादहुम् अिल्ला ईमानंव्व तस्लीमन् त ।

जब मुसलमानों ने लश्करों को देखा तो कहा यह वही है जिसका हमसे अल्लाह और उसके रसूल ने वादा किया है। और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा, नहीं ज़ियादः हुआ मगर उनका ईमान और तस्लीम। [पारः २१ सूरः अह्ज़ाबि रु. ३ आ. २२]

अल्लज़ीन क़ाल लहुमुन्नासु अिन्नन्नास क़द् जमअू लकुम् फ़ख़्शौहुम् फ़ज़ादहुम् ईमानंव्व क़ालू हस्बुनल्लाहु व निऽमल्-वकीलु । फ़न्क़लबू बिनिऽमतिम्मिनल्लाहि व फ़ज़्लिल्लम् यम्ससहुम् सूअुंव्वत्तबअू रिज़्वानल्लाहि वल्लाहु ज़ू फ़ज़्लिन् अज़ीमिन् ।

वह लोग जिनसे कहा गया कि तुम्हारे लिए लोगों ने बड़ा सामान और तैयारी की है, वह कहने लगे हमको अल्लाह काफ़ी है और वही हमारा कारसाज़ है, पस वह अल्लाह की निअ़मत और उसके फ़ज़्ल के साथ पलट गये। उनको किसी बुराई ने नहीं छुआ, उन्होंने अल्लाह की इत्तिबाअ़[2] की। अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है।

[पारः ४ सूरः आलि अिमरान रु. १८ आ. १७३-१७४]

व तवक्कल् अलल्हय्यिल्लज़ी ला यमूतु ।

उस ज़िन्दः[3] पर भरोसा करो जो न मरेगा।

[पारः १६ सूरः फ़ुर्क़ान रु. ५ आ. ५८]

---

१ ईश्वरार्पण, एक मात्र परमात्मा का शरणागत २ पैरवी, अनुकरण ३ चैतन्य, प्राणों का प्राण ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

व अ़लल्लाहि फ़ल्यतवक्कलिल्-मुअ्मिनून

मुसलमानों को चाहिए कि अल्लाह पर भरोसा करें।

[पारः ४ सूरः आलि अिमरान रु. १७ आ. १६०]

फ़अिजा अ़ज़म्त फ़तवक्कल् अ़लल्लाहि ॰ अिन्नल्लाह युह़िब्बुल्-मुतवक्किलीन।

जब तुम पुख़्तः इरादः कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो। बेशक अल्लाह भरोसा करनेवालों के पसन्द करता है।

[पारः ४ सूरः आलि अिमरान रु. १७ आ. १५६]

व मंय्यतवक्कल् अ़लल्लाहि फ़हुव ह़स्बुहू ॰।

जो अल्लाह पर भरोसा करेगा तो वह उसको काफ़ी होगा।

[पारः २८ सूरः तलाक़ि रु. १ आ. ३]

अिन्नमल्-मुअ्मिनूनल्लज़ीन अिजा ज़ुकिरल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् व अिजा तुलियत् अ़लैहिम् आयातुहू ज़ादत्हुम् ओमानंव्व अ़ला रब्बिहिम् यतवक्कलून ॰ (२) अ़ल्लज़ीन युक़ीमूनस्सलात व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून ॰ (३) अुलाअिक हुमुल्-मुअ्मिनून ह़क़्क़न् ॰ लहुम् दरजातुन् अ़िन्द रब्बिहिम् व मग़्फ़िरतुंव्व रिज़्क़ुन् करीमुन् ॰।

बेशक ईमानवाले वह हैं कि जब उनके सामने अल्लाह का ज़िक्र होता है तो उनके दिल दहल जाते हैं। और जब उन पर उसकी आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनका ईमान ज़ियादः हो जाता है। वह अपने रब पर भरोसा करनेवाले हैं। वह लोग जो नमाज़ क़ायम रखते हैं और जो हमने उनको दिया है, ख़र्च करते हैं वही लोग ईमान वाले हैं। हक़ के साथ उनके परवरदिगार के पास बड़े दर्जे हैं—बख़्शिश और बाबर्कत रिज़्क़[1]।

[पारः ६ सूरः अन्फ़ालि रु. १ आ. २-४]

---

१ बढ़ती देनेवाली रोज़ी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहादीस

६९. जन्नत में सत्तर हज़ार आदमी बेहिसाब दाख़िल होंगे

हज़रत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—मुझ पर उम्मतें पेश की गयीं। मैंने एक नबी को देखा और उनके साथ कुछ लोग, और एक नबी उनके साथ एक या दो आदमी, और एक नबी उनके साथ कोई नहीं, नागाह मुझको एक बड़ा हुजूम दिखाया गया। मैंने गुमान किया कि यह मेरी उम्मत है तो मुझसे कहा गया कि यह मूसा और उनकी क़ौम है, आप उफ़ुक़[1] की तरफ़ देखिए। मैंने देखा तो एक बड़ा हुजूम दिखाया गया। फिर मुझसे कहा गया दूसरे उफ़ुक़ की तरफ़ देखो, मैंने देखा तो बड़ा हुजूम दिखाया गया, कहा गया कि यह तुम्हारी उम्मत है। और उनके साथ सत्तर हज़ार आदमी बग़ैर हिसाब, बग़ैर अज़ाब, जन्नत में दाख़िल किये जायँगे। फिर आप उठे और अपने हुजरे में तशरीफ़ ले गये और लोग, उनके बारे में जो जन्नत में बग़ैर हिसाब, बग़ैर अज़ाब दाख़िल होंगे, गुफ़्तुगू करने लगे। बऽज़ ने कहा यह शायद वह लोग हों जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुहबत में रहे और बाद में कहा शायद वह लोग हों जो इस्लाम में पैदा हुए और अल्लाह का शरीक नहीं ठहराया। इसी तरह बहुत सी बातें कर रहे थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये और फ़रमाया, कौन सी गुफ़्तुगू करते हो। उन्होंने आपको ख़बर दी। आपने फ़रमाया, यह वह लोग हैं जो न फूंक झाड़ करते हैं न करवाते हैं, और न फ़ाल लेते हैं, और अपने रब पर भरोसा करनेवाले हैं। अुकाशः बिन मुहसिन खड़े हो गये और कहा कि अल्लाह से दुआ कीजिए कि मुझे उनमें शामिल कर दे। आपने फ़रमाया, तुम उनमें से हो। फिर दूसरा आदमी खड़ा हुआ और कहा कि अल्लाह से दुआ कीजिए कि मुझे भी उनमें शामिल कर दे, आपने फ़रमाया, अुकाशः तुम पर बाज़ी ले गये।

७०. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ

हज़रत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे—

अल्लाहुम्म लक अस्लम्तु व बिक आमन्तु व अ़लैक तवक्कल्तु व अिलैक अनब्तु व बिक ख़ासम्तु अल्लाहुम्म अअूज़ु बिअिज़्ज़तिक

[1] क्षितिज, आकाश-पृथ्वी जहाँ मिलते दिखाई पड़ते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ला[१] अिलाह अिल्ला अन्त अन् क़ुज़िल्लनी अन्तल्-ह़य्युल्लज़ी ला यमूतु वल्जिन्नु वल्अिन्सु यमूतून ।

ऐ अल्लाह ! मैंने तेरे सामने सर झुकाया और तुझ पर ईमान लाया और मैंने तुझ पर भरोसा किया और मैं तेरी तरफ़ रुजूअ हुआ और मैंने तेरे सहारे पर झगड़ा किया । ऐ अल्लाह ! मैं तेरी अिज़्ज़त के साथ पनाह चाहता हूँ कि सिवा तेरे कोई मऽबूद[१] नहीं कि तू मुझे गुमराह करे । तू ज़िन्दः[२] है, न मरेगा; जिन और इन्सान मर जायेंगे ।

ड३१ अहलॅ तवक्कुल[३] का क़ौल

हज़्रत इब्नि अ़ब्बास (र०) से रिवायत है कि हज़्रत इब्राहीम (अ़०) जब आग में डाले गये तो कहा, 'ह़स्बुनल्लाहु व निड़मल् वकीलु'† । और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब लोगों ने कहा तुम्हारे लिए लोगों ने बड़ा सामान और तैयारी की है, उनसे डरो, तो उनका ईमान ज़ियादः हो गया । उन्होंने कहा, 'ह़स्बुनल्लाहु व निड़मल् वकीलु' । हज़्रत इब्नि अ़ब्बास (र०) से एक रिवायत है कि हज़्रत इब्राहीम (अ़०) का दूसरा क़ौल, 'ह़स्बियल्लाहु व निड़मल् वकीलु' भी था ।

ड५२ जन्नतियों के दिल परिन्दों की तरह होंगे‡

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, एक जमात जन्नत में दाख़िल होगी, उनके दिल परिन्दों के दिल की तरह होंगे ।

ड६३ अल्लाह पर भरोसः की मिसाल

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है—वह ग़ज़्वः-नज्द[४] में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ थे । जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम लोगों के साथ पलटे तो दिन के आराम का वक़्त ऐसी

---

† हमको अल्लाह काफ़ी है और वही कारसाज़ है ।

‡ यानी हल्के-फुल्के, दुनिया की फ़िक्रों से ख़ाली, ख़ुदा पर भरोसा करनेवाले या ख़ुदा के खौफ़ से लरजाँ व तरसाँ[५] जिस तरह परिन्दों के दिल हर वक़्त चौकन्ना और होशियार रहते हैं ।

---

१ पूज्य २ परम चैतन्य ३ ईश्वर का शरणागत ४ नज्द के युद्ध में ५ डरते-काँपते ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वादी[1] में हुआ जिसमें बबूल के दरख़्त बहुत थे। हम लोग दरख़्तों के नीचे साया लेने के लिए अलग हो गये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक बबूल के दरख़्त के नीचे उतरे, अपनी तलवार एक डाल में लटका दी, हम सब सो गये। क्या देखते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमको पुकार रहे हैं और एक देहाती आपके पास खड़ा है। आपने फ़रमाया, इसने मेरी तलवार मुझ पर खींच ली और मैं सो रहा था। जब मैं जागा तो तलवार इसके हाथ में थी। कहा आपकी हिफ़ाज़त कौन करे गा ? मैंने तीन मर्तबा 'अल्लाह' कहा। उसको सज़ा नहीं दी और बैठ गया।

और एक रिवायत में है—हज़्रत जाबिर (र०) ने कहा कि हम ज़ातुरिक़ाऽ[2] में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ थे। हम लोग दरख़्तों में साया लेने के लिए अलग हो गये और हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को छोड़ दिया। एक मुश्रिक[3] आदमी आया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तलवार पेड़ से लटकी थी। उसने आप पर तलवार खींच ली और कहा, मुझसे डरते हो ? आपने फ़रमाया नहीं। कहा, कौन आपकी हिफ़ाज़त करेगा ? आपने फ़रमाया, अल्लाह। पस तलवार उसके हाथ से गिर पड़ी और आपने उठा ली और फ़रमाया, तेरी हिफ़ज़त कौन करेगा ? कहा, आप बेहतर लेनेवाले बनिए।† आपने फ़रमाया क्या तुम कहते हो 'अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अन्नी रसूलुल्लाहि' ? कहा, यह तो नहीं मगर हाँ इसका अह्द करता हूँ कि न आपके साथ जंग करूँगा और न जंग करनेवालों के साथ शरीक हूँगा। आपने उसको छोड़ दिया। वह अपने साथियों के पास आया और बोला मैं सब से बेहतर के पास से आया हूँ।

६४ तवक्कुल और हरकत[4]

हज़्रत उमर (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है—फ़रमाते थे कि **अगर तुम अल्लाह पर भरोसा**

† यह अरब का मुहावरः है; यानी हमें उम्मीद है कि आप हम पर करम फ़रमाएँगे।

१ घाटी २ एक लड़ाई का नाम है जिसमें पैरों को बचाने के लिए गूदड़ बांध लिये गये थे। ३ बहुदेवपूजक ४ भगवान् पर भरोसा और कर्म।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करो जैसा भरोसा करने का हक़ है तो तुमको इस तरह रिज़्क़[1] देगा जैसे चिड़ियों को देता है। सुबह को ख़ाली पेट जाती हैं§ और शाम को शिकमसेर[2] वापस आती हैं। [तिर्मिज़ी]

७८ सोते वक़्त की दुआ

हज़ूर बराअ् (र०) इब्नि आ़ज़िब से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब तुम अपने बिस्तर पर आओ तो यह कहोः—

अल्लाहुम्म अस्लम्तु नफ़्सी अिलैक व वज्जह्तु वज्हिय अिलैक व फ़व्वज़्तु अम्री अिलैक वल्जातु जह्री अिलैक रग़्बतंव्व रह्बतन् अिलैक ला मल्जाअ व ला मन्जाअ मिन्क अिल्ला अिलैक आमन्तु बिकिताबिकल्लज़ी अन्ज़ल्त व नबिय्यिकल्लज़ी अर्सल्त।

ऐ अल्लाह ! मैंने अपने नफ़्स[3] को तेरे सिपुर्द किया और मैंने मुँह तेरी तरफ़ मोड़ा और मैंने अपना काम तेरे सिपुर्द किया और मैंने अपनी पीठ तेरी तरफ़ रग़बत के साथ डरते हुए लगाई; नहीं है हमारा ठिकाना और न निजात हमको मगर तेरी तरफ़। मैं तेरी उस किताब पर ईमान लाया जो तूने उतारी और उस नबी पर जिसको तू ने भेजा।

आपने फ़रमाया अगर तुम उस रात में मर जाओगे तो इस्लामी फ़ित्रत[4] पर मरोगे। और अगर सुबह करोगे तो भलाई को पहुँच जाओगे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

और एक रिवायत में हज़्रत बराअ् (र०) से रिवायत है कि मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया—जब तुम अपने बिस्तर पर आओ तो वज़ू[5] करो जैसे नमाज़ के लिए वज़ू किया जाता है फिर अपने सीधे पहलू पर लेट जाओ और इस तरह कहो (और ऊपर

§ यानी अपने आश्यानों[6] में बैठी नहीं रहतीं उससे निकलती ज़रूर हैं। यही इस्लामी तवक्कुल है।

१ रोज़ी २ भरे पेट (तृप्त) ३ अपनी जान को ४ इस्लामी स्वभाव ५ मार्जन ६ घोसलों।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाली दुआ इर्शाद फ़रमायी।) फिर फ़रमाया, इन कलिमात को सब से आख़िर में कह कर सो।

७८ औन ख़तरः में अल्लाह पर भरोसा

हज़रत अबू बक्र (र०) से रिवायत है कि मैंने मुश्रिकीन के क़दम देखे, हम ग़ार में थे और वह हमारे सरों पर। मैंने कहा या रसूलुल्लाह ! अगर इनमें का एक भी अपने क़दम के नीचे देखे तो हमको देख लेगा। आपने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र (र०) ! तुम ऐसे दो के मुतअल्लिक़ क्या गुमान करते हो जिनका तीसरा अल्लाह है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

७९ घर से निकलने के वक़्त की दुआ

हज़रत उम्में सल्मा (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब अपने घर से निकलते थे तो फ़रमाते थे—

बिस्मिल्लाहि तवक्कल्तु अ़लल्लाहि अल्लाहुम्म अअ़ूज़ुबिक अन् अज़िल्ल औ उज़िल्ल औ अजिल्ल औ उजिल्ल औ अज़्लिम औ उज़्लम औ अज्हल औ युज्हल अ़लय्य।

शुरू किया मैंने अल्लाह के नाम से और मैंने अल्लाह पर भरोसा किया—ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि गुमराह होऊँ या गुमराह करूँ, ख़ुद डगमगाऊँ या दूसरों को फुसलाऊँ, ज़ुल्म करूँ या मुझ पर ज़ुल्म किया जाय, जिहालत करूँ या मुझ पर जिहालत की जाय।

हज़रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो अपने घर से निकलते वक़्त यह दुआ पढ़े तो उससे कहा जायगा कि तूने हिदायत पाई, तेरी किफ़ायत की गयी और तू बच गया, और उससे शैतान दूर कर दिया जायेगा।

[अबू दाऊद, तिर्मिज़ी]

बिस्मिल्लाहि तवक्कल्तु अ़लल्लाहि व ला हौल व ला क़ुव्वत अिल्ला बिल्लाहि।

शुरू करता हूँ मैं अल्लाह के नाम से। नहीं है क़ुव्वत और न ताक़त मगर अल्लाह को। [अबू दाऊद, तिर्मिज़ी]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३८ रिज़्क़[1] दूसरे की बर्कत से

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अहिद में[2] दो भाई थे; उनमें एक कमाता था और दोनों खाते थे। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पेश:वर ने[3] अपने भाई की शिकायत की। आपने फ़रमाया कि शायद तुमको रिज़्क़ उसी के सबब से मिलता हो। (तिर्मिज़ी)

साबितक़दमी और इस्तिक़ामत

आयात

फ़स्तक़िम् कमा अुमिर्त।

साबित क़दम रहो जैसे तुमको हुक्म दिया गया है।

[पार: १२ सू० हूद, रु० १० आ. ११२]

अिन्नल्लज़ीन क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्तक़ामू ततनज़्ज़लु अ़लैहिमुल्मला अिकतु अल्ला तख़ाफ़ू व ला तह्ज़नू व अब्शिरू बिल्जन्नतिल्लती कुन्तुम् तूअ़दून। नह्नु औलिया अुकुम् फ़िल्हयातिद्दुन्या व फ़िल्आख़िरति ج व लकुम् फ़ीहा मा तश्तही अन्फ़ुसुकुम् व लकुम् फ़ीहा मा तद्दअ़ून ط। नुज़ुलम्मिन् ग़फ़ूरिर्रहीमिन्।

बेशक जिन्होंने कहा कि हमारा परवरदिगार अल्लाह है फिर साबितक़दम रहे, उन पर फ़िरिश्ते उतरते हैं कि न डरो और न ग़मगीन हो और उस जन्नत की ख़ुशी सुनो जिसका तुमसे वादा किया गया है।

हम तुम्हारे दोस्त हैं दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत में, और तुम्हारे लिए इसमें वही है जो तुम्हारे नफ़्स चाहें[4] और तुम्हारे लिए इसमें वही है जो तुम माँगते हो। बख़्शिश वाले, रहमत वाले की तरफ़ से मिहमानी है। [पार: २४ सू० हा मीम सज्द:, रु० ४ आ. ३०-३२]

---

१ रोजी २ समय में ३ कमाने वाले ने ४ जी चाहें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अिन्नल्लज़ीन क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्तक़ामू फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून ॰ अुला'अिक अस्हाबुल्जन्नति ख़ालिदीन फ़ीहा ॰ जज़ा'अम्बिमा कानू यअ्मलून ।

जिन्होंने कहा कि हमारा परवरदिगार अल्लाह है फिर साबित-क़दम रहे तो न उनको ख़ौफ़ है और न वह ग़मगीन होंगे, वही लोग जन्नतवाले हैं। वह उसमें हमेशा रहेंगे। यह उसका बदला है जो वह करते थे। [पार: २६ सू० अहक़ाफ़, रु० २ आ. १३-१४]

अहादीस

८१ दो बातें

हज़रत अबू उम्र: (र०) सुफ़यान बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ! मुझको इस्लाम के बारे में ऐसी बात बतला दीजिए कि मैं फिर किसी से न पूछूँ। आपने फ़रमाया—कहो आमन्तु बिल्लाहि और फिर इस पर साबितक़दम रहो। [मुस्लिम]

८२ कोई महिज़ अपने अ़मल से निजात न पायेगा

हज़रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, एतिदाल[1] से काम लो और मियान:रवी[2] इख़्तियार करो। याद रखो कि कोई महिज़ अ़मल की वजह से निजात नहीं पा सकता§। उन्होंने कहा न आप ? फ़रमाया न मैं, मगर यह कि अल्लाह तआला मुझको अपनी रहमत व फ़ज़्ल से ढाँप ले। [मुस्लिम]

मख़्लूक़ात[3] के बारे में ग़ौर करना

आयात

क़ुल् अिन्नमा' अअ़िज़ुकुम् बिवाहिदतिन् ॰ अन् तक़ूमू लिल्लाहि मस्ना व फ़ुरादा सुम्म ततफ़क्करू क़िफ़ ।

---

§ आदमी को चाहिए कि नेक अमल किये जाय, मगर अमल पर भरोसा न कर ले। भरोसा ख़ुदा की रहमत का होना चाहिए।

---

१ संतुलन २ सरल आचार, न तन कर, न अपने को गिराकर, बीच की चाल। ३ सृष्टि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कह दो कि बेशक मैं तुमको एक बात की नसीहत करता हूँ यह कि खड़े हो अल्लाह के वास्ते दो-दो और एक-एक, फिर ग़ौर करो।

[पारः २२ सू० सबा, रु० ६ आ. ४६]

अिन्न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि लआयातिल्लिअुलिल्-अल्बाबि ज ला। अ्ल्लज़ीन यज़्कुरूनल्लाह क़ियामंव्वक़ु-अूदंव्व अ़ला जुनूबिहिम् व यतफ़क्करून फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ज रब्बना मा ख़लक़्त हाज़ा बातिलन् सुब्हानक फ़क़िना अ़ज़ाबन्नारि।

बेशक आसमान और ज़मीन की पैदाइश और रात-दिन के इख़्तिलाफ़ में अक़्लमन्दों के लिए निशानियाँ हैं। वह लोग जो अल्लाह को खड़े और बैठे और पहलुवों पर याद करते हैं और आसमान, ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते हैं, ऐ हमारे परवरदिगार! तूने इनको बे-फ़ायदः नहीं बनाया, तू पाक है। पस हमको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा।

[पारः ४ सू० आलॅ अिम्रान, रु० २० आ. १६०-१६१]

अफ़ला यन्ज़ुरून अिलल्अिबिलि कैफ़ ख़ुलिक़त्। व अिलस्समा'अि कैफ़ रुफ़िअ़त्। व अिलल्-जिबालि कैफ़ नुसिबत्। व अिलल्अर्ज़ि कैफ़ सुतिहूत्। फ़ज़क्किर् क़िफ़ त अिन्नमा' अन्त मुज़क्किरुन् त।

क्या ऊँटों की तरफ़ नहीं देखते कैसे पैदा किये गये; और आसमान की तरफ़, कैसे बलन्द किया गया; और पहाड़ों की तरफ़, क्योंकर गाड़े गये; और ज़मीन की तरफ़, कैसे बिछाई गयी? पस याद दिलाइये, आप यादही दिलानेवाले हैं। [पारः ३० सू० ग़ाशियः रु० १ आ. १७-२१]

अवलम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़यन्ज़ुरू कैफ़ कान अ़ाक़िबतुल्लज़ीन मिन् क़ब्लिहिम् कानू' अशद्द मिन्हुम् क़ुव्वतंव्व असारुल्-अर्ज़ व अ़मरूहा' अक्सर मिम्मा अ़मरूहा व जा'अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानल्लाहु लियज़्लिम हुम् व लाकिन् कानू' अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून त।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्या उन्होंने ज़मीन की सैर नहीं की ? पस देखें कि उन लोगों का क्या अन्जाम हुआ जो उनसे पहले थे। वह उनसे क़ुव्वत में ज़ियादः थे। उन्होंने ज़मीन को उखाड़ा, और उसको उससे ज़ियादः आबाद किया, जितना उन्होंने आबाद किया; और उनके पास उनके पैग़म्बर दलीलों के साथ आये तो अल्लाह उनपर ज़ुल्म करनेवाला नहीं था लेकिन वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करनेवाले थे।

[पार: २१ सू० रूम, रु० १आ. ६]

हदीस

यह हदीस गुज़र चुकी है कि अक़्लमन्द वह है जिसने अपने नफ़्स[1] की देखभाल की।

ख़ैर[2] और आख़िरत[3] के कामों में सब्क़त[4]

आयात

फ़स्तबिक़ुल्ख़ैराति।

नेकी में सब्क़त करो। [पार: २ सू० बक़र, रु० १८ आ. १४८]

व सारिअ़ू इला मग़्फ़िरतिम्मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अ़र्ज़ुहस्समावातु वल्अर्ज़ु उअ़िद्दत् लिल्मुत्तक़ीन ۩ ।

और एक दूसरे से जल्दी करो अपने रब की बख़्शिश और उसी जन्नत की तरफ़ कि जिसका अर्ज़ आसमान और ज़मीन है, परहेज़गारों के लिए तैयार की गयी है।

[पार: ४ सू० आले अ़िमरान, रु० १४ आ. १३३]

अहादीस

८१ फ़ित्नों[5] से पहले नेक आमाल में जल्दी

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया—नेक आमाल में जल्दी करो, अ़न्क़रीब रात

---

१ अपनी ज़ात (निज) की २ शुभ ३ पारलौकिक, क़ियामत के बाद न्याय के दिन ४ चढ़ा-ऊपरी, स्पर्द्धा ५ फ़सादों।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के तारीक[1] टुकड़ों की तरह फ़ित्ने होंगे। सुबह को आदमी मोमिन होगा और शाम को काफ़िर, और शाम को मोमिन होगा और सुबह को काफ़िर। आदमी अपने दीन को दुनिया के थोड़े नफ़े के लिए बेचेगा। [मुस्लिम]

आँ हज़्रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोना रक्खे रहने से बेक़रारी

हज़्रत उक़बः (र०) बिन अल्हारिस से रिवायत है कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे अस्र के वक़्त नमाज़ पढ़ी, आपने सलाम फेरा और जल्दी से लोगों की गर्दनों को फाँदते हुए अपनी किसी बीवी के हुजरे की तरफ़ तशरीफ़ ले गये। लोग आपकी इस क़द्र जल्दी से घबरा गये। जब आप तशरीफ़ लाये और उनको अपनी जल्दी की वजह से तअज्जुब करते देखा तो फ़रमाया, मैं कुछ सोना रखकर भूल गया था, मुझे उसका रोक रखना नापसन्द हुआ, उसकी तक़सीम का हुक्म देने गया था।

और एक रिवायत में है कि मैंने कुछ सोना सद्क़ः का घर में छोड़ दिया था, मुझे नापसन्द हुआ कि इस रात को गुज़रने दूँ†।

जन्नत का शौक और शहादत की अुजलत[2]

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि एक आदमी ने ऊहद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा, यह फ़रमाइये अगर मैं क़त्ल किया जाऊँ तो मेरा ठिकाना कहाँ होगा ? आपने फ़रमाया जन्नत में। पस जो कुछ उनके हाथ में खजूरें थीं फेंक दीं, फिर जंग शुरू कर दी यहाँ तक कि शहीद हो गये। [बुख़ारी, मुस्लिम]

---

† इस पर बहुत से सहाबः और अह्लें अल्लाह का अमल था। उनको रात में कल नहीं पड़ती थी अगर घर में कुछ रुपया हो। इस पिछले दौर में हज़्रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान साहब गंज मुरादाबादी (र०) इसी ज़ौक़ के बुज़ुर्ग थे। एक मर्तबा सरेशाम किसी ने पाँच सौ रुपया नज़र किये। पस एलान फ़रमा दिया कि हुजरे की दीवार गिर रही है, मरम्मत की जाये। बहुत से लोग टोकरा, मिट्टी और फावड़ा लेकर आ गये। किसी को कुछ दिया, किसी को कुछ दिया, और सब रुपया इस तरह तक़्सीम करके क़रार आया।

---

१ अँधेरे २ आतुरता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८४ सद्क़: का सही वक़्त

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आया और कहा, या रसूलुल्लाह ! कौन सा सद्क़: अज्र में ज़ियाद: बड़ा है। आपने फ़रमाया, ऐसी हालत में कि तुम तन्दुरुस्त हो, माल की हिर्स रखते हो, फ़क़्र[1] (मुफ़्लिसी) से डरते हो और दौलत की उम्मीद करते हो फिर ढील न दो, ऐसा न हो कि हलक़ को रूह पहुँच जाये और कहो—यह फ़लाँ के लिए है, यह फ़लाँ के लिए है। हालाँकि वह तो फ़लाँ के लिए हो चुका§ [बुख़ारी, मुस्लिम]

८६ ख़ैर में एक दूसरे से मुसाबक़त[2]

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऊहद के दिन एक तलवार ली और फ़रमाया, यह कौन लेगा ? हर आदमी ने अपने हाथ बढ़ाये और हर एक कहता था—मैं, मैं। आपने फ़रमाया, कौन इसको हक़ के साथ लेगा? यह सुनकर लोग हट गये। हज़्रत अबू दुजान: (र०) ने कहा मैं इसको इसके हक़ के साथ लूँगा। फिर उसको लिया और उससे दुश्मनों के सर फाड़ दिये। [मुस्लिम]

८६ बद से बदतर

हज़्रत ज़ुबैर (र०) बिन अदी से रिवायत है कि हम अनस (र०) बिन मालिक के पास आये और हमने हज्जाज की बदसुलूकियों की शिकायत की। उन्होंने कहा सब्र करो। ऐसा ज़माना आयेगा कि शर ही शर[3] होगा यहाँ तक कि अपने परवरदिगार से मिलो, मैंने इसको नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है। [बुख़ारी]

८७ इन्तिज़ार किस बात का है ?

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सात चीज़ों से पहले अच्छे आ़माल में जल्दी करो। अगर ऐसा नहीं करते तो ऐसे फ़क़्र[1] का इन्तिजार करते हो जो भुला देने वाला हो, या ऐसी दौलत का जो सरकश बना देने वाली हो, या ऐसे मर्ज़ का जो बिगाड़ देने वाला हो, या ऐसे बुढ़ापे का जो सठिया देनेवाला हो, या ऐसी मौत का जो काम तमाम कर देने वाली हो, या दज्जाल का जो निहायत बुरी ग़ैर मौजूद

§ यानी वारिसों के लिए हो चुका, कोई घड़ी है कि उनको मिल जायेगा।

१ दरिद्रता २ स्पर्द्धा, चढ़ा-ऊपरी ३ उपद्रव ही उपद्रव।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चीज़ है जिसका इन्तिज़ार किया जाये, या क़ियामत का। पस क़ियामत बहुत सख़्त और निहायत कड़वी चीज़+ है।

८९ दीनी शरफ़[1] की ख़्वाहिश और अरमान

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर के दिन फ़रमाया—अल्बत्ता यह निशान मैं ऐसे आदमी को दूँगा जो अल्लाह और उसके रसूल को चाहता है। अल्लाह उसके हाथ पर फ़तेह देगा। हज़्रत उमर (र०) ने कहा कि मैंने सरदारी की ख़्वाहिश उसी रोज़ की। मैं इस उम्मीद पर अपने को बलन्द करता था कि मैं बुलाया जाऊँ। आपने हज़्रत अली (र०) को बुलाया, उनको वही निशान दिया और फ़रमाया, जाओ और किसी तरफ़ मुतवज्जिः न होना[2], यहाँ तक कि अल्लाह तुमको फ़तेह दे। हज़्रत अली (र०) कुछ दूर चले और फिर ठहरे और किसी तरफ़ मुतवज्जिः नहीं हुए, वहीं से आवाज़ दी या रसूलुल्लाह! मैं किस बात पर लोगों से जंग करूँ। आपने फ़रमाया उनसे जंग करो हत्ता कि वह गवाही दें 'लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि' पस, अगर उन्होंने गवाही दे दी तो उन्होंने तुमसे अपनी जानों और मालों को महफ़ूज़[3] कर लिया। हाँ जान व माल के मुतालबः[4] में उनसे दारोगीर[5] की जा सकती है, और उनका हिसाब अल्लाह के ज़िम्मः है। [मुस्लिम]

अल्लाह के रास्ते में कोशिशें

आयात

वल्लजीन जाहदू फ़ीना लनह्दियन्नहुम् सुबुलना ‚ व अिन्नल्लाह लमअ़ल्मुह्सिनीन।

वह लोग जिन्होंने हमारे बारे में कोशिशें की हैं हम उनको अपने रास्तों की हिदायत देंगे। और बेशक अल्लाह मुहसिनों[6] के साथ है। [पारः २१ सू० अ़न्कबूत, रु० ७ आ. ६९]

वअ़्बुद् रब्बक हृत्ता यअ्तियकल्यक़ीनु।

और अपने रब की अिबादत करो यहाँ तक कि तुम्हारे पास यक़ीनी चीज़ आ जाये (यानी मौत)। [पारः १४ सू० हि़ज्र रु० ६ आ. ९९]

+ यानी जो मौजूदः वक़्त में अमल नहीं करता उसको बद से बदतर ज़माने का इन्तिज़ार है।

---

१ दीन की प्रतिष्ठा २ दूसरी ओर निगाह न डालना ३ आरक्षित ४ मांग ५ पूछगछ ६ उपकार करनेवालों।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वज़्कुरिस्म रब्बिक व तबत्तल् अिलैहि तब्तीलन् ॥

और अपने रब के नाम को याद करो और मुन्क़तअ[1] हो जाओ उसी की तरफ़ उसी के होकर। [पारः २६ सू० मुज़म्मिल, रु० १ आ. ८]

फ़मंय्यअ़्मल् मिस्क़ाल ज़र्रतिन् ख़ैरंय्यरहू ॥।

जिसने एक ज़र्रः[2] के बराबर भी नेकी की तो वह उसको पायेगा। [पारः ३० सू० ज़िलज़ाल, रु० १ आ. ७]

व मा तुक़द्दिमू लिअन्फ़ुसिकुम्मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अिन्दल्लाहि हुव ख़ैरंव्व अअ़्ज़म अज्रन् ॥

जो भले काम तुम्हारे नफ़्स[3] आगे भेजेंगे उसको अल्लाह के यहाँ बेहतर पाओगे और अज्र में बड़ा है। [पारः २६ सू. मुज़म्मिल् रु० २ आ. २०]

व मा तफ़्अलू मिन् ख़ैरिन् फ़अिन्नल्लाह बिही अलीमुन्।

और जो भले काम करोगे पस अल्लाह उसको जाननेवाला है। [पारः २ सू० बक़र, रु० २६ आ. २१५]

अहादीस

ट्ट अल्लाह से क़ुर्बत[4] और उसकी महबूबीयत[5] के आसार

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है, जो मेरे दोस्त से दुश्मनी रक्खेगा उससे लड़ाई का एलान है। और मेरे बन्दों का मेरे फ़राइज़ से नज़दीकी हासिल करना जिस क़द्र मुझको महबूब है उस क़द्र और किसी नेकी की नज़दीकी मुझको महबूब नहीं§। और बराबर मेरा

§ यानी जो क़ुर्ब-ख़ुदावन्दी और महबूबीयत[6] फ़राइज़[7], अरकानेंदीन, जिहाद[8] की फ़र्ज़िय्यत[9] के वक़्त जिहाद, इसी तरह तब्लीग़[10] व अम्र बिलमारूफ़[11] व नह्यिअ़निल्मुन्करि[12] से हासिल होती है, उसको वह क़ुर्ब[13] नहीं पहुँच सकता जो नवाफ़िल[14] के ज़रीये हासिल होता है।

१ एकनिष्ठ हो जाओ २ कण ३ इन्द्रियाँ ४ समीपता ५ प्रेम ६ ईश्वर से सान्निध्य व प्रेम ७ कर्त्तव्य ८ धर्म और उत्सर्ग के स्तंभ ९ कर्त्तव्य-निष्ठा १० धर्म का प्रचार-प्रसार ११ भलाइयों का उपदेश १२ बुराइयों से रोकना १३ सामीप्य १४ अतिरिक्त नमाज़ें जो सवाब के लिए पढ़ी जायँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बन्दः मुझसे नवाफ़िल के साथ क़रीब होता है हत्ता कि मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूँ। जब मैं उससे मुहब्बत करता हूँ तो उसके कान बन जाता हूँ जिससे वह सुनता है, और उसकी आँख जिससे वह देखता है, और उसके हाथ जिससे वह पकड़ता है, और उसके पाँव जिससे वह चलता है।‡ अगर वह मुझसे सवाल करेगा तो मैं उसको दूँगा और अगर वह मुझसे पनाह चाहेगा तो मैं उसको पनाह दूँगा† । [बुख़ारी]

२/१० अल्लाह की बन्दःनवाज़ी

हज़रत अनस (र०) से रिवायत है—वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं, और आप अपने रब अज़्ज़ व जल्ल से रिवायत करते हैं, फ़रमाया, जब मेरा बन्दः मुझसे एक बालिश्त क़रीब होता है तो मैं उससे एक हाथ क़रीब होता हूँ, जब वह मुझसे एक हाथ क़रीब होता है तो मैं उससे दो हाथ क़रीब होता हूँ, और जब वह मेरे पास चलकर आता है तो मैं उसकी तरफ़ दौड़कर आता हूँ ※। [बुख़ारी]

३/११ दो दौलतें हैं जिनकी क़द्र नहीं

हज़रत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—दो निअ़मतें हैं जिनमें बहुत लोग घाटे में हैं—तन्दुरुस्ती और फ़ुर्सत। + [बुख़ारी]

४/१२ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अिबादत और जज़्बः शुक्र

हज़रत आयशः (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को खड़े होते थे और खड़े खड़े आपके क़दम मुबारक सूज जाते थे। मैंने कहा आप यह क्यों करते हैं, अल्लाह तआ़ला ने तो आपके अगले और पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये हैं। आपने फ़रमाया, क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दः न बनूँ। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

‡ यानी फ़ानियॅ अनिज़्ज़ात[१] बाक़ीयॅ बिल्लाह[२] बन जाता है। अल्लाह की ग़ैबी ताक़त और मदद उसके शामिलहाल रहती है।

† जब नवाफ़िल की बर्कत का यह हाल है तो फ़राइज़[३] की बर्कत[४] का क्या कहना।

※ यानी उसके उस शौक व जज़्बः की क़द्र करता हूँ और उसको आग़ोशॅ रहमत[५] में लेता हूँ।

+ यानी उसकी क़द्र नहीं करते।

---

१ अपनी खबर से बेखबर २ अल्लाह की मर्ज़ी पर क़ायम रहना ३ कर्त्तव्यों ४ प्रसाद ५ शरण में।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८६ रमज़ान के अशरः अख़ीर की शबॅ-बेदारी[1]

हज़्रत आयशा (र०) से रिवायत है कि जब रम्ज़ान का आख़िर अ़शरः होता था तो आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बड़ी शबॅ-बेदारी फ़रमाते और घर वालों को जगाते* और कमर कसकर तैयार हो जाते।

८७ मुफ़ीद बात की हिर्स और मुस्तअदी[2]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया—क़वी मोमिन बेहतर है। और अल्लाह को कमज़ोर मोमिन से क़वी मोमिन ज़्यादः महबूब× है। और दोनों में ख़ैर है। हर उस नेकी पर लालच करो जो तुमको नफ़ा पहुँचाये। अल्लाह से मदद चाहो और आ़जिज़ न हो। अगर तुमको कोई मुसीबत पहुँचे तो यह न कहो कि यह करता तो यह होता बल्कि यह कहो कि अल्लाह ने जो चाहा मुक़द्दर क़र दिया।

८८ जन्नत नागवार चीज़ों से घिरी है

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, आग ख़्वाहिशात के साथ घेरी गयी है। और जन्नत नागवार चीज़ों से घिरी हुई है। @ [बुख़ारी-मुस्लिम]

८९ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रात की नमाज़

हज़्रत अबू हुज़ैफ़ः (र०) से रिवायत है कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ एक रात नमाज़ पढ़ी। आपने सूरः बक़र शुरू की। मैंने ख़्याल किया कि आप सौ आयतों पर रुकूअ़ करेंगे। आप उससे बढ़ गये, मैंने ख़्याल किया आप इसको एक रकऽ़त में पढ़ेंगे लेकिन आप उससे भी गुज़र गये। मैंने कहा अब शायद रुकूअ़ करें, फिर आपने सूरः निसा शुरू कर दी। उसको ख़त्म करके आलॅ अ़िमरान शुरू की और

---

* अिबादत व नवाफ़िल के लिए।

× इसलिए कि उससे इस्लाम की जियादः ख़िदमत हो सकती है।

@ यानी जन्नत के हुसूल (प्राप्ति) के लिए बहुत से ऐसे काम करने पड़ते हैं जो इन्सान को नागवार और तबीयत पर गरा हैं और जहन्नम का सौदा बहुत सस्ता है। इसके लिए किसी मुजाहिदे की ज़रूरत नहीं। इसके असबाब सब निहायत दिलचस्प और ख़ुशगवार हैं।

---

१ रात्रिजागरण २ लालसा और तत्परता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसको भी पढ़ा, और आप आहिस्तः आहिस्तः पढ़ रहे थे, जब आप ऐसी आयत पर पहुँचते जिसमें तस्बीह होती थी तो आप तस्बीह करते थे और जब पनाह की आयत पर पहुँचते तो पनाह माँगते थे और सवाल की आयत पर पहुँचते तो आप सवाल करते। फिर आपने रुकूअ़ किया और कहने लगे 'सुब्ह़ान रब्बियल् अ़ज़ीमि' और आपका रुकूअ़ क़याम की तरह था। फिर खड़े हुए और कहा 'समिअ़ल्लाहु लिमन् ह़मिदहू रब्बनाल कल्ह़म्दु' और आपका क़याम रुकूअ की तरह था। फिर सज्दः किया और कहा 'सुब्ह़ान रब्बियल्अऽ्ला', पस आपका सज्दः आपके क़याम की तरह था। [मुस्लिम]

९/९७ नमाज़ की तवालत[1]

हज़्रत इब्निमस्ऊ़द (र०) से रिवायत है कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ एक रात नमाज़ पढ़ी। आपने क़ियाम लाँबा किया। मैंने इरादः किया कि बैठ जाऊँ और छोड़ दूँ। [बुख़ारी]

१०/९८ मरने वालों के साथ क्या जाता है

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मय्यत[2] के साथ तीन चीजें जाती हैं। (१) घरवाले (२) माल (३) अमल। दो चीजें पलट आती हैं और एक बाक़ी रहती है। घरवाले और माल पलट आता है। अमल साथ होता है।

[बुख़ारी मुस्लिम]

११/९९ जन्नत व दोज़ख आदमी से किस क़दर क़रीब है

हज़्रत इब्नि मस्ऊ़द (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जन्नत तुम्हारे जूते के तस्मा से ज़ियादः क़रीब है। और इसी तरह दोज़ख़ भी। [बुख़ारी]

१२/१०० नवाफ़िल[3] की कस्रत, रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रफ़ाक़त[4]

हज़्रत अबू फ़ुरास रबीअः (र०) ख़ादिम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत है (जो अह्लॅ सुफ़्फ़ा में से थे) कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ घर में क़रीब ही सोता था। वज़ू का पानी और जिस चीज़ की ज़रूरत होती तो मैं आपके लिये लाता। आपने फ़रमाया, मुझसे माँगो; मैंने कहा, मैं जन्नत में आपकी

---

१ लम्बाई २ शव, मुर्दा ३ अतिरिक्त नमाज़ें ४ सान्निध्य।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रफ़ाक़त चाहता हूँ। आपने फ़रमाया, और कुछ ? मैंने कहा बस यही। आपने फ़रमाया, सज्दः की कस्रत से मेरी मदद करो§। [मुस्लिम]

१०१३ नवाफ़िल की ज़ियादती के नताइज

हज़्रत सौबान मौला (र०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत है कि आप फ़रमाते थे, सज्दों की कस्रत करो; अगर तुम अल्लाह के लिए सज्दः करोगे तो अल्लाह तआ़ला उसके ज़रिये तुम्हारे दर्जे बलन्द करेगा। और तुम्हारी ख़ताओं को मुआ़फ़ फ़रमायेगा। [मुस्लिम]

१०१४ उम्र दराज़ अमल नेक

हज़्रत अबू सफ़वान (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, वह आदमी बेहतर है जिसकी उम्र लाँबी हो और काम अच्छे हों। [तिर्मिज़ी]

१०१६ यक़ीन और सब्र की एक मिसाल

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि मेरे चचा अनस (र०) बिन नुज़िर बद्र की जंग में शरीक नहीं हुए। कहते हैं कि मैंने अ़र्ज़ की, या रसूलुल्लाह ! मैं पहली लड़ाई में जब आप मुश्रिकों से लड़े थे, ग़ैर हाज़िर रहा। अगर अल्लाह मुझे किसी जंग में मुश्रिकों से लड़ने का मौक़ा देगा तो अल्लाह देखेगा कि मैं क्या करूँगा। जब उहद का दिन आया और मुसलमान छँट गये तो कहा, ऐ अल्लाह ! मैं तेरी तरफ़ इसका अ़ुज़्र पेश करता हूँ जो उन्होंने (या साथियों ने) किया और मैं उनसे बरी होता हूँ जो उन्होंने (यानी मुश्रिकों ने) किया। फिर आगे बढ़े तो सऽ.द बिन मआ़ज़ सामने आये। कहा, ऐ सऽ.द बिन मआ़ज़ ! जन्नत, क़सम रबेंकाबा की, मुझे उसकी ख़ुशबू उहद के इसी तरफ़ से आ रही है। सऽ.द ने कहा, या रसूलुल्लाह ! यह उन्हीं का काम था, मेरे बस की बात न थी। अनस (र०) कहते हैं कि हमने कुछ ऊपर अस्सी (८०) निशान उनके बदन पर पाये, तलवारों के या नेज़ों के या तीरों के और हमने उनको इस हाल में पाया कि वह शहीद हो चुके थे। और मुश्रिकों ने उनके टुकड़े टुकड़े कर दिये थे। हत्ता कि कोई उनको पहचान न सका। उनकी बहिन ने उँगली के पोरों के निशान से पहचाना। अनस

---

§ यानी दुआ़ करूँगा, तुम अ़िबादत और नमाज़ों की कस्रत से मेरी मदद करो। मालूम हुआ कि दुआ़ के साथ कुछ अ़मल भी चाहिए। इस आयत से भी इसकी ताईद होती है। अिलैहि यस्अ़दुल् कलिमुल् तय्यिबु वल् अ़मलुस्सालिहु यर्फ़अ़हु (उसी की तरफ़ अच्छे कसे चढ़ते हैं और अ़मल सालिह उनको चढ़ाते हैं।)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(र०) कहते हैं कि हमारा गुमान था कि यह आयत "मिनल् मुअ्मिनीन रिजालुन् स़दक़ू मा आ़हदुल्लाह अ़लैहि" (मोमिनीन में से कुछ ऐसे जवान मर्द हैं कि उन्होंने अल्लाह से जो वादा किया उसको सच कर दिखाया) उन्हीं के बारे में उतरी। [बुख़ारी मुस्लिम]

१६/१०४ थोड़ा और बहुत सदक़ः

हज़्रत अबू मस्ऊ़द उ़कबः बिन अ़म्रू अल्अन्सारी अल्बदरी से रिवायत है कि जब सदक़ः की आयत उतरी हम उस वक़्त पीठ पर बोझ उठाकर मज़दूरी करते थे। एक आदमी आये और उन्होंने बहुत कुछ सदक़ः किया। लोगों ने कहा, रियाकार[1] है। दूसरा आदमी आया, उसने एक साअ़[2] सदक़ः किया। लोगों ने कहा अल्लाह को उसके एक साअ़ की ज़रूरत न थी। तो यह आयत उतरी।

अल्लज़ीन यल्मिज़ूनल्मुत्त़व्विई़न मिनल्मुअ्मिनीन फ़िस्स़दक़ाति वल्लज़ीन ला यजिदून अिल्ला जुह्दहुम्।

वह लोग जो उन मोमिनों पर तन्ज़ करते हैं जो ख़ुशी से सदक़ः करते हैं। और उन लोगों पर जो बदिक़्क़त तमाम (सदक़ः करने के लिए) कुछ पाते हैं। [पारः १० सू० तौबः ६ रु० १० आ० ७६]

१७/१०८ अल्लाह की अज़्मत[3] और बेनियाज़ी[4]

हज़्रत अबू ज़र जुन्दुब (र०) बिन जुनावह से रिवायत है। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं और आप रब तबारक व तआ़ला से रिवायत फ़रमाते हैं—फ़रमाया, ऐ मेरे बन्दो ! मैंने ज़ुल्म को अपने ऊपर हराम किया; पस ज़ुल्म न करो। ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब गुमराह हो, जिसको मैं हिदायत दूँ पस मुझसे हिदायत चाहो, मैं तुमको हिदायत दूँगा। ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब भूके हो मगर जिसको मैं खिलाऊँ, मुझसे माँगो, मैं तुमको खिलाऊँगा। ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब नंगे हो, मगर जिसको मैं पहनाऊँ, सो मुझसे कपड़े माँगो, मैं तुमको कपड़ा दूँगा। ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब रात दिन ख़ताएँ करते हो और मैं तमाम गुनाहों को बख़्श देता हूँ; सो मुझसे बख़्शिश चाहो, मैं तुमको बख़्श दूँगा। ऐ मेरे बन्दो ! अगर तुम मुझे नुक़्सान पहुँचाना चाहो तो मुझको नुक़्सान नहीं पहुँचा सकते और अगर तुम मुझको नफ़ा पहुँचाना चाहो तो नफ़ा नहीं पहुँचा सकते। ऐ मेरे बन्दो ! तुम्हारे अगले और पिछले इन्सान और जिन—सब के सब निहायत मुत्तक़ी और परहेज़गार हो

---

१ पाखंडी २ सवा तीन सेर ३ महिमा ४ निस्पृहता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जायें तो मेरे मुल्क में इससे कोई ज़ियादती (बढ़ती) न होगी। ऐ मेरे बन्दो ! तुम्हारे अगले और पिछले इन्सान और जिन—सबके सब निहायत ही बदकार हो जायें तो इससे मेरे मुल्क में कुछ नुक़सान न होगा। ऐ मेरे बन्दो ! तुम्हारे अगले और पिछले इन्सान और जिन—सब के सब एक चटियल मैदान में जमा हों और मुझसे सवाल करें तो मैं सबको दूँगा और मुझे कुछ नुक़सान न होगा, मगर इतना जैसे सुई (को पानी में डालने से) समन्दर में कमी होती है। ऐ मेरे बन्दो ! बेशक यह तुम्हारे आमाल हैं, मैं इनको गिनता हूँ, फिर वही तुमको पूरा-पूरा मिलेगा। सो जो भलाई पाये वह अल्लाह की हम्द करे और जो उसके सिवा पाये, वह अपने नफ़्स ही को मलामत करे। [मुस्लिम]

आख़िरी उम्र में ज़ियादः नेक अमल की तरग़ीब[२]

आयात

अवलम् नुअम्मिर् कुम् मा यतज़क्करु फ़ीहि मन् तज़क्कर व जा'अकुमुन्नज़ीरु ॥।

क्या हमने तुमको ऐसी उम्र नहीं दी कि जिसको नसीहत हासिल करना हो वह नसीहत हासिल कर ले और आया तुम्हारे पास डराने वाला (यानी बुढ़ापा)। [पारः २२ सू० फ़ातिर ३५, रु० ४ आ० ३७]

अहादीस

१०६ वफ़ात के क़रीब ज़ियादः तस्बीह[३] और इस्तिग़फ़ार[४]

हज़्रत अबू हुरैरः से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने ऐसे आदमी पर हुज्जत[५] पूरी कर दी जिसकी उम्र को मुअख़्ख़र किया यहाँ तक कि साठ साल को पहुँच गया। [बुख़ारी]

हज़्रत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि हज़्रत उमर (र०) मुझे बद्र के बूढ़ों के साथ शरीक करते थे। बाज़ों के दिल में शिकायत पैदा हुई कि यह हमारे साथ क्यों शरीक किये जाते हैं। इनके बराबर तो हमारे बेटे हैं। हज़्रत उमर (र०) ने कहा इसकी वजह तुम समझ लोगे। इब्नि अब्बास (र०) कहते हैं कि एक दिन मुझे बुलाया और

१ आप, निज २ प्रेरणा ३ जप ४ क्षमायाचना ५ दलील।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनके साथ मुझे शरीक किया। मुझे ख़याल भी नहीं गुज़रा कि आज मुझे आज़माईश के लिए बुलाया है। फिर हज़्रत उमर (र०) ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला के इस क़ौल के बारे में क्या कहते हो—'इज़ा जा'अ नस्रुल्लाहि वल्फ़त्हु'। बाज़ों ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने हमको हुक्म दिया है कि जब हमको फ़तिह हो और हमारी मदद की जाये तो हम उस की तारीफ़ करें और उससे बख़्शिश चाहें और बाज़ ख़ामोश रहे। हज़्रत उमर (र०) ने कहा, ऐ इब्नि अब्बास (र०)! तुम्हारा भी यही ख़याल है? मैंने कहा, नहीं। कहा फिर क्या कहते हो? मैंने कहा यह आँ हज़्रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वफ़ात[1] के बारे में है। आपको इसकी इत्तिला दी है। फ़रमाया, 'इज़ा जा'अ नस्रुल्लाहि वल्फ़त्हु' (जब अल्लाह की मदद आये और उसकी फ़तिह)—यह अलामत आपकी वफ़ात की है। फ़सब्बिह् बिहम्दि रब्बिक वस्तग़्फ़िरहु इन्नहू कान तव्वाबन्। (तो अपने रब की हम्द के साथ पाकी बयान करो और उससे बख़्शिश चाहो बेशक वह तौबः क़ुबूल करनेवाला है)—हज़ूत उमर (र०) ने कहा, मैं अभी इतना ही जानता हूँ, इससे ज़ियादः नहीं जानता। [बुख़ारी]

हज़ूत आयशः (र०) से रिवायत है कि इज़ा जा'अ नस्रुल्लाहि वल्फ़त्हु उतरने के बाद आपने कोई नमाज़ ऐसी नहीं पढ़ी जिसमें आप यह न कहते हों—'सुब्हानक रब्बना व बिहम्दिक अल्लाहुम्मग़्फ़िर्ली'—(ऐ हमारे परवरदिगार! तू पाक है, हम तेरी तारीफ़ करते हैं, ऐ अल्लाह! मुझको बख़्श दे)। [बुख़ारी-मुस्लिम]

और एक सही रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अक्सर रुकूअ़ व सुजूद में कहते थे—'सुब्हानक अल्लाहुम्म व बिहम्दिक अल्लाहुम्मग़्फ़िर्ली'। गोया क़ुर्आन के हुक्म—'फ़सब्बिह् बिहम्दि रब्बिक वस्तग़्फ़िरहु—'पर अमल करते थे।

और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वफ़ात से पहले अक्सर कहते थे—सुब्हानक व बिहम्दिक अस्तग़्फ़िरुक व अतूबु इलैक।† हज़ूत आयशः (र०) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! यह कौन से कलिमात हैं। मैं देखती हूँ कि अभी कुछ

† तू पाक है हम तेरी तारीफ़ करते हैं और तुझसे मदद चाहते हैं और तेरी तरफ़ तौबः करते हैं।

[1] मृत्यु।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिनों से आप कहने लगे हैं। फ़रमाया, मेरी उम्मत में एक अ़लामत बनाई गयी है कि जब मैं उसको देखूँ तो यह कहूँ—इज़ा जा'अ नस्रुल्लाहि वल्फ़त्हु‡।

और एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अक्सर कहते थे—सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि अस्तग़्फ़िरुल्लाह व अतूबु अिलैहि।ꣳ मैंने कहा या रसूलुल्लाह! मैं देखती हूँ कि अक्सर आप कहते हैं—सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि अस्तग़्फ़िरुल्लाह व अतूबु अिलैहि। आपने फ़रमाया मुझको मेरे परवरदिगार ने ख़बर दी है अन्क़रीब मैं अपनी उम्मत एक अलामत[1] देखूँगा। जब मैं उसको देखूँ तो 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि अस्तग़्फ़िरुल्लाह व अतूबु अिलैहि' की ज़ियादती करूँ। सो मैंने वह अलामत देख ली। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है, जब अल्लाह की मदद आ जाये और फ़तिह यानी फ़तिह-मक्का, तो अपने रब की हम्द के साथ पाकी बयान करो और उससे बख़्शिश चाहो। बेशक वह बड़ा तौबः क़ुबूल करनेवाला है।

१३०७ वफ़ात के क़रीब 'वही' की ज़ियादती और तसलसुल[2]

हज़रत अनस (र०) से रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला ने पै दर पै रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर वफ़ात से पहले 'वही' भेजी, हत्ता कि वफ़ात पायी और 'वही' मुसलसल उतर रही थी।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

१३०८ आदमी का हश्र

हज़रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हर आदमी का हश्र उसी पर होगा जिस पर उसने इन्तिक़ाल किया। [मुस्लिम]

‡ यानी जब लोग कस्रत से इस्लाम में दाख़िल होने लगें और दीन का आम फ़ुरोग[3] हो तो समझ लिया जाये कि वफ़ात का वक़्त क़रीब है, कि हक़ अदा हो गया और काम पूरा हो गया।

ꣳ अल्लाह के लिए पाकी है। उसकी हम्द के साथ मैं अल्लाह की बख़्शिश चाहता हूँ और उसी की तरफ़ तौबः करता हूँ।

१ लक्षण, पहचान २ ताँता लग जाना ३ प्रकाश, उत्कर्ष।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नेकियों के मुख़्तलिफ़[1] और मुतअ़द्दिद[2] तरीक़े

आयात

व मा तफ़्अ़लू मिन् ख़ैरिन् फ़इन्नल्लाह बिही अ़लीमुन् ।

तुम लोग जो कुछ नेकी करोगे अल्लाह तआ़ला उसको जाननेवाला है । [पार: २ सू० बक़र २, रु० २६ आ० २१५]

व मा तफ़्अ़लू मिन् ख़ैरिंय्यऽलम्-हुल्लाहु ॥ ।

और जो कुछ तुम भलाई करोगे अल्लाह उसको जान लेगा ।
[पार: २ सू० बक़र २, रु० २४ आ० १९७]

फ़मंय्यऽमल् मिस्क़ाल ज़र्रतिन् ख़ैरंय्यरहू ॥ ।

जो एक ज़र्रः के बराबर नेकी करेगा उसको पायेगा ।
[पार: ३० सू० ज़िलज़ाल ९९ रु० १ आ० ७]

मन् अ़मिल सालिहन् फ़लिनफ़्सिही ।

जिसने बेशक अ़मल किये उसने अपने नफ़्स के लिये किये ।
[पार:२४ सू० हा'मी'म सज्द: ४१ रु० ६ आ० ४६]

अहादीस

१०६ नेकियों की मुतअ़द्दिद सूरतें

हज़्रत अबू ज़र जुन्दुब (र०) बिन जुनादः से रिवायत है कि मैंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह ! कौन सा अमल अफ़्ज़ल[3] है ? आपने फ़रमाया, अल्लाह पर ईमान और उसके रास्ते में जिहाद[4] । मैंने कहा किस गर्दन का आज़ाद करना अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया, जो मालिकों के नज़दीक सबसे आला और सबसे बेशक़ीमत हो । अर्ज़ किया, अगर मैं यह न कर सकूँ ? फ़रमाया, करनेवालों की मदद करो या बे-सलीक़: और फूहड़ आदमी का काम बना दो । कहा, अगर यह भी न हो सके ? फ़रमाया, लोगों को अपनी ज़ात से तकलीफ़ न पहुँचाओ तो यह ख़ुद अपने ऊपर तुम्हारा सदक़: होगा । [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ विभिन्न २ अनेक ३ श्रेष्ठ ४ धर्मयुद्ध ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

११२० सदक़: की बहुत सी सूरतें

हज़रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम्हारे हर जोड़ पर सदक़: है, हर तस्बीह[1] (सुब्हानल्लाह कहना) सदक़: है। हर तह्लील[2] (ला इलाह इल्लल्लाह कहना) सदक़: है। हर तह्मीद[3] (अल्हम्दुलिल्लाह कहना) सदक़: है। हर तक्बीर[4] (अल्लाहु अक्बर कहना) सदक़: है। नेकी का हुक्म देना सदक़: है। बुराई से रोकना सदक़: है। और चाश्त[5] को दो रकअतें इन चीज़ों का बदल हो सकती हैं।

हज़रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुझ पर मेरी उम्मत के आमाल पेश किये गये, उनको भलाइयाँ और बुराइयाँ दिखाई गयीं, मैंने उनके आमाल के महासिन[6] में रास्ता की गन्दगी और तकलीफ़ की चीज़ का हटा देना पाया है और उनके आमाल की बुराइयों में यह पाया कि खकार और थूक हो और उसको दबाया न जाये।

११३१ ग़रीबों का सदक़: क्या है

हज़रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि ग़रीबों ने कहा, या रसूलुल्लाह ! दौलतमन्द हम पर अज्र में सबक़त ले गये[7]। हम नमाज़ पढ़ते हैं, वह भी नमाज़ पढ़ते हैं; हम रोज़े रखते हैं, वह भी रोज़े रखते हैं; और वह अपने फ़ाज़िल मामलों से सदक़: देकर अपनी नेकियों में इज़ाफ़ा[8] कर लेते हैं। आपने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए भी सदक़: में वुस्अत[9] रखी है। बेशक हर तस्बीह सदक़: है। हर तक्बीर सदक़: है। हर तह्मीद सदक़: है। हर तह्लील सदक़: है। नेकी का हुक्म देना सदक़: है। और बुराई से बाज़ रखना सदक़: है। उन्होंने अर्ज़ किया अगर कोई अपनी ख़्वाहिश के काम करे तो ? फ़रमाया, कोई अपनी ख़्वाहिश हराम तौर से पूरी करता है तो गुनहगार होता है। इसी तरह हलाल तौर से जो अपनी ख़्वाहिश पूरी करेगा तो लाज़मन[10] सवाब का मुस्तहक़[11] होगा।

११४२ मुसलमान भाई से ख़ुश होकर मिलना

हज़रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

---

१ जप २ अल्लाह के सिवाय और कोई ईश्वर नहीं ३ ईश्वर-भय ४ ईश्वर सबसे महान् है। ५ सूर्योदय से एक पहर पहले की नमाज़ ६ अच्छाइयाँ ७ सवाब में बाज़ी मार ले गये ८ बढ़ती ९ सामर्थ्य १० निश्चय ११ अधिकारी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया किसी नेक काम को हक़ीर[1] न समझो अगरचे अपने भाई से ख़न्दःपेशानी[2] से मिलो। [मुस्लिम]

१९६ सदक़ः की बहुत सी सूरतें

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इन्सान को अपने हर जोड़ पर सदक़ः देना लाज़िम है। दो आदमियों के दर्मियान अदल[3] करना सदक़ः है। और आदमी की मदद करना, किसी को उसकी सवारी पर सवार कर देना या किसी का सामान उसकी सवारी पर लाद देना सदक़ः है। अच्छी बात कहना सदक़ः है। और हर क़दम जो नमाज़ के लिए उठे, सदक़ः है। रास्ते से काँटे वग़ैरः हटा देना सदक़ः है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि आदम की औलाद में हर इन्सान तीन सौ साठ जोड़ों पर पैदा किया गया है। जिसने अल्लाह की बड़ाई की और अल्लाह की तारीफ़ की, अल्लाह की तहलील की, अल्लाह की पाकी बयान की और अल्लाह से बख़्शिश चाही, और पत्थर, काँटा या हड्डी लोगों के रास्ते से हटा दी और नेकी का हुक्म दिया, बुराई से बाज़ रक्खा, तीन सौ साठ की तादाद में यह सब नेकियाँ कीं, तो वह उस दिन उस हालत में चले फिरेगा कि अपने को जहन्नम से बचा चुका होगा।

१९७ मस्जिद में आने की फ़ज़ीलत[4]

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है, वह नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया, जो मस्जिद में सुबह को आया या शाम को आया उसके लिए अल्लाह ने जन्नत की मिहमानी तैयार की है जब सुबह और शाम आये। [बुख़ारी व मुस्लिम]

१९८ तुहफ़ः में अदना चीज़ भी हक़ीर न समझो

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ मुसलमान औरतो! अपने किसी हमसाये[5] के लिए किसी तुहफ़ः को हक़ीर न समझो अगरचि बकरी का एक खुर ही हो§। [बुख़ारी, मुस्लिम]

§ कभी हक़ीर से हक़ीर चीज़ बड़ी बरवक़्त और कारआमद साबित होती है।

१ तुच्छ २ प्रसन्न मुद्रा में ३ न्याय ४ महत्ता ५ पड़ोसी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१९६ रास्ते से काँटे का हटा देना भी ईमान की एक शाख़ है

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं, आपने फ़रमाया, कि ईमान की साठ या सत्तर शाख़ें हैं उनमें 'लाइलाह इल्लल्लाह' का कहना अफ़ज़ल है। और अदना काम रास्ते में काँटे वग़ैर: का हटा देना है। और हया ईमान की एक शाख़ है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

१९७ एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाने का सवाब

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, एक आदमी जा रहा था, रास्ते में प्यास ने बेताब किया। एक कुआँ नज़र आया, उसमें उतरा, पानी पिया और निकल आया। क्या देखता है कि एक कुत्ता प्यास की शिद्दत से ज़बान निकाले हुए गीली मिट्टी खा रहा है। उसने ख़याल किया कि यह कुत्ता प्यासा है और मेरी ही तरह इसको प्यास है। वह कुएँ में उतरा और अपना मोज़ा पानी से भर कर मुँह में दबा लिया और बाहर निकलकर कुत्ते को पानी पिलाया तो अल्लाह तआ़ला ने उसका शुक्रिया अदा किया और उसको बख़्श दिया। लोगों ने कहा या रसूलुल्लाह! हमारे लिए क्या बहाइम[1] में भी अज्र है। आपने फ़रमाया हर जानदार में अज्र है। [बुख़ारी, मुस्लिम]

और बुख़ारी की एक रिवायत में है कि अल्लाह ने उसके काम को पसन्द फ़रमाया और बख़्श दिया और जन्नत में दाख़िल किया और इन्हीं दोनों की एक रिवायत में है कि कुत्ता कुएँ के गिर्द फिर रहा था, क़रीब था कि प्यास उसका काम तमाम कर दे; नागाह बनी इस्राईल की बदकार औरतों में से एक औरत ने उसकी इस हालत को देखा तो अपने मोज़े उतार कर उसमें पानी भर लाई, कुत्ते को पिला दिया। पस अल्लाह तआ़ला ने उस औरत को इस काम की वजह से बख़्श दिया।

१९८ रास्ता चलने वालों को तकलीफ़ से बचाने का सवाब

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं—आपने फ़रमाया कि मैंने एक आदमी को जन्नत में घूमते और फिरते हुए देखा है और यह मर्तब:[2] उसको इस वजह से हासिल हुआ कि उसने एक ऐसे दरख़्त को उखाड़ डाला था जिससे रास्ता चलने वालों को तकलीफ़ होती थी। [मुस्लिम]

---

१ मवेशी, पशु २ दर्जा, रुतबा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक रिवायत में है कि एक आदमी जा रहा था, रास्ते में पेड़ की एक शाख़ थी। कहा, ख़ुदा की क़सम मैं इससे मुसलमानों को ज़रूर निजात दूँगा। ताकि उनको तकलीफ़ न हो, पस वह जन्नत में दाख़िल हुआ।

और एक रिवायत में है कि एक आदमी रास्ता तय कर रहा था, राते में एक काँटे भरी शाख़ नज़र आयी। उसको हटाया, अल्लाह तआ़ला ने उसके काम को पसन्द फ़रमाया और उसको बख़्श दिया।

११९[११] शराइत व आदाब के साथ[1] नमाज़ जुमा की फ़ज़ीलत

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स अच्छी तरह वज़ू करके जुमा की जमात में शरीक हो और ख़ामोशी के साथ ध्यान लगा कर सुने तो जो उसके और जुमा के दर्मियान गुनाह हुए हैं बख़्श दिये जायेंगे और तीन दिन मज़ीद। और जिसने कंकरियों से खेला उसने लग़ो काम किया। [मुस्लिम]

१२०[१२] वज़ू का असर

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमान बन्दः या मोमिन बन्दः वज़ू करता है, जब अपने चेहरे को धोता है तो उसके चेहरे से उसकी तमाम ख़ताएँ दूर हो जाती हैं। जिनको अपनी आँखों से देखा है, पानी के साथ या पानी के आख़िरी क़तरे के साथ, फिर हाथों को धोता है तो उसके हाथों से तमाम गुनाह निकल जाते हैं जिनका उसने इर्तिकाब[2] किया है। पानी के साथ या पानी के आख़िरी क़तरे के साथ, फिर जब अपने पाँव धोता है तो पाँव की तमाम ख़ताएँ दूर हो जाती हैं। पानी के साथ या पानी के आख़िरी क़तरे के साथ, यहां तक कि तमाम गुनाहों से पाक हो जाता है। [मुस्लिम]

१२१[१३] नमाज़ पंजगाना जुमा व रम्ज़ान की तासीर

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, पाँच वक़्त की नमाज़ में और जुमा-जुमा तक, रमज़ान-रमज़ान तक दर्मियान के तमाम गुनाहों को बिल्कुल मिटा देने वाला है, अगर बड़े (कबाइर[3]) गुनाहों से बचा जाये। [मुस्लिम]

१२२[१४] सरहद की हिफ़ाज़त

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

---

१ नियमों और शिष्टता एवं विनय के साथ २ पाप का आरम्भ ३ महान् पातक।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या मैं तुमको ऐसी बात की ख़बर दूँ जिसकी वजह से अल्लाह तआ़ला ख़ताओं को मिटा देगा और दर्जा बलन्द करेगा। उन्होंने कहा हाँ या रसूलुल्लाह। फ़रमाया, तकलीफ़ के वक़्त† पूरा-पूरा वज़ू करो और मस्जिद की तरफ़ क़दमों की ज़ियादती करो, और नमाज़ का इन्तिज़ार—नमाज़ के बाद—यह सरहद[1] की हिफ़ाज़त है। [मुस्लिम]

१५/१२३ सुबह व शाम की नमाज़

हज़्रत अबू मूसा अश्अ़री (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो सुबह व शाम नमाज़ पढ़ेगा वह जन्नत में दाख़िल होगा।

१६/१२४ बीमारी में अमल का सवाब

हज़्रत अबू मूसा अश्अ़री (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब बन्दः बीमार हो या सफ़र में हो तो उसके लिए वही अमल लिखा जायेगा जो क़ियाम[2] और तन्दुरुस्ती की हालत में करता था। [बुख़ारी]

१७/१२५ हर नेकी सदक़ः है

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हर नेकी सदक़ः है। [बुख़ारी]

१८/१२६ दरख़्त लगाने की फ़ज़ीलत

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुसलमान कोई पौदा लगाये और उससे लोग फ़ायदः उठायें तो उसके लिए सदक़ः है और अगर चोरी जाये या उसको कोई नुक़्सान पहुँचाये तो भी उसके लिए सदक़ः है। [बुख़ारी]

और एक रिवायत में है कि मुसलमान दरख़्त लगाये उससे इन्सान और जानवर फ़ायदः उठायें उसके लिए क़ियामत तक सदक़ः जारी रहेगा।

१९/१२७ मस्जिद में दूर से आने की फ़ज़ीलत

हज़्रत अबू मूसा अश्अ़री (र०) से रिवायत है कि बनी सल्मः ने मस्जिद के क़रीब घर बनाने का इरादः किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़बर पहुँची। आपने उनसे फ़रमाया कि मुझको

---

† मसलन सख़्त सरदी में।

---

१ सर्वोपरि, असीम २ कहीं ठहरा हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ख़बर पहुँची है कि तुम मस्जिद के क़रीब रहने का इरादः करते हो। उन्होंने कहा हाँ, या रसूलल्लाह ! हमने इसका इरादः किया है । आपने फ़रमाया, ऐ बनी सलॅमः ! अपने घरों को न छोड़ो, तुम्हारे सब नक्शॅ क़दम लिखे जायेंगे; अपने घरों को न छोड़ो, तुम्हारे सब नक्शॅ क़दम लिखे जायेंगे ।§

हज़्रत अबू मुन्ज़िर उबई बिन कऽब (र०) से रियायत है कि एक आदमी का घर मस्जिद से बहुत फ़ासले पर था, ऐसा किसी का न था । उसकी कोई नमाज़ जमाअ़त से फ़ौत न होती थी । उससे किसी ने कहा या मैंने ही कहा कि एक गधा ख़रीद लो उस पर रात की तारीकियों[1] में और दिन की तपती रेत में आया जाया करो । कहा मैं ऐसे घर से ख़ुश नहीं होता जो मस्जिद के पहलू में हो । मैं चाहता हूँ कि मस्जिद की तरफ़ मेरा आना और घर की तरफ़ मेरा पलट जाना लिखा जाये । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह ने तुम्हारे लिए सब का सब जमा कर दिया है ।

२०/१२८ सवाब की उम्मीद और अल्लाह के वादों का यक़ीन छोटे अमल को बलन्द कर देता है

हज़्रत अब्दुल्लाह इब्नि अम्र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, चालीस बातें हैं उनमें ख़ूबी की बात बकरी का अ़तीयः[2] है । जो शख़्स भी इन ख़सलतों पर सवाब की उम्मीद में और जिसका वादा किया गया है उसकी तस्दीक़ में अमल करेगा۞ अल्लाह तआ़ला उसके ज़रीये उसको जन्नत में दाख़िल करेगा । [बुख़ारी]

२१/१२९ एक खजूर का टुकड़ा भी जहन्नम से हिजाब[3] बन सकता है

हज़्रत अ़दी बिन हातिम (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है, फ़रमाते थे कि (दोज़ख़ की) आग से बचो अगरचि एक खजूर का टुकड़ा ही देकर । [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अदी बिन हातिम (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अन्क़रीब क़ियामत के दिन हर शख़्स से उसका परवरदिगार बातें करेगा, इसके और उसके दर्मियान कोई तर्जुमान[4] न होगा, अपनी सीधी तरफ़ देखेगा तो वही देखेगा जो उसने

---

१ अँधेरों २ दान, तुहफ़ः ३ आड़, ओट ४ दुभाषिया, भाषान्तरकार ।

---

§ यानी मस्जिद से दूर रहने में ज़ियादः क़दम पड़ेंगे, ज़ियादः सवाब मिलेगा ।

۞ अमल की रूह और उसकी जान, अल्लाह के सवाब की उम्मीद और अल्लाह के वादः का यक़ीन और उसकी तस्दीक़ है । छोटे-छोटे अमल को यह चीज़ आसमान पर पहुँचा देती है । इसके बग़ैर बड़े से बड़ा अमल बेजान है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आगे भेजा है। और जब अपनी बाईं जानिब देखेगा तो वही नज़र आयेगा जो उसने आगे भेजा है। और जब अपने सामने देखेगा तो (दोज़ख़ की) आग को देखेगा जो उसके चेहरे के सामने होगी; तो आग से बचो अगरचि एक खजूर के टुकड़े ही से क्यों न हो।

१२३३० खाने पीने पर अल्लाह का शुक्र

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला उस बन्दे से ख़ुश होता है जो खाना खाकर और पानी पीकर उसकी तारीफ़ करे। [मुस्लिम]

१२३३१ सद्क़ः में गुन्जाइश

हज़्रत अबू मूसा अश्अ़री (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हर मुसलमान को सद्क़ः देना लाज़िम है। कहा, अगर इस्तिताअ़त[1] न हो तो आप क्या फ़रमाते हैं? फ़रमाया, अपने हाथ से काम करे, अपने को भी नफ़ः पहुँचाये और सद्क़ः भी करे। कहा अगर इसकी भी इस्तिताअ़त न हो? फ़रमाया, हाजतमन्द[2] और मुसीबतज़दः की मदद करे। कहा, अगर यह भी न कर सके? फ़रमाया, नेकी का हुक्म दे। कहा अगर इसकी भी इस्तिताअ़त न हो? फ़रमाया, तो अपने को बुराइयों से बचाये, यह भी सद्क़ः है। [बुख़ारी, मुस्लिम]

अ़िबादत[3] व ताअ़त[4] में इ़तिदाल[5]

आयात

ता॑ हा॑ ॰ मा॑अन्ज़ल्ना अ़लैकल् क़ुर्आन लितश्क़ा॑ ॰

ता॑-हा॑ हमने तुम पर क़ुर्आन इसलिए नहीं उतारा कि तुम तकलीफ़ उठाओ। [सू० ताहा, रु० १ आ० १-२]

…युरीदुल्लाहु बिकुमुल्युस्र व ला युरीदु बिकुमुल्अ़ुस्र ॰…

अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी (करना) चाहता है और तुम को तकलीफ़ देना नहीं चाहता। [सू० बक़र, रु० २३ आ० १८५]

---

१ सामर्थ्य २ मुहताज, ज़रूरतमंद ३ भक्ति ४ उपासना ५ संतुलन, स्थिरता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहादीस

१ १/१ २ सबसे अच्छा अमल और अिबादत वह है जो आदमी हमेशा करे

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि उनके पास एक औरत बैठी थी। इतने में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाये। पूछा यह कौन है, कहा, यह फलाँ औरत है। और यह बड़ी नमाज़ें पढ़ती है। आपने फ़रमाया उतना ही करो जितनी तुम में ताक़त हो; अल्लाह न उकतायेगा, तुम उकता जाओगी। अल्लाह तआला को वही अमल ज़ियादः महबूब है जिस पर करने वाला मुदावमत[1] करे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि तीन आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवियों के घर आये और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अिबादत के मुतअल्लिक पूछने लगे। जब उन्हें ख़बर दी तो गोया उन्होंने कम समझा। कहा, हमारा और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क्या मुक़ाबला, आपके तो तमाम अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये गये। एक ने कहा मैं हमेशा रात को नमाज़ पढ़ूँगा; दूसरे ने कहा मैं हमेशा रोज़े रखूँगा और इफ़्तार न करूँगा[2]; तीसरे ने कहा मैं कभी निकाह न करूँगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाये और फ़रमाया तुम ही इस तरह कहते हो? ख़ुदा की क़सम मैं तुमसे बहुत ज़ियादः अल्लाह से डरने वाला हूँ, लेकिन मैं रोज़े भी रखता हूँ और इफ़्तार भी करता हूँ, नमाज़ें भी पढ़ता हूँ, सोता भी हूँ और औरतों से शादी भी की है। पस जो मेरी सुन्नत[3] से हटा वह मुझसे नहीं (मुस्लिम)

१ २/३ ३ बेजा सख़्ती[4] हलाकत[5] का सामान है

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने बेजा सख़्ती की वह हलाक हुआ। (मुस्लिम)

१ ३/३ ४ दीन से ज़ोर-आज़माई

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दीन आसान है। दीन से जिसने ज़ोर-आज़माई[6] की, दीन ने उसको हरा दिया। पस म्यानारवी[7] इख़्तियार करो और इअतिदाल से[8] काम लो। ख़ुशख़बरी लो। सुबह व शाम से मदद चाहो और कुछ अन्धेरे में§ उठने से।

---

१ हालत पर क़ाइम रहना, स्थिरता २ बिला नाग़ा रखूँगा ३ पथ, इस्लाम द्वारा प्रदर्शित पथ ४ अनुचित तप ५ विनाश ६ धर्म में हठ, पराक्रम-प्रदर्शन ७ मध्यम मार्ग ८ संतुलन से, स्थिरता से।

---

§ यानी सुबह शाम और तहज्जुद की नमाज़।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१४८ चुस्ती की हालत में नमाज़ पढ़े, जब नींद का ग़ल्बः हो, सो जाये

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) मस्जिद में तशरीफ़ लाये और एक रस्सी दो खम्बों के दर्मियान खिंची हुई थी। आपने फ़रमाया यह कैसी रस्सी है, लोगों ने कहा यह ज़ैनब (र०) की रस्सी है। जब नींद का झोंका आता है तो इसीसे लटक जाती हैं। आपने फ़रमाया इसको खोलो; जब चुस्ती रहे उस वक़्त तक नमाज़ पढ़ो और जब सुस्ती आने लगे तो सो जाओ [बुख़ारी व मुस्लिम]

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब कोई नमाज़ पढ़ता हो और नींद उसको परेशान करती हो तो सो जाये; यहाँ तक कि नींद ग़ायब हो जाये। अगर कोई नमाज़ में है और नींद से मदहोश हो रहा है तो मुमकिन है कि वह इस्तिग़फ़ार[1] करना चाहे और उल्टी बद्दुआ़ करने लगे और अपने को कोसने लगे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

१४६ मुतवस्सित[2] नमाज़, मुतवस्सित ख़ुतबः

हज़्रत जाबिर (र०) बिन समुरह् से रिवायत है कि मैं नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ नमाज़ में शरीक था। पस आपकी नमाज़ भी बीच की थी और आपका ख़ुतबः भी बीच का था। [मुस्लिम]

१५० नफ़्स और अह्ल का हक़[3]

हज़्रत वहब (र०) बिन अब्दुल्लाः से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़्रत सलमान (र०) और हज़्रत अबू दरदा (र०) के दर्मियान भाईचारा करा दिया। एक दिन हज़्रत सलमान (र०) हज़्रत अबू दरदा (र०) के घर आये। उनकी बीवी को देखा, बहुत मामूली कपड़ों में थीं, कहा तुम्हारा क्या हाल है? कहा तुम्हारे भाई अबू दरदा (र०) को दुनिया में किसी चीज़ की हाजत नहीं। इतने में हज़्रत अबू दरदा (र०) आ गये, उनके लिए खाना तैयार किया गया। हज़्रत अबू दरदा (र०) ने हज़्रत सलमान (र०) से कहा मैं रोज़ः‡ हूँ, तुम खाओ। हज़्रत सलमान (र०) ने कहा जब तक तुम न खाओगे मैं न खाऊँगा, तो उन्होंने खाना खाया। जब रात हुई तो हज़्रत अबू दरदा (र०) खड़े हुए। हज़्रत सलमान (र०) ने कहा सो जाओ, वह

---

१ अपराधों की क्षमा-प्रार्थना २ मध्यम ३ अपनी जान और अपने लोगों के प्रति भी हमारा कुछ फ़र्ज़ है।

---

‡ वह रोज़ः जो लाज़िमी न हो; सवाब के लिए किया जाय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सो गये। फिर खड़े हुए, फिर कहा अभी सो, जब आख़िर रात हुई तो हज़्रत सलमान (र०) ने कहा, अब उठो। फिर दोनों ने नमाज़ पढ़ी। हज़्रत सलमान (र०) ने कहा, तुम्हारे रब का तुम पर हक़ है। तुम्हारे नफ़्स का तुम पर हक़ है। और तुम्हारी बीवी का तुम पर हक़ है। पस हर एक का हक़ उसके हक़ के मुताबिक़ अदा करो। वह नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आये और इसका ज़िक्र किया। आपने फ़रमाया, सलमान (र०) ने सच कहा। [बुख़ारी]

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़बर दी गयी कि मैं कहता हूँ कि जब तक ज़िन्दः रहूँगा दिन को रोज़े रक्खूँगा और रात को अ़िबादत करूँगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम्हीं ने यह कहा है? मैंने कहा या रसूलल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर फ़िदा हों, बेशक मैंने ही यह बात कही है। आपने फ़रमाया तुम इसकी इस्तिताअ़त[1] नहीं रख सकते। रोज़ः रक्खो और इफ़्तार[2] करो†। सोओ और जागो और महीने में तीन दिन रोज़े रक्खो। एक रोज़े में दस रोज़े का सवाब मिलेगा, इसी तरह पूरे रोज़े का सवाब मिलेगा। मैंने कहा मैं इससे ज़ियादः की ताक़त रखता हूँ। फ़रमाया, एक दिन रोज़ा रक्खो और दो दिन नाग़ा करो। मैंने कहा, मैं इससे ज़ियादः कर सकता हूँ। आपने फ़रमाया, एक दिन रोज़ा रक्खो एक दिन नाग़ा करो। हज़्रत दावूद (अ०) इसी तरह रोज़े रखते थे और यह रोज़े की सबसे ज़ियादः मुअ़तदिल शक्ल[3] है।

एक रिवायत में है कि यह रोज़े सबसे ज़ियादः अफ़्ज़ल[4] हैं। मैंने कहा मैं इससे ज़ियादः की ताक़त रखता हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं इससे ज़ियादः अफ़्ज़ल नहीं समझता।

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) कहते हैं कि अगर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के फ़रमाने के मुताबिक़ तीन रोज़ों को क़बूल करता तो यह मुझे मेरे घरवालों और माल से ज़ियादः महबूब[5] होते।

और एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, मैंने सुना है कि तुम दिन में रोज़े रखते हो और रात में अ़िबादत करते हो, मैंने कहा हाँ या रसूलल्लाह। फ़रमाया, नहीं तुम यह न करो, रोज़े रक्खो और इफ़्तार करो, सोओ और जागो, बेशक

---

१ सामर्थ्य २ रोजः न रखना, नाग़ा करना ३ मध्यम श्रेणी ४ श्रेष्ठ ५ प्रिय

---

† इफ़्तार से यहाँ मुराद है कि एक दिन रोज़ः रक्खो और एक दिन नाग़ा करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुम्हारे जिस्म का तुम पर हक़ है। तुम्हारी बीवी का तुम पर हक़ है। और तुम्हारे मिहमानों का तुम पर हक़ है। महीने में तीन दिन रोज़े रक्खो, यह तुम्हारे लिए काफ़ी है। तुम्हारे लिए इसमें दसगुना सवाब है। यह पूरे ज़माने के रोज़े हैं। लेकिन मैंने सख़्ती की तो मुझपर सख़्ती की गयी। मैंने कहा, या रसूलल्लाह ! मुझमें क़ुव्वत है। आपने फ़रमाया, हज़्रत दावूद (अ०) के रोज़े रक्खो जैसे वह रखते थे; इससे ज़ियादः न रक्खो। मैंने कहा हज़्रत दावूद (अ०) के रोज़े कैसे थे ? आपने फ़रमाया, आधे ज़माने के।

हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) जब बूढ़े हो गये तो कहते थे, ऐ काश मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इर्शाद पर अ़मल करता।

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुझको खबर पहुँची है कि तुम दिन में रोज़े रखते हो और रात को क़ुर्आन पढ़ते हो। मैंने कहा हाँ या रसूलल्लाह ! इसमें मेरी नीयत भलाई की है। आपने फ़रमाया, हज़्रत दावूद अ़लैहिस्सलाम के ऐसे रोज़े रक्खो। वह लोगों में सबसे ज़ियादः अ़िबादत करने वाले थे। और क़ुर्आन हर महीने ख़त्म करो। मैंने कहा या नबी अल्लाह ! मैं इससे ज़ियादः ताक़त रखता हूँ। फ़रमाया, बीस दिन में ख़त्म करो। मैंने अर्ज़ किया कि मुझमें इससे ज़ियादः ताक़त है। फ़रमाया, सात दिन में ख़त्म करो। मैंने कहा या नबीअल्लाह ! मैं इससे ज़ियादः ताक़त पाता हूँ। फ़रमाया, सात दिन में ख़त्म करो और इस पर ज़ियादती न करो। पस मैंने सख़्ती की तो मुझ पर सख़्ती की गयी। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम नहीं जानते शायद तुम्हारी उम्र लाँबी हो। आपने जो मुझसे फ़रमाया था वही हुआ। जब मैं बूढ़ा हुआ तो तमन्ना करता था कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बात मान लेता। एक रिवायत में है, जिसने हमेशा रोज़े रक्खे उसके रोज़े नहीं। (तीन बार फ़रमाया)।

एक रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला को सबसे ज़ियादः हज़्रत दावूद (अ०) के रोज़ महबूब थे। और अल्लाह तआ़ला को सबसे ज़ियादः हज़्रत दावूद (अ०) की नमाज़ महबूब थी। वह निस्फ़ रात को सोते थे, तिहाई रात को अ़िबादत करते थे। और उसके छठे हिस्से में सोते थे। और एक दिन रोज़ा रखते थे और एक दिन नाग़ा करते थे, और दुश्मनों से लड़ते थे तो भागते नहीं थे।

एक रिवायत में है कि हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) ने कहा, मेरे बाप ने एक हसब वाली औरत से मेरी शादी की। वह अपनी बहू से पूछा करते थे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कि तुम्हारे शौहर कैसे हैं ? वह जवाब में कहती थीं कि बड़े अच्छे आदमी हैं। जब से हम आये हैं न सोते हैं, न हमारे किसी बात पर मुअतरिज़ होते हैं[1]। इसको एक ज़माना हो गया। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसका ज़िक्र किया गया तो आप ने फ़रमाया उनको मुझसे मिलाओ। जब मैं मिला तो आपने फ़रमाया, तुम कैसे रोज़े रखते हो ? मैंने कहा हर रोज़। फ़रमाया, क़ुर्आन कैसे ख़त्म करते हो ? मैंने कहा, हर रात में एक (और उसी तरह ज़िक्र किया जैसे ऊपर गुज़र चुका है।) वह (यानी हज़्रत अब्दुल्लाह र०) दिन को अपने घरवालों से दौर करते थे ताकि रात को मिहनत में तख़्फ़ीफ़ हो और जब क़ुव्वत हासिल करने का इरादः करते थे तो कुछ दिनों के रोज़े छोड़ देते थे, उसको गिनते रहते थे, फिर बाद में रखते थे। यह नापसन्द करते कि जो काम हुज़ूर (स०) के ज़माने में करते थे, उसको छोड़ दें।

२६८ हालतों का फ़र्क़ निफ़ाक़ नहीं ◉

हज़्रत हनज़लः इब्निुर्रबी (र०) से रिवायत है (यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कातिब थे) कि एक दिन अबू बक्र (र०) मुझसे मिले और मेरा हाल पूछा। मैंने कहा, हनज़लः मुनाफ़िक़ हो गया। कहा सुब्हानल्लाह ! यह तुम क्या कहते हो। मैंने कहा, जब हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास होते हैं और आप जन्नत और दोज़ख़ का ज़िक्र करते हैं तो गोया हमारी आँखें देखती हैं और जब हम अपने घरवालों के पास होते हैं तो बीवी, बच्चे और खेती बाड़ी में बहुत कुछ भूल जाते हैं। अबू बक्र (र०) ने कहा तुमने तो मेरे दिल की कैफ़ियत बयान कर दी। मेरा भी यही हाल है। फिर हम दोनों चले। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये और मैंने कहा या रसूलल्लाह, हनज़लः मुनाफ़िक़ हो गया। आपने फ़रमाया यह क्या ? मैंने कहा, या रसूलल्लाह ! जब हम आपके पास होते हैं और आप जन्नत-दोज़ख़ का ज़िक्र फ़रमाते हैं तो गोया हमारी आँखें देख रही हैं। और जब हम अपने घरवालों के पास जाते हैं तो बीवी, बच्चे, खेती बाड़ी के शग़्ल में हम भूल जाते हैं। आपने फ़रमाया, क़सम है उसकी जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है। जिस हाल पर तुम मेरे पास रहते हो अगर इस पर हमेशा क़ायम रहो तो फ़िरिश्ते तुम्हारे रास्तों पर और तुम्हारे बिस्तरों पर तुमसे मुसाफ़हः[2]

१ आपत्ति करते हैं २ हाथ मिलाएँ।

◉ मनुष्य की चित्तवृत्ति सदा समान नहीं रहती। इसके यह माने नहीं कि वह बहुरूपिया या ठग है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करेंꣳ। लेकिन ऐ हनज़लः यह बात गाहे गाहे। (तीन मर्तबः आपने फ़रमाया) [मुस्लिम]

१६१२ धूप में खड़े रहने की मन्नत

हज़्रत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुतबा फ़रमा रहे थे। एक आदमी को खड़ा देखकर उसके मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया कि यह कौन हैं? लोगों ने कहा यह अबू इस्राईल हैं। उन्होंने मिन्नत मानी है कि धूप में खड़े रहें, न साया लें न बात करें न बैठें, और रोज़े रक्खें। आपने फ़रमाया, उनसे कहो बैठो, बात करो, साया लो और अपने रोज़े को पूरा करो‡ [बुख़ारी]

आमाल की मुहाफ़ज़त और निबाह[१]

आयात

अलम् यअ्निलिल्लजीन आमनू अन् तख़शअ क़ुलूबुहुम् लिज़िक्-रिल्लाहि व मा नज़ल मिनल्हक़्क़ि ला व ला यकूनू कल्लजीन अूतुल्किताब मिन् क़ब्लु फ़ताल अलैहिमुल्-अमदु फ़क़सत् क़ुलूबुहुम् त ...

ꣳ इसलिए कि फिर तुम जिस्मानी लोग नहीं हो, रूहानी व नूरानी लोग हो जिनके और फ़िरिश्तों के दर्मियान जिसमानीयत व माद्दीयत का कोई हिजाब नहीं। [हज़्रत हनज़लः का घर गृहस्थी में फँस कर रसूल स० के कथन व दोज़ख़-बहिश्त के नज़्ज़ारे भूल जाना और इस अपनी नामुनासिब हालत को सरे आम कहते फिरना ही इस बात का सुबूत है कि वह निफ़ाक़ (पाखण्ड) से कोसों दूर हैं और फ़िरिश्तों जैसी रूह उनमें है। —लिप्यन्तरणकार]

‡ ऐसी बेफ़ायदः मशक़्क़त[२] इस्लाम में जाइज़ नहीं। अल्लाह का क़ुर्ब[३] इत्तिबाअ् सुन्नत[४] से हासिल होता है; न कि महज़ जिस्मानी तअ़ज़ीब[५] और नफ़्सकुशी[६] से; साया अगर अल्लाह ने मुसलमानों के लिए नहीं पैदा किया तो क्या काफ़िरों के लिए पैदा किया है।

१ कर्मों पर दृढ़ता और उनका पालन २ व्यर्थ तामसी तप ३ सामीप्य, सान्निध्य ४ नबी के पद-चिह्नों पर चलने ५ शरीर को कष्ट देना ६ अनुचित इंद्रिय-दमन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्या अभी ईमानवालों के लिए वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से और जो हक़ उतारा गया उससे डरें और झुकें और उन लोगों की तरह न हों जिनको इससे पहले किताब दी गयी, जब उन पर मुद्दत लाँबी हुई तो उनके दिल सख़्त हो गये।

[सू० ह़दीद, रु० २ आ० १६]

......वक़फ़्फ़ैना बिअ़ीसब्नि मर्यम व आतैनाहुल् अिन्जील ۵ ला वजअ़ल्ना फ़ी क़ुलूबिल्लजीनत्तबअ़ूहु रअ्फ़तंव्व रह़्मतन् त व रह़्बानिय्यतनिब्तदअ़ूहा मा कतब्नाहा अ़लैहिम् अिल्लब्तिग़ाअ रिज़्वानिल्लाहि फ़मा रअ़ौहा ह़क़्क़ रिआयतिहा ज...

और हमने ईसा (अ़ीसा) बिन मर्यम को पीछे भेजा और उनको इन्जील दी और जिन्होंने उनका इत्तिबाअ़[1] किया उनके दिलों में राफ़त व रह़्मत[2] रख दी। उन्होंने रह़्बानियत[3] ईजाद की; हमने उन पर नहीं लिखा था मगर उन्होंने अल्लाह की रज़ा चाही, फिर इसको पूरी तरह निबाह न सके।

[सू० ह़दीद, रु० ४ आ० २७]

व ला तकूनू कल्लती नक़ज़त् ग़ज़्लहा मिम्बअ़्दि क़ुव्वतिन् अन्कासन् त...

और उस औरत की मानिन्द न हो जिसने क़ुव्वत से सूत काता फिर उसको रेज़ा-रेज़ा कर दिया।

[सू० नह़्लि रु० १३ आ० ९२]

वअ़्बुद् रब्बक ह़त्ता यअ्तियकल्यक़ीनु...

और अपने रब की अ़िबादत करो यहाँ तक कि मौत आ जाये।

[सू० ह़िज्रि, रु० ६ आ० ९९]

अह़ादीस

१४० अल्लाह को वह अमल महबूब है जिस पर मुदावमत[4] की जाये

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला को वही अ़िबादत व अ़मल महबूब है जिसपर अ़मल करने वाला हमेशा क़ायम रहे।

---

१ अनुसरण, पैरवी २ करुणा और दया ३.आजीवन ब्रह्मचर्य, स्त्रियों का सर्वथा त्याग ४ धृति, हालत पर क़ाइम रहना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१४१[२] तहज्जुद (की नमाज़) की क़ज़ा[१] दिन में

हज़्रत उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो तहज्जुद से पहले सो जाये फिर वह नमाज़ सुबह और ज़ुह्र के दर्मियान पढ़ ले, तो उसको वैसा ही सवाब मिलेगा गोया रात ही को पढ़ी है। [मुस्लिम]

१४२[३] तहज्जुद की मुदावमत[२]

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र (र०) बिन अलआ़स से रिवायत है कि मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अब्दुल्लाह! तुम उस शख़्स की तरह न होना जो रात (-रात) को अ़िबादत किया करता था, फिर छोड़ दिया। [बुख़ारी-मुस्लिम]

१४३[४] तहज्जुद की क़ज़ा दिन में

हज़्रत आयशः (र०) फ़रमाती हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम किसी दर्द या तकलीफ़ की वजह से तहज्जुद छोड़ देते थे तो सुबह को बारह रकऽ़त पढ़ते थे। [मुस्लिम]

सुन्नत और उसके आदाब की मुहाफ़ज़्त[३]

आयात

...व मा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूहु क़ व मा नहाकुम् अ़न्हु फ़न्तहू ज...

और जो तुमको रसूल ने दिया उसको पकड़ो और जिससे तुम को रोका है उससे बाज़ रहो। [सू० ह़श्रि, रु० १ आ० ७]

व मा यन्तिक़ु अ़निल्हवा त (३) अिन् हुव अिल्ला वह्युंय्यूहा ला (४)

और वह अपनी ख़्वाहिश से नहीं बोलते, यह तो महिज़ 'वही' है जो उनकी तरफ़ भेजी जाती है। [सू० नज्मि, रु० १ आ० ३-४]

---

१ क्षति (की पूर्ति) २ धृति, हालत पर क़ाइम रहना ३ पैग़म्बरॅ-इस्लाम के पदचिह्नों पर चलता यह 'सुन्नत' है। उस पर चलना और उसके प्रति श्रद्धा की सुरक्षा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क़ुल् अिन् कुन्तुम् तुहिब्बूनल्लाह फ़त्तबिअूनी युह्बिब्कुमुल्लाहु व यग़्फ़िर्लकुम् ज़ुनूबकुम् ॥...

कह दो अगर तुम अल्लाह को चाहते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुमको चाहेगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा।

[सू० आलि अिम्रान, रु० ४ आ० ३१]

लक़द् कानलकुम् फ़ी रसूलिल्लाहि अुस्वतुन् हूसनतुलिलमन् कान यर्जुल्लाह वल्यौमल्आख़िर...

तुम लोगों के लिए यानी उस शख़्स के लिए जो अल्लाह से और रोज़े-आख़िरत से डरता हो, रसूलुल्लाह का एक अच्छा नमूना मौजूद है।

[सू० अह्ज़ाबि, रु० ३ आ० २१]

फ़ला व रब्बिक ला युअ्मिनून हूत्ता युहक्किमूक फ़ी मा शजर बैनहुम् सुम्म ला यजिदू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् हूरजम्मिम्मा क़ज़ैत व युसल्लिमू तस्लीमन्

नहीं, क़सम है तुम्हारे रब की वह ईमान न लायेंगे जब तक यह बात न हो कि उनके आपस में जो झगड़ा हो उसमें यह लोग आपसे तस्फ़िआ करायें, फिर उस आपके तस्फ़िए पर अपने दिलों में कोई तंगी न पायें और पूरे तौर पर तस्लीम कर लें। [सू० निसा, रु० ९ आ० ६५]

...फ़अिन्तनाज़ऽतुम् फ़ी शैअिन् फ़रुद्दूहु अिलल्लाहि वर्रसूलि अिन् कुन्तुम् तुअ्मिनून बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि ॥......

अगर तुम किसी बात पर झगड़ो तो उसको अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ पलटा दो, अगर तुम अल्लाह और रोज़े-आख़िरत पर ईमान रखते हो। [सू० निसा, रु० ८ आ० ५९]

मँय्युतिअ्रिर्रसूल फ़क़द् अताअ़ल्लाह ॥...

और जिसने रसूल की इताअ़त की उसने अल्लाह की इताअ़त की।

[सू० निसा रु० ११ आ० ८०]

...व अिन्नक लतह्दी अिला सिरातिम्मुस्तक़ीमिन् ला सिरातिल्लाहि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बेशक तुम सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत करते हो। सीधा रास्ता अल्लाह का। [सू० शूरा, रु० ५ आ० ५२]

...फ़ल्यह्ज़रिल्लज़ीन युख़ालिफ़ून अन् अम्रिही अन् तुसीबहुम् फ़ित्नतुन् औ युसीबहुम् अज़ाबुन् अलीमुन्

जो उसके हुक्म की मुख़ालिफ़त करते हैं उनको डरना चाहिए; ऐसा न हो कि वह किसी आज़माइश में मुब्तिला कर दिये जायें या उनको कोई दर्दनाक अज़ाब पहुँच जाये। [सू० नूर, रु० ९ आ० ६३]

वज़्कुर्न मायुत्ला फ़ी बुयूतिकुन्नमिन् आयातिल्लाहि वल्हिक्मति ......

और जो तुम्हारे घर में अल्लाह की आयतें और उसकी हिक्मतें पढ़ी जाती हैं उसको याद करो (अज़वाज़ मुतह्हरात को ख़िताब है)। [सू० अह्ज़ाब, रु० ४ आ० ३४]

अहादीस

१५४ कसरतें सवाल की मुमानिअत

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुझको छोड़ दो जब मैं तुमको छोड़ूँ; बेशक अगली उम्मतों को कसरतें सवाल ने और अम्बिया की मुख़ालिफ़त ने हलाक किया। जब तुमको किसी बात से मना करूँ तो उससे बाज़ रहो और जिस बात का हुक्म दूँ उसको करो जितनी तुम में इस्तिताअत[1] हो। [बुख़ारी]

१५६ हर बिद्अत[2] गुमराही है

हज़्रत अिरबाज़ (र०) बिन सारियः से रिवायत है कि रसूलुल्लाह अलैहि व सल्लम ने हमको ऐसी बलीग़[3] और मुअस्सिर[4] नसीहत की कि जिससे हमारे दिल दहल गये और आँखे अश्कबार[5] हो गयीं। हमने कहा, या रसूलल्लाह! यह नसीहत तो ऐसी है गोया आप हमसे रुख़्सत हो रहे हैं। तो आप हमें वसिय्यत कीजिए। आपने फ़रमाया, मैं तुमको अल्लाह की परहेज़गारी की सुनने और इताअत[6] की वसिय्यत करता हूँ

१ सामर्थ्य २ धर्म में नई बात, नया विचार दाखिल करना ३ चमत्कारपूर्ण ४ प्रभावशाली ५ आँसू भरी ६ आज्ञापालन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अगरचि तुम पर एक हब्शी गुलाम हाकिम हो और तुममें जिसकी उम्र लाँबी होगी वह बहुत इख़्तिलाफ़ देखेगा। तो चाहिए कि मेरी और ख़ुलफ़ाएँ राशिदीन और हिदायत पाने वालों की सुन्नत को अपने दाँतों से मज़बूत पकड़ ले और नयी-नयी बातों से बचे, बेशक हर बिद्अ़त[1]§ गुमराही है। (अबूदावूद-तिर्मिज़ी)

१३६ नाफ़रमानी इन्कार है

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरी उम्मत के सब लोग जन्नत में जायेंगे। मगर वह जन्नत से महरूम रहेंगे जिन्होंने इन्कार किया। लोगों ने कहा, या रसूलल्लाह इन्कार कौन करेगा? आपने फ़रमाया, जिसने मेरी इताअ़त की वह जन्नत में दाख़िल होगा जिसने नाफ़रमानी[2] की उसने इन्कार किया। [बुख़ारी]

१३७ नाफ़रमानी[२] और इन्कार[३] की शामत

हज़्रत अबू मुस्लिम (र०) या सलमा बिन अकवअ़ (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि एक आदमी अपने बाएँ हाथ से खाना खा रहा था। आपने फ़रमाया सीधे हाथ से खाओ; उसने कहा, मैं नहीं खा सकता (उसके गुरूर ने यह बात कहलाई थी)। आपने फ़रमाया न खा सको। फिर अपना सीधा हाथ कभी मुँह की तरफ़ न उठा सका। [मुस्लिम]

---

§ किसी ऐसी चीज़ (यानी बिद्अ़त) को अल्लाह और उसके रसूल ने दीन में शामिल नहीं किया है और उसका हुक्म नहीं दिया है। दीन में शामिल कर लेना और उसका एक जुज़ बना देना, उसको सवाब और तक़र्रुब-इलल्लाह के लिए करना, उसकी किसी ख़ुदसाख़्तः शक्ल और अपने वज़अ किये हुए शराइत व आदाब की इसी तरह पाबन्दी करना जिस तरह एक शरई हुक्म की पाबन्दी की जाती है, बिद्अ़त है, और हर बिद्अ़त गुमराही है। इसमें किसी की तख़्सीस[4] व इस्तिस्ना[5] नहीं। जो उसमें से किसी को मुस्तस्ना[5] करता है वह गोया बक़ौल हज़्रत मुजद्दिद अल्फ़सानी (र०) कहता है कि 'बाज़ बिद्अ़तें गुमराही हैं और बाज़ हिदायत हैं'। और यह हदीस की सरीह मुख़ालिफ़त[6] है। इसलिए कि हदीस में आया है कि हर बिद्अ़त गुमराही है।

---

१ धर्म में नई बात, नया विचार लाना २ अवज्ञा ३ विमुखता ४ विशेषता, प्रमुखता ५ अपवाद, छूट ६ विरोध।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१४९८ सफ़[1] बराबर न करने का वबाल

हज़्रत नुअ्मान बिन बशीर (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ्लैहि व सल्लम को फ़रमाते सुना कि अपनी सफ़ों को बराबर करो वरना अल्लाह तआ्ला तुम में फूट डाल देगा।

और मुस्लिम की एक रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ्लैहि व सल्लम हमारी सफों को बराबर कर रहे थे गोया पाँसा को बराबर करते हैं, यहाँ तक कि आपको मालूम हो गया कि हम लोग समझ गये। एक दिन आप निकले और खड़े हुए। क़रीब था कि तक्बीर[2] कहें इतने में एक आदमी का सीना निकला हुआ देखा। फ़रमाया अल्लाह के बन्दो! अपनी सफ़ों को बराबर करो नहीं तो अल्लाह तआ्ला तुम्हारे आपस में फूट डाल देगा@।

१४९६ सोते वक़्त आग बुझा दो

हज़्रत अबू मूसा (र०) से रिवायत है कि मदीना में एक घर मय घरवालों के जल गया। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ्लैहि व सल्लम को ख़बर पहुँची तो आपने फ़रमाया, आग तुम्हारी दुश्मन है। जब तुम सोने का इरादः किया करो तो उसको बुझा दिया करो [बुख़ारी]

१४९७ एक बेहतरीन मिसाल

हज़्रत अबू मूसा (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्०) ने फ़रमाया मेरी और उस अ्ल्म[3] व अ्मल[4] की मिसाल जिसके साथ मैं भेजा गया ऐसी है जैसे किसी ज़मीन पर बारिश हो। उस ज़मीन का एक टुकड़ा अच्छा है। उसने पानी को क़ुबूल किया और बहुत घास और सब्ज़: उगाया। और एक टुकड़ा ऐसा है जिसने पानी को रोक लिया, अल्लाह ने उससे लोगों को नफ़ा पहुँचाया, उससे लोगों ने पिया और पिलाया और खेती की। और एक टुकड़े पर पहुँचा जो बंजर है; न पानी को रोका न सब्ज़: उगाया। पस वह (पहली) मिसालें उसकी है जिसने अल्लाह के दीन में समझ हासिल की, अपने को नफ़ा पहुँचाया, सीखा और सिखलाया। और यह (दूसरी) मिसाल उस शख़्स की है कि अल्लाह की उस हिदायत पर, जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ, सर उठा कर भी न देखा और न मुतवज्जिः हुआ। [बुख़ारी, मुस्लिम]

@ आजकल मुसलमानों ने इसमें बड़ा तसाहुल[5] कर रखा है। सफ़ों के दर्मियान ख़ाली जगह होती है। सफ़ें बराबर नहीं होतीं।

१ पंक्ति (नमाज़ में खड़ी क़तार) २ 'अल्लाहु अक्बर' का नारा ३ ज्ञान ४ कर्म ५ सुस्ती, लापरवाही।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१९१ आँ हज़्रत, (सल्०) की शफ़क़त[1] व हिदायत[2]

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरी और तुम्हारी मिसाल ऐसे आदमी की तरह है जिसने आग रौशन की, उसमें पतिंगे और परवाने गिरने लगे और वह हँकाता है। इसी तरह मैं तुम्हारी कमर पकड़कर तुम को दोज़ख़ से हटाता हूँ, और तुम मेरे हाथ से निकले जा रहे हो। [मुस्लिम]

१९२ खाने के आदाब व अहकाम

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उँगलियों के चाटने और रकाबी के साफ़ करने का हुक्म दिया है। और फ़रमाया, तुम नहीं जानते इसकी किस चीज़ में बर्कत है। [मुस्लिम]

और इन्हीं की एक रिवायत में है कि तुम्हारा कोई लुक़मा[3] गिरे तो उठालो और अगर कुछ भर गया हो तो साफ़ करके खालो, उसको शैतान के लिए न छोड़ो और अपने हाथ को रूमाल में न पोंछो जब तक कि उंगलियों को चाट न लो। तुम नहीं जानते कि किस खाने में बर्कत है।

और एक रिवायत में है कि शैतान तुम्हारी हर चीज़ में हाज़िर रहता है, यहाँ तक कि खाने के वक़्त भी। पस जब तुम्हारा कोई लुक़मा गिरे तो उसको साफ़ करके खालो; शैतान के लिए न छोड़ो।

१९३ आँ हज़्रत (सल्०) के बाद नयी-नयी बातें निकालने वाले

हज़्रत इब्नि अब्बास (र०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्०) ने हमसे नसीहत के दौरान में फ़रमाया कि तुम अल्लाह की तरफ़ नंगे पाँव नंगे बदन अपनी असली हालत पर जमा किये जाओगे और वह फ़रमाता है कि जैसे हमने पहली मर्तबा तुमको पैदा किया है इसी तरह हम तुमको पलटायेंगे और हमारा वादा है, हम पूरा करने वाले हैं। याद रक्खो क़ियामत में सबसे पहले जिसको कपड़े पहनाये जायेंगे वह हज़्रत इब्राहीम (अ०) होंगे। और याद रक्खो मेरी उम्मत के कुछ लोग लाये जायेंगे और बाँयी तरफ़ ले जाया जायेगा। मैं कहूँगा या रब यह मेरे साथी हैं तो मुझसे कहा जायेगा कि आप नहीं जानते उन्होंने आपके बाद क्या नया काम किया। पस मैं कहूँगा जैसे एक नेक बन्दे ने [नेक बन्दे से हज़्रत अ़ीसा (अ०) मुराद हैं।] कहा कि मैं जब तक इनमें रहा इन पर गवाह रहा, जब मैं वफ़ात पा गया तो तू इनका निगिहबान था। और तू ही

---

१ दया २ पथप्रदर्शन ३ निवाला, कौर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हर चीज़ पर गवाह है। तो मुझसे कहा जायेगा कि जबसे तुमने इनको छोड़ा यह बराबर दीन से फिरते रहे। [बुख़ारी व मुस्लिम]

१९६४ कंकरियाँ और ढीले फेंकने की मुमानिअ़त

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन मुग़फ़्फ़ल से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स़ल्०) ने कंकरियों के फेंकने से मना फ़रमाया है। और फ़रमाया कि यह कंकरियाँ न शिकार करती हैं न दुश्मन को क़त्ल करती हैं। बल्कि यह आँखों को फोड़ देती हैं। और दाँतों को तोड़ देती हैं।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

एक रिवायत में है कि इब्नि मुग़फ़्फ़ल ने अपने एक अ़ज़ीज़ को कंकरियाँ फेंकते हुए देखा तो मना किया और हदीस सुनाई। फिर दोबारः उसको कंकरियाँ फेंकते हुए देखा तो कहा मैं तुमको सुनाता हूँ कि हुज़ूर (स़ल्०) ने इससे मना फ़रमाया है और तुम फिर वही हरकत करते हो। अब तुमसे कभी बात न करूँगा।

१९२६ महज़ रसूलुल्लाह (स़ल्०) की इक़्तिदा[1] में अ़मल

हज़्रत आ़बिस (र०) बिन रबिअ़ः से रिवायत है कि मैंने हज़्रत उमर (र०) को देखा। हजरें अस्वद को चूम रहे थे और कह रहे थे कि मैं जानता हूँ कि तू पत्थर है न नफ़ा पहुँचा सकता है और न नुक़सान। अगर मैं रसूलुल्लाह (स़ल्०) को चूमते न देखता तो मैं तुझ को न चूमता। [बुख़ारी-मुस्लिम]

अल्लाह की इताअ़त[2] और उसकी दावत[3] का जवाब

आयात

फ़ला व रब्बिक ला युअ्मिनून हत्ता युहक्किमूक फ़ी मा शजर बैनहुम् सुम्म ला यजिदू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् हरजम्मिम्मा क़ज़ैत व युसल्लिमू तस्लीमन्।

नहीं, क़सम है तुम्हारे रब की वह ईमान न लायेंगे जब तक कि तुमको फ़ैसला करने वाला इस बात पर न बनालें जिसमें वह आपस में इख़्तिलाफ़ करते हैं और फिर अपने दिलों में तुम्हारे फ़ैसले से कोई तंगी न पायें और पूरे तौर पर तस्लीम करलें। [सू० निसा, रु० ६ आ० ६५]

---

१ अनुकरण, पैरवी २ आज्ञापालन ३ आमंत्रण।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अिन्नमा कान क़ौलल्मुअ्मिनीन अिज़ा दुअ़ू अिलल्लाहि व रसूलिही लियह्कुम बैनहुम् अँय्यक़ूलू समिअ़्ना व अतअ़्ना व अुलाअिक हुमुल्मुफ़्लिहून

बेशक ईमानवालों का क़ौल, जब अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ बुलाये जाते हैं ताकि उनके दर्मियान फ़ैसला किया जाये, यह है कि, (ख़ुशी-ख़ुशी) कहते हैं कि हमने सुना और हमने इताअ़त[1] की; वही लोग फ़लाह[2] पाने वाले हैं। [सू० नूर, रु० ७ आ० ५१]

अहादीस

१८६ मुसलमानों की शानें इताअ़त[1] व तस्लीम[3]

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह (सल्०) पर यह आयत उतरी—

लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व अिन् तुब्दू मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् औ तुख़्फ़ूहु युहासिब्कुम् बिहिल्लाहु।

अल्लाह के लिए है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, उसको छिपाओ या ज़ाहिर करो अल्लाह उसका हिसाब लेगा।

—तो यह बात रसूलुल्लाह (सल्०) के असहाब पर गराँ गुज़री[4]। वह आपके पास आये और घुटनों के बल बैठ गये और कहने लगे, या रसूलल्लाह! हम पर वह आमाल[5] लाज़िम किये गये थे जिनकी हममें ताक़त थी—मसलन नमाज़, रोज़ा, जिहाद, सदक़:। और अब आप पर यह आयत उतरी है, इसकी हममें ताक़त नहीं। आपने फ़रमाया, क्या तुम अह्लॅ-किताब की तरह कहना चाहते हो जैसे उन्होंने कहा—हमने सुना और नाफ़रमानी की, बल्कि कहो हमने सुना और इताअ़त की। ऐ हमारे रब! तुमसे मग़्फ़िरत[6] चाहते हैं। और हमको तेरी तरफ़ पलटना है।

१ आज्ञापालन २ सफलता ३ समर्पण ४ महँगी, भारी ५ कर्त्तव्य ६ माफ़ी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब उन्होंने इसका विर्द किया[1] और उनकी ज़बानें रवाँ हो गयीं तो उसके बाद अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी:—

आमनर्रसूलु बिमा उन्ज़िल अिलैहि मिर्रब्बिही वल्मुअ्मिनून त कुल्लुन् आमन बिल्लाहि व मलाअिकतिही व कुतुबिही व रुसुलिही क़िफ़ ला बुफ़र्रिक़ु बैन अह्दिम्मिर्रुसुलिही क़िफ़ व क़ालू समिअ्ना व अतअ्ना क़ ज ग़ुफ़्रानक रब्बना व अिलैकल्मसीरु

रसूल और ईमान वाले उस पर ईमान लाये जो उन पर उनके रब की तरफ़ से उतारा गया और हर एक ईमान लाया अल्लाह पर, उसके फ़िरिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर; उसके रसूलों में किसी के दर्मियान हम फ़र्क़ नहीं करते और उन्होंने कहा कि सुना हमने और इताअ़त की हमने, ऐ हमारे परवरदिगार हम तुझसे मग़्फ़िरत चाहते हैं। और हम को तेरी तरफ़ पलटना है। [सू० बक़र रु० ४० आ० २८५]

जब हम सब यह कहने लगे तो अल्लाह तआ़ला ने उनको मन्सूख़ कर दिया और यह आयत उतारी—

ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन् अिल्ला वुस्अ़हा लहा मा कसबत् व अ़लैह मक्तसबत्।

अल्लाह किसी को तकलीफ़ नहीं देता मगर उसकी वुसअ़त[2] के मुताबिक़, जो कुछ कमाया अपने ही नफ़ा के लिए और जो बुरा किया तो अपना नुक़सान किया।

फिर अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों की तरफ़ से यह आयत उतारी।

रब्बना ला तुआ़ख़िज़्ना अिन्नसीना औ अख़्तअ्ना।

ऐ हमारे परवरदिगार, हमको न पकड़ अगर हम भूल जायें या ख़ता कर जायें।

अल्लाह तआ़ला ने जवाब में फ़रमाया, हाँ।

रब्बना व ला तह्मिल् अ़लैना अिस्रन् कमा हमल्तहु अ़लल्लजीन मिन् क़ब्लिना।

ऐ रब हमारे, हम पर कोई बोझ न रख जैसे तूने अगलों पर रक्खा। फ़रमाया, हाँ।

---

१ बार-बार कहा २ शक्ति, सीमा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रब्बना व ला तुहम्मिल्ना मा ला ताक़त लना बिही ।

ऐ हमारे रब, न उठवा हमसे (वह बोझ) जिसकी हमको ताक़त नहीं ।

फ़रमाया, हाँ ।

वअ़फ़ुअ़न्ना वग़्फ़िर्लना वर्हम्ना अन्त मौलाना फ़न्सुर्ना अ़लल्क़ौमिल्काफ़िरीन ।

और हमको माफ़ करदे और हमको बख़्श दे और हम पर रहम कर, तू हमारा मौला है । काफ़िरों पर हमको मदद दे ।

फ़रमाया, हाँ§ । [मुस्लिम]

बिद्अ़ात[1] की मुमानिअ़त

आयात

…फ़माज़ाबअ़दल् हक़्क़ि अिल्लज़्ज़लालु ज सला

नहीं है हक़ के बाद मगर गुमराही [सू० यूनुस, रु० ४ आ० ३२]

…मा फ़र्रत्ना फ़िल्किताबि मिन् शैअिन्…

हमने किताब में किसी चीज़ की कमी नहीं की ।

[सू० अन्आमि, रु० ४ आ० ३८]

……फ़अिन् तनाज़अ़्तुम् फ़ी शैअिन् फ़रुद्दूहु अिलल्लाहि वर्रसूलि…

अगर तुम किसी चीज़ में झगड़ो तो उसको अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ पलटा दो । [सू० निसा, रु० ८ आ० ५६]

व अन्ना हाज़ा स़िराती मुस्तक़ीमन् फ़त्तबिअ़ूहु ज व ला तत्तबिअ़ुस्-सुबुल फ़तफ़र्रक़ बिकुम् अ़न् सबीलिही त…

§ यानी अल्लाह ने आपकी यह सब दुआएँ क़ुबूल कीं ।

१ धर्म में नई बातों की मिलावटें ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और यह मेरा बेशक सीधा रास्ता है, पस उसकी पैरवी करो और दूसरे रास्तों की पैरवी न करो, वह तुमको उस रास्ते से जुदा कर देंगे।

[सू० अन्आम, रु० १६ आ० १५३]

क़ुल् अिन् कुन्तुम् तुहि़ब्बूनल्लाह फ़त्तबिअ़ूनी युह़्बिब्कुमुल्लाहु व यग़्फ़िर्लकुम् ज़ुनूबकुम् ...

कह दो, अगर तुम अल्लाह को चाहते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुमको चाहेगा। और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा।

[सू० आलिअिम्रान रु० ३ आ० ३१]

अह़ादीस

१६७ बिद्अ़त ग़ैर-मक़बूल[1] है

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिसने हमारे काम (यानी दीन में) कोई नयी बात पैदा की, जो उसमें नहीं है, तो वह रद्द[2] है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि जिसने कोई ऐसा अ़मल किया जिस पर हमारा हुक्म नहीं है तो वह रद्द है।

१६८ बिद्अ़त गुमराही है

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स़ल्०) ख़ुतबा फ़रमा रहे थे।

फ़रमाते फ़रमाते आपकी आवाज़ तेज़ हो गयी और आँखें सुर्ख़ हो गयीं और आपका ग़ुस्सः ज़ियादः हो गया। मालूम होता था गोया आप एक ऐसे लश्कर से डरा रहे हैं जो सुबह या शाम हमला करने वाला है। और आपने फ़रमाया कि मेरी पैदाइश और क़ियामत इस तरह क़रीब है जिस तरह कलिमः और बीच की उँगली। और फ़रमाते थे बेहतर कलाम अल्लाह की किताब है और बेहतर तरीक़ा मुहम्मद (स़ल्०) का तरीक़ा है। और बुरे काम नयी बातें हैं। और हर बिद्अ़त गुमराही है। और फ़रमाते थे मैं हर मोमिन का उसके नफ़्स से ज़ियादः मुस्तह़िक़ हूँ अगर किसी शख़्स ने माल छोड़ा तो उसके घरवालों के लिए है। और जिसने क़र्ज़ या बच्चे छोड़े तो उसकी ज़िम्मेदारी मुझ पर है। [मुस्लिम]

---

१ अस्वीकृत २ ख़ारिज।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अच्छी या बुरी राह और दस्तूर

आयात

वल्लजीन यक़ूलून रब्बना हब्लना मिन् अज़्वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्रत अऽयुनिंव्वज्अल्ना लिल्मुत्तक़ीन अिमामन्

जो लोग कहते हैं कि ऐ हमारे रब हमारी बीवियों में और हमारी औलाद में ठण्डक अता फ़रमा और हमको परहेज़गारों का इमाम बना।

[सू० फ़ुरक़ान, रु० ६ आ० ७४]

व जअल्ना मिन्हुम् अअिम्मतंय्यहदून बिअम्रिना

हमने उनको इमाम बना दिया, वह हमारे हुक्म के मुताबिक़ हिदायत करते थे। [सू० अलिफ़्ला'म्मी'म् सज्दह रु० १]

अहादीस

१ दे र अच्छी बात की इब्तिदा करने वालों को तमाम अमल करने वालों का सवाब मिलेगा

हज़रत जरीर (र०) बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि दोपहर के वक़्त हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे थे, कुछ लोग नंगे बदन, गले में कम्बल डाले हुए और तलवारों को हमायल[1] किये हुए आये, उनमें अक्सर मुज़र के क़बील: से थे। उनको फ़ाक़:कश देखकर हुज़ूर (सल्०) का चेहरॅमुबारक सुर्ख़ हो गया। अन्दर तशरीफ़ ले गये, फिर बाहर आये और हज़्रत बिलाल (र०) को अज़ान का हुक्म दिया। फिर नमाज़ पढ़ी और ख़ुतबा में फ़रमाया—

या' अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुमुल्लजी ख़लक़कुम्मिन्नफ़्सिंव्वाहिदतिंव्व ख़लक़ मिन्हा ज़ौजहा व बस्स मिन्हुमा ज रिजालन् कसीरंव्व निसा'अन् वत्तक़ुल्लाहल्लजीतसा'अलून बिही वल्अर्हाम त अिन्नल्लाह कान अलैकुम् रक़ीबन्

१ गले का हार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऐ लोगो, अपने परवरदिगार से डरो जिसने तुमको एक जानदार से पैदा किया और उस जानदार से उसका जोड़ा पैदा किया। और उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें फैलायीं, और तुम अल्लाह से डरो जिसके नाम से एक दूसरे से सवाल करते हो और क़राबत का भी लिहाज़ करो। बिलयक़ीन अल्लाह तआ़ला तुम्हारे ऊपर निगिहबान है।

[सू० निसा, रु० १ आ० १]

याँ अय्युहल्लज़ीन आमुनुत्तक़ुल्लाह वल्तन्ज़ुर् नफ़्सुम्मा क़द्दमत् लिग़दिन् ज

ऐ ईमानवालो! अल्लाह से डरो और हर नफ़्स देखे कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। [सू० ह़श्र, रु० ३ आ० १८]

किसी ने सद्क़ः में दीनार, किसी ने दरहम, किसी ने कपड़े, किसी ने गेहूँ के साअ़[1] और खजूर के साअ़ दिये। आपने फ़रमाया सदक़ः दो, अगरचि खजूर का एक टुकड़ा ही हो। एक अन्सारी एक थैली लाये। वह इतनी भारी थी कि क़रीब था कि वह थक जायें, बल्कि थक गये थे। फिर पै दर पै लोगों ने लाना शुरू किया। मैंने देखा कि खाने और कपड़े के तूदः[2] लग गये थे। उस वक़्त रसूलुल्लाह (स़ल्०) का चेहरॅ मुबारक चमक रहा था और सुर्ख़ हो रहा था, गोया सोना है। आपने फ़रमाया, जिसने इस्लाम की अच्छी राह निकाली* तो निकालने वाले को अज्र मिलेगा, और जो उस पर अ़मल करेगा उसका अज्र (भी नेक राह निकालने वाले को) मिलेगा, और अ़मल करने वाले के अज्र में कोई कमी न होगी। इसी तरह अगर इस्लाम में कोई बुरी राह निकालेगा तो उस पर गुनाह होगा और उस पर अ़मल करने वाले का गुनाह (भी उस बुरी राह निकालने वाले को) होगा, और अ़मल करने वाले के गुनाह में कोई कमी वाक़िअ़ न होगी [मुस्लिम]

२६० बुरी बात का वबाल पहले पहल करने वाले की गर्दन पर होगा

हज़्रत इब्नि मसऊद (र०) से रिवायत है कि नबी (स़ल्०) ने फ़रमाया कि जो कोई ज़ुल्मन क़त्ल किया जायेगा तो उसका ख़ून आदम

---

* यानी ऐसे काम का आग़ाज़ किया जिससे दीन और मुसलमानों को नफ़ा पहुँचे और दूसरों को हिम्मत और तरग़ीब हो। मसलन जिहाद में पेशक़दमी, ख़ैरात व इहसान में सबक़त[3] वग़ैरः। न यह कि बिद्अ़ात जो दूसरी क़िस्म में दाख़िल हैं, और वह बुरी राह है, जिसका वबाल क़ियामत तक रहेगा।

---

१ लगभग पौनेचार सेर २ ढेर ३ स्पर्धा, चढ़ा-ऊपरी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के पहले बेटे क़ाबील पर होगा इसलिए कि क़त्ल का तरीक़ा उसी ने ईजाद किया। [बुख़ारी-मुस्लिम]

नेकी या बदी की पेशवाई[1]

आयात

…वद्अु इला रब्बिक…

लोगों को अपने रब की तरफ़ बुलाओ।

[सू० हज्जि, रु० ६ आ० ६७]

अुद्अु इला सबीलि रब्बिक बिल्हिक्मति वल्मौअिज़तिल्हसनति…

लोगों को अपने रब के रास्ता की तरफ़ अच्छी नसीहत और हिक्मत के साथ बुलाओ। [सू० नह्लि, रु० १६ आ० १२५]

…व तआवनू अलल्बिर्रि वत्तक़्वा…

और एक दूसरे की नेकी और परहेज़गारी पर मदद करो।

[सू० माअिदः, रु० १ आ० २]

वल्तकुम्मिन्कुम् अुम्मतुंय्यद् अून इलल्ख़ैरि…

और चाहिए कि हो तुममें से एक जमाअ़त जो लोगों को भलाई की तरफ़ बुलाये। [सू० आलि अिम्रान, रु० १० आ० १०४]

अहादीस

१६१ नेक बात पर आमादः करने का अज्र[2]

हज़्रत अबू मस्ऊद अन्सारी (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स़ल्०) ने फ़रमाया, जिसने किसी को नेक बात पर आमादः किया तो उसके लिए उतना ही अज्र है जितना करने वाले को मिलेगा। [मुस्लिम]

---

१ नेतृत्व २ प्रतिफल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१६२ हिदायत की तरफ़ दावत का सवाब

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने किसी को हिदायत की तरफ़ बुलाया तो उसको अ़मल करने वाले की तरह अज्र मिलेगा, और उसके अज्र में कोई कमी न होगी। और जिसने गुमराही की तरफ़ बुलाया तो उस पर ऐसा ही गुनाह है जैसा करने वाले पर, और उस (गुनाह करने वाले) के गुनाह में कोई कमी न होगी। [मुस्लिम]

१६३ अपने ज़रीये से किसी के हिदायत पाने की फ़ज़ीलत[१]

हज़्रत सहल बिन सअ़द (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स़ल्०) ने ख़ैबर के दिन फ़रमाया, यह निशान कल मैं ऐसे आदमी को दूँगा जिसके हाथ पर अल्लाह फ़तिह देगा और वह अल्लाह और उसके रसूल को चाहता है। और अल्लाह और उसका रसूल उसको चाहता है। लोगों ने इसी बात पर चर्चा करते हुए रात गुज़ार दी कि देखें किसको निशान दिया जाता है। लोग सुबह ही सुबह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास इस उम्मीद पर आये कि निशान उनको दिया जाये। आपने फ़रमाया अली (र०) बिन अबी तालिब कहाँ हैं। लोगों ने कहा या रसूलल्लाह, उनकी आँखें आशोब कर आयीं। आपने फ़रमाया, उनको बुला लाओ। लोग उनको लाये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपना लुआबे दहिन[२] उनकी आँखों में लगा दिया। लगाते ही उनकी आँखें अच्छी हो गयीं, गोया कभी दर्द ही न था। आपने उनको निशान दिया। हज़्रत अली (र०) ने कहा, या रसूलल्लाह ! क्या मैं उनसे जंग करता रहूँ ता वक़्ति कि वह इस्लाम ले आयें। आपने फ़रमाया, बराबर चलते रहो, यहाँ तक कि उनके मैदान में उतर पड़ो और उनको इस्लाम की तरफ़ बुलाओ। और जो उनपर अल्लाह का हक़ वाजिब है उसकी ख़बर दो। ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआ़ला अगर एक आदमी को भी तुम्हारे ज़रीये हिदायत देगा, वह तुम्हारे लिए सुर्ख़† ऊँटों से बेहतर होगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

१६४ रसूलुल्लाह (स़ल्०) का रहनुमाई फ़रमाना

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि क़बीलः अस्लम का एक नवजवान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आया और

---

१ श्रेष्ठता २ थूक।

---

† सुर्ख़ ऊँट अ़रब में सबसे ज़ियादः क़ीमती चीज़ समझा जाता था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहा कि मैं जिहाद करना चाहता हूँ, मगर मेरे पास सामान नहीं है। आपने फ़रमाया, फलाँ ने सामान किया था मगर वह बीमार हो गया, उसके पास जाओ। वह लड़का उनके पास आया और कहा रसूलल्लाह (सल्०) सलाम कहते हैं और फ़रमाते हैं कि जो सामान लड़ाई के लिए (तुमने) मुहय्या किया था वह मुझे दे दो। उन्होंने अपने घर वालों से कहा कि जो कुछ मैंने सामान किया था वह इनको दे दो। कुछ बाक़ी न रखना। तुम्हारे लिए इसमें बर्कत होगी। [मुस्लिम]

नेकी और परहेज़गारी पर मदद

आयात

···व तआवनू अलल्बिर्रि वत्तक़्वा ···

एक दूसरे की नेकी और परहेज़गारी में मदद करो।

[सू० माअिद:, रु० १ आ० २]

वल्अस्रि ला (१) अिन्नल्अिन्सान लफ़ी ख़ुस्रिन् ला (२) अिल्लल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति व तवासौ बिल्हक़्क़ि ला व तवासौ बिस्सब्रि (३)

और क़सम है ज़माने की, इन्सान अल्बत्ता नुक़सान में है। मगर (वह नुक़सान में नहीं हैं) जो ईमान लाये और जिन्होंने अच्छे काम किये, एक दूसरे के हक़ की वसिय्यत की और एक दूसरे को सब्र की वसिय्यत की। [सू० अल्अस्रि रु० १ आ० १-३]

अहादीस

१२६६ मुजाहिद[1] की मदद उसके घर की ख़बरगीरी करनेवाले को जिहाद का सवाब

हज़्रत ज़ैद (र०) बिन ख़ालिदिल्जुहनी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कि अगर किसी ने जिहाद करने वाले के लिए सामान मुहय्या कर दिया तो उसको जिहाद

---

१ जेहाद (धर्मयुद्ध) करनेवाला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का अज्र मिलेगा। और जिसने किसी ग़ाज़ी[1] की ग़ैबत में उसके घरवालों की ख़बर की तो उसको जिहाद का अज्र मिलेगा§। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अबू सईद अलखुद्री (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक फ़ौज बनी हुदैल से बनी लह्यान की तरफ़ भेजी और फ़रमाया, जिस घर में दो आदमी हों तो एक फ़ौज में शरीक हो। अज्र दोनों को मिलेगा। [मुस्लिम]

१२६६ बच्चा के हज से माँ को सवाब

हज़्रत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम रौहा में कुछ सवारों से मिले और पूछा तुम कौन हो? कहा हम मुसलमान हैं। और फिर पूछा आप कौन हैं, आपने फ़रमाया मैं अल्लाह का रसूल हूँ। यह सुनकर एक औरत ने आपकी तरफ़ बच्चा को बढ़ाया और कहा या रसूलल्लाह! इसके लिए हज हो सकता है? आपने फ़रमाया, हाँ, मगर सवाब तुमको मिलेगा। [मुस्लिम]

१२६७ ख़ज़ांची का हुक्म पर ख़ुशी से अ़मल करना भी एक सदक़: है

हज़्रत अबू मूसा (र०) अश्अ़री से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुसलमान अमानतदार ख़ज़ांची हुक्म पर पूरा-पूरा अमल-दरामद करे, और ख़ुशदिली के साथ उसको दे जिसके लिए हुक्म मिला है। वह भी एक तरह का (गोया अपने पास से) सदक़: करने वाला है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

आ़म ख़ैरख़्वाही[2]

आयात

अिन्न मल्मुअ्मिनून अिख़्वतुन्...

मुसलमान भाई-भाई हैं। [सू० हुजुराति, रु०१ आ० १०]

---

§ इस फ़ज़ीलत और सवाब से अक्सर लोग ग़ाफ़िल हैं। अगर कोई राहे ख़ुदा जिहाद, हज, तब्लीग़, तलबे अ़िल्म में घर से बाहर हो तो उसके घरवालों की ख़बरगीरी से आदमी घर बैठे शरीके-अज्र[3] हो सकता है।

---

१ धर्मयोद्धा २ मंगलकामना, शुभाकांक्षा ३ सवाब का भागीदार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

...व अन्सहु लकुम्...

(हज़्रत नूह अ॰ फ़रमाते हैं) मैं तुम्हारे साथ ख़ैरख़्वाही करता हूँ।
[सू॰ अऽराफ़ि रु॰ ८ आ॰ ६२]

...व अना लकुम् नासिहुन् अमीनुन्...

(हज़्रत हूद अ॰ फ़रमाते हैं) मैं तुम्हारे लिये ख़ैरख़्वाह अमानतदार हूँ। [सू॰ अऽराफ़ि, रु॰ ६ आ॰ ६८]

अहादीस

१६८ दीन ख़ैरख़्वाही का नाम है

हज़्रत अबू रुक़य्यः (र॰) बिन तमीम अद्दारी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, दीन ख़ैरख़्वाही का नाम है। हमने पूछा किसके लिए? फ़रमाया अल्लाह के लिए, उसकी किताब के लिए, उसके रसूल के लिए, मुसलमानों के अमीर के लिए और आम मुसलमानों के लिए। [मुस्लिम]

१६९ ख़ैरख़्वाही पर बैअत[1]

हज़्रत जरीर (र॰) बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस बात पर बैअत की कि हम नमाज़ पढ़ेंगे, ज़कात देंगे, और मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही करेंगे।
[बुख़ारी, मुस्लिम]

१७० ईमान की एक शर्त

हज़्रत अनस (र॰) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्॰) ने फ़रमाया, मोमिन वह है जो अपने भाई के लिए वही चाहे जो अपने लिए चाहता है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ मुरीद होना, प्रतिज्ञाबद्ध होना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नेकी का हुक्म और बुराई की मुमानिअ़त

आयात

वल् तकुम्मिन्कुम् अुम्मतुँय्यद्अ़ून अिलल्ख़ैरि व यअ्मुरून बिल्मऽरूफ़ि व यन्हौन अ़निल्मुन्करि व अुला'अिक हुमुल्मुफ़्लिहून।

तुम में एक ऐसी जमाअ़त हो जो भलाई की तरफ़ लोगों को बुलायें, नेकी का हुक्म दें और बुराई से रोकें, वही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।

[सू० आलि अिम्रान, रु० ११ आ० १०४]

कुन्तुम् ख़ैर अुम्मतिन् अुख़्रिजत् लिन्नासि तअ्मुरून बिल्मऽरूफ़ि व तन्हौन अ़निल्मुन्करि···

तुम एक बेहतरीन उम्मत हो, लोगों के लिए पैदा किये गये हो, नेकी का हुक्म देते हो और बुराई से बाज़ रखते हो,

[सू० आलि अिम्रान, रु० १२ आ० ११०]

ख़ुज़िल्अ़फ़्व वअ्मुर् बिल्अ़ुर्फ़ि व अऽरिज़् अ़निल्जाहिलीन

मुआ़फ़ी इख़्तियार करो, नेकी का हुक्म दो और जाहिलों से इऽराज़[1] करो।

[सू० अऽराफ़ि, रु० २४ आ० ११६]

वल्मुअ्मिनून वल्मुअ्मिनातु बऽज़ुहुम् औलिया'अु बऽज़िन् • यअ्मुरून बिल्मऽरूफ़ि व यन्हौन अ़निल्मुन्करि···

मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें एक दूसरे की दोस्त हैं; नेकी का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं। [सू० तौबः, रु० ६ आ० ७१]

लुअ़िनल्लजीन कफ़रू मिम्बनी' अिस्रा'अील अ़ला लिसानि दावूद व अ़ीसब्नि मर्यम जालिक बिमा अ़सव्व कानू यऽतदून (७८) कानू ला यतनाहौन अ़म्मुनकरिन् फ़अ़लूहु लबिअ्स मा कानू यफ़्अ़लून।

---

१ विमुख रहो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बनी इसराईल के उन लोगों पर लानत की गयी जिन्होंने कुफ़्र किया हज़्रत दावूद (अ०) और हज़्रत ओ़सा (अ०) की ज़बान पर। बसबब इस बात के कि वह नाफ़रमानी करते थे और वह हद से बढ़ने वाले थे। एक दूसरे को उस बुराई से नहीं रोकते थे जो वह करने लगते। बहुत बुरी बात थी जो वह क़रते थे। [सू० माइदः, रु० ११ आ० ७८-७९]

व क़ुलिल्हक़्क़ु मिर्रब्बिकुम् क़िफ़ फ़मन् शा'अ फ़ल्युअ्मिव्व मन् शा'अ फ़ल्यक्फ़ुर् ला…

कह दो कि हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है। जो चाहे ईमान लाये और जो चाहे कुफ़्र करे। [सू० कह्फ़ि, रु० ४ आ० २९]

फ़स्दअ् बिमातुअ्मरु…

साफ़ कह दो जिसका तुमको हुक्म दिया गया है।

[सू० ह़िज्रि, रु० ६ आ० ९४]

…अन्जैनल्लज़ीन यन्हौन अनिस्सू'अि व अख़ज़्नल्लज़ीन ज़लमू बिअ़ज़ाबिम्बअीसिम्बिमा कानू यफ़्सुक़ून

हमने उन लोगों को नजात दी जो बुराई से बाज़ रखते थे। और जिन्होंने ज़ुल्म किया उनको हमने दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तला किया, बसबब इसके कि वह फ़िस्क़[1] करते थे।

[सू० अऽराफ़ि रु० २१ आ० १६५]

अह़ादीस

११ बुराई कैसे रोकी जाये

हज़्रत अबू सओ़द (र०) अल्ख़ुद्री से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से फ़रमाते सुना कि अगर तुम किसी को बुराई करते देखो तो अपने हाथ से रोको, अगर न रोक सको तो ज़बान से मना करो, और अगर ज़बान से भी न रोक सको तो अपने दिल में बुरा समझो; और यह ईमान का कमज़ोर-तरीन[2] दर्जा है। [मुस्लिम]

---

१ दुराचार, दुष्कर्म, गुनाह २ दुर्बलतम, सबसे कमज़ोर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१७२ बेअ़मलों[1] और बदअ़मलों[2] से जिहाद[3]

हज़्रत इब्नि मस्ऊ़द (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने हर नबी की उम्मत में हवारिय्यीन[4] और असहाब[5] पैदा किये, वह उनकी सुन्नतों को इख़्तियार करते थे[6] और उनके हुक्म की इक़्तिदा[7] करते थे, फिर पीछे आने वाले उनके जानशीन[8] हुए, वह कहते सब थे और अ़मल कुछ न करते थे, और करते वह थे जिसका हुक्म नहीं दिया गया। पस जो उनसे अपने हाथ से लड़े वह मोमिन है जो अपनी ज़बान से लड़े वह मोमिन है और जो अपने दिल से लड़े वह मोमिन है। इसके अलावा ईमान का एक ज़र्रः नहीं। [मुस्लिम]

१७३ हक़ बात कहना और मलामत[9] की परवाह न करना

हज़्रत अ़ुबादः (र०) बिन सामित से रिवायत है कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बैअ़त की कि हम सुनेंगे और मानेंगे। तंगी में, आसानी में, राहत में और तकलीफ़ में; ख़्वाह हम पर बेइन्साफ़ी की जाये या ख़ुदग़र्ज़ी और नीज़ इस बात पर कि हम हुकूमत में अह्लॅ हुकूमत से न लड़ें‡ जब तक खुला हुआ कुफ़्र न देखें, या अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इसके बारे में कोई दलील हो और इस पर कि हक़ बात कहें जहाँ भी हों और अल्लाह के बारे में मलामत[9] करने वालों से न डरें। [बुख़ारी-मुस्लिम]

१७४ अगर बुरी बात की रोक-थाम न की गयी तो आम मुसीबत आ जायेगी

हज़्रत नुअ़मान बिन बशीर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह की मना की हुई चीज़ों से रुकने वाले की और उसका इर्तिकाब[10] करने वाले की मिसाल ऐसी है कि कुछ लोगों ने एक कश्ती[11] पर क़ुरअ़:[12] डाला तो उनके कुछ लोग ऊपर के हिस्से में रहे और बाज़ नीचे के हिस्से में। नीचे वाले ऊपर पानी लेने जाते और ऊपर वालों के पास से गुज़रते तो वह बहुत ख़फ़ा होते थे। नीचे वालों ने कहा कि हम अपने नीचे के हिस्से में सूराख़ कर लेंगे तो फिर ऊपर वालों को तकलीफ़ न होगी। अगर ऊपर वाले

---

१ अकर्म्मियों २ दुष्कर्म्मियों ३ धर्मयुद्ध ४ समीपी ५ सहयोगी ६ पदचिह्नों पर चलते थे ७ अनुकरण, पैरवी ८ उत्तराधिकारी ९ भर्त्सना १० पाप की शुरुआत करना ११ नाव १२ लाटरी, चिट्ठी।

---

‡ मुसलमान-अह्लॅ हुकूमत के मुतअ़ल्लिक यह हुक्म है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनको उनके इरादे से बाज़ न रक्खेंगे तो सबके सब हलाक हो जायेंगे और अगर उनके हाथों को पकड़ लिया तो सब निजात पा जायेंगे@ । (ब)

१६८ बुरी बात की ना-पसन्ददीदगी[1] और इन्कार[2]

हज़्रत उम्मुल्मोमिनीन उम्में सलमः (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम पर उमरा हाकिम बनाये जायेंगे। इनकी बाज़ चीज़ों को पसन्द करोगे और बाज़ को नापसन्द करोगे। सो जिसने नापसन्द किया वह बरी हुआ, जिसने इन्कार किया वह बच गया, लेकिन जो राज़ी हुआ और उनका शरीक हो गया (वह ख़तरे में है।) उन्होंने कहा, या रसूलुल्लाह ! हम उनसे लड़ें। आपने फ़रमाया, नहीं, जब तक वह तुम में नमाज़ क़ायम करें। [मुस्लिम]

१६९ बुराई के बढ़ जाने पर अ़ज़ाब

हज़्रत उम्मुलमोमिनीन ज़ैनब (र०) बिन जहश से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम घबराये हुए तशरीफ़ लाये और ज़बानें मुबारक से यह फ़रमा रहे थे, 'लाइलाह इल्लल्लाहु। अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं)' उस बुराई से जो क़रीब आ गयी है अ़रब के लिये ख़राबी है। याजूज-माजूज का पुश्तः[3] आज खोल दिया गया। फिर अपने अँगूठे और कलमा की उँग्ली मिलाकर बताया कि इस तरह। मैंने कहा या रसूलल्लाह ! क्या हम हलाक कर दिये जायेंगे हालाँकि हम में नेक बन्दे भी हैं। आपने फ़रमाया, हाँ, जब बुराई बहुत बढ़ जायेगी।
[बुख़ारी-मुस्लिम]

१७० रास्तः का हक़

हज़्रत अबू सओ़ीद (र०) ख़ुद्री से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम रास्ते में बैठने से बचो। लोगों ने कहा, या रसूलल्लाह ! ये (मजलिसें) तो हमारे लिए ज़रूरी हैं। आपने फ़रमाया, अगर तुम्हारे लिए यह मजलिसें ज़रूरी हैं तो रास्तः को उसका हक़ दो। उन्होंने कहा, रास्तः का क्या हक है ? आपने फ़रमाया,

---

@ इसी तरह अगर ख़ुदा की मना की हुई चीज़ों से न रोका गया और करनेवालों का हाथ न पकड़ा गया तो आम अ़ज़ाब या बदइख़्लाक़ी और फ़साद की आम वबा आजायेगी। और इससे वह भी न बचेंगे जो अलग थे, रोक-थाम नहीं करते थे।

---

१ अरुचि २ अस्वीकृति, न मानना ३ रोकने का बन्धन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निगाहें नीची रखना, तकलीफ़दिह चीज़ को रास्ते से हटा देना, सलाम का जवाब देना, नेकी का हुक्म देना और बुराई से मना करना।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

१७८ आँ हज़्रत (सल्०) का ख़िलाफ़शरअ्[1] काम न देख सकना

हज़्रत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सोने की अँगूठी एक आदमी के हाथ में देखी तो उसको उँगली से निकाल कर फेंक दिया, और फ़रमाया, बाज़ लोग इरादतन[2] आग के अंगारे अपने हाथ में रखते हैं। आँ हज़्रत (सल्०) के जाने के बाद लोगों ने उस शख़्स से कहा कि अपनी अँगूठी ले और इससे दूसरे फ़ायदे उठा। कहा क़सम ख़ुदा की मैं इसको कभी नहीं ले सकता। हुज़ूर (सल्०) तो इसे फेंक चुके हैं।

१७९ ज़ालिम हाकिम को नसीहत

हज़्रत हसन बसरी (र०) से रिवायत है कि आ़अिज़ इब्नि अुमर (र०) अुबैदुल्लाह बिन ज़्याद के पास आये और कहा, ऐ अ़ज़ीज़, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है, फ़रमाते थे कि बुरे हाकिम वह ज़ालिम हैं जो लोगों को पाएमाल[3] कर दें। पस तुम इससे बचो, ऐसा न हो कि तुम भी उनमें से हो। अुबैदुल्लाह (र०) ने कहा बैठिए भी, आप तो सहाबा के चोकर हैं। कहा क्या उनका भी चोकर था। चोकर तो उनके बाद हुआ है और दूसरों में है।× [मुस्लिम]

१८० बुराई से न रोकने का वबाल

हज़्रत हुज़ैफ़ः (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उसकी क़सम जिसके क़ब्ज़ः में मेरी जान है, तुम ज़रूर नेकी का हुक्म दो और बुराई से रोको। वरना क़रीब है कि अल्लाह तआ़ला तुम पर अज़ाब भेजे और फिर तुम उसको पुकारो और वह तुम्हारी पुकार न सुने (तिर्मिज़ी)

---

१ शास्त्र-असम्मत २ जानबूझकर ३ पैरों से रौंद दे।

× यानी वह तो सब ख़ालिस और मुन्तख़ब (चुने हुए) लोग थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

१८१ अफ़ज़ल जिहाद[१]

हज़्रत अबू सअ़ीद (र०) ख़ुद्री से रिवायत है कि नबीसल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, सबसे अफ़्ज़ल जिहाद जाबिर सुल्तान[२] के मुँह पर इन्साफ़ की बात कहना है। [अबूदावूद-तिर्मिज़ी]

हज़्रत तारिक बिन शिहाबिल्बजली से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से एक आदमी ने ऐसे वक़्त में सवाल किया कि आप रकाब पर पाँव रख चुके थे। पूछा, या रसूलल्लाह! कौन सा जिहाद अफ़्ज़ल है। फ़रमाया, इन्साफ़ की बात सरकश बादशाह[३] के मुँह पर कहना। [नसाई]

१८२ बनी इसराईल की पहली ख़राबी

हज़्रत इब्नि मसऊद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लाल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, पहली ख़राबी जो बनी इसराईल में पैदा हुई वह यह कि कोई किसी बुरे आदमी से मिलता और कहता कि अल्लाह से डरो और जो कुछ तुम करते हो उसको छोड़ दो यह तुम्हारे लिये जाइज़ नहीं। फिर जब दूसरे दिन मिलता और उसको उसी हालत में पाता तो फिर उनको न रोकता, और (उलटे) उनका हमप्याला हो जाता[*]। पस जब वह यह करने लगे तो अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों को यकसाँ कर दिया। फ़िर फ़रमाया—

लुअ़िनल्लज़ीन कफ़रू मिम्बनी' अिस्रा'ईल अला लिसानि दावूद व अ़ीसब्नि मर्यम ,त ज़ालिक बिमा अ़सव्व कानू यअ़्तदून (७८) कानू ला यतनाहौन अ़म्मुन्करिन् फ़अ़लूहु ,त लबिअ्स मा कानू यफ़्अ़लून (७९) तरा कसीरम्मिन्हुम् यतवल्लौनल्लज़ीन कफ़रू ,त लबिअ्स मा क़द्दमत् लहुम् अन्फ़ुसुहुम् अन् सख़ितल्लाहु अ़लैहिम् व फ़िल्अ़ज़ाबिहुम् ख़ालिदून (८०) व लौ कानू युअ्मिनून बिल्लाहि वन्नबिय्यि व मा' अुन्ज़िल अिलैहि मत्तख़ज़ूहुम् औलिया'अ व लाकिन्न कसीरम्मिन्हुम् फ़ासिक़ून (८१)

---

१ सर्वोत्कृष्ट धर्मयुद्ध (या उत्सर्ग) २ अत्याचारी शासक ३ उद्दण्ड, निरंकुश नरेश।

---

* यानी उनके खाने-पीने में शरीक होता और उनके साथ बैठता-उठता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बनी इसराईल के उन लोगों पर लानत की गयी, जिन्होंने कुफ़्र किया। हज़्रत दावूद (अ०) और ह० ईसा (अ०) की ज़बान पर इस वजह से कि वह नाफ़रमानी करते थे और हद से बढ़ने वाले थे, एक दूसरे को बुराई से नहीं रोकते थे जो उन्होंने की। बुरी बात थी जो वह करते थे। तुम उनमें बहुतों को देखते हो कि वह उन लोगों की सरपरस्ती करते हैं जिन्होंने कुफ़्र किया। बुरी बात है जो उनके नफ़्सों ने उनके लिए भेजा। अल्लाह उन पर नाराज़ हुआ और वह हमेशा अज़ाब में रहेंगे। अगर वह अल्लाह पर और उसके रसूल पर और जो उनकी तरफ़ उतारा गया है ईमान ले आते तो उनको दोस्त न बनाते लेकिन उनमें बहुत फ़ासिक़[1] हैं।

[सू० माअिद:, रु० ११ आ० ७८-८१]

फिर आपने फ़रमाया, मैं तुमको ताकीद करता हूँ कि तुम उनको ज़रूर नेकी का हुक्म दो और बुराई से रोको। और ज़ालिमों के हाथ पकड़ लो। उनको ज़बरदस्ती हक़ पर रोको और उनको हक़ पर मजबूर करो। वरना अल्लाह तआला तुम लोगों के दिलों को यकसाँ कर देगा। और तुम पर लानत करेगा जैसे उन पर की। [अबू दावूद, तिर्मिज़ी]

१२८ अपना राहे-रास्त पर होना काफ़ी नहीं

हज़्रत अबूबक्र सिद्दीक़ (र०) ने फ़रमाया, ऐ लोगो, तुम इस आयत को पढ़ते हो:—

या अय्युहल्लज़ीन आमनू अलैकुम् अन्फ़ुसकुम् ज ला यज़ुर्रुकुम् मन् ज़ल्ल अिज़हतदैतुम्

ऐ ईमानवालो! तुम अपनी फ़िक्र करो, तुमको नुक़सान न पहुँचायेगा जो गुमराह हो, जबकि तुम हिदायत पा चुके§ हो।

[सू० माअिद:, रु० १४ आ० १०५]

और मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते सुना है कि जब लोग ज़ुल्म करते देखें तो उनके हाथ पकड़ लें, वरना क़रीब है कि अल्लाह तआला अपने अज़ाब को आम कर दे। [तिर्मिज़ी, निसाई]

---

१ दुराचारी।

---

§ यानी तब्लीग़ और कोशिश व जिद्दोजहद के बाद भी अगर कोई नहीं मानता तो फिर तुम ज़िम्मेदार नहीं हो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ख़ुदरा फ़ज़ीहत दीगराँ रा नसीहत[1]

आयात

अतअ्मुरूनन्नास बिल्बिर्रि व तन्सौन अन्फ़ुसकुम् व अन्तुम् तत्लूनल्किताब ॰ अफ़ला तऽक़्लिून ।

तुम दूसरों को नेकी का हुक्म देते हो और अपने को भूल जाते हो, तुम किताब पढ़ते हो क्या इतना नहीं समझते ।

[सू॰ बक़र रु॰ ५ आ॰ ४४]

याऽ अय्युहल्लज़ीन आमनू लिम तक़ूलून माऽला तफ़्अलून (२) कबुर मक़्तन् अ़िन्दल्लाहि अन् तक़ूलू मा ला तफ़्अ़लून (३) ।

ऐ ईमान वालो ! वह बात क्यों कहते हो जो ख़ुद नहीं करते । अल्लाह को इससे बड़ी नफ़रत है कि कहो और न करो ।

[सू॰ सफ़्फ़, रु॰ १ आ॰ २-३]

व माऽ उरीदु अन् उख़ालिफ़कुम् इला माऽ अन्हाकुम् अ़न्हु... ।

(अल्लाह तआ़ला ने हज़्रत शुअ़ैब की तरफ़ से फ़रमाया) कि मैं हटकर वही न करने लगूँगा जिससे मैं तुमको रोकता हूँ ।

[सू॰ हूद, रु॰ ८ आ॰ ८८]

अहादीस

५८९ दूसरों को नसीहत करने और ख़ुद न करने का अ़ज़ाब

हज़्रत उसामः बिन ज़ैद (र॰) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि एक आदमी क़ियामत के दिन लाया जायेगा और आग में डाल दिया जायेगा । उसकी अन्तड़ियाँ निकल पड़ेंगी और उनको इस तरह घुमाया जायेगा जैसे चक्की के गिर्द गधा घूमता है । दोज़ख़ वाले उसके गिर्द जमा होंगे और कहेंगे ऐ फ़लाँ ! तू तो लोगों को नेकी का हुक्म देता था और बुराई से रोकता था । वह कहेगा, हाँ, मैं लोगों को तो नेकी का हुक्म देता था लेकिन ख़ुद नेक काम नहीं करता था और दूसरों को बुराई से मना करता था मगर मैं ख़ुद उस बुराई का मुरतकिब[2] होता था । [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ स्वयं पथभ्रष्ट, दूसरे को उपदेश २ पापकर्मी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अमानत[1] की अदायगी

आयात

……अिन्नल्लाह यअ्मुरुकुम् अन् तुअद्दुल्अमानाति अिला अह्लिहा……।

बेशक अल्लाह तुमको हुक्म देता है कि अमानतें उनके मालिकों की तरफ़ अदा करो।

[सू० निसा, रु० ८ आ० ५८]

अिन्ना अ़रज़्नल्अमानत अ़लस्समावाति वल्अर्ज़ि वल्जिबालि फ़अ बैन अंय्यह्मिल्नाहा व अश्फ़क़्न मिन्हा व ह़मल हल्-अिन्सानु त अन्नहू कान जलूमन् जहूलन् ला (७२)।

हमने अमानत आसमान पर ज़मीन और पहाड़ पर पेश की, मगर उन सबने इन्कार किया और डरे। लेकिन इन्सान ने इसको उठा लिया; वह ज़ुल्म करने वाला नादान है।

[सू० अ़हज़ाबि, रु० ६ आ० ७२]

अह़ादीस

१८८ (१) मुनाफ़िक़[2] की तीन निशानियाँ हैं

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ[3] हैं। जब बात कहे झूठ बोले, जब वादा करे पूरा न करे, जब अमानत रखाई जाये ख़्यानत[4] करे।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

१८९ (२) अमानत का उठ जाना

हज़्रत हुज़ैफ़ः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमसे दो बातें इरशाद फ़रमायीं, उनमें एक मैंने देख ली। दूसरी का मुन्तज़िर[5] हूँ। हमसे आपने फ़रमाया कि अमानत

---

१ धरोहर २ कपटी, पाखण्डी ३ लक्षण ४ अपहरण ५ प्रतीक्षक।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लोगों के दिलों की जड़ में उतरी† फिर क़ुर्आन उतरा, उन्होंने क़ुर्आन और सुन्नत[१] का अ़िल्म हासिल किया। फिर आपने हमसे अमानत के उठ जाने के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि आदमी एक नींद लेगा और अमानत उसके दिल से उठा ली जायेगी। और उसका असर निशान की तरह रह जायेगा। फिर एक नींद सोयेगा और अमानत उसके दिल से उठा ली जायेगी और उसका असर छाले की तरह रहेगा। जैसे तुम्हारे पैर पर चिन्गारी पड़ जाये। उससे छाला पड़ जाये। तुम उसको उभरा हुआ देखो हालाँकि उसमें कुछ नहीं। फिर आपने एक कंकरी अपने पैर पर लुढ़का कर दिखाया और फ़रमाया सुबह् को लोग ख़रीद फ़रोख़्त में लगे होंगे और कोई न होगा जो अमानतों को अदा करे। यहाँ तक कि कहा जायेगा कि फलाँ महिल्ला में एक आदमी अमानतदार है। और बाज़ आदमी के लिए कहा जायेगा किस क़दर मज़बूत मुहज़्ज़ब और अक़्ल-मन्द है और उसके दिल में ज़र्रः भर भी ईमान न होगा। और मुझपर ऐसा ज़माना आया है कि मैं हर किसी के साथ ख़रीद व फ़रोख़्त करता था; अगर वह मुसलमान है तो मुझ पर उसका दीन उसको पलटा देगा‡ और अगर यहूदी नसरानी है तो उसका चौधरी उसको मुझपर पलटा देगा§ और आज मैं ख़रीद व फ़रोख़्त नहीं कर सकता मगर तुम लोगों में फलाँ और फलाँ से। [बुख़ारी-मुस्लिम]

१८७ क़ियामत का मन्ज़र[२]

हज़्रत हुज़ैफ़ः (र०) और अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तबारक व तआ़ला लोगों को जमा करेगा। मुसलमान खड़े होंगे यहाँ तक कि जन्नत लाई जायेगी। लोग हज़्रत आदम (अ़०) के पास आयेंगे और कहेंगे ऐ हमारे बाप! हमारे लिए जन्नत खुलवाइए। हज़्रत आदम (अ़०) कहेंगे कि तुम लोग अपने बाप की ख़ता की वजह से निकाले गये हो, मैं इसका मर्दे-मैदान[३] नहीं, तुम मेरे बेटे इब्राहीम (अ़०) के

† यानी शरीअ़त[४] के आने से पहले दिलों में तलब, इह्सास और शराफ़त पैदा हुई ताकि शरीअ़त के क़ुबूल करने की अहिल्लिय्यत[५] पैदा हो।

‡ यानी उसको अपने दीन का ख़याल आयेगा और ख़ुदा के डर से मेरा हक़ दे देगा।

§ यानी उसके ज़रीये से मेरा मुतालबा[६] वसूल हो जायेगा

१ पैग़म्बर के पद-चिह्नों पर अनुकरण २ दृश्य ३ महारथी ४ धर्मशास्त्र ५ योग्यता, पात्रता ६ अधिकार, हक़।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पास जाओ, वह सब हज़्रत इब्राहीम (अ) के पास आयेंगे। हज़्रत इब्राहीम (अ०) कहेंगे मैं इसका मर्दे मैदान नहीं। मेरी दोस्ती तो पसे पर्दह[1] ही है। तुम मूसा (अ०) के पास जाओ। जिन्हें अल्लाह तआला ने बेवास्ता शरफ़े कलाम[2] से मुशर्रफ़[3] फ़रमाया। वह हज़्रत मूसा (अ०) के पास आयेंगे और उनसे अपना क़िस्सा बयान करेंगे। हज़्रत मूसा (अ०) कहेंगे, मैं इसका मर्दे मैदान नहीं, तुम हज़्रत ईसा (अ०) के पास जाओ, वह अल्लाह की रूह हैं। और उसका कलिमा[4] हैं। वह हज़्रत ईसा (अ०) के पास आयेंगे। हज़्रत ईसा (अ०) कहेंगे मैं इसका मर्दे मैदान नहीं। वह मुहम्मद (स०) के पास आयेंगे और खड़े हो जायेंगे। आपको इजाज़त दी जायेगी। अमानत और रिश्ता भेजा जायेगा। वह पुल सिरात[5] के पहलुवों पर दाहिने बायें खड़े होंगे और तुम में का अव्वल बिजली की तरह गुज़र जायेगा। मैंने कहा मेरे माँ बाप आप पर फ़िदा हों, बिजली कैसे गुज़रती है ? फ़रमाया, क्या तुम नहीं देखते कि बिजली गुज़रती है और निगाह के फिरने तक पलट आती है। फिर हवा की तरह गुज़रेंगे, फिर चिड़ियों की तरह, फिर आदमियों की तेज़ दौड़ की तरह उन लोगों के आमाल ले जायेंगे। और तुम्हारे नबी सिरात पर खड़े हुए कहते होंगे, ऐ रब ! सलामत रख यहाँ तक कि बन्दों के आमाल आ़जिज़ हो जायेंगे। एक आदमी लाया जायेगा और वह चलने की इस्तिताअ़त[6] न रख सकेगा तो वह घिसलते हुए चलेगा और सिरात[7] के किनारों पर काँटे लटके हुए होंगे जिनको पकड़ने का हुक्म दिया जायेगा। पस कोई ऐसा होगा जिसको चरका लगा सो वह निजात पा गया, और कोई ऐसा होगा जो जहन्नम में औंधा दिया जायेगा। कसम उसकी जिसके क़ब्ज़े में अबू हुरैरः (र०) की जान है, दोज़ख़ की गहराई सत्तर साल की है। [मुस्लिम]

२८८ एक सहाबी को क़र्ज़ की फ़िक्र और और अपने बेटे को वसिय्यत

हज़्रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (र०) से रिवायत है कि मेरे वालिद ने जंगे जमल के दिन मुझे बुलाया। मैं उनके पहलू में जा खड़ा हुआ। उन्होंने कहा, ऐ मेरे बेटे, आज या तो ज़ालिम[8] क़त्ल किया जायेगा या मज़्लूम[9] ! मेरा ख़याल है कि मैं अन्क़रीब मज़्लूम क़त्ल किया जाऊँगा। अब मुझे अपने क़र्ज़ की बहुत फ़िक्र है, बताओ तुम्हारी क्या राय है। हमारा क़र्ज़ अदा कर देने के बाद कुछ बचेगा भी ? फिर कहा, ऐ मेरे बेटे ! मेरा माल बेचकर क़र्ज़ अदा कर देना और मुझे वसिय्यत की एक

---

१ परोक्ष २ श्रेष्ठ वाणी (धर्मग्रंथ तौरात) ३ सम्मानित ४ शब्द ५ दोज़ख पर एक पुल—बहुत बारीक जैसे तलवार की धार ६ सामर्थ्य ७ मार्ग ८ अन्यायी, अत्याचारी ९ जिस पर अन्याय हो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तिहाई मेरे पोतों के लिए है (यानी अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (र०) के बेटे)। हज़्रत हिशाम कहते हैं कि अ़ब्दुल्लाह के बेटे ख़ुबैब (र०) और अब्बाद (र०) हज़्रत ज़ुबैर (र०) के बाज़ लड़कों के बराबर थे (यानी चचा के बराबर)। हज़्रत ज़ुबैर (र०) के नौ लड़के और नौ लड़कियाँ थीं। हज़्रत अब्दुल्लाह कहते हैं कि वह मुझसे अपने क़र्ज़ के मुतअ़ल्लिक़ वसिय्यत करने लगे और कहने लगे कि ऐ मेरे बेटे, अगर तुम आ़जिज़ हो जाना तो मेरे मौला से मदद चाहना। क़सम ख़ुदा की मैं नहीं समझा। मैंने कहा, कौन मौला? कहा अल्लाह। क़सम ख़ुदा की जब मुझे फ़िक्र होती तो मैं कहता ऐ ज़ुबैर (र०) के मौला उनके क़र्ज़ को अदाकर दे। तो वह अदा हो जाता था। वह अपनी पेशीनगोई[1] के मुताबिक़ जंग में शहीद हो गये। न एक अशर्फ़ी छोड़ी और न दिर्हम। मगर कुछ ज़मीनें थीं और जंगल और ग्यारह घर मदीना में। दो बसरे में, एक कूफ़: में, एक मिस्र में और उन पर क़र्ज़ का बार यों हो गया था कि अक्सर आदमी उनके पास अमानत रखाने आते तो वह कहते कि मैं क़र्ज़ लिए लेता हूँ इसलिए कि मैं ज़ाय: होने से डरता हूँ। वरना न वह कहीं के हाकिम रहे न ख़िराज का टैक्स वसूल किया। लेकिन जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और हज़्रत अबूबकर (र०) व हज़्रत अ़ुमर (र०) व हज़्रत उस्मान (र०) के साथ शरीक होते रहे। जब मैंने उनके क़र्ज़ का हिसाब लगाया तो बाईस लाख निकला। एक दिन हकीम बिन हिज़ाम मुझसे मिले और कहा ऐ भतीजे, मेरे भाई पर कितना क़र्ज़ है। मैंने कहा एक लाख और बाक़ी छुपा ले गया। हकीम बिन हिज़ाम ने कहा वल्लाह मेरा ख़याल है कि तुम्हारा माल इसको काफ़ी न होगा। मैंने कहा अगर बाईस लाख हों तो कहा, मेरा ख़याल है कि तुम उसकी अदायगी की ताक़त नहीं रख सकते, अगर तुम्हारी ताक़त से बाहर हो जाये तो मुझसे मदद चाहना।

हज़्रत ज़ुबैर (र०) ने ग़ाब: एक लाख सत्तर हज़ार में ख़रीदा था। हज़्रत अब्दुल्लाह ने उसको सोलह लाख में बेचा। फिर हज़्रत अब्दुल्लाह ने कहा जिस जिस पर ज़ुबैर का क़र्ज हो वह इस जंगल में हमसे मिले तो सबसे पहले हज़्रत अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र आये। उनके चार लाख हज़्रत ज़ुबैर (र०) के ज़िम्मे थे। हज़्रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ने हज़्रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (र०) से कहा अगर तुम चाहो तो मैं मुआ़फ़ कर दूँ। बोले नहीं। कहा अच्छा मैं ठहर जाऊँ सब को देकर बाद में मुझको देना। कहा नहीं। हज़्रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ने कहा तो मेरी तरफ़ एक टुकड़ा मुन्तक़िल कर दो। हज़्रत अब्दुल्लाह

१ भविष्यवाणी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बिन ज़ुबैर (र०) ने कहा यहाँ से यहाँ तक तुम्हारा है। हज़्रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र को देकर साढ़े चार हिस्से बाक़ी रहे। फिर हज़्रत मआ़विय: (र०) के पास आये। उनके पास अम्र बिन उसमान (र०), मुन्ज़िर बिन ज़ुबैर (र०) (हज़्रत अब्दुल्लाह के भाई) और इब्नि ज़मअ: थे। हज़्रत मआ़विय: (र०) ने कहा ग़ाब: की क्या क़ीमत लगी, कहा हर हिस्सा एक लाख का। कहा कितना बाक़ी रहा। कहा साढ़े चार हिस्से। हज़्रत मुन्ज़िर बिन ज़ुबैर (र०) ने कहा एक लाख का एक हिस्सा मैंने ले लिया। हज़्रत अम्र बिन उसमान ने कहा एक लाख का एक हिस्सा मैंने ले लिया। हज़्रत इब्नि ज़मअ: ने कहा एक लाख का मैंने लिया। हज़्रत मआ़विय: (र०) ने कहा कितना बाक़ी रहा, कहा डेढ़ हिस्सा, कहा वह मैंने डेढ़ लाख में ख़रीद लिया। हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन जाफ़र (र०) ने अपना हिस्सा हज़्रत मआ़विय: (र०) के हाथ छ: लाख में बेच डाला। जब हज़्रत अब्दुल्लाह ने क़र्ज़ की अदायगी से फ़राग़त पायी तो भाइयों ने कहा कि अब मीरास को तक़सीम करो। कहा वल्लाह मैं अभी तक़सीम न करूँगा। मैं बराबर चार साल हज में मनादी करता रहूँगा कि जिसका ज़ुबैर (र०) पर क़र्ज़ हो वह हमारे पास आये, हम उसको अदा करेंगे। पस जब चार साल पूरे हो गये तो तक़सीम किया और एक तिहाई निकाल लिया था। (वसिय्यत के मुताबिक़) हज़्रत की चार बीवियाँ थीं, हर बीवी के हिस्से में बारह बारह लाख आये। उनका पूरा माल पाँच करोड़ दो लाख था। [बुख़ारी]

ज़ुल्म

आयात

…मा लिज़्ज़ालिमीन मिन् हमीमिंव्व ला शफ़ीअिंय्युताअु

ज़ालिमों का कोई दोस्त नहीं और किसी की शिफ़ाअत[1] न मानी जायेगी।

[सू० मोमिन्, रु० २ आ० १८]

…वज़्ज़ालिमून मालहुम् मिंव्व लिय्यिंव्व ला नसीरिन् (८)।

ज़ालिमों का कोई दोस्त नहीं और न उनका कोई मददगार।

[सू० शूरा, रु० आ० ८]

---

१ सिफ़ारिश।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहादीस

१८९[1] ज़ुल्म क़ियामत[1] के दिन तारीकी[2] होगी

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ज़ुल्म से डरो, ज़ुल्म क़ियामत के दिन तारीकियाँ होंगी, और बुख़्ल व हिर्स से बचो। बुख़्ल[3] व हिर्स[4] ने अगली उम्मतों को हलाक किया। उसी ने उनको इस बात पर आमादः किया कि अपने ख़ून बहाये और हराम को जाइज़ किया। [मुस्लिम]

१९०[2] क़ियामत में हक़ वाले को हक़ दिलाया जायेगा

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क़ियामत में हक़ वालों को हक़ दिलाये जायेंगे; हत्ता कि मुन्डी बकरी को सींग वाली बकरी से हक़ दिलाया जायेगा। [मुस्लिम]

१९१[3] मुसलमान के ख़ून और माल की हुर्मत

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि हम लोग हज्जतुल्-वदाअ़ के मुतअल्लिक़ गुफ़्तगू कर रहे थे और हम नहीं जानते थे कि हज्जतुल्वदाअ़ क्या है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ रखते थे। आपने अल्लाह की तारीफ़ की और उसकी सना[5] बयान की। फिर मसीह दज्जाल का ज़िक्र किया और उसको तूल दिया। आपने फ़रमाया, अल्लाह ने जिस नबी को भेजा उसने अपनी उम्मत को डराया। नूह (अ़०) ने और उनके बाद आने वाले नबियों ने डराया। आपने फ़रमाया दज्जाल निकलेगा। अगर उसकी कोई हालत मख़्फ़ी[6] रहे तो यह बात तो तुम पर ज़ाहिर ही हो जायेगी कि तुम्हारा रब काना नहीं है। और वह सीधी आँख का काना है। गोया उसकी आँख एक तैरता हुआ अंगूर है। और सुन लो अल्लाह ने तुम पर, तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे माल, तुम्हारे इस दिन की हुर्मत की तरह‡ तुम पर हराम किये हैं। सुन लो, क्या मैंने पहुँचा दिया? लोगों ने कहा हाँ। फ़रमाया, ऐ अल्लाह! गवाह रह, तीन मर्तबा फ़रमाया और फ़रमाया, तुम्हारी ख़राबी हो या यह फ़रमाया कि तुम पर रहम करे। देखो मेरे बाद काफ़िर न हो जाना कि तुममें एक दूसरे की गर्दन मारे। [बुख़ारी]

---

१ महाप्रलय २ अँधेरा ३ कंजूसी ४ लिप्सा, हवस ५ स्तुति, प्रशंसा ६ छिपी।

---

‡ यह क़ुर्बानी का दिन ज़िल्हिज्जः की १० तारीख़ थी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१६२ ज़मीन के ग़ासिब[1] को ज़मीन का तौक़

हज़्रत आ़यशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने बालिश्त भर ज़मीन ग़सब की तो क़ियामत में उसको सात ज़मीनों का तौक़ पहनाया जायेगा।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

१६३ अल्लाह की गिरिफ़्त[2]

हज़्रत अबू मूसा (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया अल्लाह ताला ज़ालिमों को ढील देता रहता है। फिर जब उनको पकड़ता है तो नहीं छोड़ता। फिर आपने यह आयत पढ़ी।

व कज़ालिक अख़्ज़ु रब्बिक अिज़ा अख़ज़ल्क़ुरा व हिय ज़ालिमतुन् , अिन्न अख़्ज़हू अलीमुन् शदीदुन् ।

इसी तरह तेरे रब की पकड़ है जब किसी बस्ती वालों को पकड़ा इस हाल में कि वह ज़ालिम थे। बेशक उसकी पकड़ दर्दनाक और सख़्त है।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

[सू० हूद, रु० ६ आ० १०२]

१६४ मज़्लूम[3] की बद्दुआ़

हज़्रत मुआ़ज़ (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझे भेजा और फ़रमाया कि एक क़ौम तुम से मिलेगी जो अहले किताब है, तुम इनको इस्लाम की दावत देना। जब वह इस्लाम क़ुबूल कर लें और गवाही दें कि सिवा ख़ुदा के कोई माबूद[4] नहीं और मैं ख़ुदा का रसूल हूँ तो उनको बताना कि तुम पर दिन और रात में पाँच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ हैं। जब उसको भी मान लें तो कहना तुम पर सदक़ः फ़र्ज़ है। मालदारों से लिया जायेगा और ग़रीबों को दिया जायेगा। अगर वह इसको मान लें तो तुम उनके अच्छे मालों§ से बचना, मज़्लूम की बद्दुआ से बचना कि उसके और अल्लाह के दर्मियान कोई परदः नहीं।

[मुस्लिम]

---

१ ज़बर्दस्ती दख़ल कर लेने वाला २ पकड़ ३ जिन पर ज़ुल्म हुआ हो ४ पूज्य।

---

§ यानी ज़कात के लिए ढूँढ़ कर अच्छा माल न लेना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१७९८ ग़ासिब की सज़ा

हज़रत अब्दुर्रहमान (र०) बिन सअ़द कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक शख़्स को सदक़: पर आ़मिल बनाया। लोग उसको इब्नुललित्बिय्य: कहते थे। वह आया और कहा यह सदक़: का माल है। और यह हद्य: है जो मुझे दिया गया है। आप मिम्बर पर खड़े हो गये। अल्लाह की हम्द व सना के बाद फ़रमाया, मैंने एक शख़्स को ऐसे काम पर आ़मिल बनाया जिसको अल्लाह ने मेरे सिपुर्द किया था। वह आया और कहा यह तुम्हारा है और यह हदय: है जो मुझे दिया गया है। अगर वह अपने घर में बैठा होता और उसके बाद हदय: आता तो मैं उसको सच्चा समझता७। ख़ुदा की क़सम तुम में से कोई अगर किसी चीज़ को उसके हक़ से सिवा लेगा तो क़ियामत में अल्लाह ताला से इस हालत पर मिलेगा कि वह चीज़ उस पर लदी होगी। और मैं किसी को इस हाल पर न देखूँ कि अल्लाह ताला से मिले एक ऊँट चीख़ता हुआ लादे हुए हो या एक गाये चीख़ती हुई, एक बकरी चीख़ती हुई। फिर आपने अपने हाथ बलन्द किये, यहाँ तक कि आपकी बग़लों की सफ़ेदी दिखाई देने लगी। फ़रमाया, ऐ अल्लाह, गवाह रह मैंने पहुँचा दिया। [बुख़ारी-मुस्लिम]

१८९६ माल के बदले में नेकी

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने अपने भाई का माल ग़सब[1] किया (भाई से मुराद मुसलमान हैं) उसकी ज़मीन हो या कोई चीज़, तो आज के दिन उसको मुआफ़ करा ले। इससे क़ब्ल कि न उसके पास कोई दीनार होगा न दरहम। अगर उसके अच्छे अ़मल हुए तो जितना माल उसने ग़सब किया उतनी नेकियाँ लेकर मज़लूम को दी जायेंगी अगर नेकियाँ नहीं हैं तो माल वाले की बुराइयाँ ग़ासिब[2] पर लाद दी जायेंगी। [बुख़ारी]

१९९७ मुसलमान की तारीफ़

हज़्रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (र०) बिन अलआ़स से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से मुसलमान महफ़ूज़ रहें। और मुहाजिर

---

१ हड़प लिया २ माल हड़पने वाला।

---

७ यानी उस मन्सब पर होने की वजह से उसको यह हदय: मिला तो यह बैतुल-माल ही का हक़ है या रिश्वत है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह है कि वह काम छोड़ दे जिससे अल्लाह ताला ने मना फ़रमाया है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

१८८ चोरी का माल

हज़्रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (र०) बिन अलआस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामान पर एक आदमी मामूर[1] था। लोग उसको करकरह कहते थे। वह मर गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, वह दोज़ख़ में है। लोग उसको देखने गये तो एक अ़बा[2] पाई जिसको उसने चुराया था। [बुख़ारी]

१८९ हज्जतुल् वदाअ़ की तक़रीर

हज़्रत नुफ़ैअ़ बिन अल्हारिस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ज़माना उसी सूरत में आ गया है जैसा कि वह उस दिन था कि जिस दिन आसमान व ज़मीन पैदा किये गये हैं§। और साल बारह महीने का होता है, इसमें चार महीने हुर्मत के हैं। ज़िल्क़अ़दः, ज़िल्हिज्जः, मुहर्रम और रजब। क़बीलए मुज़र† का जो जुमाद और शाबान के दर्मियान है। फिर आपने फ़रमाया, यह कौन सा महीना है। हमने कहा अल्लाह और उसके रसूल ज़ियादः जानते हैं। आप ख़ामोश हो गये, यहाँ तक कि हमें गुमान हुआ कि आप इसका दूसरा नाम लेंगे। आपने फ़रमाया, क्या ज़िल्हिज्जः नहीं है। हमने कहा, हाँ। आपने फ़रमाया, यह कौन सा शहर है। हमने कहा, अल्लाह और उसके रसूल ज़ियादः जानते हैं। फिर आप ख़ामोश हो गये। हमको ख़याल हुआ कि आप इसका दूसरा नाम लेंगे। आपने फ़रमाया, क्या यह मक्का नहीं है? हमने

---

१ नियुक्त, तैनात २ चोग़ा, लम्बा कोट।

---

§ अरब के लोगों ने अपनी मस्लिहतों और बेईमानी से अपनी जंतरी में बड़ा रद्दोबदल कर दिया था। जब उनका लड़ने का जी चाहता और मसलन रजब का महीना होता जिसमें लड़ाई मौक़ूफ़ होना चाहिए, तो कह देते कि अबकी रजब फ़लाँ महीने के बाद आयेगा। इस तरह महीना हटते-हटते कहीं से कहीं पहुँच गया था; इसी का नाम "नसी" है। इन्नमन्नसीअु ज़ियादतुन् फ़िल्कुफ़्र। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसे मन्सूख़ कर दिया। और अगली सी तर्तीब और शक्ल क़ायम कर दी।

† रजब को यह क़बीला बहुत मानता था और उन्हीं की तरफ़ अक्सर निस्बत होती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहा हाँ। आपने फ़रमाया यह कौन सा दिन है। हमने कहा अल्लाह और उसके रसूल ज़ियाद: जानते हैं। आपने फ़रमाया, क्या यह क़ुरबानी का दिन नहीं है। हमने कहा हाँ*। आपने फ़रमाया, तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे माल और तुम्हारी आबरू तुम पर हराम है तुम्हारे उस दिन की हुर्मत की तरह इस महीने में और इस शहर में, और अन्क़रीब तुम अपने रब से मिलोगे। और वह तुमसे तुम्हारे आमाल के मुतअ़ल्लिक़ सवाल करेगा। सुन लो मेरे बाद तुम काफ़िर न हो जाना कि तुम में का बाज़ बाज़ की गर्दन मारे। सुन लो तुम को चाहिए कि मौजूद ग़ायब को ख़बर पहुँचा दे शायद वह ज़ियाद: याद रखने वाला हो इससे। फिर फ़रमाया, सुन लो क्या मैंने पहुँचा दिया। हमने कहा हाँ। आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह, गवाह रह। [बुख़ारी-मुस्लिम]

१२/२०० मुसलमान का हक़ मार लेने की सज़ा

हज़्रत अयास बिन सअ़लब: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने किसी मुसलमान का हक़ मार लिया तो अल्लाह ने उस पर दोज़ख़ वाजिब की और जन्नत हराम की। एक आदमी ने कहा या रसूलल्लाह! अगर मामूली चीज़ हो। आपने फ़रमाया अगरचि एक पीलू की लकड़ी हो। [मुस्लिम]

१३/२०१ आ़मिल की ख़ियानत

हज़्रत अ़दी बिन अ़मरह (र०) से रिवायत है कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को फ़रमाते सुना है कि किसी को हम किसी काम पर आ़मिल[1] बनायें और वह हम से सुई के बराबर भी कोई चीज़ छुपा लेगा तो वह चोरी है। क़ियामत के दिन उसी के साथ वह आयेगा। अन्सार के एक काले आदमी ने कहा या रसूलल्लाह! (अ़दी कहते हैं गोया मैं उन्हीं को देख रहा हूँ) आप अपना काम वापस ले लीजिए†। आपने फ़रमाया तुमको क्या हुआ? कहा मैंने सुना है आप इस-इस तरह फ़रमाते हैं। आपने फ़रमाया, हाँ मैं अब भी कहता हूँ कि जिसको मैं किसी काम पर आ़मिल बनाऊँ तो थोड़ा बहुत जो कुछ हो वह हाज़िर करे। जो उसको दिया जाये ले ले और जिससे रोका जाये तो उससे बाज़ रहे। [मुस्लिम]

---

* यह बात दिलनशीन करने का बड़ा हकीमाना अन्दाज़ था।

† यानी मुझे डर पैदा हो गया है कि शायद मैं उसका हक़ न अदा कर सकूँ। यह उनकी इहतियात और ख़ौफ़े ख़ुदा की बात थी।

---

१ शासक, हुक्मराँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१४/२०२ माले ग़नीमत में चोरी

हज़्रत उमर (र०) से रिवायत है कि ख़ैबर के दिन सहाबः ने मक़्तूलों[1] का ज़िक्र किया। कहा, फ़लाँ शहीद और फ़लाँ शहीद। फिर एक मक़्तूल का नाम लिया और कहा फ़लाँ भी शहीद। आपने फ़रमाया, हरग़िज़ नहीं, उसको मैंने आग में देखा है चादर या अबा के बारे में जिसको उसने चुराया था। [मुस्लिम]

१८/२०३ शहादत से भी क़र्ज़ मुआफ़ नहीं होता

हज़्रत अबू क़तादह (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम खड़े फ़रमा रहे थे कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद और अल्लाह पर ईमान अफ़्ज़ल आमाल हैं। एक आदमी खड़े हो गये कहा या रसूलल्लाह, आप क्या फ़रमाते हैं। अगर मैं क़त्ल किया जाऊँ तो क्या मुझसे मेरी ख़ताएँ दूर हो जायेंगी। आपने फ़रमाया हाँ। अगर तुम अल्लाह के रास्ते में अज्र की नीयत से सब्र करो। आगे बढ़ो और पीठ न मोड़ो। फिर आपने फ़रमाया, तुमने क्या कहा? उन्होंने अर्ज़ किया अगर मैं अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किया जाऊँ तो क्या मुझसे मेरी ख़ताएँ दूर हो जायेंगी। आपने फ़रमाया, हाँ अगर तुम अल्लाह के रास्ते में अज्र की नीयत से सब्र करो। आगे बढ़ो, पीछे न हटो। मगर क़र्ज़ मुआफ़ न होगा। मुझसे जिबरील ने यही कहा है। [मुस्लिम]

१६/२०४ मुफ़्लिस कौन है

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम जानते हो मुफ़्लिस कौन है? लोगों ने कहा हममें मुफ़्लिस वह है जिसके पास न दिरहम हो न कोई सरमाया। आपने फ़रमाया, मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़े, ज़कात के साथ आयेगा लेकिन उसके साथ यह भी अ़िल्लतें होंगी कि फ़लाँ को गाली दी है, फ़लाँ पर तुहमत लगाई है, फ़लाँ का माल खाया है, फ़लाँ का ख़ून बहाया है और फ़लाँ को मारा है। पस उसकी बाज़ नेकी फ़लाँ और बाज़ नेकी फ़लाँ को दे दी जायेंगी। अब अगर उसकी सब नेकियाँ ख़त्म हो गयीं और अदायगी बाक़ी रही तो फिर इन सबकी बुराइयाँ लेकर उस पर डाल दी जायेंगी, और फिर आग में झोंक दिया जायेगा। [मुस्लिम]

---

१ क़त्ल हुए लोगों का।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१७/२०८ जो चीज़ जिसकी नहीं है मुक़द्दमा जीत लेने से उसकी नहीं हो सकती

हज़्रत उम्म सल्मः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, बेशक मैं भी इन्सान हूँ, तुम मेरे पास मुक़द्दमा लाते हो और तुम में का बाज़ अपनी चर्बज़बानी से काम ले लेता है। तो मैं इसी तरह करूँगा जो मैंने सुना है। अगर मैंने अपने सुनने के मुताबिक़ उसके भाई का हक़ उसको दिलवा दिया तो गोया उसके लिए आग का एक टुकड़ा काट दिया§। [बुख़ारी]

१८/२०९ ख़ूनॅ नाहक़

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मोमिन के दीन में बराबर गुंजाइश है, जब तक कि वह हराम ख़ून न करे। [बुख़ारी]

१९/२०७ मालॅ ग़ैर

हज़्रत ख़ौलः बिन्त आमिर (र०) अन्सारी से रिवायत है (यह हज़्रत हम्ज़ः (र०) की बीवी थीं) कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है कि आदमी अल्लाह तआ़ला के माल में बग़ैर हक़ के घुसते हैं। इनके लिए क़ियामत में आग है। [बुख़ारी]

मुसलमानों की अ़िज़्ज़त और उनके हुक़ूक़

आयात

…व मंय्युअ़ज़्ज़िम् हुरुमातिल्लाहि फ़हुव ख़ैरुल्लहू अ़िन्द रब्बिही …

जो अल्लाह की हुर्मतों की इज़्ज़त करेगा तो उसके लिए अल्लाह के यहाँ बेहतर होगा। [सू० हज, रु० ४ आ० ३०]

…व मंय्युअ़ज़्ज़िम् शआ़अिरल्लाहि फ़अिन्नहा मिन् तक़्वल्क़ुलूबि।

जो अल्लाह तआ़ला की निशानियों की इज़्ज़त करेगा तो यह दिल का अदब है। [सू० हज, रु० ४ आ० ३२]

---

§ वह यह न समझे कि रसूलुल्लाह (स०) ने मेरे हक़ में फ़ैसला कर दिया है, वह अब हलाल है। इससे यह भी मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह (स०) आ़लिमुल् ग़ैब नहीं थे। वरना आपको ज़रूर मालूम हो जाता कि हक़ दरअस्ल किसका है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

…वख़्फ़िज़् जनाहक लिल्मुअ्मिनीन ।

अपने बाज़ू मोमिनों के लिए झुका दो ।

[सू० हिज्रि, रु० ६ आ० ८८]

…मन् क़तल नफ़्सम्बिग़ैरि नफ़्सिन् औ फ़सादिन् फ़िल्अर्ज़ि फ़कअन्नमा क़तलन्नास जमीअ़न् ॰ व मन् अह्याहा फ़कअन्नमा अह्यन्नास जमीअ़न् ॰…

जिसने किसी की जान ली बग़ैर जान के बदला, या ज़मीन में फ़साद किया बग़ैर फ़साद के, तो उस ने गोया तमाम लोगों को क़त्ल किया। और जिसने इसको ज़िन्दः रक्खा गोया उसने सबको ज़िन्दः रक्खा ।

[सू० मायदः, रु० ५ आ० ३२]

अहादीस

२०८ मोमिन की मिसाल

हज़्रत अबू मूसा (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया मोमिन मोमिन के लिए मिस्ल इमारत के है । एक ईंट दूसरी ईंट को मज़बूत करती है । [बुख़ारी-मुस्लिम]

२०९ मुसलमान की तकलीफ़ का ख़याल

हज़्रत अबू मूसा (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो शख़्स हमारी मस्जिद या हमारे बाज़ारों के पास से गुज़रे और उसके पास तीर हों तो वह उसके फल रोक ले या थाम ले इस ख़याल से कि किसी मुसलमान को तक़लीफ़ न पहुँच जाये ।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

२१० मुसलमान एक जिस्म हैं

हज़्रत नुअ़मान बिन बशीर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मोमिन की मिसाल उनके आपस की मुहब्बत और रहमदिली और मिहरबानी में जिस्म की तरह है । जब उसका कोई अ़ज़ो बीमार होता है तो सारा जिस्म जागता है । और उसको बुख़ार आ जाता है । [बुख़ारी-मुस्लिम]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२९१ जो रहम नहीं करता उस पर रहम नहीं किया जाता

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हसन बिन अ़ली (र०) को प्यार किया। आपके पास अक़रअ़ (र०) बिन हाबिस खड़े थे। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! हमारे दस लड़के हैं और हम किसी को प्यार नहीं करते। आपने फ़रमाया जो किसी पर रहम नहीं करता उस पर रहम नहीं किया जाता। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२९२ बच्चों को प्यार

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि अ़रब के कुछ लोग नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आये और कहा, आप क्या अपने बच्चों को प्यार करते हैं। आपने फ़रमाया हाँ। उन्होंने कहा ख़ुदा की क़सम हम नहीं प्यार करते। आपने फ़रमाया, जब ख़ुदा तआ़ला तुम लोगों के दिलों से अपनी रहमत को ख़ींच ले तो मैं क्या कर सकता हूँ। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२९३ रहम व मिहरबानी

हज़्रत जरीर (र०) बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो लोगों पर रहम नहीं करता अल्लाह तआ़ला उस पर रहम नहीं फ़रमाता। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२९४ कमज़ोरों और बीमारों के ख़याल से हल्की नमाज़

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब लोगों के साथ नमाज़ पढ़ो तो नमाज़ हल्की कर दो। इसलिए कि उनमें कमज़ोर भी हैं, बीमार भी हैं और बूढ़े भी हैं। और जब अकेले पढ़ो तो जितनी चाहे लम्बी कर दो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

और एक रिवायत में आया है कि ज़रूरत मन्द भी तुम्हारे पीछे होते हैं।

२९५ आँहज़्रत (स०) की मुसलमानों के साथ रिआ़यत

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बाज़ ऐसे अमल जिनको आप बहुत पसन्द फ़रमाते थे सिर्फ़ इसलिए छोड़ देते थे कि अगर मुसलमान इसको करने लगेंगे तो उन पर फ़र्ज़ कर दिया जायेगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने लोगों को पै दर पै रोज़: रखने से मना फ़रमाया तो उन्होंने कहा, या रसूलल्लाह आप भी तो पै दर पै रोज़े रखते हैं। आपने फ़रमाया मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ। मैं ऐसी हालत पर रात गुज़ारता हूँ कि मेरा रब मुझे खिलाता पिलाता है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२१६ छोटे बच्चे की माँ की रिआ़यत

हज़्रत अबू क़तादह (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैं नमाज़ के लिए खड़ा होता हूँ और नमाज़ लाँबी करने का इरादा करता हूँ इतने में मैं किसी बच्चे का रोना सुनता हूँ तो इस बात को नापसन्द करते हुए नमाज़ को मुख़्तसर कर देता हूँ कि उसकी माँ को तकलीफ़ होगी। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२१७ अल्लाह की अमान[1]

हज़्रत जुन्दुब (र०) बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने सुबह की नमाज़ पढ़ी वह अल्लाह की अमान में[1] हो गया। पस देखो अल्लाह तुमसे अपनी अमान के मुतअ़ल्लिक़ मुतालबा[2] न करे। और जिससे उसने अपनी अमान के मुतअ़ल्लिक़ मुतालबा कर लिया꣸ तो उसको पा लेगा। फिर उसको औन्धे मूँह जहन्नम की आग में गिरा देगा। [मुस्लिम]

२१८ मुसलमान का मुसलमान पर हक़

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमान भाई भाई हैं। न उस पर ज़ुल्म करे न उसको बे यार व मददगार छोड़े। और जो किसी की हाजत पूरी करेगा तो अल्लाह उसकी हाजत पूरी करेगा। जो क़िसी की तकलीफ़ को दूर करेगा अल्लाह तआ़ला उसकी तकलीफ़ क़ियामत के दिन दूर करेगा। जो किसी की सत्रपोशी[3] करेगा अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसकी सत्रपोशी करेगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२१९ मुसलमान की तहक़ीर[4]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

꣸ यानी जिसने सुबह की नमाज़ पढ़ने वाले मुसलमान को कोई तकलीफ़ दी तो उसके खिलाफ़ अल्लाह ख़ुद मुद्दई होगा।

---

१ शरण, सुरक्षा २ (अपने हक़ की) माँग ३ ऐबों को ढकना ४ अपमान।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमान भाई भाई हैं। न उनकी ख़ियानत[१] करे, न उनसे झूठ बोले, न उनको रुस्वा करे। हर मुसलमान पर मुसलमान का ख़ून, उसका माल और उसकी इज़्ज़त हराम है। आपने फ़रमाया तक़्वा यहाँ है (यानी दिल में है।)§ और इन्सान के लिए इतनी ही बुराई काफ़ी है कि वह अपने मुसलमान भाई को हक़ीर समझे। [तिर्मिज़ी]

२२०[१३] मुसलमान के हुक़ूक़

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया एक दूसरे से हसद न करो। और आपस में झगड़ा न करो। एक दूसरे से ग़ुस्सा न करो। और न क़तअ़ रह्मी करो। और सौदा लेके मोल तोल हो जाने पर दूसरा अपना सौदा न पेश करे†। और अल्लाह के बन्दे भाई भाई हो जाओ। मुसलमान मुसलमान का भाई है। न उस पर ज़ुल्म करे न हक़ीर समझे न ज़लील करे। और तक़्वा[२] यहाँ है। आपने अपने सीने की तरफ़ तीन मर्तबा इशारा किया और इन्सान के लिए इतनी ही बुराई काफ़ी है कि वह अपने मुसलमान भाई को हक़ीर समझे। मुसलमान पर मुसलमान का ख़ून, उसका माल, उसकी इज़्ज़त हराम है। [मुस्लिम]

२२१[१४] मोमिन की तारीफ़

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वही अपने भाई के लिए न चाहे जो अपने लिए चाहता है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२२२[१६] ज़ालिम की मदद क्या है

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अपने मुसलमान भाई की मदद करो। वह ज़ालिम हो या मज़लूम। एक आदमी ने कहा या रसूलल्लाह मज़लूम

§ यानी ख़ौफ़ॅ ख़ुदा का अस्ल मुक़ाम इन्सान का दिल है। रियाकारी[३] और मुनाफ़िक़ाना ज़ाहिरदारी से कुछ नहीं होता।

† एक मुसलमान ताजिर से सौदा हो गया। दूसरे ताजिर ने क़सदन क़ीमत कम कर दी और कहा मैं इतने में देता हूँ। पहले का नुक़सान हो गया। यह नहीं चाहिए।

१ दूसरे का माल हड़प लेना २ संयम ३ पाखण्ड।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो तो उसकी मदद करूँ और ज़ालिम की मदद किस तरह करूँ। आपने फ़रमाया, उसको ज़ुल्म से रोको और मना करो यह उसकी मदद है।
[बुख़ारी]

१९/२२३ मुसलमान के पाँच हक़ हैं

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुसलमान के मुसलमान पर पाँच हक़ हैं। (१) सलाम का जवाब देना। (२) मरीज़ की इयादत करना[1] (३) जनाज़े के साथ होना (४) दावत क़ुबूल करना (५) छींक पर यरहमुकल्लाह[2] कहना।
[बुख़ारी-मुस्लिम]

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि मुसलमान पर मुसलमान के छ: हक़ हैं। (१) जब मुलाक़ात हो तो सलाम करे। (२) दावत दी जाये तो क़ुबूल करे। (३) जब नसीहत चाहे तो ख़ैरख़्वाही करे। (४) जब छींक आये तो यरहमुकल्लाह कहे। (५) बीमार की इयादत करे। (६) जनाज़े के साथ हो।

हज़्रत बरा बिन आज़िब (र०) से रिवायत है कि हमको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सात चीज़ों का हुक्म दिया है। और सात चीज़ों से मना फ़रमाया है। हुक्म यह हैं कि (१) मरीज़ की इयादत करो। (२) जनाज़े के साथ हो (३) छींक पर यरहमुकल्लाह कहो (४) क़सम खाने वाले की क़सम पूरी करो। (५) मज़लूम की मदद करो। (६) दावत को क़ुबूल करो। (७) और सलाम को फैलाओ। सोने की अँगूठियों से या सोने की अँगूठी पहनने से, चाँदी के बर्तन में पानी पीने से, सुर्ख़ कपड़ों से, रेशम के कपड़ों से और इस्तबराक़[3] और दीबा[4] से मना फ़रमाया है।
[बुख़ारी-मुस्लिम]

मुसलमानों के अ़ुयूब[5] की पर्द:पोशी[6]

आयात

अिन्नल्लजीन युहिब्बून अन् तशीअ़लफ़ाहिशतु फ़िल्लजीन आमनू लहुम् अ़जाबुन् अलीमुन् ला फ़िददुन्या वल्आख़िरति त ...

१ रोगी को सान्त्वना देना २ अल्लाह तुम्हारे ऊपर रहम करे ३ रेशमी वस्त्र ४ कढ़ा हुआ एक विशेष रेशमी कपड़ा ५ ऐबों ६ पर्द: डालना, ढँकना।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बेशक जो लोग चाहते हैं कि ईमानवालों में बेहयाई और बदअख़लाक़ी फैले उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब है।

[सू० नूर, रु० २ आ० १६]

अहादीस

२२४[1] दुनिया में पर्द:पोशी से आखिरत में पर्द:पोशी

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि जो अल्लाह का बन्द: किसी अल्लाह के बन्दे की सत्रपोशी करेगा अल्लाह उसकी क़ियामत में पर्द:पोशी करेगा। [मुस्लिम]

२२८[2] गुनाह का एलान

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरी उम्मत के सब लोग मुआ़फ़ कर दिये जायेंगे। सिवाये☸ अलानिया गुनाह करने वालों के और अलानिया गुनाह करना यह है कि आदमी रात को कोई गुनाह करे और वह छुपा ढका हो फिर सुबह ख़ुद ही उसका एलान कर दे और कहे कि मैंने रात को इस तरह किया। अल्लाह ने तो उसको छुपाया था। उसने ख़ुद ही अपना पर्द:फ़ाश किया। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२२६[3] लौण्डी की सज़ा

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब लौण्डी बदकारी करे और उसके उस फ़ेल की तहक़ीक हो जाये तो उसको हद लगाई जाये। और डाँट फटकार न की जाये। फिर अगर दोबारा उससे यह फ़ेल सरज़द हो तो उसकी हद लगाई जाये, और ज़ज्र[1] व तौबीख़[2] न की जाये। अगर तीसरीबार फिर यही अमल करे तो उसको बेंच डाले। ख़्वाह बाल की रस्सी के मुआवज़:[3] में। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२२७[4] शराब पीने की सज़ा

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक आदमी लाया गया जिसने शराब पी थी।

☸ इसलिए कि इससे ख़ुदा के मुआ़मले में जुरअत का इज़्हार होता है। और लोगों को शह होती है।

---

१ डाँट-डपट २ झिड़कना ३ बदले में।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आपने फ़रमाया, इसको मारो पीटो। हज़्रत अबू हुरैरः (र०) कहते हैं कि फिर कोई तो हाथ से मार रहा था कोई जूतों से, कोई कपड़ों से, जब वह वापस चला तो एक शख़्स ने कहा कि अल्लाह तुझे रुस्वा करे। आपने फ़रमाया, यह मत कहो। शैतान की इसके मुक़ाबले में मदद न करो♦।

[बुख़ारी]

मुसलमानों की हजातरवाई[1]

आयात

…वफ़्अलुल्ख़ैर लअल्लकुम् तुफ़्लिहून ज।

भलाई करो, शायद कि तुम फ़लाह[2] पाओ।

[सू० हज, रु० १० आ० ७७]

अहादीस

२३८ मुसलमानों की मदद की फ़ज़ीलत[3] और नफ़ा[4]

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुसलमान भाई भाई हैं। न उन पर ज़ुल्म करे और न वे यार व मददगार छोड़े। और जो अपने भाई की हाजत पूरी करेगा अल्लाह उसकी हाजत पूरी करेगा। और जो किसी मुसलमान की तकलीफ़ को दूर करेगा अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसकी तकलीफ़ों में से एक तकलीफ़ को दूर फ़रमायेगा। और जो किसी मुसलमान की सत्रपोशी करेगा अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसकी सत्रपोशी फ़रमायेगा।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया जो किसी मोमिन की दुनयावी मुसीबतों में से एक मुसीबत को दूर करेगा अल्लाह तआ़ला उसकी आख़िरत की मुसीबतों में एक मुसीबत को दूर करेगा। और जो किसी मुश्किल वाले की मुश्किल आसान करेगा

♦ यानी सज़ा तो यह भुगत चुका अब इसके लिए हिदायत व इस्लाह की दुआ करो।

---

१ कामना-पूर्ति २ कृतार्थता, सफलता ३ श्रेष्ठता ४ लाभ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अल्लाह् तआ़ला उसकी मुश्किल दुनिया और आख़िरत में आसान करेगा और जो किसी मुसलमान की सत्रपोशी करेगा अल्लाह् तआ़ला दुनिया और आख़िरत में उसकी सत्रपोशी फ़र्मायेगा। और जो अपने भाई की मदद में होगा अल्लाह् उसकी मदद में होगा। और जो अ़िल्म की तलाश में रास्ता तै करेगा अल्लाह् उसके लिए जन्नत का रास्ता आसान फ़रमायेगा। और जो लोग अल्लाह् के घरों में से किसी घर यानी मस्जिद में जमा होंगे और अल्लाह् की किताब पढ़ेंगे और आपस में सुनायेंगे तो उनके दिलों पर तस्कीन[1] उतरेगी। और रहमत उनको ढाँप लेगी। और फ़िरिश्ते उनको घेर लेंगें और अल्लाह् तआ़ला अपने पास वालों में उनका ज़िक्र फ़रमायेगा। और जो अपने अ़मल में सुस्ती करेगा तो उसको उसका नसब[2] नहीं बढ़ा सकता†। [मुस्लिम]

सिफ़ारिश

आयात

मँय्यश्फ़ऽ शफ़ाअ़तन् ह़सनतंय्यकुल्लहु नसीबुम्मिन्हा ... ।

जिसने किसी के लिए अच्छी सिफ़ारिश की तो उसको उसका अज्र मिलेगा। [सू० निसाअि रु० ११ आ० ८५]

अह़ादीस

२२६ सिफ़ारिश की तर्ग़ीब

ह़ज़्रत अबू मूसा अशअ़री (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास जब कोई हाजतमन्द[3] आता तो आप अपने हमनशीनों[4] से फ़रमाते कि सिफ़ारिश करो। इसका अज्र मिलेगा। और फ़ैसला अल्लाह तआ़ला अपने नबी की ज़बान पर जैसा चाहे करेगा§। [बुख़ारी व मुस्लिम]

---

† यानी अ़मल[5] में कोताही की तलाफ़ी नसब[6] से नहीं हो सकती और नसब अ़मल का क़ायममुक़ाम[7] नहीं हो सकता।

§ यानी तुम सिफ़ारिश के सवाब से क्यों महरूम[8] रहो।

---

१ चैन, संतोष २ कुलीनता ३ ज़रूरतमंदों ४ साथ बैठने वालों ५ आचरण ६ कुलीनता ७ स्थानापन्न, पूरक ८ वञ्चित।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२३० सिफ़ारिश का क़ुबूल करना ज़रूरी नहीं

हज़्रत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने✻ बरीरः (र०) से फ़रमाया, अपने शौहर की तरफ़ पलट जाओ। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह ! क्या हमको हुक्म देते हैं ? आप ने फ़रमाया, नहीं, मैं तो सिफ़ारिश करता† हूँ। बोलीं मुझको इसकी हाजत नहीं§। [बुख़ारी]

लोगों के दरमियान मुसालहत[1]

आयात

ला ख़ैर फ़ी कसीरिम्मिन्नज्वाहुम् अिल्ला मन् अमर बिसदक़तिन् औ मऽरूफ़िन् औ अिस्लाहिम्-बैनन्नासि ... ।

इनकी बहुत सी सरगोशियों[2] में भलाई नहीं मगर जो सदक़ा का हुक्म दे या भलाई का और लोगों के दर्मियान इस्लाह[1] का।

[सू० निसाअि रु० १७ आ० ११४]

...वस्सुल्हु ख़ैरुन् ...

और सुलह बेहतर है। [सू० निसाअि रु० ११ आ० १२८]

...फ़त्तक़ुल्लाह व अस्लिहू ज़ात बैनिकुम् ...

अल्लाह से डरो और आपस में सुलह क़ायम करो।

[सू० अन्फ़ालि रु० १ आ० १]

अिन्नमल्-मुअ्मिनून अिख़्वतुन् फ़अस्लिहू बैन अख़वैकुम्... ।

✻ हज़्रत बरीरः (र०) को हज़्रत आयशा (र०) ने आज़ाद किया। हज़्रत बरीरः (र०) के शौहर गुलामी की हालत में थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बरीरः (र०) को निकाह बाक़ी रखने और फ़स्ख़ करने[3] का इख़्तियार दिया था। पस वह अपने शौहर से अलग हो गयी थीं।

† हुज़ूर ने सिफ़ारिश इस वजह से की थी कि हज़्रत बरीरः (र०) के शौहर बरीरः (र०) के ग़म में रोते फिरते थे तो हुज़ूर को तरस आता था।

§ मालूम हुआ हुक्म टाला नहीं जा सकता। सिफ़ारिश के बारे में इख़्तियार है।

---

१ समझौता, सुलह २ कानाफूसियों ३ तोड़ देने।

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

बेशक मुसलमान भाई-भाई हैं, पस अपने भाइयों के दर्मियान सुलह क़ायम रक्खो। [सू० हुजुराति रु० १ आ० १०]

अहादीस

२३१ सदक़: की क़िस्में

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, लोगों के हर जोड़ पर सदक़: है। दो आदमियों के दर्मियान अद्ल करना सदक़: है। आदमी की मदद जानवर के बारे में करो। उसको सवार कर दो या उसके सामान को उसकी सवारी पर लाद दो, सदक़: है। अच्छी बात कहो सदक़: है। हर क़दम जो नमाज़ के लिए उठाओ सदक़: है। और रास्ता से काँटा वग़ैरह हटा दो सदक़: है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२३२ लोगों के दर्मियान मुसालहत कराने में झूठ नहीं होता

हज़्रत उम्मे कुल्सूम (र०) बिन्त उक़्ब: से रिवायत है कि मैंने नबी (स०) से फ़रमाते हुए सुना है कि वह झूठा नहीं है जो लोगों के दर्मियान सुलह क़ायम करने के लिए झूठ बोले। उसको भली बात पहुँचाये और उससे भली बात कहे।× [बुख़ारी-मुस्लिम]

२३३ एक मक़रूज़[1] का क़र्ज़ कम कराना

हज़्रत आयश: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दरवाज़े पर झगड़ा करने वालों की आवाज़ सुनी। उनकी आवाज़ें तेज़ थीं। उनमें से एक अपने क़र्ज़ को कम कराता था और नर्मी चाहता था और दूसरा कहता था ख़ुदा की क़सम मैं कम न करूँगा। आप निकले और फ़रमाया, कहाँ है अल्लाह पर क़सम खाने वाला कि मैं नेकी न करूँगा। उसने कहा मैं हूँ या रसूलल्लाह, जो यह चाहे वह इसके लिए है†। [बुख़ारी-मुस्लिम]

× यानी दो शख़्सों में अगर नामुआफ़क़त हो गई हो और तीसरा आदमी उनमें से एक के पास जाये और कहे कि तुम्हारे मुख़ालिफ़ ने तुम्हारी तारीफ़ की या तुम्हारा मद्दाह है और दूसरे के पास जाकर भी यही कहे तो वह झूठा कहे जाने का मुस्तहक़ नहीं है।

† वह समझ गये कि हुज़ूर (स०) का मन्शा यह है कि इसके लिए आसानी कर दी जाये। उन्होंने फ़ौरन क़ुबूल कर लिया।

---

१ क़र्ज़दार, ऋणी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२३४ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का एक क़बीले में मुसालहत कराने के लिए तशरीफ़ ले जाना

हज़्रत सहल (र०) बिन सअ़द से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़बर पहुँची कि बनी अम्र बिन औफ़ के दर्मियान झगड़ा है, तो आप उन लोगों के दर्मियान सुलह कराने के इरादे से तशरीफ़ लाये। और आपके साथ कुछ और भी लोग थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बैठे थे कि नमाज़ का वक़्त आ गया। हज़्रत बिलाल (र०) हज़्रत अबूबक्र (र०) के पास आये और कहा ऐ अबूबक्र (र०) क्या तुम लोगों की इमामत कर सकते हो ? अबू बक्र (र०) ने फ़रमाया हाँ। हज़्रत बिलाल (र०) खड़े हो गये हज़्रत अबू बक्र (र०) ने आगे बढ़कर तक्बीर[1] कही, फिर लोगों ने भी कही। इतने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये और सफ़ में खड़े हो गये। लोग तालियाँ बजाने लगे। हज़्रत अबूबक्र (र०) नमाज़ की हालत में दूसरी तरफ़ मुतवज्जिः नहीं होते थे। लोगों ने जब ज़ियादः तालियाँ बजायीं तब मुतवज्जिः हुए तो देखा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़रमा हैं। आपने हज़्रत अबूबक्र (र०) को नमाज़ क़ायम रखने का इशारः किया। हज़्रत अबूबक्र (र०) ने अपने हाथ बलन्द किये, अल्लाह की तारीफ़ की और पीछे पलट के सफ़ में खड़े हो गये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आगे आये और लोगों को नमाज़ पढ़ाई। जब फ़ारिग़ हुए तो लोगों की तरफ़ मुतवज्जिः हुए और फ़रमाया ऐ लोगो ! तुमको क्या हुआ जब कोई नयी चीज़ नमाज़ में पेश आयी तुम तालियाँ बजाने लगे। तालियाँ तो औरतों के लिए हैं। कोई चीज़ अगर नमाज़ में हारिज हो तो सुब्हानल्लाह कहो। जब सुब्हानल्लाह कहोगे जो सुनेगा मुतवज्जिः हो जायेगा। और ऐ अबूबक्र (र०) तुमने नमाज़ क्यों न पढ़ाई। जबकि हमने तुम्हारी तरफ़ इशारः भी किया। उन्होंने कहा कि अबू क़ुहाफ़ः के बेटे को रवा[2] नहीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने नमाज़ पढ़ाये।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ अल्लाहो अक्बर २ उचित।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कमज़ोर व ग़रीब मुसलमानों की फ़ज़ीलत[1]

आयत

वस्बिर् नफ़्सक मअ़ल्लज़ीन यद्अ़ून रब्बहुम् बिल्ग़दाति वल्-अ़शिय्यि युरीदून वज्हहू व ला तऽदु अ़ैनाक अ़न्हुम् ...

अपने नफ़्स[2] लोगों के साथ रोको जो अपने रब को सुबह व शाम पुकारते हैं और उसकी रज़ा चाहते हैं और तुम्हारी आँखें उनसे न फिरें।

[सू० कह्फ़ि, रु० ४ आ० २८]

अहादीस

२३८ दोज़ख और जन्नत के लोगों का फ़र्क़

हज़्रत हारिसः (र०) बिन वहब से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है, फ़रमाते थे क्या मैं तुमको जन्नत वालों की ख़बर दूँ। हर कमज़ोर जो कमज़ोर समझा जाता है अगर अल्लाह पर क़सम‡ खाये तो अल्लाह तआ़ला उसकी क़सम पूरी करता है, और क्या मैं तुमको दोज़ख वालों की ख़बर दूँ। हर मुतकब्बिर[3] और बख़ील[4] शख़्स। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२३९ ग़रीब मुसलमान की फ़ज़ीलत

हज़्रत सह्ल (र०) बिन सअ़द से रिवायत है कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास से गुज़रा। आपने लोगों से फ़रमाया इस आदमी के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारा क्या ख़याल है। लोगों ने कहा यह आदमी सरदार है। वल्लाह अगर यह पयाम[5] दे तो इस का निकाह हो जाये, अगर सिफ़ारिश करे तो इसकी सिफ़ारिश क़ुबूल की जाये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ामोश रहे। फिर दूसरा आदमी आया, आपने फ़रमाया इसके मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारा क्या ख़याल है, कहा या रसूलुल्लाह! यह मुसलमानों के फ़ुक़रा[6] में है। अगर यह पयाम दे तो

‡ यानी अगर यों कह दे कि ख़ुदा की क़सम यों हीं होगा तो अल्लाह उसकी ज़बान की लाज रक्खेगा।

१ श्रेष्ठता २ इन्द्रियों की वासनाओं को ३ घमण्डी, अहंकारी ४ कंजूस ५ शादी का प्रस्ताव ६ फ़क़ीरों।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रद कर दिया जाये, सिफ़ारिश करे तो क़ुबूल न की जाये, और बात कहे तो सुनी न जाये। आपने फ़रमाया पहले जैसे ज़मीन भर से बेहतर☸ है।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

२१७ जन्नत-दोज़ख़ की आबादी

हज़्रत अबू सअ़ीद (र०) ख़ुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह् सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जन्नत और दोज़ख़ में झगड़ा हुआ, दोज़ख़ ने कहा मुझ में सर्कश[1] और मग़रूर[2] हैं। जन्नत ने कहा मुझ में कमज़ोर और मिस्कीन[3] लोग हैं। अल्लाह् तअ़ाला ने उन दोनों के दर्मियान फ़ैसला किया। फ़रमाया, जन्नत तू मेरी रहमत है, तेरे ज़रीए मैं जिस पर चाहूँगा रहम करूँगा। और दोज़ख़ तू मेरा अ़ज़ाब है, तेरे ज़रीए जिस पर चाहूँगा अ़ज़ाब करूँगा। और तुम दोनों का भरना मेरे ज़िम्मे है।

[मुस्लिम]

२१८ दुनिया में वज़नी[4] अल्लाह के यहाँ बे-वज़न[5]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन मोटा, लाँबा तड़ंगा आदमी आयेगा और उसका वज़न अल्लाह् के नज़दीक एक मच्छर के पर के बराबर न होगा।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

२१९ एक ग़रीब हब्शी का ख़याल

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि एक हब्शी औ़रत मस्जिद की सफ़ाई में रहती थी, या जवान मर्द था। रसूलुल्लाह् सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने न देखा तो लोगों से उसके मुतअ़ल्लिक़ सवाल किया। लोगों ने कहा, उसका इन्तिक़ाल हो गया। आपने फ़रमाया, तुमने मुझे ख़बर क्यों न की, गोया उन्होंने उसको हक़ीर समझा। आपने फ़रमाया, मुझे उसकी क़ब्र बतलाओ। लोगों ने पता दिया तो आपने उस पर नमाज़ पढ़ी फिर फ़रमाया यह क़ब्रें अपने रहने वालों पर तारीकी[6] से भरी रहती हैं। और अल्लाह् तअ़ाला इनकी क़ब्रों को मेरी नमाज़ की वजह से रौशन कर देता है।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

☸ यह पैग़म्बराना शान की बात है कि पहले के मुतअ़ल्लिक़ कुछ न फ़रमाया।

१ उद्दण्ड २ अहंकारी ३ दीन, असहाय ४ बड़प्पन वाला ५ बड़प्पनहीन। ६ अँधेरा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२६० अक्सर जन्नती

हज़्रत उसामः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, मैं जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा हुआ। उसमें अक्सर दाख़िल होने वाले मिस्कीन[1] थे और दौलतमन्द रोक दिये गये थे। लेकिन दोज़ख़ वालों को आग का हुक्म दिया गया। मैं दोज़ख़ के दरवाज़े पर खड़ा हुआ तो अक्सर उसमें दाख़िल होने वाली औरतें थीं। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२६१ तीन बच्चों ने माँ की गोद में गुफ़्तगू की

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया गहवारह में तीन ही ने गुफ़्तुगू की। हज़्रत ईसा (अ०) बिन मरयम ने और उस बच्चे ने जिसको जुरैज की तरफ़ मन्सूब करते थे। और जुरैज का क़िस्सा यह है कि वह एक आबिद[2] आदमी थे, उन्होंने एक अिबादतगाह बना रक्खी थी, उसमें रहा करते थे। एक दिन उनकी माँ आयीं, वह नमाज़ पढ़ रहे थे। उन्होंने उनको आवाज़ दी, जुरैज ने कहा ऐ परवरदिगार, क्या करूँ माँ को जवाब दूँ कि नमाज़ पढ़ूँ। वह नमाज़ पढ़ते ही रहे, माँ चली गयीं। दूसरे रोज़ फिर आयीं और आवाज़ दी, वह फिर नमाज़ में थे। उन्होंने कहा ऐ परवरदिगार, माँ और नमाज़ का मुक़ाबला है, वह फिर नमाज़ पढ़ते रहे। माँ ने कहा, ऐ अल्लाह, उस वक्त तक इसको न मार जब तक यह बुरी औरतों का मुँह न देख ले। एक दिन बनी इस्राईल जुरैज और उनकी अिबादत का ज़िक्र कर रहे थे। एक औरत ने कहा (जिसकी ख़ूबसूरती जरबुल्मसल थी) कि अगर तुम कहो तो मैं उनको फ़ित्नः में डाल दूँ। वह उनके पास आई, उन्होंने इल्तिफ़ात न किया[3]। वह एक चरवाहे के पास गयी जो जुरैज की अिबादतगाह में रात को रहा करता था। वह मुलव्वस हुआ[4]। जब उसके लड़का हुआ तो कहा यह जुरैज का लड़का है। लोग जुरैज के पास आये और उनको उस अिबादतगाह पर से उतारा और उसको मुन्हदिम कर दिया[5], और उनको मारना शुरू किया। उन्होंने कहा, आख़िर क्या बात है? लोगों ने कहा तुमने गुनाह किया, उन्होंने कहा बच्चा कहाँ है लोग उसको लाएँ। उन्होंने कहा अच्छा मुझे नमाज़ पढ़ लेने दो, उन्होंने नमाज पढ़ी, नमाज पढ़ने के बाद बच्चे के पास आये और उसके पेट में उँगली मारी और कहा ऐ बच्चे, तेरा बाप कौन है? बच्चे ने कहा, फ़लाना चरवाहा है। बस फिर क्या था लोगों ने जुरैज के हाथ-पाँव चूमना शुरू किये। और

---

१ ग़रीब, दीन २ भक्त ३ नज़र न डाली ४ पाप में फंसा ५ इबादतगाह को नष्ट कर दिया।

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तबर्रुकन इन पर हाथ फेरने लगे। और कहने लगे हम तुम्हारी अिबादत-गाह सोने की तामीर करेंगे। वह बोले नहीं, जैसे पहले थी वैसी ही बना दो।

तीसरा बच्चा जो गोद में बोला, एक औरत का बच्चा था। माँ बच्चे को दूध पिला रही थी कि एक सवार बड़े तुज़ुक[1] व एहतिशाम[2] के साथ उधर से गुज़रा। माँ ने उस को देखकर दुआ की कि ख़ुदाया मेरा बच्चा भी इसी शान व शौकत का हो। बच्चा दूध छोड़कर सवार को देखने लगा और कहने लगा, ऐ परवरदिगार, मुझको इस जैसा न होने देना। यह कहकर बच्चा फिर दूध पीने लगा। कुछ देर के बाद मन्ज़र[3] सामने आया कि लोग एक लौंडी को तरह-तरह के जराइम[4] का इल्ज़ाम देते हुए और उसको बिलावजह मारते हुए उधर से गुज़रे। लौंडी सिर्फ़ 'ह्रस्बियल्लाहु व निअ्मल् वकील' कहती रही और रज़ा बिल्क़ज़ा पर उसका अमल रहा। बच्चे की माँ ने यह देखकर दुआ की, परवरदिगार मेरा बच्चा ऐसा न हो। बच्चा दूध छोड़कर उसको भी देखने लगा और कहने लगा कि ऐ अल्लाह, मुझको इसी लौंडी की तरह बनाना। अब माँ-बेटों में इस अम्र में सवाल-जबाब शुरू हुआ। माँ ने कहा कि मैंने सवार और उसकी शान को देखकर जब दुआ की कि मेरा बच्चा ऐसा ही हो तो तूने कहा कि ख़ुदा मुझको इस जैसा न बनाये। और इस लौंडी को जो ज़लील और रुस्वा की जा रही थी, मैंने देखकर जब कहा कि ख़ुदा तुझको ऐसी हालत में न मुब्तिला करे तो तूने कहा ख़ुदा मुझको ऐसा ही करे। बच्चे ने जवाब दिया कि ऐ माँ, सवार एक निहायत ही मुतकब्बिर[5] और ज़ालिम शख़्स था, इसलिए मैंने उसकी हालत अपने लिए नापसन्द की। और वह लौंडी जिसको तुम ज़लील समझती थीं हक़ीक़त में मज़लूमः[6] थी, इसलिए मैंने उसके दर्जे की तमन्ना[7] की। [बुख़ारी-मुस्लिम]

यतीमों, मिस्कीनों और लड़कियों के साथ नर्मी

आयात

…वख़्फ़िज़् जनाहूक लिल्मुअ्मिनीन।

अपने बाज़ू मुसलमानों के लिए (बाहों को) झुका दो।

[सू० ह़िज़्रि रु० ६ आ० ८८]

---

१ सज्जा, साज २ शान शौक़त ३ दृश्य। ४ अपराधों ५ अहंकारी, घमण्डी ६ ज़ुल्म की सताई ७ अभिलाषा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वस्बिर् नफ़्सक मअ़ल्लज़ीन यद्‌अ़ून रब्बहुम् बिलग़दाति वल्अ़शिय्यि युरीदून वज्हहू व ला तऽदु अ़ैनाक अ़न्हुम् ज तुरीदु ज़ीनतल्-ह़ूयातिद्दुन्या ज... ।

अपने नफ़्स को उन लोगों के साथ रोको जो अपने परवरदिगार को सुबह व शाम पुकारते हैं और उसकी रज़ा चाहते हैं। और तुम्हारी आँखें उनसे न फिरें कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी की ज़ीनत चाहो।

[सू० कह्फ़, रु० ४ आ० २८]

फ़अम्मल्यतीम फ़ला तक़्हर् त (९) व अम्मस्साअिल फ़ला तन्हर् त।

यतीम पर ज़बरदस्ती मत करो और सायल[1] को मत झिड़को।

[सू० ज़ुहा, रु० १ आ० १०]

अरऐतल्लज़ी युकज्ज़िबु (१) बिद्दीनि त फ़ज़ालिकल्लज़ी यदुऽअ़ुल्यतीम ला (२) व ला यहुज़्ज़ु अ़ला तअ़ामिल्-मिस्कीनि त (३)।

क्या तुमने देखा जो दीन को झुठलाते हैं यह वही हैं जो यतीम को धक्के देते हैं और मिस्कीन को खाने पर रग़्बत नहीं दिलाते।

[सू० माअ़ूनि, रु० १ आ० १-३]

अह़ादीस

२४२ ग़रीब मुसलमानों की फ़ज़ीलत[2]

ह़ज़रत सअ़द (र०) बिन अबी वक़्क़ास से रिवायत है कि हम और इब्नि मस्ऊ़द (र०) और हुज़ैल का एक आदमी और बिलाल (र०), इनके अलावा दो आदमी और, जिनका नाम मैं भूल गया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ थे। क़ुरैश ने हम लोगों को देखकर नबी (स़०) से दरख़्वास्त की कि आप इन लोगों को निकाल दीजिए ताकि यह हम पर जुरअत न करें। इस बात का आपके दिल में कुछ ख़याल गुज़रा§। अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी—

१ सवाल करने वाला, भिक्षुक २ श्रेष्ठता।

§ कि शायद इस तरह यह अल्लाह के दीन की तरफ़ मुतवज्जिः हों और यह तो मेरे ही घर में फिर आजायेंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

व ला ततरुदिल्लज़ीन यद्ऊन रब्बहुम् बिलग़दाति वल्अशिय्यि युरीदून वज्हहू ...

उन लोगों को न निकालो जो अपने रब को सुबह व शाम पुकारते हैं और रज़ा चाहते हैं। [मुस्लिम] [सू० अन्आमि, रु० ६ आ० ५२]

२४३ ग़रीबों की दिल शिकनी

हज़्रत अम्र बिन (र०) आईज़ (र०) मुज़नी से रिवायत है (यह उन लोगों में से थे जिन्होंने बैअतॅ रिज़्वान की थी) कि सलमान (र०) सुहैब (र०) और बिलाल (र०) और कुछ लोग बैठे हुए थे कि अबू सुफ़्यान उधर से गुज़रे। तो उन लोगों ने कहा अभी तक अल्लाह की तलवारों† ने अल्लाह के दुश्मनों पर अपना असर नहीं किया। हज़्रत अबूबक्र (र०) ने कहा तुम क़ुरैश के सरदार और बुज़ुर्ग के मुतअ़ल्लिक़ ऐसी बातें कहते हो। फिर नबी (स०) के पास आये और अपनी कही हुई बात की ख़बर दी। आपने फ़रमाया ऐ अबूबक्र (र०) तुमने शायद उन को नाराज़ कर दिया है, तो अल्बत्ता तुमने अपने रब को नाराज़ किया। हज़्रत अबूबक्र (र०) उन लोगों के पास आये और कहा ऐ भाइयो, क्या मेरी बात ने तुमको नाराज कर दिया। उन्होंने कहा नहीं, अल्लाह तुमको बख़्शे ऐ मेरे भाई‡। [मुस्लिम]

२४४ यतीम की किफ़ालत[1]

हज़्रत सहल बिन सअ़द (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यतीम की किफ़ालत करने वाला और मैं जन्नत में इस तरह होगें, कलमः की उँगली और बीच की उँगली और बीच की उँगली में कुछ फ़र्क़ रखकर बताया कि इस तरह§। [मुस्लिम]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यतीम की किफ़ालत करने वाला, ख़्वाह उसका हो या दूसरे का हो, वह और मैं जन्नत में इस तरह होंगे, रावी ने कलमः की उँगली मिलाकर बताया कि इस तरह। और वह रावी मालिक बिन अनस (र०) थे। [मुस्लिम]

---

† मतलब यह कि अबू सुफ़्यान अब तक ज़िन्दः हैं? अल्लाह की तलवारों ने उनका काम तमाम नहीं किया?

‡ सहाबः किराम में क्या मुहब्बत व उल्फ़त थी! कोई किसी की बात से बुरा नहीं मानता था!

§ यानी अल्लाह उसको मुझसे बहुत क़रीब रक्खेगा।

---

१ भरण-पोषण, परवरिश।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२४८ मिस्कीन[1] की तारीफ़

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मिस्कीन वह नहीं है कि एक लुक़्मा या दो लुक़्मे एक खजूर या दो खजूरें उसको पलटा‡ दें। मिस्कीन वह है जो मुहतात[2]+ रहे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

और इन दोनों की एक रिवायत में यह भी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मिस्कीन वह नहीं है जो लोगों के पास आये जाये और एक या दो लुक़्मा एक खजूर या दो खजूरें उसको पलटा दें। मिस्कीन वह है कि ऐसी दौलत न पाये जो उसके लिए काफ़ी हो न किसी को उसकी मुफ़्लिसी का इहसास हो और न लोगों के सामने हाथ फैलाता फिरे।

२४९ बेवा और मिस्कीन की ख़बरगीरी का सवाब

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, बेवा और मिस्कीन की ख़बर लेने वाला अल्लाह के रास्ते में लड़ने वाले की तरह है। और मेरा ख़याल है कि यह भी फ़रमाया, ऐसे आ़बिद की तरह जो सुस्त न पड़े। या ऐसे रोज़ःदार की तरह जो इफ़्तार न करे[3]। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२५० बुरी दावत

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, बुरा खाना वलीमा[4] का वह खाना है कि उन लोगों को रोका जाये जो ख़ुद से आयें और उनको बुलाया जाये जो इन्कार§ करें। और जो दावत क़ुबूल न करेगा वह अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा। और मुस्लिम, बुख़ारी की एक रिवायत में हज़्रत अबू हुरैरः (र०) ही से रिवायत है कि एक बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह भी फ़रमायी कि बदतरीन वलीमा का वह खाना है जिसमें अमीरों को बुलाया जाये और ग़रीबों को छोड़ दिया जाये। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ दीन, असहाय २ (मांगने में) संकचोशील ३ रोज़ः खोलने के लिए कुछ न खाए। ४ विवाह-भोज।

---

‡ यानी इतने में उसका भला हो जायेगा।

+ यानी सवाल (मांगने) वग़ैरह से बचे।

§ यानी खाते पीते आसूदः लोगों और उमरा को बुलाया जाये और ज़रूरतमन्द ग़रीबों को रोका जाये, जैसा आम तौर पर होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

२४८ लड़कियों की परवरिश

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, जो दो लड़कियों की परवरिश उस वक्त तक करे कि वह जवान हो जायें तो क़ियामत के दिन वह आयेगा (जब) मैं और वह इस तरह होंगे और आपने अपनी उँगलियों को मिला† दिया। [मुस्लिम]

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि मेरे पास एक औरत आई। उसके साथ दो लड़कियाँ थीं। उसने मुझसे सवाल किया, मेरे पास एक खजूर के सिवा कुछ भी नहीं था, वही मैंने उसको दे दिया। उसने अपनी दोनों लड़कियो में तक़सीम कर दिया। ख़ुद कुछ न खाया और चली गयी। नबी (स०) तशरीफ़ लाये तो मैंने आपसे यह क़िस्सा बयान किया। आपने फ़रमाया, जो लड़कियों में किसी चीज़ के साथ आज़माया§ जाये और उनके साथ अच्छे सुलूक करे तो वह लड़कियाँ उसके लिए आग से पर्दा बन जायेंगी। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि मेरे पास एक औरत आई, उसके साथ उसकी दो लड़कियाँ थीं। उसने मुझसे खाना माँगा, मैंने उसको तीन खजूरें दीं। औरत ने एक एक खजूर अपनी दोनों लड़कियों को दी और एक खजूर खाने की नीयत से अपने मुँह तक ले जाने लगी थी कि लड़कियों ने फिर माँगा। औरत ने खजूर के दो टुकड़े करके एक एक दोनों को दे दिया और चली गयी। मुझको उसकी हालत पर तअज्जुब हुआ। मैंने इसका ज़िक्र रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किया। आपने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने उन दोनों लड़कियों के ज़रीये उस पर जन्नत वाजिब की और दोज़ख से आज़ाद किया। [मुस्लिम]

२४९ यतीमों[1] ज़ईफ़ों[2] और औरतों का हक़

हज़्रत ख़ुवैलिद (र०) बिन अम्र से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

† लड़कियों का परवरिश करना बड़ा मुश्किल काम है। और यों भी कि अ़रब के लोग ज़िन्दः दफ़न कर दिया करते थे। अब जो उनकी परवरिश करेगा वह अल्लाह की ख़ुशी के लिए करेगा। फिर लड़कियों से उन माली व दुनयावी फ़वायद की तवक़्क़ुअ़ भी नहीं जो लड़कों से होती है।

§ यानी उनकी परवरिश उसके ज़िम्मे हो।

१ अनाथों २ वृद्धों।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! मैं यतीमों, ज़ईफ़ों और औरतों के हक़ से डरता हूँ । [निसाई]

२८० ज़ईफ़ों की बर्कत से रिज़्क़[1]

हज़्रत मुस्अब (र०) बिन सऽद बिन अबी वक़्क़ास (र०) से रिवायत है कि सऽद को ख़याल पैदा हुआ कि लोगों पर उनको फ़ज़ीलत हासिल है। नबी (स०) ने फ़रमाया तुम्हारी जो मदद की जाती है और तुमको जो रिज़्क़ दिया जाता है वह तुम्हारे ज़ईफ़ों ही की बदौलत । [बुख़ारी]

हज़्रत अबू दर्दा (र०) उवैमिर से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है फ़रमाते थे कि मुझे कमज़ोरों में तलाश करो। कमज़ोरों की वजह से तुमको रिज़्क़ मिलता है और उन्हीं की वजह से तुम्हारी मदद की जाती हैं। [अबूदावूद]

औरतों के साथ हुस्ने सुलूक[2]

आयात

...व आशिरूहुन्न बिल्मऽरूफ़ि ॥... ।

औरतों से भलाई के साथ मेल जोल रक्खो ।

[सू० निसा, रु० ३ आ० १६]

व लन् तस्ततीऊ अन् तऽदिलू बैनन्निसाअि व लौ हरस्तुम् फ़ला तमीलू कुल्लल्मैलि फ़तजरूहा कल्मुअल्लक़ति ॥ व अिन् तुस्लिहू व तत्तक़ू फ़अिन्नल्लाह कान ग़फ़ूररर्हीमन् ।

औरतों के दर्मियान हरगिज़ तुम पूरा अद्ल[3] न कर सकोगे अगरचि तुमको हिर्स हो। पस एक तरफ़ न झुक जाओ कि दूसरी को लटकी हुई छोड़ दो; और अगर तुम इस्लाह कर लो और डरो तो बेशक अल्लाह तआला बख़्शने वाला है। [सू० निसा, रु० १६ आ० १२६]

‡ यानी मैं हुज्जत तमाम कर देता हूँ, अब भी जो न डरे वह ख़ुद जिम्मेदार है ।

१ रोज़ी, जीविका २ व्यवहार में शिष्टता, सद्व्यवहार ३ न्याय ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहादीस

२६१ औरत की फ़ित्रत[1] बदलने के दरपै न होना चाहिए[2]

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, औरतों के साथ भलाई करो। औरत पसली से पैदा की गयी है। और पसलियों में सबसे ज़ियाद: ऊपर का हिस्सा टेढ़ा है। और उसको सीधा करोगे तो टूट जायेगी§। और अगर उसको छोड़ दोगे तो टेढ़ी ही रहेगी। पस औरतों के साथ भलाई करो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२६२ औरत शरीके ज़िन्दगी है, उससे लौंडी-ग़ुलाम का सा सुलूक अच्छा नहीं

हज़्रत अब्दुल्लाह बिन ज़मअ: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ुतबा दे रहे थे। आपने नाक़ये समूद[3] का और जिसने उसकी कूचें[4] काट दी थीं उसका ज़िक्र किया। आपने फ़रमाया, इज़िन्मबअ़स अशक़ाहा (जबकि क़ौम का सबसे बदबख़्त आदमी उस ऊँटनी को ज़िबह करने के लिये आमादा हुआ) की तफ़सीर फ़रमाते हुए फ़रमाया कि एक ज़बरदस्त आदमी जो अपने ख़ान्दान की क़ुव्वत व हिमायत की वजह से मज़बूत व महफ़ूज़ था इस काम के लिए तैयार हुआ।

फिर औरतों का ज़िक्र फ़रमाया और उनके बारे में बहुत नसीहतें कीं। फ़रमाया, क्या बात है कि एक वक़्त मर्द अपनी बीवी को ग़ुलाम की तरह पीटे फिर मुमकिन है उसी दिन रात को उसके साथ रहे। फिर रियाह ख़ारिज होने पर हँसने के मुतअ़ल्लिक़ नसीहत फ़रमायी कि आदमी दूसरे के इस फ़ेल पर क्यों हँसता है। जबकि उससे ख़ुद भी ऐसी हरकत होती है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२६३ मोमिन मर्द मोमिनः औरत से नफ़्रत न करे

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मोमिन मर्द मोमिन: औरत से नफ़्रत न करे। अगर उसकी एक आदत नापसन्द है तो दूसरी आदत उसको ख़ुश कर सकती है। [मुस्लिम]

---

§ यानी फ़ित्रत निसवानी[5] को तब्दील करने की अगर कोशिश करोगे तो उससे उसकी फ़ित्रत मस्ख़[6] हो जायेगी।

---

१ स्वभाव, प्रकृति २ पीछे न पड़ना चाहिए ३ समूद क़ौम की ऊँटनी ४ टाँगें ५ नारी-स्वभाव ६ विकृत (और बिगड़ जायगी)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२६४ औरतों के हुक़ूक़

हज़्रत अम्र बिन अलअह्स से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज्जतुल्वदाअ में अल्लाह की तारीफ़ और सना बयान की और फ़रमाया औरतों के साथ भलाई करो, वह तुम्हारे यहाँ बतौर क़ैदी के हैं। इसके सिवा तुम उनके किसी चीज़ के मालिक नहीं हो। अगर वह ग़लती कर बैठें तो उनसे अलग रहो और उनको ऐसा मारो कि उनको तकलीफ़ न हो। पस अगर वह मान लें तो उन पर कोई तकलीफ़ न डालो और सुन लो कि तुम्हारी बीवियों पर तुम्हारा हक़ है और तुम्हारी बीवियों का तुम पर हक़ है। तुम्हारा उन पर यह हक़ है कि तुम्हारे बिस्तरों पर उनको न बिठायें जिन को तुम नापसन्द करते हो और तुम्हारे घरों में उनको न बुलायें जिनका आना तुम्हें नापसन्द हो। और तुम पर उनका हक़ यह है कि उनके खिलाने-पहनाने में भलाई करो। [तिर्मिज़ी]

२६५ औरतों के हुक़ूक़

हज़्रत मुआवियः (र०) बिन हैदः से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि हमारी बीवियों का हम लोगों पर क्या हक़ है। आपने फ़रमाया कि जब तुम खाओ तो उनको भी खिलाओ और जब पहनो तो उनको भी पहनाओ और उनके मुँह पर न मारो और उन्हें गालियाँ न दो और उनको न छोड़ो मगर घर में। [अबूदावूद]

२६६ कामिलतरीन मोमिन[1] की तारीफ़

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया सबसे ज़ियादः कामिल मोमिन वह है जो इख़्लाक़[2] में और अपने घर वालों के लिए अच्छा हो। [तिर्मिज़ी]

२६७ बदसुलूक शौहर

हज़्रत अयास (र०) बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अल्लाह की बन्दियों को न मारो। हज़्रत उमर (र०) रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! औरतें अपने शौहरों पर बहुत दिलेर हो गयीं तो आपने उनको मारने की इजाज़त दी। पस औरतें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घरों के गिर्द फिरने लगीं और अपने शौहरों

---

१ पूरी तौर पर ईमान वाला २ आचार।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की शिकायत करने लगीं। आपने फ़रमाया कि मुहम्मद (स०) के घर वालों को बहुत सी औरतों ने घेर लिया जो अपने शौहरों की शाकी[1] हैं। उनके शौहर अच्छे लोग नहीं हैं। [अबूदावूद]

२९७ दुन्यिा की बेहतरीन दौलत

हज्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र बिन अलआस से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, दुनिया एक पूँजी है। और उसकी बेहतरीन दौलत नेकबख़्त बीवी है। [मुस्लिम]

बीवी पर शौहर का हक़

आयत

अर्रिजालु क़व्वामून अ़लन्निसाअि बिमा फ़ज़्ज़लल्लाहु बअ़्ज़हुम् अ़ला बअ़्ज़िंव्व बिमा अन्फ़क़ू मिन् अम्वालि हिम् ० फ़स्सालिहातु क़ानितातुन् हाफ़िज़ातुल्लिल्ग़ैबि बिमा हफ़िज़ल्लाहु ०...

मर्द औरतों के मुन्तज़िम और निगराँ हैं, क्योंकि अल्लाह ने उन को फ़ज़ीलत दी है बाज़ को बाज़ पर, वह इसलिए कि वह अपने मालों को ख़र्च करते हैं। पस नेकबख़्त औरतें फ़रमाबरदार होती हैं और शौहर की ग़ैरमौजूदगी में निगहबानी करती हैं अल्लाह की हिफ़ाज़त से। [सू० निसा, रु० ६ आ० ३४]

अहादीस

२९८ शौहर की नाराज़गी

हज्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो शौहर अपनी बीवी को बुलावे और वह न आवे उसका शौहर रात को उससे नाराज़ रहे तो फ़िरिश्ते उस पर सुबह तक लानत करते रहते हैं। [बुख़ारी-मुस्लिम]

और इन दोनों की एक रिवायत में है, जब औरत अपने शौहर से बिगड़ कर रात गुज़ारती है तो फ़िरिश्ते उस पर सुबह तक लानत करते हैं।

१ शिकायत करने वाली।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क़सम है उस ज़ात की कि जिसके क़ब्ज़ए क़ुद्रत में मेरी जान है। जो मर्द अपनी बीवी को अपने पास बुलाये और औरत आने से इन्कार करे तो आसमान वाले सब उस पर नाराज़ होंगे यहाँ तक कि उसका शौहर उससे राज़ी हो।

२९८[२] शौहर की इजाज़त

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, किसी औरत को जाइज़ नहीं कि उसका शौहर मौजूद हो और वह उसके बग़ैर इजाज़त नफ़्ल[1] के रोज़े रक्खे और उसकी बग़ैर इजाज़त दूसरों को उसके घर में बुलाये। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२९०[३] तुम में का हर एक ज़िम्मेदार

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि नबी (स़०) ने फ़रमाया तुम में का हर एक ज़िम्मेदार है। हर एक से अपनी रअ़िय्यत[2] के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जायेगा। मर्द अपने घर वालों पर ज़िम्मेदार है। औरत अपने शौहर की और उसके लड़कों की ज़िम्मेदार है। तुम सबसे उसकी रअ़िय्यत के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जायेगा। [बुख़ारी-मुस्लिल]

२९१[४] शौहर की इताअ़त[3]

हज़्रत तल्क (र०) बिन अ़ली से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब मर्द अपनी बीवी को बुलाये तो वह आये अगरचि तनूर[4] पर बैठी हो। [तिर्मिज़ी-निसाई]

२९२[५] शौहरों की ताज़ीम की इन्तिहा

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स़०) ने फ़रमाया, अगर मैं किसी को सिज्दे का हुक्म देता तो औरतों को हुक्म देता कि वह अपने शौहरों को सिज्दः करें। [तिर्मिज़ी]

२९३[६] शौहर की रज़ामन्दी का नतीजा

हज़्रत उम्मुल मोमिनीन उम्मॅ सल्मः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब औरत मर जाये और उसका शौहर उससे राज़ी हो तो वह जन्नत में दाख़िल होगी। [तिर्मिज़ी]

---

१ वह रोज़े जो लाज़िम न हों, सवाब के लिए रखे जायँ। २ रैयत, प्रजा, जनता (यहाँ अपने सम्बन्धित जन) ३ फरमाँबरदारी, आज्ञापालन ४ तन्दूर (यानी रोटी भी पका रही हो)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२६७ शौहर को तकलीफ़ देना

हज़्रत मआ़ज़ (र०) बिन जबल से रिवायत है कि नबी (स़०) ने फ़रमाया बीवी जब अपने शौहर को दुनिया में तकलीफ़ देती है तो फ़राख़चश्म[1] हूरों में से जो उस की बीवी होगी, वह कहती है कि तेरा बुरा हो, वह तेरा मेहमान है, तू उसको तकलीफ़ न दे, क़रीब है कि अल्लाह तुझसे जुदा कर दे और हमारी तरफ़ कर दे। [तिर्मिज़ी]

२६८ औरतों का फ़ित्ना[2]

हज़्रत उसामः (र०) बिन ज़ैद से रिवायत है कि नबी (स़०) ने फ़रमाया, मैंने अपने बाद कोई फ़ित्ना मर्दों के लिए औरतों से ज़ियादः नहीं छोड़ा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

घरवालों पर ख़र्च

आयात

…व अ़लल्मौलूदि लहू रिज़्क़ुहुन्न व किस्वतुहुन्न बिलमऽरूफ़ि …

जिसका बच्चा है उस पर लाज़िम है (दूध पिलानेवाली औरतों का) खाना और कपड़ा भलाई के साथ। [सू० बक़र, रु० ३० आ० २३३]

लियुन्फ़िक़् ज़ू सअ़तिम्मिन् सअ़तिही, व मन् क़ुदिर अ़लैहि रिज़्क़ुहू फ़ल्युन्फ़िक़् मिम्मा आताहुल्लाहु, ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन् इल्ला मा आताहा …।

और अपनी वुस्अत के मुताबिक़ ख़र्च करो जितनी गुन्जाइश हो और जिसपर ख़र्च तंग हो गया हो तो उसको चाहिए कि उस चीज़ को ख़र्च करे जो उसको अल्लाह ने दिया। [सू० तलाक़, रु० १ आ० ७]

व मा अन् फ़क़्तुम्मिन् शैइन् फ़हुव युख़्लिफ़ुहू

और अल्लाह किसी को तकलीफ़ नहीं देता मगर उसकी वुस्अ़त के मुताबिक। [सू० सबअिन् रु० ५ आ० ३६]

तुमने किसी चीज़ से जो कुछ ख़र्च किया उसका निअ़मलबदल अ़ता होगा।

---

१ दिल खोलकर सुख देने वाली २ फ़िसाद, उपद्रव (का कारण)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहादीस

२६६[1] घरवालों पर ख़र्च करने का अज्र सबसे ज़ियादः है

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, एक दीनार तुमने अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किया। एक दीनार गर्दन आज़ाद करने में, एक दीनार मिस्कीनों[1] पर सदक़ा किया, और एक दीनार घरवालों पर ख़र्च किया। सो जो दीनार घरवालों पर ख़र्च किया उसका दर्जः सबसे ज़ियादः है। [मुस्लिम]

हज़्रत सौबान मौला से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अफ़्ज़लतरीन[2] वह दीनार है जिसको आदमी अपने घरवालों पर ख़र्च करे, और उन जानवरों पर ख़र्च किया जाये जो अल्लाह के रास्ते में काम आयें और वह दीनार जो अल्लाह के रास्ते में अपने साथियों पर ख़र्च किया जाये।

२६७[2] औलाद पर ख़र्च करने का सवाब

हज़्रत उम्मेसलमः (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या मेरी वह औलाद जो पहले शौहर से हैं उनपर ख़र्च करने में अज्र है। मैं उनको बुरी हालत में छोड़ना नहीं चाहती और वह मेरी ही तो औलाद हैं। आपने फ़रमाया, हाँ, जो कुछ भी तुम ख़र्च करोगी तुम्हें अज्र मिलेगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२६८[3] बीवी को खिलाने का सवाब

हज़्रत सअ़द (र०) बिन अबी वक़्क़ास से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह की ख़ुशी चाहते हुए जो कुछ भी ख़र्च करोगे अल्लाह उसका अज्र देगा चाहे अपनी बीवी के मुँह में एक लुक़्मा रक्खो। [बु०-मु०]

२६९[4] घरवालों पर सवाब की नीयत से ख़र्च करना

हज़्रत अबू मस्ऊ़द (र०) अल्बदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मर्द अपने घरवालों पर अज्र तलब करते हुए ख़र्च करे तो यह सदक़ा है। [बु०-मु०]

---

१ दीन असहाय २ सर्वश्रेष्ठ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२६० अपने मुतअ़ल्लिक़ीन[1] की मदद न करना बड़ा गुनाह है

हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र बिन अलआ़स से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इन्सान का गुनाह यही काफ़ी है कि जिसका कफ़ील[2] हो उसकी किफ़ालत[3] से हाथ उठा ले। [अबूदावूद-मुस्लिम]

२६१ ख़र्च करनेवाले के लिए निअ़मुल्-बदल की दुआ

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स़०) ने फ़रमाया, हर रोज़ दो फ़िरिश्ते उतरते हैं। एक कहता है कि ऐ अल्लाह! ख़र्च करनेवाले को निअ़मुल्-बदल अ़ता फ़रमा। दूसरा कहता है ऐ अल्लाह! बख़ीलों[4] को नुक़सान और तबाही दे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२६२ मुतअ़ल्लिक़ीन से इब्तिदा

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स़०) ने फ़रमाया, ऊँचा हाथ नीचे हाथ से बेहतर है। और ख़र्च की इब्तिदा उन लोगों से करो जिनकी तुम परवरिश करते हो और बेहतरीन सदक़ा वह है जो कुछ दौलत बचाकर किया जाये। और जो मुहतात[5] रहना चाहेगा अल्लाह उसको मुहतात रक्खेगा। जो इस्तग़ना[6] चाहेगा अल्लाह उसको ग़नी करेगा। [बुख़ारी]

महबूब चीज़ का ख़र्च करना

आयत

लन्तनालुल्बिर्रहृत्ता तुन्फ़िक़ू मिम्मा तुहिब्बून ۵…

उस वक़्त तक नेकी को न पहुँचोगे जब तक कोई महबूब चीज ख़र्च न करो। [सू० आलि अिम्रान, रु० ६ आ० ६२]

या अय्युहल्लजीन आमनू अन्फ़िक़ू मिन् तय्यिबाति मा कसब्तुम् व मिम्मा अख़्रज्ना लकुम्मिनल्-अर्ज़ि ۵ व ला तयम्ममुल्ख़बीस मिन्हु तुन्फ़िक़ून… (२६७)

१ सम्बन्धियों २ उत्तरदायी अथवा पालन-पोषण का ज़िम्मेदार ३ परवरिश ४ कंजूसों ५ सतर्क, सावधान ६ निस्पृहता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐ ईमानवालो ! उन पाक चीज़ों को ख़र्च करो जो तुमने कमाई हैं। और जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाली हैं। ख़ास तौर से ख़राब ही चीज़ न ख़र्च करो। [सू० बक़र, रु० ३७ आ० २६७]

अह़ादीस

२७१ एक सह़ाबी का सबसे ज़ियादः पसन्दीदह माल राहे ख़ुदा में देना

ह़ज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि अन्सार में अबू तलहः (र०) सबसे ज़ियादः मालदार थे और उनके माल में उनको बैरुहा बहुत पसन्द था और वह मस्जिद के सामने था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अक्सर उसमें तश्रीफ़ ले जाते और उसका पानी पीते जो बहुत शीरीं था। ह़ज़्रत अनस (र०) कहते हैं कि जब यह आयत उतरी 'लन्तनालुल्बिर्र ह़त्ता तुन्फ़िक़ू मिम्मा तुह़िब्बून' तो ह़ज़्रत अबू तलहा (र०) रसूलुल्लाह (स़०) के पास आये और कहा या रसूलल्लाह ! आप पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी है। 'लन्तनालुल्बिर्र ह़त्ता तुन्फ़िक़ू मिम्मा तुह़िब्बून'। और मुझे अपने माल बैरुहा बहुत मर्ग़ूब[1] है। मैं उसको अल्लाह के लिए सदक़ा करता हूँ और उसके ज़ख़ीरः और नेकी की उम्मीद अल्लाह से रखता हूँ। पस आप उसको जहाँ अल्लाह का हुक्म हो वक़्फ़ कर दीजिए। आपने फ़रमाया, ओहो यह माल तो बहुत नफ़ा का है। यह माल तो बहुत नफ़ा का है। जो कुछ तुमने कहा मैंने सुना, मेरी राय यह है कि इसको अपने क़राबतदारों[2] के लिए वक़्फ़ कर दो। ह़ज़्रत अबू तलहः (र०) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह जो आपकी मर्ज़ी हो। फिर उसको ह़ज़्रत अबू तलहः (र०) ने अपने चचाज़ाद भाइयों में तक़सीम कर दिया।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

अपने घरवालों को नेकी का हुक्म

आयात

वअ्मुर् अह्लक बिस्सलाति वस्तबिर् अलैहा ...

अपने घरवालों को नेकी का हुक्म दो और उस पर क़ायम रहो।

[सू० ताहा, रु० ८ आ० १३२]

---

१ प्रिय २ समीपी जन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

या अय्युहल्लज़ीन आमनू क़ू अन्फ़ुसकुम् व अह्लीकुम् नारन्…

ऐ ईमानवालो, अपनी जानों को और अपने घरवालों को आग से बचाओ। [सू० तह़रीम, रु० १ आ० ६]

अहादीस

२७४ छोटे बच्चे की निगरानी और इहतियात

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि हसन (र०) बिन अली (र०) ने एक खजूर उठा लिया और अपने मुँह में रख लिया, आपने फ़रमाया अरे अरे इसको फेंको, क्या तुम नहीं जानते कि सदक़ः का माल हम नहीं खाते। [बुख़ारी-मुस्लिम]

और एक रिवायत में है, आपने फ़रमाया सदक़ा हमारे लिए जाईज़ नहीं†।

२७८ बच्चे को तरबियत[1] और आदाब[2] की तालीम

हज़्रत उमर (र०) बिन अबू सलमः (र०) से (जो उम्मे सलमः के साहबज़ादे थे और आँ हज़्रत (स०) की परवरिश में थे) रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की परवरिश में था और प्याले में इधर-उधर से खाया करता था। आपने मुझसे फ़रमाया ऐ लड़के, अल्लाह का नाम लेकर सीधे हाथ से खा और अपने सामने से खा। उसके बाद मैं उसी तरह खाने लगा। [बु०-मु०]

२७६ हर शख़्स अपने मुतअ़ल्लिक़ीन[3] का ज़िम्मेदार है और ख़ुदा के सामने जवाबदेः[4] है

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है, फ़रमाते थे तुम सब अपनी-अपनी जगह पर ज़िम्मेदार हो। ख़लीफ़ा ज़िम्मेदार है, उससे अपनी रईयत[5] के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जायेगा। मर्द अपने घरवालों का ज़िम्मेदार है, उसके मुतअ़ल्लिक़ उससे पूछा जायेगा। औरत अपने शौहर के घर की

---

† यानी शफ़्क़त[6] व मुहब्बत नहीं हैं कि बच्चे को अच्छा खिलाये, पहनाये। बड़ी मुहब्बत यह है कि नाजाईज़ मुश्तब्ह[7] चीज़ से बचाये।

---

१ सभ्यता २ शिष्टाचार ३ सम्बन्धियों ४ उत्तरदायी ५ प्रजा ६ ममता ७ सन्दिग्ध, अनिश्चित।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज़िम्मेदार है, उसके बारे में पूछी जाये गी। ख़ादिम अपने आक़ा के माल का ज़िम्मेदार है, वह उसके मुतअ़ल्लिक़ पूछा जायेगा। तुम सब ज़िम्मेदार हो, अपनी रईयत के मुतअ़ल्लिक़ पूछे जाओगे।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

२५७ बच्चों को नमाज़ की ताकीद और तम्बीह

हज़्रत अम्र (र०) बिन शुऐब से रिवायत है, वह अपने बाप से रिवायत करते हैं, वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम्हारी औलाद जब सात बरस की हो तो नमाज़ की ताकीद करो और जब दस बरस की हो तो मार कर नमाज़ पढ़ाओ‡ और उनके बिस्तर अलग कर दो। [अबूदावूद]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब बच्चे सात बरस के हों तो नमाज़ की ताकीद करो और जब दस बरस के हों तो उनको मार-मार कर नमाज़ पर लगाओ। [अबूदावूद-तिर्मिज़ी]

पड़ोसी का हक़

आयात

वऽबुदुल्लाह व ला तुश्रिकू बिही शैअंव्व बिल्वालिदैनि अिह्सानंव्व बिज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि वल्जारिज़िल्-क़ुर्बा वल्-जारिल्जुनुबि वस्साहिबि बिल् जम्बि वब्निस्सबीलि ला व मा मलकत् अैमानुकुम् त...

‡ इसमें मुसलमानों ने बड़ा तसाहुल[1] कर रक्खा है। तालीम की खातिर मश्कूक[2] व आ़रिज़ी[3] कामयाबी के लालच में ज़द व कोब[4] ज़ज्र[5] व तौबीख[6] सब रवा है। लेकिन नमाज़ के लिए इशारः करना भी गराँ है। बच्चा एक दिन मदरसा न जाये तो सख्त बाज़-पुर्स[7] हो और नमाज़ फ़र्ज़ होने के बाद भी बर्सों नमाज़ न पढ़े तो पेशानी पर शिकन तक न आये। और कभी उसको टोका न जाये। अक्सर वालदैन नमाज़ पढ़ते हैं। लेकिन औलाद से नमाज़ के लिए कहना ज़रूरी नहीं समझते और उनके नमाज़ न पढ़ने पर कोई नाराज़गी और गरानी भी नहीं होती।

१ सुस्ती २ संदिग्ध ३ क्षणिक, अस्थायी ४ मार-कुटम्मस ५ डाँट-डपट ६ झिड़की ७ पूँछ-गछ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अल्लाह की अिबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो और वालदैन के साथ भलाई करो और क़राबतदारों[1] के साथ और यतीमों और मिस्कीनों और क़रीब के पड़ोसी और दूर के पड़ोसी और रफ़ीक़ व शरीक ज़िन्दगी के साथ और मुसाफ़िरों के साथ और जिनके तुम मालिक हो। [सू० निसा, रु० ६ आ० ३६]

अहादीस

२७८ हज़्रत जिबरील की ताकीद

हज़्रत इब्नि उमर (र०) और हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिबरील (अ०) मुझे बराबर हमसाये[2] के बारे में वसिय्यत करते रहे। यहाँ तक कि मुझको ख़्याल हुआ कि कहीं इसको वारिस न बना दें।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

२७९ सालन ज़ियादः करके पड़ोसी की मदद

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ऐ अबू ज़र (र०) जब तुम कोई सालन पकाओ तो शोरबा ज़ियादः कर दिया करो। और अपने हमसाये का ख़्याल रक्खो। [मुस्लिम]

और एक रिवायत में है कि अबू ज़र (र०) ने कहा, मेरे महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे वसिय्यत की कि जब मैं कोई सालन पकाऊँ तो शोरबा ज़ियादः कर दूँ फिर अपने हमसाये के घर की ख़बर लूँ*।

२८० ईमान की शर्त

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम वह मोमिन नहीं, ख़ुदा की क़सम उसमें ईमान नहीं, ख़ुदा की क़सम वह साहबे ईमान नहीं। लोगों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह कौन? फ़रमाया जिसकी शरारतों से उसका पड़ोसी महफ़ूज न हो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ समीपियों, सम्बन्धियों २ पड़ोसी।

---

* क्या अख़्लाक की तालीम है। उससे बढ़कर क्या ग़म्ख़्वारी, हमदर्दी और इआनत हो सकती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि जन्नत में वह न दाख़िल होगा जिसके शर[1] से हमसाया को अमन न हो।

२८१[४] किसी तुहफ़: को हक़ीर न समझो

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुसलमान औरतो! पड़ोसन अपनी पड़ोसन के लिए किसी तुहफ़: को हक़ीर[2] न समझे§। अगरचि बकरी का एक खुर ही क्यों न हो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२८२[५] दीवार में लकड़ी गाड़ने से न रोकना चाहिए

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, पड़ोसी अपने पड़ोसी को दीवार में लकड़ी गाड़ने वग़ैर: से न रोके। फिर हज़्रत अबू हुरैर: (र०) ने कहा, क्या बात है कि तुम इससे एराज़ करते हो[3]। ख़ुदा की क़सम मैं तुम्हारे शानों के दर्मियान इसको फेंक दूँगा ×। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२८३[६] हमसाये को तकलीफ़ न दे

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो अल्लाह पर और आ़ख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो (वह) अपने हमसाये को तकलीफ़ न दे। जिसका ईमान अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर हो वह अपने मेहमान की ख़ातिर करे। जो अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर ईमान लाये वह भली बात कहे वरना खामोश रहे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२८४[७] क़रीबतर पड़ोसी ज़ियाद: मुस्तहक़ है

हज़्रत आ़यश: (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे दो पड़ोसी हैं। मैं किसको तुहफ़ा भेजूँ। आपने फ़रमाया जिसका दरवाज़ा तुमसे ज़ियाद: क़रीब हो। [बुख़ारी]

---

§ बाज़ औक़ात बड़े और ख़ास तुहफ़: के इहतिमाम[4] में बरसों गुज़र जाते हैं, और उसकी तौफ़ीक़ नहीं होती।

× यानी तुमको जिताकर कहूँगा और यह हुक्म पहुँचाऊँगा।

---

१ बदी, उपद्रव २ तुच्छ ३ विमुख होते हो ४ प्रबंध।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२८६ अल्लाह के नज़दीक अफ़ज़ल[1] कौन है

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया अल्लाह के यहाँ वह लोग बेहतर हैं जो अपने साथियों के लिए बेहतर हैं। और अल्लाह के यहाँ वह पड़ोसी बेहतर है जो अपने पड़ोसी के लिए बेहतर है। [तिर्मिज़ी]

वालदैन के साथ सुलूक

आयात

वऽबुदुल्लाह व ला तुश्रिकू बिही शैअंव्व बिल्वालिदैनि अिह्सानंव्व बिज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि वल्जारिज़िल्-क़ुर्बा वल्जारिल्जुनुबि वस्साहिबि बिल्जम्बि वब्निस्सबीलि ला व मा मलकत् अैमानुकुम् त...

अल्लाह की अिबादत करो और उस के साथ किसी को शरीक न करो और वालदैन के साथ इहसान करो और क़राबतदारों, यतीमों, मिस्कीनों और क़रीब के पड़ोसी और दूर के पड़ोसी और रफ़ीक़ व शरीक-ज़िन्दगी और मुसाफ़िरों के साथ और जिनके तुम मालिक हो।

[सू० निसा, रु० ६ आ० ३६]

...वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी तसाअलून बिही वल्अर्हाम त...

अल्लाह से डरो जिसके नाम का वास्ता देते हो और रिश्तों का लिहाज़ रक्खो।

[सू० निसा, रु० १ आ० १]

...वल्लज़ीन यसिलून माअमरल्लाहु बिहीअँय्यूसल व यख़्शौन रब्बहुम् व यख़ाफ़ून सूअल्हिसाबि त

जो लोग जोड़ते हैं जिसके जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया और अपने परवरदिगार से और हिसाब की बुराई से डरते हैं।

[सू० रऽद, रु० ३ आ० २१]

---

१ श्रेष्ठ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

व वस्सैनल्अिन्सान बिवालिदैहि हुस्नन् ॰…

और हमने इन्सान को नेकी करने की वसिय्यत की उसके वालदैन के बारे में। [सू० अन्कबूति, रु० १ आ० ८]

व क़ज़ा रब्बुक अल्ला तऽबुदू' अिल्ला' अिय्याहु व बिल्वालिदैनि अिह्सानन् ॰ अिम्मा यब्लुग़न्न अिन्दकल्किबर अहदुहुमा औ किलाहुमा फ़ला तक़ुल्लहुमा' अुफ़्फ़िव्वला तन्हर् हुमा व क़ुल्लहुमा क़ौलन् करीमन् (२३) वख़्फ़िज़् लहुमा जनाहज़्ज़ुल्लि मिनर्रह्मति व क़ुर्रब्बिर्हम्हुमा कमा रब्बयानी स़ग़ीरन् ॰ (२४)

और तुम्हारे रब ने फ़ैसला किया है, कि सिवाये ख़ुदा के किसी की अिबादत न करो और वालदैन के साथ भलाई करो। अगर उनमें एक या दोनों बूढे हो जायें तो उनको उफ़ न कहो। और उनको मत झिड़को और उनसे अच्छी बात कहो। और अपने नर्मी के बाज़ू उनके लिए रहम के साथ झुकाओ। और कहो ऐ परवरदिगार! इन पर रहम कर, जैसा उन्होंने बचपन में हमें पाला है।

[सू० बनी इस्राईल, रु० ३ आ० २३-२४]

व वस्सैनल्अिन्सान बिवालिदैहि ॰ हमलत्हु अुम्मुहु वह्नन् अला वह्निंव्व फ़िसालुहु फ़ी आमैनि अनिश्कुर्ली व लिवालिदैक ॰…

और हमने इन्सान को नेकी करने की वसिय्यत की उसके वालदैन के बारे में। उसकी माँ ने उसके बोझ को कम्ज़ोरी पर कम्ज़ोरी बरदाश्त करते हुए उठाया और दो बरस में उसका दूध छुड़ाया इसलिए कि मेरा शुक्र करो और अपने वालदैन के शुक्रगुज़ार हो।

[सू० लुक़मान, रु० २ आ० १४]

अहादीस

२८७ महबूबतरीन अ़मल[1]

हज़्रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि मैंने नबी (स०) से पूछा, कौनसा अ़मल अल्लाह तआ़ला को ज़ियादः महबूब है। आपने फ़रमाया, वक़्त पर नमाज़ पढ़ना। मैंने कहा फिर? फ़रमाया,

---

१ सर्वप्रिय कर्तव्य।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वालदैन के साथ भलाई करना। मैंने कहा फिर ? उसके बाद फ़रमाया, अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२८८ वालदैन के इहसान का सिला[१]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, लड़का अपने बाप को बदला नहीं दे सकता, मगर इस तरह कि बाप को किसी ग़ुलामी में पाये तो उसको ख़रीद कर आज़ाद करे। [मुस्लिम]

२८९ रिश्तेदारी का ख़्याल

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर ईमान रखता हो वह अपने मेहमान की ख़ातिर करे और जिसका ईमान अल्लाह और आख़िरत पर हो वह सिलऽ.रह्मी[२] करे और जो अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर ईमान लाये, वह बोले तो अच्छी बात बोले, वरना ख़ामोश रहे। [बु०-मु०]

२९० सिलऽ.रह्मी[२] और क़तऽ.रह्मी[३]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने मख़्लूक़[४] को पैदा किया है। जब उससे फ़ारिग़ हुआ तो रिश्ता ने अर्ज़ किया क़तअरह्मी से पनाह माँगने की यह जगह है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया हाँ क्या तू राज़ी है कि जो तुझे जोड़े उसे मैं जोड़ूँ और जो तुझको काटे उसको मैं काटूँ। रिश्ता ने कहा, हाँ। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, पस यह तेरे लिए है। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अगर तुम चाहो तो इस आयत को पढ़ो।

फ़हल् अ़सैतुम् अिन् तवल्लैतुम् अन् तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व तुक़त्तिअ़ू अर्ह़ामकुम् (२२) अुलाअिकल्लज़ीन लअ़नहुमुल्लाहु फ़असम्महुम् व अअ़्मा अब्सारहुम् (२३)

क्या यह मुमकिन है कि जब तुमको हुकूमत और मौक़ा मिले तो तुम ज़मीन में फ़साद फैलाओ और क़तअरह्मी करो। वही लोग हैं कि

---

१ बदला २ अपने परिवार के प्रति प्रेम ३ अपनों से विमुख होना ४ सृष्टि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अल्लाह ने उन पर लानत की और अन्धा बहरा किया।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

[सू० मुहम्मद, रु० ३ आ० २२-२३]

२६१ माँ का हक़ और फ़ज़ीलत[1]

बुख़ारी की एक रिवायत में यह भी है कि जो तुझे जोड़ेगा उसे मैं जोड़ूँगा जो तुझे काटेगा उसे मैं काटूँगा।

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि एक आदमी नबी (स०) के पास आया और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे अच्छे बरताव का सबसे ज़ियादः हक़दार कौन है। आपने फ़रमाया, तुम्हारी माँ। कहा फिर; फ़रमाया, तुम्हारे बाप। [बु०-मु०]

और एक रिवायत में है कि उस आदमी ने पूछा, या रसूलल्लाह! मेरे अच्छे बरताव का कौन ज़ियादः मुस्तहक़ है? आपने फ़रमाया, तेरी माँ। कहा फिर? फ़रमाया तेरी माँ। कहा फिर? फ़रमाया जो सब से ज़ियादः क़रीब हो, जो सबसे ज़ियादः क़रीब हो।

२६२ माँ बाप की बुढ़ापे में ख़िदमत

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, उसकी नाक ख़ाक आलूदः[2] हो, उसकी नाक ख़ाक आलूदः हो जिसने अपने माँ बाप के बुढ़ापे को पाया और जन्नत में न दाख़िल हुआ§।

[मुस्लिम]

२६३ क़तऽ रह्मी का बदला सिलऽ रह्मी से

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि एक आदमी ने नबी (स०) से अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मेरे क़राबतदार हैं। मैं उनसे सिलारहमी करता हूँ। वह क़तअ़रहमी करते हैं। मैं उनके साथ भलाई करता हूँ, वह मेरे साथ बुराई करते हैं। मैं बुर्दबारी[3] करता हूँ, वह मुझसे सख़्ती बरतते हैं। आपने फ़रमाया, जैसे तुम कह रहे हो अगर यह सच है तो तुम उनके मुँह में ख़ाक डालते हो और अल्लाह की मदद तुम्हारे साथ बराबर रहेगी। जब तक तुम इस पर क़ायम रहोगे।

[मुस्लिम]

---

§ यानी उनकी ख़िदमत व फ़रमाबरदारी करके जन्नत का मुस्तहक़ न हुआ।

---

१ श्रेष्ठता, वरीयता २ धूल में सनी हुई ३ सहनशीलता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२९७ सिलारहमी से रिज़्क़[१] और उम्र में बर्कत

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो अपने रिज़्क़ में कशाईश चाहता हो और अपनी उम्र में तरक़्क़ी चाहता हो वह सिलारहमी करे। [बु०-मु०]

२९८ क़राबतदारों पर वक़्फ़ और हिब:[२]

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि अबू तलहः (र०) अन्सार में सबसे ज़ियादः मालदार थे और उनको अपने माल में बैरुहा[३] बहुत मरग़ूब[४] था, वह मस्जिद के सामने था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर तशरीफ़ भी लाते और उसका पानी नोश फ़रमाते थे। जब यह आयत उतरी "लनतनालुल्बिर्र हत्ता तुन्फ़िक़ू मिम्मा तुहिब्बून"* तो अर्ज़ किया हुज़ूर मुझे सबसे ज़ियादः बैरुहा पसन्द है, सो मैं इसको अल्लाह के लिए सदक़ा[५] करता हूँ। और इसके नेकी और ज़ख़ीरः की अल्लाह के यहाँ उम्मीद रखता हूँ। और आप इसको जहाँ अल्लाह चाहे वक़्फ़ कर दीजिए। आपने फ़रमाया, अरे यह माल तो बहुत नफ़ेवाला है। जो कुछ तुमने कहा, मैंने सुना। मेरी राय यह है कि इसको अपने क़राबतवालों पर वक़्फ़ कर दो। हज़्रत अबू तलहः (र०) ने कहा जो आप की मर्ज़ी हो। फिर उसको अबू तलहः (र०) ने अपने चचाज़ाद भाइयों में तक़्सीम कर दिया। [बु०-मु०]

२९९ वालदैन की ख़िदमत व रिफ़ाक़त में जिहाद का सवाब

हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र बिन अलआ़स से रिवायत है कि एक आदमी नबी (स०) की तरफ़ बढ़ा और कहा मैं आपसे हिजरत और जिहाद पर बैअ़त करना चाहता हूँ। और अल्लाह से उसके अज्र की ख़्वाहिश रखता हूँ। आपने फ़रमाया, तुम्हारे वालदैन में कोई ज़िन्दह हैं। कहा, हाँ दोनों जिन्दः हैं। फ़रमाया, तुम अल्लाह से अज्र चाहते हो? कहा, हाँ। फ़रमाया बस तुम अपने वालदैन की तरफ़ पलट जाओ और उनसे अच्छे बरताव करो।

और इन दोनों की एक रिवायत में है कि एक आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और जिहाद की इजाज़त

---

* उस वक़्त तक तुम नेकी को न पहुँचोगे जब तक अपनी कोई पसन्दीदः चीज़ न ख़र्च करो।

---

१ रोज़ी, जीविका २ इश्वरार्पण, दान ३ अबूतलहः के बाग़ का नाम ४ प्रिय ५ ईश्वरार्पण।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चाही। आप (स़०) ने फ़रमाया, तेरे वालदैन ज़िन्द: हैं? कहा, हाँ। फ़रमाया कि उन्हीं के बारे में कोशिश करो†।

२९७[११] बदला देनेवाला सिलारहमी करनेवाला नहीं हैं

हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र बिन अलआ़स से रिवायत है कि नबी (स़०) ने फ़रमाया, बदला देनेवाला सिलारहमी करनेवाला नहीं है। सिला-रहमी करनेवाला वह है कि उसके साथ क़तअरहमी की जाये और वह सिलारहमी करे। [बुख़ारी]

२९८[१२] जो रिश्ता काटेगा अल्लाह उसको काटेगा

हज़्रत आ़यश: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि रिश्ता अ़र्श से मुअ़ल्लक़[1] है। और कहता है जो मुझे जोड़ेगा अल्लाह उसको जोड़ेगा और जो मुझको काटेगा अल्लाह उसको काटेगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२९९[१३] नान्हियाल वालों की मदद

हज़्रत उम्मुल्मोमिनीन मैमूना (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बग़ैर इजाज़त एक लौन्डी आज़ाद की। जब मेरी बारी का दिन आया और आप तश्रीफ़ लाये तो मैंने कहा, या रसूलल्लाह! क्या आपको मालूम है कि मैंने एक लौन्डी आज़ाद की है। आपने फ़रमाया, क्या तुमने ऐसा किया है? मैंने कहा, हाँ। फ़रमाया, अगर तुम उसको अपने नान्हयाल वालों को दे देतीं तो इसका तुमको बड़ा अज्र मिलता। [बु०-मु०]

३००[१४] मुश्रिक: माँ[2] के साथ सुलूक

हज़्रत असमा बिन्त अबू बक्र सिद्दीक़ (र०) से रिवायत है कि मेरी माँ मेरे घर आयीं और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में ईमान नहीं लाईं थीं। मेंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से फ़तवा लिया; मेरी माँ आयीं हैं और वह मुझ से हुस्ने सुलूक[3] की ख़्वाहिशमन्द हैं। क्या मैं उनके साथ सिलारहमी कर सकती

† यानी बूढ़े माँ-बाप की खिदमत इस वक़्त तुम्हारे लिए जिहाद पर मुक़द्दम, और चूँकि जिहाद की नीयत थी और मअ़ज़ूरी[4] है, इसलिए इसका सवाब भी मिलेगा।

१ अधर में, लटकाया हुआ २ ग़ैरमुस्लिम माँ ३ सद्व्यवहार ४ मजबूरी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हूँ ? आपने फ़रमाया, हाँ, तुम अपनी माँ के साथ सिलारहमी कर सकती हो।
[बु०-मु०]

१६/३०१ शौहर के देने में दोहरा अज्र

हज़्रत अ्ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द (र०) की बीवी ज़ैनब (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ औरतो ! सद्क़: करो, कुछ नहीं तो ज़ेवर ही सही। हज़्रत ज़ैनब (र०) कहती हैं कि मैं अ्ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द के पास आयी और कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमको सद्क़: का हुक्म देते हैं और तुम नादार[1] आदमी हो, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से जाकर दर्याफ़्त करो। अगर मुझे तुम्हारा देना काफ़ी हो तो ख़ैर, वरना दूसरों को दे दूँ। हज़्रत अ्ब्दुल्लाह (र०) ने कहा तुम ही जाओ। तो मैं गयी; देखा कि एक अन्सार की बीवी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दरवाज़े पर खड़ी है। और यही ग़रज़ उनको भी लाई है। बिलाल (र०) आये तो मैंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास जाओ और कहो कि दो औरतें दरवाज़े पर खड़ी हैं और पूछती हैं कि क्या हम अपने शौहरों को सद्क़: दे सकते हैं। मगर यह न बताना कि हम कौन हैं। हज़्रत बिलाल (र०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आये और आपसे पूछा। आपने फ़रमाया, वह कौन हैं ? कहा एक अन्सार की बीवी हैं और एक ज़ैनब (र०)। आपने फ़रमाया कौन सी ज़ैनब। कहा अ्ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द (र०) की बीवी। आपने फ़रमाया उनके लिए दोहरा अज्र है। एक क़राबतदारी का और एक सद्क़: का। [बुख़ारी-मुस्लिम]

१६/३०२ रसूलुल्लाह (स़०) की तालीम

हज़्रत अबू सुफ़्यान (र०) से रिवायत है कि हिरक़्ल ने मुझसे कहा, नबी (स़०) तुमको क्या हुक्म देते हैं। मैंने कहा वह कहते हैं कि एक अल्लाह की अ़िबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो और जो तुम्हारे बाप दादा कहते हैं वह छोड़ दो और नमाज़ का, सदक़: का, पाकदामनी और सिलारहमी का हुक्म देते हैं।
[बुख़ारी-मुस्लिम]

१७/३०३ रसूलुल्लाह (स़०) के साथ तअ़ल्लुक़ व रिश्ता की बिना पर सुलूक

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

---

१ दरिद्र।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अन्क़रीब तुम एक ज़मीन फ़तिह करोगे। उसमें क़ीरात[1] का नाम लिया जायेगा।

और एक रिवायत में हैं कि मिस्र को फ़तिह करोगे उस ज़मीन में क़ीरात का नाम लिया जायेगा। तो तुम उसके रहनेवालों के साथ भलाई करना यह इसलिए कि उनका तअ़ल्लुक़ और रिश्ता है।

और एक रिवायत में है कि जब तुम उसको फ़तिह करो तो उसके रहनेवालों के साथ इहसान करो; इसलिए कि उनका तअ़ल्लुक़ और रिश्ता है। और फ़रमाया कि सुस्राली रिश्ता है†। [मुस्लिम]

१९७ रसूलुल्लाह (स०) का अहलेख़ान्दान से ख़िताब

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि जब यह आयत उतरी "व अन्ज़िर अ़शीरतकल्अक़्रबीन-"‡ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने क़ुरैश को बुलाया। जब यह जमा हुए तो आ़म व ख़ास से रिवायत फ़रमाया। आपने फ़रमाया, ऐ बनी अ़ब्दुश्शम्स, ऐ बनी कअ़बबिन लुवई, अपनी जानों को आग से बचाओ। ऐ बनी मुर्रः बिन कअ़ब, अपनी जानों को आग से बचाओ! ऐ बनी अ़ब्देमनाफ़, अपनी जानों को आग से बचाओ! ऐ बनी हाशिम, अपनी जानों को आग से बचाओ! ऐ बनी अ़ब्दुल मुत्तलिब अपनी जानों को आग से बचाओ! ऐ फ़ात्मा (र०) अपनी जान को आग से बचाओ! बेशक मैं अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से तुम्हारे लिए किसी चीज़ का मालिक नहीं। सिवा इसके कि तुम्हारा रिश्ता है जिसकी हिफ़ाज़त करूँ। [मुस्लिम]

१९८ रिश्तः का ख़याल

हज़्रत अ़म्र (र०) बिन अलआ़स से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है, पुकार कर बग़ैर पोशीदगी के फ़रमाते थे कि फलाँ की औलाद मेरी दोस्त नहीं है। मेरा दोस्त अल्लाह है और नेक मुसलमान, लेकिन उनका रिश्ता है। मैं उसकी हिफ़ाज़त करूँगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ एक मुख़्तसर वज़न।

† रिश्तादारी से मुराद यह है कि हज़्रत हाजरः, हज़्रत इस्माईल (अ०) की वाल्दह और हज़्रत मारियः इब्राहीम इब्नि रसूलुल्लाह की वाल्दह मिस्र ही की थीं।

‡ अपने क़राबतदारों को डराओ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२०/१०६ रिश्त: जोड़ने की फ़ज़ीलत

हज़्रत ख़ालिद (र०) बिन ज़ैद अन्सारी से रिवायत है कि एक आदमी ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ! तुझे ऐसा अ़मल बताइए जो मुझे जन्नत में दाख़िल करे और दोज़ख़ से दूर रक्खे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह की अ़िबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो। नमाज़ क़ायम रक्खो। ज़कात दो और रिश्त: जोड़ो। [बु०-मु०]

२१/१०७ दुहरी फ़ज़ीलत

हज़्रत सल्मान (र०) बिन आ़मिर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब तुम लोग इफ़्तार करो[1] तो खजूर से करो, इसमें बर्कत है। अगर खजूर न मिले तो पानी से खोलो। पानी पाक करनेवाला है। और सदक़ा मिस्कीन[2] पर सदक़ा है और रिश्तेदारों पर सदक़ा करने में दो फ़ज़ीलतें हैं। सदक़ा और रिश्ता जोड़ना। [तिर्मिज़ी]

२२/१०८ बाप के हुक्म से बीवी को तलाक़

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि मैं अपनी बीवी को बहुत चाहता था। हज़्रत उमर (र०) इसको नापसन्द करते थे। उन्होंने मुझसे कहा कि उसको तलाक़ दे दो। मैंने इन्कार किया। हज़्रत उमर (र०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आये और इसका ज़िक्र किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उसको तलाक़ दे दो। [अबूदावूद-तिर्मिज़ी]

२३/१०९ माँ के हुक्म से बीवी को तलाक़

हज़्रत अबू दरदा (र०) से रिवायत है कि एक आदमी मेरे पास आया और कहा मेरी बीवी है। और मेरी माँ मुझे हुक्म देती है कि उसको तलाक़ दे दो। मैंने कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि बाप जन्नत के दरवाज़ो में बीच का दरवाज़ा है। चाहे उस दरवाज़े को ज़ाया कर दो या उसकी हिफ़ाज़त करो। [तिर्मिज़ी]

२४/११० खाला:[3] माँ के मर्तब: में है

हज़्रत बरा (र०) बिन आ़जिब से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया कि ख़ाला माँ के मर्तबा में है। [तिर्मिज़ी]

---

१ रोज़: खोलो २ दीन असहाय ३ मौसी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३२९ रसूलुल्लाह (स०) की तालीम

हज़्रत अम्र (र०) बिन अ़बसः से रिवायत है कि मैं नबी (स०) के पास नुबुव्वत के ज़माने में मक्का आया। मैंने कहा आप कौन हैं। फ़रमाया, मैं पैग़म्बर हूँ। मैंने कहा, पैग़म्बरी क्या? फ़रमाया, मुझे अल्लाह तआ़ला ने भेजा हैं। मैंने कहा, किस चीज़ के साथ आपको भेजा है? फ़रमाया, मुझे भेजा है रिश्ता जोड़ने के लिए और बुतों को तोड़ने के लिए। और यह कि अल्लाह को एक समझा जाये। उसके साथ किसी को शरीक न किया जाये।

नाफ़रमानी और रिश्तः तोड़ना

आयात

फ़हल् अ़सैतुम् अिन् तवल्लैतुम् अन् तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व तुक़त्तिअ़ू अर्हामकुम् (२२) अुलाअिकल्लज़ीन लअ़नहुमुल्लाहु फ़असम्महुम् व अ़्मा अब्सारहुम् (२३)

क्या यह मुमकिन है कि जब तुमको हुकूमत मिले तो तुम ज़मीन में फ़साद फैलाओ और रिश्तों को तोड़ो। वही लोग हैं कि उन पर अल्लाह तआ़ला ने लअ़नत की और उन को अन्धा और बहरा किया।
[सू० मुहम्मद, रु० ३ आ० २२-२३]

वल्लज़ी यन्क़ुज़ून अ़ह्दल्लाहि मिम्बअ़्दि मीसाक़िहीं व यक़्तअ़ून मा अमरल्लाहु बिहीं अंय्यूसल व युफ़्सिदून फ़िल्अर्ज़ि अुलाअिक लहुमुल्लअ़्नतु व लहुम् सूअुद्दारि।

और वह लोग जो अल्लाह के अहिद को तोड़ते हैं उसकी मज़बूती के बाद और काटते हैं जिसके जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं। वही लोग हैं कि उनके लिए लानत है। और उन के लिए बुरा घर है। [सू० रअ़्द, रु० ३ आ० २५]

व क़ज़ा रब्बुक अल्ला तअ़्बुदू अिल्ला अिय्याहु व बिल्वालिदैनि अिह्सानन्, अिम्मा यब्लुग़न्न अ़िन्दकल्किबर अहदुहुमा औ किलाहुमा फ़ला तक़ुल्लहुमा अुफ़्फ़िंव्वला तन्हर् हुमा व क़ुल्लहुमा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क़ौलन् करीमन् (२३) वख़्फ़िज़् लहुमा जनाहूज़्ज़ुल्लि मिनर्रहमति व क़ुर्रब्बिर्हम्हुमा कमा रब्बयानी सग़ीरन् ॥ (२४)

और तुम्हारे रब ने फ़ैसला किया है कि उसी की अ़िबादत करो और वालदैन के साथ इहसान करो, अगर तुम्हारे सामने उनमें का एक या दोनों बूढ़े हो जायें तो उनके सामने उफ़ न करो। और उनको मत झिड़को और उनसे अच्छी बात कहो और अपने बाज़ू नर्मी और रहम के साथ उनके लिए झुका दो और कहो ऐ परवरदिगार! इन पर रहम कर जैसा उन्होंने बचपन में हमें पाला है।

[सू० बनी इस्राईल, रु० ३ आ० २३-२४]

अहादीस

ह० १२ तीन बड़े गुनाह

हज़्रत नुफ़ैअ़ (र०) बिन अल्हारिस से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, क्या मैं तुमको तीन बड़े गुनाहों की ख़बर दूँ। हमने अ़र्ज़ किया हाँ या रसूलल्लाह। फ़रमाया, अल्लाह के साथ शरीक करना, और वालदैन की नाफ़रमानी करना। आप (स०) टेक लगाये हुए थे उठकर बैठ गये और फ़रमाया, सुन लो! झूठी बात कहना और झूठी गवाही देना और आप बराबर उसको दुहराते रहे। यहाँ तक कि हमने कहा, ऐ काश आप ख़ामोश हो जाते†। [बुख़ारी-मुस्लिम]

ह० २ १३ वालदैन की नाफ़रमानी गुनाह कबीरह[1] है

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र (र०) बिन अलआ़स से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, बड़े गुनाहों में से यह है, अल्लाह के साथ किसी को शरीक करना और वालदैन की नाफ़रमानी करना और ख़ुदकुशी करना। और जानते-बूझते हुए झूठी बात कहना।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

ह० ३ १४ वालदैन को गाली दिलाना गाली देना है

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र (र०) बिन अलआ़स से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, बड़े गुनाहों में से यह भी है कि

† आपको तकलीफ़ हो रही है।

१ महान् पातक।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आदमी अपने वालदैन को गाली दे। लोगों ने कहा या रसूलल्लाह ! अपने माँ बाप को कौन गाली दे सकता है। आपने फ़रमाया, आदमी किसी के बाप को गाली देगा तो वह उसके बाप को देगा, वह उसकी माँ को देगा, तो वह उसकी माँ को गाली देगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

एक रिवायत में है कि यह बात बड़े गुनाह की है कि आदमी अपने वालदैन पर लानत करे। लोगों ने कहा, .कौन अपने बाप पर लानत कर सकता है। आपने फ़रमाया, आदमी किसी के बाप पर लानत करेगा तो वह उसके बाप पर लानत करेगा, वह उसकी माँ पर लानत करेगा तो वह उसकी माँ पर लानत करेगा।

३१८ रिश्ता तोड़नेवाला जन्नत में न जायेगा

हज्रत जुबैर (र०) बिन मुतअिम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तोड़नेवाला जन्नत में न दाख़िल होगा। हज्रत सुफ़्यान (र०) ने अपनी रिवायत में कहा है कि रिश्तः का तोड़नेवाला। [बु०-मु०]

३१६ मम्नूअ़ व नापसन्दीदः[1] बातें

हज्रत मुग़ीरः (र०) बिन शुअ़बः से रिवायत है कि नबी (स़०) ने फ़रमाया, तुम पर तुम्हारी माँ की नाफ़रमानी हराम है। और बुख़्ल करना[2] और सवाल करना[3] और लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न करना और तुम्हारे लिए क़ीलोक़ाल[4] को और कसरते सवाल[5] को और माल के ज़ाया करने[6] को नापसन्द किया। [बुख़ारी-मुस्लिम]

बाप के दोस्तों और बीवी के अ़ज़ीज़ों से सुलूक

अहादीस

३२० बाप के दोस्त के साथ सुलूक

हज्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि नबी (स़०) ने फ़रमाया नेकियों में बड़ी नेकी यह है कि आदमी अपने बाप के दोस्त के साथ सुलूक करे।

---

१ निषिद्ध और अवाञ्छनीय २ कंजूसी करना ३ भीख माँगना ४ वाद-विवाद ५ ज़्यादा पूछना या माँगना ६ धन को नष्ट करना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१८ हज़्रत अब्दुल्लाह इब्नि उमर का हज़्रत उमर (र०) के दोस्त के साथ सुलूक

हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन दीनार से रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन उमर (र०) को मक्का के रास्ते में एक देहाती आदमी मिला। उन्होंने उसको सलाम किया और जिस गधे पर वह सवार होते थे उस पर उसको सवार किया। और अपना वह इमामा दिया जिसको अपने सर पर बाँधा करते थे। मैंने कहा अल्लाह तुम्हारा भला करे यह एक देहाती आदमी है, थोड़ी बात से ख़ुश होने वाला है। अब्दुल्लाह इब्नि उमर ने कहा इसके वालिद मेरे वालिद उमर (र०) बिन अलख़त्ताब के दोस्त थे। और मैंने रसूलुल्लाह (स०) से सुना है, फ़रमाते थे कि नेकियों में बड़ी नेकी यह है कि आदमी अपने बाप के दोस्त के साथ अच्छे सुलूक करे।

१९ वालदैन के इन्तिक़ाल के बाद हुस्ने सुलूक

हज़्रत मालिक (र०) बिन रबीअ: से रिवायत है कि हम नबी (स०) के पास बैठे थे। बनी सलम: का एक आदमी आया और कहा या रसूलल्लाह! क्या कुछ नेकी बाक़ी है कि मैं अपने वालिद के मरने के बाद करूँ। आपने फ़रमाया, हाँ, उनके लिए दुआ करना, इस्तिग़्फ़ार करना[1] और उनके बाद उनके अ़हिद को पूरा करना और उनके रिश्तों को जोड़ना जो उनके बग़ैर नहीं जोड़े जाते†। और उनके दोस्तों की अ़िज़्ज़त करना।

[अबूदावूद]

२० बीवी के इन्तिक़ाल के बाद उसकी याद और मुहब्बत

हज़्रत आ़यश: (र०) से रिवायत है कि मैंने नबी (स०) की किसी बीवी पर रश्क नहीं किया, सिवा हज़्रत ख़दीज: (र०) के। मैंने उनको नहीं देखा था मगर आप उनका कसरत से ज़िक्र फ़रमाते थे और जब कोई बकरी ज़िबह करते उसका कोई टुकड़ा हज़्रत ख़दीज: (र०) की सहेलियों को भेजते और मैं आपसे अक्सर कहती कि क्या आपकी दुनिया में कोई बीवी नहीं सिवा हज़्रत ख़दीज: (र०) के। तो आप फ़रमाते कि वह ऐसी थीं और ऐसी थीं। मुझे अल्लाह ने उनसे औलाद दी।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

† यानी जो उनके ज़रीये और वास्ते से रिश्ते हैं। मसलन चचा, मामूँ, उनकी औलाद वग़ैरह।

१ ईश्वर से पापों की क्षमा मांगना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और एक रिवायत में है कि अगर आप कोई बकरी ज़िबह् करते तो हज़्रत ख़दीज: (र०) की सहेलियों को इतना हद्य:[1] भेजते जो उनको काफ़ी होता। और एक रिवायत में है कि जब बकरी ज़िबह् करते तो फ़रमाते कि हज़्रत ख़दीज: की सहेलियों को भेजो। और एक रिवायत में है कि हज़्रत ख़दीज: (र०) की बहिन हाल: ने आप के पास आने की इजाज़त चाही। आपने आवाज़ सुनी तो समझे हज़्रत ख़दीज: (र०) इजाज़त माँग रही हैं। आप ख़ुश हुए। फिर फ़रमाया ओहो यह हाल:! बिन्त ख़ुवैलिद हैं।

१२९ अन्सार की ख़िदमत

हज़्रत अनस (र०) बिन मालिक से रिवायत है कि एक सफ़र में जरीर (र०) बिन अब्दुल्लाह और मैं साथ था। वह मेरी ख़िदमत करते थे। मैंने उनको रोका तो वह कहने लगे मैंने अन्सार को देखा है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ऐसा ही करते थे। तो मैंने क़सम खाई कि मैं जब उनमें किसी के साथ रहूँगा तो उसकी ख़िदमत करूँगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

रसूलुल्लाह (स०) के अहले बैत (र०) का इकराम

आयात

अिन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़्हिब अ़न्कुमुर्रिज्स अह्लल्बैति व युतह्हिरकुम् तत्हीरन् ज

बेशक अल्लाह तआ़ला चाहता है कि तुमसे और तुम्हारे घर वालों से नापाकी दूर करे और तुमको पाक करे।

[सू० अह्ज़ाब, रु० ४ आ० ३३]

...व मंय्युअ़ज़्ज़िम् शआ़अिरल्लाहि फ़अिन्नहा मिन् तक़्वल्क़ुलूबि

जो अल्लाह की निशानियों की ताज़ीम करेगा यह दिलों का अदब है। [सू० हज्जि, रु० ४ आ० ३२]

---

१ नज़र।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहादीस

५[१]२२ अहले-बैत के बारे में रसूलुल्लाह (स़०) की वसिय्यत

हज़्रत यज़ीद बिन हय्यान से रिवायत है कि मैं और हुसैन बिन सबर: और उमर बिन मुस्लिम, ज़ैद बिन अरक़म के पास आये। जब हम उनके पास बैठे तो उनसे हुसैन बिन सबर: ने कहा, ऐ ज़ैद ! तुमने बड़ी दौलत पायी है। तुमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को देखा, आपकी बातें सुनीं, आपकी मअ़िय्यत में लड़े, आपके पीछे नमाज़ पढ़ी। ऐ ज़ैद ! तुमने बड़ी दौलत पायी, ऐ ज़ैद ! तुमने जो कुछ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है हमसे बयान करो। हज़्रत ज़ैद (र०) ने कहा, ऐ भतीजे ! ख़ुदा की क़सम मैं बूढ़ा हो गया और मेरा ज़माना पुराना हो गया। पस जो कुछ मैं तुमसे कहूँ उसको क़ुबूल करो। और जो न कह सकूँ उस पर मजबूर न करो। फिर कहने लगे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उस तालाब पर जिसका नाम ख़ुम है (मक्का और मदीना के दर्मियान है) हमारे दर्मियान खड़े ख़ुतबा फ़रमा रहे थे। अल्लाह की तारीफ़ और सना के बाद फ़रमाया, ऐ लोगो, मैं भी एक आदमी हूँ। क़रीब है कि मेरे परवरदिगार का क़ासिद मेरे पास आये और मैं उसको क़ुबूल करूँ। मैं तुम में दो चीज़ें छोड़नेवाला हूँ; उनमें अव्वल अल्लाह की किताब है जिसमें हिदायत और नूर है। बस तुम अल्लाह की किताब लो और उसको मज़बूत पकड़ो। फिर अल्लाह की किताब की तरग़ीब[१] दी और रग़बत[२] दिलायी और फ़रयाया दूसरी चीज़ मेरे घरवाले हैं। तुमको याद दिलाता हूँ उनके बारे में अल्लाह को। तुमको याद दिलाता हूँ उनके बारे में अल्लाह को। हुसैन ने उनसे कहा, ऐ ज़ैद ! आपके घरवाले कौन हैं। क्या आपकी बीवियाँ आपके घरवालों में नहीं हैं। हज़्रत ज़ैद (र०) ने कहा आप (स़०) की बीवियाँ आपके घरवालों में हैं लेकिन यहाँ वह घरवाले मुराद हैं जिन पर सदक़ा हराम है। कहा वह कौन हैं ? हज़्रत ज़ैद (र०) ने कहा वह आले अ़ली (र०) हैं, आले अ़क़ील (र०) हैं, आले जाफ़र (र०) आले अ़ब्बास (र०) हैं। (हुसैन ने पूछा इन सब पर सदक़ा हराम है।) कहा, हाँ। [मुस्लिम]

और एक रिवायत में है कि ख़बरदार हो मैं तुममें दो चीज़ें छोड़ने वाला हूँ। उनमें एक अल्लाह की किताब। वह अल्लाह की रस्सी है। जो उसको पकड़ेगा वह हिदायत पर है। जो इसको छोड़ेगा वह गुमराही पर है।

---

१ प्रेरणा २ अभिरुचि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि हज़्रत अबू बक्र (र०) ने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का आपके घरवालों के बारे में लिहाज़ रक्खो§ ।

अ़ुलमा और बड़ों और बुज़ुर्गों की तौक़ीर[1]

आयात

क़ुल् हल् यस्तविल्लजीन यअ़्लमून वल्लजीन ला यअ़्लमून त अिन्नमा यतजक्करु अुलुल्अल्बाबि

कह दो जो जानते हैं और जो नहीं जानते क्या वह बराबर हो सकते हैं बेशक नसीहत हासिल करते हैं अ़क़्लमन्द ।

[सू० ज़ुमरि रु० १ आ० ६]

अह़ादीस

१२३ इमामत के लिए क्या तरतीब है

हज़्रत इब्नि मस्ऊ़द (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो अल्लाह की किताब ज़ियादः पढ़ने वाला हो वह लोगों की इमामत करे। अगर क़िरअत[2] में सब बराबर हों तो सुन्नत[3] का ज़ियादः जाननेवाला इमामत करे। अगर सुन्नत में सब बराबर हों तो जो हिजरत में मुक़द्दम+ हो। अगर हिजरत में

§ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुहब्बत में आपके हुक़ूक़ की अदायगी के ख़याल से अज्र व सवाब की त़मअ़ में अहले बैत (र०) का इकराम दीनी व रूहानी बरकात का सबब है ।

+ हिजरत करने वाला मुसलमान ग़ैर मुहाजिर से अ़िल्मेदीन, ईमान, फ़हम व तफ़क़्क़ोः और फ़ज़ीलत में बहुत बढ़ा हुआ था। जिस शख़्स ने ख़ालिस दीनी व रूहानी माहौल और रसूलुल्लाह (स०) की सुहबत और जलीलुल-क़दर सहाबः की शब व रोज़ की मअ़िय्यत में ज़ियादः ज़माना गुज़ारा और यक़ीनन उससे अफ़्ज़ल और इमामत का ज़ियादः मुस्तहक़ है जो दारुल् ह़रब[4] और दारुल् कुफ़्र[5] से ताज़ा वारिद[6] है ।

१ सम्मान २ क़ुर्आन का शुद्ध उच्चारण व पाठ ३ नबी (स़) के पदचिह्नों पर चलना ४ ग़ैर मुस्लिमों का राज्य ५ काफ़िरों का राज्य ६ आया हुआ है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी बराबर हों तो फिर जो उमर (उम्र) में बड़ा हो वह इमामत करे और कोई किसी इमाम के असर की जगह इमामत न करे☼। और उसके घर में उसके अिज़्ज़त की जगह पर न बैठे। जब तक वह हुक्म न दे। [मुस्लिम]

एक रिवायत में है कि जो इस्लाम में साबिक़[1] हो वह इमामत करे।

एक रिवायत में है कि लोगों की इमामत उसको करना चाहिए जो अल्लाह की किताब सब से ज़ियादः पढ़ने वाला हो अगर क़िरअत में बराबर है तो जो हिजरत में मुक़द्दम है उसको इमामत करना चाहिए। अगर हिजरत में बराबर हैं तो जिसकी उम्र बड़ी हो वह इमामत करे।

३२४ अहले अक़्ल को तरजीह

हज़्रत इब्नि मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमारे शानों[2] पर हाथ फेरते थे और फ़रमाते थे कि बराबर रहो, आगे पीछे रहो गे तो तुम्हारे दिल मुख़्तलिफ़ हो जायेंगे और जो तुममें अक़्ल वाले हैं वह मेरे क़रीब रहें◎। फिर जो उनके क़रीब हैं फिर जो उनके क़रीब हैं। [मुस्लिम]

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो तुममें अक़्ल वाले हैं वह मेरे क़रीब रहें, फिर जो उनके क़रीब हैं। आपने तीन मर्तबा फ़रमाया, तुम बाज़ारों के शोर व शर से बचो।

३२८ ज़ियादः उम्र वाला मुक़द्दम है

हज़्रत अबू यह्या (र०) और सहल बिन अबू हुसैमः से रिवायत है कि अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन सहल और मुहय्यिसः बिन मस्ऊद (र०) ख़ैबर‡ गये। वहाँ पहुँच कर दोनों अलग-अलग हो गये।

☼ मसलन किसी मुसलमान हाकिम या क़ाज़ी के यहाँ उसके दारुल् इमारत[3] या दारुल् क़ज़ा[4] में जाये तो इमामत के लिए पेशक़दमी न करे कि इसमें उस हाकिम या क़ाज़ी की हक़तलफ़ी[5] और उसके मनसब की एक तरह की तहक़ीर है।

◎ फ़हीम[6] और साहबे अक़्ल[7] लोग क़रीब होंगे तो वह बात समझ सकेंगे और जो कुछ देखेंगे उसको सहीह तौर पर दूसरों तक पहुँचा सकेंगे।

‡ ख़ैबर में यहूद रहा करते थे। और वह उस वक़्त फ़तिह हो गया था।

१ अधिक पहुँचा हुआ २ कंधों पर ३ राजधानी ४ न्यायालय ५ अधिकार-हनन ६ विवेकवान, समझदार ७ बुद्धिमान।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब मुहय्यिसः अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन सहल के पास आये तो उनको ख़ून में लतपत क़त्ल किया हुआ पाया, उनको दफ़न करके मदीना आये। अब्दुर-रहमान, सहल, मुहय्यिसः और हुवैसः (यह दोनों मस्ऊद के बेटे थे) नबी (स०) की ख़िदमत में आये और क़त्ल का मुक़द्दिमा पेश किया। अ़ब्दुररहमान बिन सहल (मक़तूल के भाई) ने गुफ़्तुगू शुरू की। वह छोटे थे, आपने फ़रमाया पहले बड़ा गुफ़्तुगू करे। पहले बड़ा गुफ़्तुगू करे।

३२६[४] ज़ियादः क़ुर्आन का याद रखनेवाला मुक़द्दम है

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) अुहद में एक क़ब्र में दो शहीदों को रखते थे। आप फ़रमाते इनमें कौन क़ुरआन ज़ियादः हासिल करनेवाला था? जब उनमें से एक की तरफ़ इशारः किया जाता तो आप उसको लहद[1] में मुक़द्दम रखते थे। [बुख़ारी]

३२७[५] ज़ियादः उम्र वाला मुक़द्दम है

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, मैंने ख़्वाब देखा मैं एक मिस्वाक[2] कर रहा हूँ। मेरे पास दो आदमी आये, उनमें से एक बड़ा था। मैंने छोटे को मिस्वाक दी तो मुझसे कहा गया कि बड़े को मिस्वाक दो, तो मैंने बड़े को दी। [मुस्लिम]

३२८[६] तीन शख़्सों की अिज़्ज़त

हज़्रत अबू मूसा (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह की अिज़्ज़त यह भी है कि बूढ़े मुसलमान और हामिले क़ुरआन जो अल्लाह के हदों के अन्दर हो और मुन्सिफ़ बादशाह की अिज़्ज़त की जाये। [अबू दावूद]

३२९[७] छोटों पर शफ़क़त[3] बड़ों की अिज़्ज़त

हज़्रत उमर (र०) बिन शुऐब से रिवायत है कि वह अपने बाप से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, वह हम से नहीं है जो अपने छोटों पर रहम न करे और अपने बड़ों की अिज़्ज़त न करे♦। [अबूदावूद-तिर्मिज़ी]

♦ अगर किसी जमाअ़त में इस उसूल पर अ़मल हो तो कैसा निज़ाम और कैसा अमन और मुहब्बत हो।

---

१ क़ब्र, समाधि २ दातौन ३ मुहब्बत।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी बराबर हों तो फिर जो उमर (अुम्र) में बड़ा हो वह इमामत करे और कोई किसी इमाम के असर की जगह इमामत न करे꙳। और उसके घर में उसके अिज़्ज़त की जगह पर न बैठे। जब तक वह हुक्म न दे। [मुस्लिम]

एक रिवायत में है कि जो इस्लाम में साबिक़[1] हो वह इमामत करे।

एक रिवायत में है कि लोगों की इमामत उसको करना चाहिए जो अल्लाह की किताब सब से ज़ियादः पढ़ने वाला हो अगर क़िरअत में बराबर है तो जो हिजरत में मुक़द्दम है उसको इमामत करना चाहिए। अगर हिजरत में बराबर हैं तो जिसकी उम्र बड़ी हो वह इमामत करे।

३२७ अहले अक़्ल को तरजीह

हज़्रत इब्नि मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमारे शानों[2] पर हाथ फेरते थे और फ़रमाते थे कि बराबर रहो, आगे पीछे रहो गे तो तुम्हारे दिल मुख़्तलिफ़ हो जायेंगे और जो तुममें अ़क़्ल वाले हैं वह मेरे क़रीब रहें@। फिर जो उनके क़रीब हैं फिर जो उनके क़रीब हैं। [मुस्लिम]

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो तुममें अ़क़्ल वाले हैं वह मेरे क़रीब रहें, फिर जो उनके क़रीब हैं। आपने तीन मर्तबा फ़रमाया, तुम बाज़ारों के शोर व शर से बचो।

३३८ ज़ियादः उम्र वाला मुक़द्दम है

हज़्रत अबू यह्या (र०) और सहल बिन अबू हुसैमः से रिवायत है कि अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन सहल और मुहय्यिसः बिन मस्ऊद (र०) ख़ैबर‡ गये। वहाँ पहुँच कर दोनों अलग-अलग हो गये।

꙳ मसलन किसी मुसलमान हाकिम या क़ाज़ी के यहाँ उसके दारुल् इमारत[3] या दारुल् क़ज़ा[4] में जाये तो इमामत के लिए पेशक़दमी न करे कि इसमें उस हाकिम या क़ाज़ी की हक़तलफ़ी[5] और उसके मनसब की एक तरह की तहक़ीर है।

@ फ़हीम[6] और साहबे अ़क़्ल[7] लोग क़रीब होंगे तो वह बात समझ सकेंगे और जो कुछ देखेंगे उसको सहीह तौर पर दूसरों तक पहुँचा सकेंगे।

‡ ख़ैबर में यहूद रहा करते थे। और वह उस वक़्त फ़तिह हो गया था।

---

१ अधिक पहुँचा हुआ २ कंधों पर ३ राजधानी ४ न्यायालय ५ अधिकार-हनन ६ विवेकवान, समझदार ७ बुद्धिमान।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब मुहय्यिसः अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन सहल के पास आये तो उनको ख़ून में लतपत क़त्ल किया हुआ पाया, उनको दफ़न करके मदीना आये। अ़ब्दुर-रहमान, सहल, मुहय्यिसः और हुवैसः (यह दोनों मस्ऊ़द के बेटे थे) नबी (स०) की ख़िदमत में आये और क़त्ल का मुक़द्दिमा पेश किया। अ़ब्दुररहमान बिन सहल (मक़तूल के भाई) ने गुफ़्तुगू शुरू की। वह छोटे थे, आपने फ़रमाया पहले बड़ा गुफ़्तुगू करे। पहले बड़ा गुफ़्तुगू करे।

३२६ ज़ियादः क़ुर्आन का याद रखनेवाला मुक़द्दम है

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) अुहद में एक क़ब्र में दो शहीदों को रखते थे। आप फ़रमाते इनमें कौन क़ुरआन ज़ियादः हासिल करनेवाला था? जब उनमें से एक की तरफ़ इशारः किया जाता तो आप उसको लहद[1] में मुक़द्दम रखते थे। [बुख़ारी]

३२७ ज़ियादः उम्र वाला मुक़द्दम है

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, मैंने ख़्वाब देखा मैं एक मिस्वाक[2] कर रहा हूँ। मेरे पास दो आदमी आये, उनमें से एक बड़ा था। मैंने छोटे को मिस्वाक दी तो मुझसे कहा गया कि बड़े को मिस्वाक दो, तो मैंने बड़े को दी। [मुस्लिम]

३२८ तीन शख़्सों की अ़िज़्ज़त

हज़्रत अबू मूसा (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह की अ़िज़्ज़त यह भी है कि बूढ़े मुसलमान और हामिले क़ुरआन जो अल्लाह के हदों के अन्दर हो और मुन्सिफ़ बादशाह की अ़िज़्ज़त की जाये। [अबू दावूद]

३२९ छोटों पर शफ़क़त[3] बड़ों की अ़िज़्ज़त

हज़्रत उमर (र०) बिन शुऐ़ब से रिवायत है कि वह अपने बाप से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, वह हम से नहीं है जो अपने छोटों पर रहम न करे और अपने बड़ों की अ़िज़्ज़त न करे♦। [अबूदावूद-तिर्मिज़ी]

♦ अगर किसी जमाअ़त में इस उसूल पर अ़मल हो तो कैसा निज़ाम और कैसा अमन और मुहब्बत हो।

---

१ क़ब्र, समाधि २ दातौन ३ मुहब्बत।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३६० लोगों से उनकी हैसियत के मुताबिक़ सुलूक

हज़्रत मैमून (र०) बिन शुअ़ब से रिवायत है कि हज़्रत आ़यशः (र०) के पास एक आदमी आया। उसको एक रोटी का टुकड़ा दिया और एक आदमी पुराने कपड़े पहने हुए आया तो उसको बिठाया और खाना खिलाया। लोगों ने उसके बारे में सवाल किया। हज़्रत आ़यशः (र०) ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है कि लोगों को उनके मर्तबः के मुताबिक़ उतारो। [अबूदावूद]

३६१ हज़्रत अुमर (र०) की मर्तबाशनासी[१] और बुर्दबारी[२]

हज़्रत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि उ़यैनः बिन हुसैन अपने भतीजे हुर्र बिन क़ैस के यहाँ आये। हज़्रत हुर्र बिन क़ैस उन लोगों में थे जो हज़्रत उमर (र०) के नज़दीक रहते थे। और हज़्रत उमर (र०) के हमनशीन और मशविरः देने वाले पढ़े लिखे लोग होते थे, अधेड़ हों या जवान। उ़यैनः ने अपने भतीजे से कहा कि अमीरुल् मोमिनीन की मज्लिस में तुम्हारी अिज़्ज़त है, तुम मेरे लिए इजाज़त तलब करो। उन्होंने इजाज़त चाही, हज़्रत उमर (र०) ने उनको इजाज़त दे दी। जब वह आये तो कहने लगे, ऐ इब्नि ख़त्ताब! तुम हम को कुछ नहीं देते और हमारे दर्मियान अ़द्ल नहीं करते हो। हज़्रत उमर (र०) को ग़ुस्सा आ गया। क़रीब था कि हाथ उठायें, हुर्र ने कहा, या अमीरुल् मोमिनीन! अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (स०) से फ़रमाया है, "ख़ुज़िल्अ़फ़्व वअ्मुर बिल्अ़ुर्फ़ि व अऽरिज़् अ़निल् जाहिलीन†"। ऐ अमीरुल् मोमिनीन! यह जाहिलों में हैं। ख़ुदा की क़सम जब उन्होंने यह आयत पढ़ी तो हज़्रत उमर (र०) फ़ौरन रुक गये और एक तिल के बराबर भी नहीं बढ़े और वह किताबुल्लाह के सामने हमेशा गर्दन झुका देते थे।

३६२ बड़ों का लिहाज़

हज़्रत समुरः बिन जुन्दुब से रिवायत है कि मैं नबी (स०) के ज़माने में लड़का था, मुझे आपकी बातें याद हो जाती थीं। मगर मैं इसलिए नहीं कहना चाहता कि यहाँ मुझसे बड़ी उम्र के लोग मौजूद हैं।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ योग्यता के पारखी २ सहनशीलता।

---

† मुआ़फ़ी इख़्तियार करो, नेकी का हुक्म दो और जाहिलों से ए़राज़ करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बूढ़े की अिज़्ज़त की वजह से बुढ़ापे में अिज़्ज़त

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो जवान किसी बूढ़े की अिज़्ज़त उसके सिन के लिहाज़ से करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसके लिए भी किसी शख़्स को मुक़र्रर करेगा कि जो उसके बुढ़ापे के वक़्त उसकी भी अिज़्ज़त करे। [तिर्मिज़ी]

नेक लोगों की मुलाक़ात, सुहबत और उनसे मुहब्बत

आयात

व अिज़् क़ाल मूसा लिफ़ताहु ला अब्रहु हत्ता अब्लुग़ मज्मअ़ल्बह्रैनि औ अम्ज़िय हुक़ुबन् (६०) फ़लम्मा बलग़ा मज्मअ़ बैनिहिमा नसिया हूतहुमा फ़त्तख़ज सबीलहु फ़िल्बह्रि सरबन् (६१) फ़लम्मा जा वज़ा क़ाल लिफ़ताहु आतिना ग़दा अना ज लक़द् लक़ीना मिन् सफ़रिना हाजा नसबन् (६२) क़ाल अरअैत अिज़् अवैना अिलस्सख़्रति फ़अिन्नी नसीतुल्हूत ज व मा अन्सानीहु अिल्लश्शैतानु अन् अज़्कुरहु ज वत्तख़ज सबीलहु फ़िल्बह्रि क़ सला अ़जबन् (६३) क़ाल जालिक मा कुन्ना नब्ग़ि क़ सला फ़र्तद्दाअ़ला आसारिहिमा क़ससन् ला (६४) फ़वजदा अ़ब्दम्मिन् अ़िबादिना आतैनाहु रह्मतम्मिन् अ़िन्दिना व अ़ल्लम्नाहु मिल्लदुन्नाअ़िल्मन् क़ाल लहु मूसा हल् अत्तबिअ़ुक अ़ला अन् तुअ़ल्लिमनि मिम्मा अ़ुल्लिम्त रुश्दन् (६६)

और जब मूसा ने अपने मुलाज़िम से कहा मैं (इस सफ़र में) बराबर चला जाऊँगा जब तक कि दो दरयाओं के मिलने की जगह न पहुँच जाऊँ या सालहा साल तक चलता रहूँ। जब दोनों दरया के जमा होने के मौक़े पर पहुँचे अपनी मछली दोनों भूल गये। उसने दरया में अपनी राह ली और चल दी। जब दोनों आगे बढ़े तो ख़ादिम से कहा कि हमारा नाश्तः दो। अलबत्ता इस सफ़र में हमको बहुत तकलीफ़ से वास्ता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पड़ा। कहा, लीजिए देखिए हम उस पत्थर पर ठहरे थे तो (वहाँ) मछली भूल आये और मुझको शैतान ने भुला दिया कि मैं उसका ज़िक्र करता और उसने दरया के बीच में रास्ता इख़्तियार किया। कहा, यही मौक़ा है जिसकी हम तलाश में थे। फिर वह दोनों नक़्शेक़दम को देखते हुए उलटे पाँव फिरे तो हमारे बन्दों में से एक बन्दे को पाया जिनको हमने अपनी ख़ालिस रहमत (यानी मक़बूलियत) दी थी। और हमने उनको अपनी तरफ़ से ख़ास अ़िल्म सिखाया था। मूसा ने उनसे कहा मैं तुम्हारी पैरवी करूँगा इस शर्त पर कि तुम मुझको सिखला दो जो तुमको सिखाया गया है। [सू० कह्फ़ि, रु० ६ आ० ६०-६६]

वस्बिर् नफ़्सक मअ़ल्लज़ीन यद्अ़ून रब्बहुम्बिलग़दाति वल्अ़शिय्यि युरीदून वज्हहू···

अपने नफ़्स को उन लोगों के साथ रोको जो अपने रब को सुब्ह व शाम उसकी रज़ा चाहते हुए पुकारते हैं। [सू० कह्फ़ि, रु० ४ आ० २८]

अहादीस

३३४ उम्मे ऐमन (र०) की मुलाक़ात के लिए हज़्रत अबू बक्र (र०) व हज़्रत उमर (र०) का जाना

हज़्रत अनस से रिवायत है कि हज़्रत अबू बक्र (र०) ने आँ हज़्रत (स०) की वफ़ात के बाद हज़्रत उमर (र०) से कहा आओ उम्मे ऐमन (र०) की मुलाक़ात को चलें जैसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनसे मुलाक़ात को जाया करते थे। जब वह दोनों पहुँचे तो वह रोने लगीं। दोनों हज़रात ने कहा, आप क्यों रोती हैं। क्या आप नहीं जानती कि अल्लाह के पास जो चीज़ है वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिए ज़ियादः बेहतर है। वह बोलीं इस लिए नहीं रोती; मैं यह जानती हूँ कि जो अल्लाह के यहाँ है वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिए बेहतर है। लेकिन मुझे इस लिए रोना आता है कि वहीय[1] का सिलसिला बन्द हो गया। इस बात को सुन कर दोनों का भी दिल भर आया और दोनों उनके साथ रोने लगे। [मुस्लिम]

---

१ ईश्वर की आयतों का उतरना।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१ २/३ ८ मुसलमान भाई से मुलाक़ात की फ़ज़ीलत

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, एक आदमी अपने मुसलमान भाई की मुलाक़ात के लिए दूसरी बस्ती रवाना हुआ। अल्लाह तआ़ला ने उसके रास्ते पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर कर दिया। जब उसके पास से गुज़र हुआ तो फ़िरिश्ते ने कहा, कहाँ का इरादः रखते हो ? उसने जवाब दिया मैं फ़लाँ बस्ती में अपने भाई से मिलने जाता हूँ। फ़िरिश्ते ने कहा, क्या उसने तुम पर कोई इह्सान किया है जो उसको निभाते हो ? उसने कहा नहीं, मुझको उससे लिल्लाही मुहब्बत है। फ़िरिश्ता बोला, मैं अल्लाह का क़ासिद हूँ, बेशक अल्लाह तआ़ला ने तुमसे मुहब्बत की जैसे तुमने उससे अल्लाह के लिए मुहब्बत की। [मुस्लिम]

१ ३/३ ९ मरीज़ की इयादत[१] और मुसलमान की ज़ियारत[२] की फ़ज़ीलत[३]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो किसी मरीज़ की इयादत करता है या अल्लाह की ख़ुशी की ख़ातिर किसी मुसलमान भाई से मुलाक़ात करने चलता‡ है, तो एक पुकारनेवाला पुकारता है, 'तू मुबारक है। तेरा चलना मुबारक है। तूने जन्नत में एक जगह बना ली'। [तिर्मिज़ी]

१ ४/१ ७ अच्छा हमनशीन और बुरा हमनशीन

हज़्रत अबू मूसा (र०) अशअ़री से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया अच्छे हमनशीन और बुरे हमनशीन की मिसाल ऐसी है जैसे मुश्क उठानेवाले और धौंकनी फूँकनेवाले की। मुश्क उठानेवाला या तुमको कुछ देगा या तुम उससे ख़रीदोगे या उसकी ख़ुश्बू ही पाओगे और धौंकनी फूँकनेवाला या तो तुम्हारे कपड़े जलायेगा या उससे बुरी बू पाओगे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

‡ इस दौलत और इस अज्र व सवाब से लोग बहुत ग़ाफ़िल हैं। अल्लाह के लिए मुहब्बत करने, महिज़ अल्लाह की ख़ुशी के लिए किसी मुसलमान की मुलाक़ात के लिए चल कर जाने का रिवाज रोज़ बरोज़ कम होता जा रहा है। अग़राज़[४] व ख़्वाहिशे नफ़्स[५] या माद्दी फ़वायद[६] के लिए मिलना-जुलना, हँसना-बोलना, चलना-फिरना रह गया है।

---

१ रोगी से पूछ-ताछ २ दर्शन, दीदार ३ श्रेष्ठता ४ स्वार्थों के लिए ५ दिली इच्छाओं ६ भौतिक (सांसारिक) लाभों (सुखों)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३६८ औरत की दीनदारी सबसे बड़ी ख़ुसूसियत है

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, औरत से चार ख़ुसूसियत की बिना पर निकाह किया जाता है। उसके माल, नसब, ख़ूबसूरती या दीन की वजह से। पस तुम दीनदार औरत पसन्द करो। ख़ाक-आलूद हों तुम्हारे हाथ†।

३६९ जिबरील (अ०) से मुलाक़ात की ख़्वाहिश

हज़्रत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने जिबरील (अ०) से फ़रमाया, हमसे जितना मिलते हो उससे ज़ियादः मिलने में कौन सी चीज़ मानिअ[1] है। तो यह आयत उतरी।

व मा नतनज़्ज़लु अिल्ला बिअम्रि रब्बिक ज लहू मा बैन अैदीना व माख़ल्फ़ना…

हम नहीं उतरते मगर तुम्हारे रब के हुक्म से उसी के लिए जो हमारे सामने है और जो हमारे पीछे है। [सू० मरयम, रु० ४ आ० ६४]

३७० तुम्हारा खाना परहेज़गार आदमी खाये

हज़्रत अबू सअीद (र०) ख़ुदरी से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया साथ रहो तो मोमिन के रहो और तुम्हारा खाना परहेज़गार ही@ खाये। [अबूदावूद-तिर्मिज़ी]

३७१ दोस्त का इन्तिख़ाब[2]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, आदमी अपने दोस्त के दीन§ पर होता है। पस आदमी को देख लेना चाहिए कि किससे दोस्ती करता है। [अबूदावूद-तिर्मिज़ी]

३७२ जो जिसको चहता है उसी के साथ होगा

हज़्रत अबू मूसा (र०) अशअ़री से रिवायत है कि नबी (स०) ने

---

† मुहब्बत व प्यार के तौर पर फ़रमाया, अ़रब का मुहावरा है।

@ इस पर कितने आदमियों का अ़मल है ?

§ यानी उसका तौर तरीक़ः, इख़्लाक़ व आ़दात हत्ता कि अ़क़ीदः व मज़हब इख़्तियार कर लेता है। इसलिए दोस्तों के इन्तिख़ाब में बड़ी इहतियात[3] की ज़रूरत है।

---

१ बाधक २ चुनाव ३ सावधानी।

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

फ़रमाया, आदमी उसके साथ होगा जिसको चाहता है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

एक रिवायत में है कि नबी (स०) से अ़र्ज़ किया गया, आदमी लोगों से सुहबत करता है, और वह उनके मर्तबा का नहीं होता। आपने फ़रमाया जो जिसको चाहता है, उसी के साथ होगा।

हज्रत अनस (र०) से रिवायत है कि एक अ़राबी[1] ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा, क़ियामत कब आयेगी ? आपने फ़रमाया, तुमने उसके लिए क्या सामान किया है ? उसने कहा, मैं अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता हूँ। आपने फ़रमाया, तुम उसी के साथ होगे जिससे मुहब्बत करते हो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

एक और रिवायत में है कि मैंने उसके लिए कोई सामान नहीं किया, न ज़ियादः रोज़े हैं, न नमाज़, न सदक़ा। लेकिन मुझे अल्लाह और उस के रसूल से मुहब्बत है।

१० / ३४५ आलमे अरवाह[2] में मुलाक़ात

हज्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, लोग कानें हैं। जैसे सोने-चान्दी की कानें होती हैं। जो जाहिलिय्यत में शरीफ़ थे वह इस्लाम में भी शरीफ़ हैं। लेकिन जब वह दीन की समझ हासिल करें। और रूहें छावनी वाली फौजें हैं, अगर आ़लमे बाला में एक दूसरे से मुलाक़ात की है तो यहाँ भी उनसे मानूस होंगी। और जो वहाँ अनजान थीं वह यहाँ भी अलग रहेंगी*। [मुस्लिम]

११ / ३४४ नेक और मक़बूल बन्दों से दुआ़ कराना

हज्रत उसैर (र०) बिन उमर या हज्रत इब्नि जाबिर (र०) से रिवायत है कि हज्रत उमर (र०) के पास जब यमन के क़बायल के लोग आते थे तो वह उनसे पूछते कि क्या तुममें उवैस (र०) बिन आ़मिर हैं।

---

* आ़लमे अरवाह की उस मुलाक़ात का असर इस आ़लमे अजसाम पर मालूम होता है। और उसी के बहुत से वाक़िआ़त और बातों की आसानी से तौजीह हो सकती है। एक शख़्स बग़ैर किसी रिश्ता और साबिक़ा मअ़रिफ़त के एक मुलाक़ात में घुल-मिल जाता है। और तबीयतें ऐसी घुल-मिल जाती हैं, जैसे हमेशा की मुलाक़ात और मुहब्बत थी। और दो आदमी और बाज़ औक़ात दो भाई बरसों साथ रहने के बावजूद एक दूसरे से मानूस नहीं होते[3]। और उनमें उल्फ़त व मुहब्बत पैदा नहीं होती।

---

१ देहाती २ रूहों के जमा होनेवाली दुनिया ३ घुलते-मिलते नहीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यहाँ तक कि हज़्रत उवैस (र०) आये। हज़्रत उमर (र०) ने कहा, आप उवैस (र०) बिन आ़मिर हैं ?

हज़्रत उवैस (र०)—हाँ।

हज़्रत उमर (र०)—आप मुराद के घराने में क़र्न के क़बीले से हैं ?

हज़्रत उवैस (र०)—हाँ

हज़्रह उमर (र०)—आपके सफ़ैद दाग़ था, अब अच्छा हो गया, सिर्फ़ एक दिरहम के बराबर बाक़ी है ?

हज़्रत उवैस (र०)—हाँ।

हज़्रत उमर (र०)—आपकी वाल्दः ज़िन्दा हैं ?

हज़्रत उवैस (र०)—हाँ।

हज़्रत उमर (र०)—मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है कि तुम्हारे पास उवैस (र०) बिन आ़मिर यमन के क़बायल वालों के साथ आयेंगे, क़र्न के क़बीले से होंगे। उनके सफ़ैद दाग़ होगा फिर वह अच्छा हो जायेगा। एक दिरहम के बराबर बाक़ी रह जायेगा। और उनकी माँ होंगी जिनके वह बड़े फ़रमाँबरदार होंगे। अगर वह अल्लाह पर क़सम खायेंगे तो अल्लाह तआ़ला उनकी क़सम पूरी करेगा। तुम कर सको तो उनसे अपने लिए बख़्शिश की दुआ़ कराना। तो आप मेरे लिए अल्लाह से बख़्शिश चाहें। उन्होंने उनके लिए बख़्शिश की दुआ़ की। फिर हज़्रत उमर (र०) ने कहा अब आप कहाँ का इरादः रखते हैं। फ़रमाया, कूफ़ः का। कहा, मैं आपके लिए उसके हाकिम को लिख दूँ। फ़रमाया, मुझे ग़रीबों में रहना ज़ियादः पसन्द है।

दूसरे साल कूफ़ः के शुरफ़ा में से एक आदमी हज के लिए आया। हज़्रत उमर (र०) से मुलाक़ात हुई। हज़्रत उमर (र०) ने उवैस (र०) के मुतअ़ल्लिक़ दर्याफ़्त किया। उन्होंने कहा मैंने उनको ऐसी हालत पर छोड़ा है कि घर बोसीदः है और सामान थोड़ा है। हज़्रत उमर (र०) ने कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है कि तुम्हारे पास उवैस (र०) बिन आ़मिर अहले यमन के क़बायल वालों के साथ आयेंगे। क़र्न के क़बीले से होंगे। उनके सफ़ैद दाग़ होगा, उससे वह अच्छे हो जायेंगे। सिर्फ़ एक दिरहम के बराबर बाक़ी रह जायेगा। उनकी माँ होंगी जिनके वह फ़रमाँबरदार होंगे। वह अल्लाह पर क़सम खायेंगे तो अल्लाह तआ़ला उनकी क़सम पूरी कर देगा। अगर तुम कर सको तो अपने लिए बख़्शिश की दुआ़ कराना। सो तुम भी उनसे दुआ़ कराओ। फिर वह उवैस (र०) के पास आये। और अर्ज़ किया मेरे लिए बख़्शिश की दुआ़ कीजिए। हज़्रत उवैस (र०) ने फ़र्माया तुम अभी-अभी एक अच्छे सफ़र से आ रहे हो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुम ख़ुद मेरे लिए बख़्शिश की दुआ करो। फिर फ़रमाया, क्या तुम हज़्रत उमर (र०) से मिल कर आ रहे हो ? बोले, हाँ। पस उनके लिए बख़्शिश की दुआ की। फिर उनको मालूम हुआ कि लोग हमको कुछ समझने लगे हैं, तो वह सर उठाये हुए चल दिये। [मुस्लिम]

हज़्रत उमर (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि बेहतरीन ताबिईन[1] में से एक साहब हैं। उनका नाम उवैस (र०) है। उनकी माँ हैं। और उनके सफ़ैद दाग़ है। जब उनसे मिलो तो अपने लिए बख़्शिश की दुआ कराओ।

१४८ मुसलमान से दुआ की दरख़्वास्त

हज़्रत उमर (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उमर: की इजाज़त चाही। आपने इजाज़त दी और फ़रमाया, हमारे भाई! अपनी दुआओं में हमको न भूलना†। हज़्रत उमर (र०) कहते हैं कि आपने यह बात ऐसी कही कि अगर मुझे पूरी दुनिया इसके एवज़ में मिलती तो मुझे इतनी ख़ुशी न होती।

एक रिवायत में है कि मेरे भाई, अपनी दुआओं में हमको भी शरीक करना। [अबूदावूद-तिर्मिज़ी]

१४८ रसूलुल्लाह (स०) का क़ुबा में तश्रीफ़ ले जाना

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) क़ुबा में सवार और पैदल तश्रीफ़ ले जाते और उसमें दो रकअ़त[2] नमाज़ अदा फ़रमाते।

एक रिवायत में है कि नबी (स०) हर सनीचर को क़ुबा में सवार और पैदल तश्रीफ़ ले जाते; इब्नि उमर (र०) भी ऐसा ही करते थे।

अल्लाह के लिए मुहब्बत और उसके अहकाम[3]

आयात

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि ۚ वल्लज़ीन मअ़हू अशिद्दा'उ अ़लल्कुफ़्फ़ारि

१ वह अरब जिन्होंने रसूल (स) के किन्हीं सहाबाओं (सत्संगिओं) को देखा हो। २ नमाज़ में एक रुकूअ और दो सज्दः का करना ३ आज्ञाएँ, आदेश।

† मालूम हुआ कि दुआ के लिए दुआ करनेवाले का उस शख़्स से अफ़्ज़ल होना ज़रूरी नहीं जिसके लिए दुआ की जाये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रुहूमा'अु बैनहुम् तराहुम् रुक्कअन् सुज्जदंय्यब्तग़ून फ़ज़्लम्मिनल्-लाहि व रिज़्वानन् ॥ सीमाहुम् फ़ी वजूहिहिम्मिन् असरिस् सुजूदि ॥ ज़ालिक मसलुहुम् फ़ित्तौराति ∴ ॥ व मसलुहुम् फ़िल्अिन्जीलि ॥ ∴ कज़र्अिन् अख़्रज शत्अहू फ़आज़रहू फ़स्तग़्लज़ फ़स्तवा अला सूक़िही युअ्जिबुज़्ज़ुर्रा‌अ लियग़ीज़ बिहिमुल्कुफ़्फ़ार ॥ व अदल्लाहुल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति मिन् हुम्मग़्फ़िरतंव्व अज्रन् अज़ीमन्

मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। और जो उनके साथ हैं वह कुफ़्फ़ार पर सख़्त हैं और आपस में रहमदिल हैं। तुम रुकूअ और सज्दः करते देखते हो। वह अल्लाह का फ़ज़्ल और (उसकी) रज़ा चाहते हैं। उनके चेहरों पर सज्दों की निशानी है। यह वही हैं कि उनकी सिफ़त तौरात और इन्जील में है। जैसे खेती बाली निकाले और उसको क़वी करे और अपनी जड़ पर सीधी खड़ी हो गयी कि किसानों को भी भली मालूम होने लगी ताकि उनसे काफ़िरों को जलाये और अल्लाह तआला ने उन लोगों से वादा किया है। जो ईमान लाये और अच्छे काम किये बख़्शिश और बड़े सवाब का। [सू० फ़तह, रु० ४ आ० २६]

वल्लज़ीन तबव्वअुद्दार वल्ईमान मिन् क़ब्लिहिम् युहिब्बून मन् हाजर अिलैहिम्···

वह लोग जिन्होंने मदीना में पहले से जगह बना ली और उनसे पहले ईमान लाये। और उनको चाहते हैं जो जो उनकी तरफ़ हिजरत करते हैं।

[सू० हश्र, रु० १ आ० ८]

अहादीस

१६७ ईमान की हलावत[1]

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, तीन बातें जिसमें होंगी उसको ईमान की हलावत महसूस होगी।

१ अल्लाह और उसका रसूल, मासिवा[2] से ज़ियादः महबूब हों।

---

१ मिठास २ इनके अलावा और सब से।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२ किसी से मुहब्बत करे तो लिल्लाही मुहब्बत करे। ३ कुफ़्र की तरफ़ वापस हो जाना, जिससे अल्लाह ने उसको बचाया है, (उसको) इतना बुरा समझे जितना आग में डाले जाने को बुरा समझता है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

१३८ सात आदमी जो क़ियामत में अल्लाह के साए रहमत में होंगे

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, सात आदमी हैं जिन पर अल्लाह तआ़ला अपना साया करेगा, जिस दिन बजुज़ ख़ुदा के साया के कोई साया न होगा। और वह सात यह हैं:—

१ मुन्सिफ़ हाकिम। २ वह जवान जिसने अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ही की अ़िबादत में नश्व व नुमा पायी[1]। ३ वह जिसका दिल मस्जिद में अटका रहे। ४ वह दो आदमी, जो अल्लाह के लिए मुहब्बत करें, मिलें तो उसी के लिए और अलग हों तो उसी के लिए। ५ वह जिसको कोई साहबे जमाल औरत बुलाये तो कहे मैं अल्लाह से डरता हूँ। ६ जो इस तरह छुपा कर सदक़ः करे कि बाँया हाथ भी न जाने कि सीधा हाथ क्या ख़र्च करता है। ७ जो तनहाई[2] में अल्लाह को याद करे और उसके आँसू बहने लगें। [बुख़ारी-मुस्लिम]

१३९ लिल्लाही मुहब्बत रखनेवालों पर अल्लाह का साया

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन फ़रमायेगा, मेरी अ़ज़मत[3] की वजह से जो आपस में मुहब्बत करते थे वह कहाँ हैं? आज मैं उन पर अपना साया करूँगा; और आज मेरे साये के सिवा कोई साया नहीं। [मुस्लिम]

१४० बाहमी[4] मुहब्बत और उसकी तरकीब

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क़सम है उसकी जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है तुम जन्नत में न जा सकोगे जब तक कि ईमान न लाओगे। और जब तक एक दूसरे से मुहब्बत न करोगे, मोमिन न होगे। मैं तुमको ऐसी बात न बतला दूँ कि तुम अ़मल करो तो आपस में मुहब्बत हो जाये। अपने दर्मियान सलाम फैलाओ।

१४१ मुसलमान से ख़ुदा के लिए मुहब्बत की फ़ज़ीलत

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, एक आदमी अपने किसी मुसलमान भाई की मुलाक़ात के लिए किसी

१ विकास और मार्गदर्शन पाया २ एकान्त ३ ज़ुबुर्गी ४ परस्पर।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूसरी बस्ती जा रहा था। अल्लाह ने उसके रास्ते पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर कर दिया। जब वह फ़िरिश्ते के क़रीब हुआ तो फ़िरिश्ता बोला, कहाँ का इरादः रखते हो? उसने जवाब दिया कि फ़लाँ भाई से फ़लाँ जगह मिलने के लिए जाता हूँ। फ़िरिश्ता ने कहा, क्या तुम पर उसका कोई इहसान है, जिसको तुम निभा रहे हो? उसने कहा कि उससे मेरी कोई ग़रज़ नहीं, हाँ मुझे उससे लिल्लाही मुहब्बत है। फ़िरिश्ते ने कहा कि मैं अल्लाह का क़ासिद हूँ। अल्लाह ने तुमसे मुहब्बत की जैसे तुमने उसकी वजह से उससे मुहब्बत की। [मुस्लिम]

३६२ अन्सार[1] से मुहब्बत ईमान की अलामत है

हज़्रत बरा (र०) बिन आज़िब से रिवायत है कि नबी (स०) ने अन्सार के बारे में फ़रमाया कि उनसे मुहब्बत करनेवाला मोमिन होगा॥। और बुग़्ज़ रखनेवाला मुनाफ़िक़ होगा। जो उनसे मुहब्बत करेगा अल्लाह उससे मुहब्बत करेगा। और जो उनसे बुग़्ज़ रक्खेगा अल्लाह उनसे बुग़्ज़ रक्खेगा। [बु०-मु०]

३६३ अल्लाह के लिए मुहब्बत रखनेवालों का क़ियामत में एज़ाज़

हज़्रत मआज़ (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि अल्लाह तआला का इर्शाद है, जो मेरी अज़मत[2] की वजह से आपस में मुहब्बत रक्खें उनके लिए नूर के मिम्बर[3] होंगे। उनपर अम्बिया[4] और शुहदा[5] रश्क[6] करेंगे। [तिर्मिज़ी]

३६४ अल्लाह के लिए मुहब्बत करनेवाला अल्लाह का महबूब है

हज़्रत अबू इदरीस (र०) अलख़ौलानी से रिवायत है कि दमिश्क़ की मस्जिद में मेरा गुज़र हुआ। मैंने एक चमकदार दाँतोंवाले नौजवान को देखा कि उनके गिर्द लोग बैठे हुए हैं। जब किसी बात पर इख़्तिलाफ़ होता तो उनकी तरफ़ रुजूअ होते। और उन्हीं की राय पर फ़ैसला

१ मक्का त्याग कर मदीना के प्रवास में जो लोग पैग़म्बर (स) के साथ मक्कावाले थे वे सहाबा और उनको मदीना में आश्रय व सहायता देनेवाले अन्सार कहलाये। २ प्रतिष्ठा, सम्मान ३ मस्जिद में ख़ुतबा पढ़ते समय बैठने का ऊँचा स्थान ४ नबियों ५ शहीदों, जिहाद (धर्मयुद्ध) में वीरगति पानेवालों ६ ईर्ष्या।

॥ इन्सान की सच्ची मुहब्बत और शेफ़्तगी का जो उनको रसूलुल्लाह (स०) से थी और उनकी शराफ़त व मुरव्वत और खिदमत का यही तक़ाज़ा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करते। मैंने उनके मुतअ़ल्लिक़ दर्याफ़्त किया, मालूम हुआ कि यह मआ़ज़ (र०) बिन जबल है। दूसरे दिन मैं दोपहर को बहुत सबेरे आया और मैंने उनको अपने पहले से आया हुआ पाया। वह नमाज़ पढ़ रहे थे। मैंने इन्तिज़ार किया। जब उन्होंने नमाज़ पूरी की तो मैंने उनके सामने आकर सलाम किया, फिर अ़र्ज़ किया, ख़ुदा की क़सम मैं आपसे मुहब्बत करता हूँ। उन्होंने कहा सच ? मैंने कहा सच। बोलो सच-सच। मैंने कहा सच। तो उन्होंने मेरी चादर का कोना पकड़ कर मुझको अपनी तरफ़ खींच लिया। फिर फ़रमाया, ख़ुश हो। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है कि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है, मेरे लिए आपस में मुहब्बत करनेवालों, और मेरे लिए एक दूसरे के पास बैठनेवालों, और मेरी ही रज़ा के लिए एक दूसरे की मुलाक़ात करनेवालों और मेरी ख़ातिर एक दूसरे पर ख़र्च करनेवालों के लिए मेरी मुहब्बत वाजिब हो गयी§। [मालिक]

३८८ मुसलमान भाई को अपनी मुहब्बत की ख़बर दे देनी चाहिए

हज़्रत मिक़दाम (र०) बिन मअ़दीरिब से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, जब आदमी अपने किसी मुसलमान भाई से मुहब्बत करे तो उसको चाहिए कि वह उससे बता दे कि मैं तुमसे मुहब्बत करता† हूँ। [अबूदावूद-तिर्मिज़ी]

३८९ आँ हज़्रत (स०) की हज़्रत मआ़ज़ को मुहब्बत की इत्तिलाअ़ और दुआ़ की तालीम

हज़्रत मआ़ज़ (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया, ऐ मआ़ज़ (र०) मुझे तुमसे मुहब्बत है। और फ़रमाया कि मैं तुमको वसिय्यत करता हूँ कि अपनी हर नमाज़ के पीछे "अल्लाहुम्म अअ़िन्नी अ़ला ज़िक्‌रिक व शुक्‌रिक व हुस्‌नि अ़िबादतिक" कह लिया करो♦। [अबूदावूद-तिर्मिज़ी]

---

§ यह बड़ी क़दर व शौक़ की चीज़ है। "वफ़ी ज़ालिक फ़ल्यतना फ़सिल्‌मुतना फ़िसून"। (इसमें एक दूसरे से आगे बढ़नेवाले एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करें।)

† इसका खुला हुआ नफ़्सियाती असर होता है। अगर आदमी को मालूम हो जाये कि फ़लाँ शख़्स मुझसे मुहब्बत करता है और मेरा ख़याल करता है तो दिल उसकी तरफ़ खिंचने लगता है।

♦ ऐ अल्लाह, मेरी मदद कर अपने ज़िक्र पर और अपने शुक्र पर और अपनी अच्छी अ़िबादत पर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इदं मुहब्बत की इत्तिलाअ़

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि एक साहब नबी (स़०) के पास हाज़िर हुए। दूसरे साहब आये और अर्ज़ किया मुझे इनसे मुहब्बत है। आपने फ़रमाया, इनसे बतला भी दिया? बोले नहीं। आपने फ़रमाया, बतला दो। उन्होंने उन साहब से कहा मैं आप से अल्लाह के लिए मुहब्बत करता हूँ। वह बोले आप जिसके लिए मुझसे मुहब्बत करते हैं वह आपसे भी मुहब्बत करे। [अबूदावूद]

अल्लाह की महबूबिय्यत के इख़्तियार करने की तरग़ीब और उसकी अ़लामात[1]

आयात

क़ुल् अिन् कुन्तुम् तुहि़ब्बूनल्लाह फ़त्तबिअ़ूनी युह़्बिब्कुमुल्लाहु व यग़्फ़िर्लकुम् ज़ुनूबकुम् ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रह़ीमुन्

कह दो कि अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी इत्तिबाअ़ करो, अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा। वह बख़्शनेवाला रहमतवाला है।

[सू० आले अ़िमरान, रु० ४ आ० ३१]

या अय्युहल्लज़ीन आमनू मंय्यर्तद्द मिन्कुम् अ़न् दीनिही फ़सौफ़ यअ्तिल्लाहु बिक़ौमिंय्युहि़ब्बुहुम् व युहि़ब्बूनहू अज़िल्लतिन् अ़लल्मुअ्मिनीन अअ़िज़्ज़तिन् अ़लल्काफ़िरीन् ز युजाहिदून फ़ीसबीलिल्लाहि व ला यख़ाफ़ून लौमत लाअिमिन् ط ज़ालिक फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशाअु ط वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीमुन्

ऐ ईमानवालो! जो तुम में से अपने दीन से फिर जाये तो अल्लाह एक ऐसी क़ौम लायेगा जिनसे अल्लाह मुहब्बत करेगा और वह अल्लाह से मुहब्बत करेंगे। मोमिनों पर नर्मी करेंगे और काफ़िरों पर सख़्त होंगे और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करेंगे और मलामत करनेवालों की मलामत से न डरेंगे। यह अल्लाह का फ़ज़्ल है। जिसको चाहता है देता है। अल्लाह वसीअ़ अ़िल्मवाला है। [सू० माअिदः, रु० ८ आ० ५४]

---

१ अल्लाह से प्रेम करने की प्रबलता और उसके लक्षण।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अह़ादीस

१९८ अल्लाह की महबूबिय्यत के अ़लामात और नतायज[1]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह़ सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला का इरशाद है, जो मेरे दोस्त से दुश्मनी रक्खेगा मैंने उससे लड़ाई का एलान कर दिया और मेरे बन्दों का मेरे फ़राईज़[2] से नज़दीकी हासिल करना जिस क़दर मुझको महबूब है उस क़दर किसी नेकी की नज़दीकी मुझको महबूब नहीं और मेरा बन्दा मुझसे नवाफ़िल के साथ बराबर क़रीब होता है। यहाँ तक कि मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूँ। और जब मैं उससे मुहब्बत करता हूँ तो उसके कान बन जाता हूँ जिससे वह सुनता है; और उसकी आँख बन जाता हूँ जिससे वह देखता है; और उसके हाथ बन जाता हूँ जिससे वह हमला करता है; और उसके पाँव बन जाता हूँ जिससे वह चलता है। अगर वह मुझसे सवाल करता है तो मैं उसको देता हूँ। अगर वह मुझसे मदद चाहता है तो मैं उसकी मदद करता हूँ। अगर वह मुझसे पंनाह चाहता है तो पनाह देता हूँ। [बुख़ारी]

१९९ अल्लाह की महबूबिय्यत से दुनिया में महबूबिय्यत

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स़०) ने फ़रमाया, जब अल्लाह अपने किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो हज़्रत जिबरील पुकारते हैं कि अल्लाह तआ़ला फलाँ से मुहब्बत करता है, तुम भी उससे मुहब्बत करो। तो आसमानवाले उससे मुहब्बत करने लगते हैं। फिर ज़मीन पर उसकी मक़बूलिय्यत रखदी जाती है† । [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

† इस मक़बूलिय्यत के आसार लोगों के बरताव हैं। अख़्लाक में फ़ौरन ज़ाहिर होते हैं, जिनको मामूली हिस का आदमी समझ लेता है। लोगों की निगाहें, तेवर, अन्दाज़ सब बदल जाते हैं। और दुनिया उनके लिए वह दुनिया नहीं रहती जो हमेशा से थी। एक आ़रिफ़[3] का क़ौल है कि मुझे ख़ुदा की मुहब्बत व नाराज़गी का अन्दाज़ अपनी सवारी-जानवरों और मुलाज़िमीन के तर्ज़ और मुआ़मले से हो जाता है। जब ख़ुदा ख़ुश होता है और मेरा मुआ़मला उससे दुरुस्त होता है, तो सब मेरे ताबेदार और सआदतमन्द होते हैं। वरना सबकी निगाह और तेवर बदले हुए होते हैं।

---

१ अल्लाह से प्रेम के लक्षण और उनके सुपरिणाम २ मेरे निर्दिष्ट कर्तव्यों। ३ ज्ञानी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुस्लिम की एक रिवायत में है—रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब अल्लाह किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो हज़्रत जिबरील से फ़रमाता है मुझे फ़लाँ आदमी से मुहब्बत है। तुम भी उससे मुहब्बत करो तो हज़्रत जिबरील उससे मुहब्बत करते हैं। फिर हज़्रत जिबरील आसमानवालों में मुनादी करते हैं कि अल्लाह तआ़ला फ़लाँ आदमी से मुहब्बत करता है तुम भी उससे मुहब्बत करो; तो आसमानवाले उससे मुहब्बत करते हैं। फिर उसकी मुहब्बत ज़मीनवालों के दिलों में रख दी जाती है और जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे से नफ़रत करता है तो हज़्रत जिबरील को पुकारता है और कहता है कि फ़लाँ आदमी से मैं नफ़रत करता हूँ तुम भी उससे नफ़रत करो। पस हज़्रत जिबरील उससे नफ़रत करने लगते हैं और आसमानवालों में मुनादी करते हैं कि ख़ुदा तआ़ला फ़लाँ आदमी से नफ़रत करता है; तुम भी उससे नफ़रत करो। पस वह उससे नफ़रत करने लगते हैं। फिर उसकी नफ़रत ज़मीनवालों के दिलों में डाल दी जाती है।

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि एक साहब को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किसी सरयः§ पर भेजा। जब वह लोगों को नमाज़ पढ़ाते थे तो हर नमाज़ को 'क़ुल्हुवल्लाहु अहद' पर ख़त्म करते थे। जब लोग सरयः से पलटे तो इसका ज़िक्र रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से किया। आपने फ़रमाया, इनसे पूछो कि किस लिए ऐसा करते थे। जब उनसे पूछा तो उन्होंने कहा इसमें रहमान की सिफ़त है। मैं चाहता हूँ कि इसको पढ़ा ही करूँ। आपने फ़रमाया कि उनको ख़बर दो कि अल्लाह उनसे मुहब्बत करता है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

§ सरयः वह जंगी मुहिम जिसमें रसूलुल्लाह (स०) ब नफ़्से-नुफ़ीस तशरीफ़ न ले जाँय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुसलमानों, नेकबख़्तों, कमज़ोरों और मिस्कीनों को देने पर वअ़ीद[1]

आयात

वल्लज़ीन युअ्ज़ूनल्-मुअ्मिनीन वल्मुअ्मिनाति बिग़ैरि मक्तसबू फ़क़दिह्तमलू बुह्तानंव्व अिस्मम्मुबीनन् ।

और वह लोग जो मुसलमान मर्द और औरतों को बग़ैर किसी जुर्म के तकलीफ़ पहुँचाते हैं। वह एक बड़ा बुहतान उठाते हैं। और खुला हुआ गुनाह करते हैं। [सू० अह्ज़ाब रु० ७ आ० ५८]

फ़अम्मल्यतीम फ़ला तक़्हर् (९) व अम्मस्साअिल फ़ला तन्हर् (१०)

यतीम को मत डाँटो और सायल (माँगने वाले) को मत झिड़को। [सू० ज़ुहा रु० १ आ० ९-१०]

हदीस १ अल्लाह का अपने दोस्तों के दुश्मनों से एलाने जंग

यह हदीस गुज़र चुकी है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है जिसने मेरे दोस्त के साथ दुश्मनी की उससे मेरी तरफ़ से लड़ाई का एलान है।

हदीस २ ग़रीब मुसलमानों की आज़ुर्दगी[2] से अल्लाह की नाराज़ी

हज़्रत सअ़द (र०) बिनअबी वक़्क़ास की यह ह़दीस भी गुज़र चुकी है कि हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र (र०) शायद तुमने उनको नाराज़ कर दिया है। अगर तुमने उनको नाराज़ कर दिया है तो तुमने अपने रब को नाराज़ किया।

हदीस ३ अल्लाह जिसको अपनी अमान[3] में ले उसको तकलीफ़ देना खुदा का मुजरिम बनना है

हज़्रत जुन्दुब (र०) बिन अ़ब्दुल्लाह से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिसने सुबह की नमाज़ पढ़ी वह

---

१ सज़ा का वादा २ नाराज़ किये जाने पर ३ पनाह, शरण।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अल्लाह के ज़िम्मे और उसकी अमान में हो जाता§ है। सो ऐसा न हो कि तुम किसी नमाज़ी को दुःख दो और अल्लाह तआला तुमसे अपने अमान वाले नमाज़ी के मुतअल्लिक़ बाज़-पुर्स[1] करे। अल्लाह तआला जिससे अपने ज़िम्मी के मुतअल्लिक़ बाज़ पुर्स करेगा तो उसको पा ही लेगा। फिर उसको औंधे मुँह दोज़ख़ में गिरा देगा। [मुस्लिम]

ज़ाहिरी हालत पर अहकाम का इज्रा[2] और भेदों का अल्लाह के हवाले करना

आयत

…फ़अिन् ताबू व अक़ामुस्सलात व आतवुज़्ज़कात फ़ख़ल्लू सबीलहुम् ... ।

अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें, ज़कात दें तो उनका रास्ता छोड़ दो। [सू० तौबा रु० १ आ० ५]

अहादीस

३६४ कलमः और नमाज़ व ज़कात से जानों और मालों का तहफ़्फ़ुज़

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से जंग करूँ यहाँ तक कि वह⚘ ला इलाह इल्लल्लाहु व अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह की गवाही दें और नमाज़ क़ायम करें, ज़कात दें अगर उन्होंने ऐसा किया तो अपनी जानों और मालों को मुझसे बचा लिया मगर इस्लाम के हक़ के साथ@ और उनका हिसाब अल्लाह पर है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

§ जब सुबह की नमाज़ पढ़ने वाले का इस क़दर इहतिराम[3] है तो पन्जगाना[4] नमाज़ का कितना अदब होगा।

⚘ सिवा ख़ुदा के कोई माबूद[5] नहीं और मुहम्मद (स०) अल्लाह के रसूल हैं।

@ मसलन क़िसास[6] और हुदूद[7] में उनकी जान ली जा सकती है।

---

१ पूछगछ २ अनुष्ठान, पालन ३ सम्मान ४ पाँचों समय की ५ बन्दनीय, पूज्य ६ ख़ून के बदले ख़ून ७ सीमाओं, मर्यादाओं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हज़्रत तारिक़ बिन अश्बम से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है जिन्होंने ला इलाह इल्लल्लाहु कहा और उस चीज़ से इन्कार किया जिसको वह अल्लाह के सिवा पूजा करते थे तो उनका ख़ून और उनका माल दूसरों पर हराम है। कोई उनको हाथ नहीं लगा सकता। और उनका हिसाब अल्लाह पर है। [मुस्लिम]

३६२ कलमः पढ़ने का एतिबार

हज़्रत मिक़दाम बिन असवद से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया अगर मैं कुफ़्फ़ार के किसी आदमी से मिलूँ और वह हमसे जंग करे और मेरा एक हाथ काट डाले फिर एक दरख़्त की आड़ में मुझसे पनाह चाहे और कहे कि मैं अल्लाह के लिए इस्लाम लाया तो क्या मैं उसको क़त्ल कर दूँ। फ़रमाया, नहीं। मैंने फ़रमाया या रसूलल्लाह! उसने मेरा हाथ काट लिया। फिर यह बात कही। आप (स०) ने फ़रमाया, क़त्ल मत करो। अगर तुम उसको क़त्ल करोगे तो जो मर्तबा तुम्हारा पहले था उस मर्तबा को वह पहुँच जायेगा। और वह इस कलमः के कहने से पहले जैसा था वैसे तुम हो जाओगे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

३६३ कलमः के बाद क़त्ल पर रसूलुल्लाह (स०) की नाराज़गी

हज़्रत उसामः (र०) बिन ज़ैद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमको हुर्क़ः की तरफ़ भेजा जो जुहैनः के क़बीले से था। हमने लोगों के पानी पर सुबह की। मैं और एक अन्सारी उनके एक आदमी से मिले। जब हमने उसको अपनी तलवारों से ढाँप लिया तो उसने ला इलाह इल्लल्लाहु कहा। बस अन्सारी रुक गये और मैंने अपने नेजे से उसको क़त्ल किया जब हम वापस हुए और यह बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तक पहुँची तो आपने फ़रमाया, ऐ उसामः क्या तुमने उसको ला इलाह इल्लल्लाहु कहने के बाद क़त्ल किया? मैंने कहा या रसूलुल्लाह! वह तो पनाह चाहता था। आपने (स०) फ़रमाया, क्या तुमने उसको ला इलाह इल्लल्लाहु कहने के बाद क़त्ल किया और आप इसको बराबर दुहराते रहे। यहाँ तक कि मैंने तमन्ना की कि ऐ काश मैं इस वाक़िअ़: के बाद इस्लाम लाया होता♦।

और एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

♦ इस वाक़िअ़: के बाद इस्लाम लाया होता तो मेरे पिछले बड़े से बड़े गुनाह मुआ़फ़ हो जाते, उसमें यह गुनाह भी माफ़ हो जाता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बार-बार इसको कहते रहे। क्या करोगे ला इलाह इल्लल्लाहु के साथ। जब क़ियामत में ला इलाह इल्लल्लाहु आयेगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

और एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या तुमने ला इलाह कहने के बाद उसको क़त्ल किया? मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (स०)! उसने तलवार के डर से कलमा पढ़ा था। आपने फ़रमाया, क्या तुमने उसके दिल को चीर कर नियत देखी थी? आप बराबर उसको दुहराते रहे। यहाँ तक कि मैंने तमन्ना की कि मैं इससे पहले इस्लाम न लाया होता।

हज़्रत जुन्दुब (र०) बिन अब्दुल्लाह (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने मुसलमानों की एक फ़ौज मुश्रिकीन[1] से मुक़ाबला के लिए भेजी। मुश्रिकीन में एक आदमी था जो किसी मुसलमान के क़त्ल का इरादा करता तो फ़ौरन उसको क़त्ल कर देता। एक मुसलमान उसकी ग़फ़लत की ताक में रहा। हम उसके मुतअल्लिक़ गुफ़्तुगू करते थे कि वह ग़ालिबन उसामा (र०) बिन ज़ैद हैं। जब उन्होंने उस पर तलवार उठाई तो उसने ला इलाह इल्लल्लाहु पढ़ा मगर उसको क़त्ल कर दिया। ख़बर रसाँ रसूलुल्लाह (स०) की ख़िदमत में आया और हालात बतलाये और यह भी ख़बर दी कि उसामा (र०) ने इस तरह क़त्ल किया। आपने उनको बुलाया और पूछा कि किस लिए तुमने क़त्ल किया? उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! वह मुसलमानों को बहुत ज़ियादः तकलीफ़ देता था। और फ़लाँ फ़लाँ को क़त्ल किया था। इस तरह एक जमाअत का नाम उन्होंने गिना दिया। मैंने उसपर तलवार उठाई तो उसने तलवार देख कर ला इलाह इल्लल्लाहु कहा। रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, क्या तुमने उसको क़त्ल किया? अर्ज़ किया जी हाँ। फ़रमाया जब ला इलाह इल्लल्लाहु क़ियामत के दिन आयेगा तो उसके साथ क्या करोगे। कहा या रसूलल्लाह! मेरे लिए बख़्शिश चाहिए। आपने फ़रमाया, ला इलाह इल्लल्लाहु के साथ क्या करोगे जब ला इलाह इल्लल्लाहु क़ियामत के दिन आयेगा? आपने इसके सिवा कुछ भी नहीं फ़रमाया, यही फ़रमाते रहे कि ला इलाह इल्लल्लाहु के साथ क्या करोगे जब क़ियामत के दिन ला इलाह इल्लल्लाहु आयेगा? [मुस्लिम]

३९४ ज़ाहिरी हालत पर फ़ैसला

हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन उतबः बिन मस्ऊद से रिवायत है कि मैंने हज़्रत उमर (र०) से सुना है कि रसूलुल्लाह (स०) के ज़माने में

१ बहुदेव पूजकों।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोगों के ऐब व सवाब का अन्दाज़ा वहीय के ज़रीये होता था। उसी के मुताबिक़ जज़ा व सज़ा का मुस्तौजिब[1] होता था। लेकिन अब वहीय का सिलसिला मुन्क़तअ़ हो गया[2] अब हम तुम्हारे ज़ाहिरी आमाल[3] पर तुमको पकड़ेंगे। जिस शख़्स से भलाई ज़ाहिर होगी उससे हम मुत्मइन[4] होंगे, और उसको अपने क़रीब करेंगे। और उसके दिली भेदों को हम क्या जानें, अल्लाह उनके भेदों का हिसाब करेगा। और जिससे बुराई ज़ाहिर होगी हम उससे मुत्मइन न होंगे। और न उसको सच्चा समझेंगे। अगरचि वह कहे कि हमारा बातिन[5] अच्छा है। [बुख़ारी]

ख़ौफ़ ख़ुदा

आयात

…व अिय्याय फ़र्हबूनि।

और मुझ ही से डरो। [सू० बक़र, रु ५ आ० ४०]

अिन्न बत्‌श रब्बिक लशदीदुन् ॰

बेशक तुम्हारे रब की पकड़ सख़्त है। [सू० बुरूज, रु० १ आ० १२]

व कज़ालिक अख़्ज़ु रब्बिक अिज़ा' अख़जल्क़ुरा व हिय ज़ालिमतुन् ॰ अिन्न अख़्ज़हू' अलीमुन् शदीदुन्।

और इसी तरह तुम्हारे रब की पकड़ है जब बस्तियों को पकड़ता है और वहाँ के रहने वाले ज़ालिम होते हैं। बेशक तुम्हारे रब की पकड़ दर्दनाक है। [सू० हूद, रु० ६ आ० १०२]

अिन्न फ़ी ज़ालिक लआयतल्लिमन् ख़ाफ़ अ़ज़ाबल्-आख़िरति ॰ ज़ालिक यौमुम्मज्मूअ़ुन् ला ल्'लहुन्नासु व ज़ालिक यौमुम्मश्हूदुन् (१०३) व मा नुअख़्ख़िरुहू' अिल्ला लिअजलिम्-मऽदूदिन् ॰ (१०४) यौम यअ्ति ला तकल्लमु नफ़्सुन् अिल्ला बिअिज्निही ॰ फ़मिन्हुम् शक़िय्युंव्व सअ़ीदुन् (१०५) फ़अम्मल्लज़ीन शक़ू फ़फ़िन्नारि लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरुंव्व शहीक़ुन् ला (१०६)

---

१ लाइक़, योग्य २ रुक गया है ३ कर्मों ४ संतुष्ट ५ हृदय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसमें उन लोगों की निशानियाँ हैं जो आख़िरत के अज़ाब से डरते हैं। उस दिन कि लोग जमा किये जायेंगे और वह सबकी हाज़िरी का दिन होगा। और हम उसको सिर्फ़ थोड़ी मुद्दत के लिए (बाज़ मस्लहतों से) मुल्तवी किये हुए हैं। और उस दिन कोई शख़्स बग़ैर ख़ुदा की इजाज़त के बात न कर सकेगा। और उनमें कुछ बदबख़्त और कुछ नेकबख़्त होंगे। बदबख़्त आग में होंगे उनके लिए उसमें चीख़ व पुकार होगी।

[सू० हूद, रु० ६ आ० १०३-१०६]

…व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू…।

तुमको अल्लाह अपने नफ़्स से डराता है।

[सू० अिम्रान, रु० ३ आ० २८]

यौम यफ़िर्रुल्मर्अु मिन् अख़ीहि ला (३४) व अुम्मिहि़ी व अबीहि ला (३५) व साहि़बतिहि़ी व बनीहि त (३६) लिकुल्लिम्रिअिम्-मिन्हुम् यौमअिजिन् शअ्नुंय्युग़्नीहि त (३७)

जिस दिन आदमी भागेगा अपने भाई से, अपनी माँ से, अपने बाप से, अपने दोस्तों और अपने बेटों से। हर एक के लिए ऐसी हालत होगी जो उसको बेपरवा कर देगी। [सू० अबस, रु० १ आ० ३४-३७]

या' अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम् ज अिन्न ज़ल्ज़लतस्साअ़ति शैअुन् अ़ज़ीमुन् (१) यौम तरौनहा तज़्हलु कुल्लु मुर्ज़िअ़तिन् अ़म्मा' अर्ज़अ़त् व तज़अु कुल्लु जाति हम्लिन् हम्लहा व तरन्नास सुकारा व मा हुम् बिसुकारा व लाकिन्न अ़ज़ाबल्लाहि शदीदुन् (२)

ऐ लोगो! अपने रब से डरो। बेशक क़ियामत की भौंचाल बड़ी चीज़ है। उस दिन तुम उनको देखोगे औरत अपनी गोद के बच्चे को भूल जायेगी। और बच्चे वाली का बच्चा पैदा हो जायेगा। तुम देखोगे लोगों को बेहोश मगर वह बेहोश न होंगे लेकिन अल्लाह का अज़ाब सख़्त है।

[सू० ह़ज्जि, रु० १ आ० १-२]

व लिमन् ख़ाफ़ मक़ाम रब्बिहि़ी जन्नतानि ज।

और जो अपने रब की जगह से डरा उसके लिए दो बाग़ हैं।

[सू० रह़्मान, रु० ३ आ० ४६]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

व अक़्बल बअ़्ज़ुहुम् अ़ला बअ़्ज़िय्यतसा'अलून (२५) क़ालू' अिन्ना कुन्ना क़ब्लु फ़ी' अह्लिना मुश्फ़िक़ीन (२६) फ़मन्नल्लाहु अ़लैना व वक़ाना अ़ज़ाबस्समूमि (२७) अिन्ना कुन्ना मिन् क़ब्लु नद्अ़ूहु , अिन्नहू हुवल्बर्रुर्रहीमु (२८)

और एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जिः होकर बात-चीत करेंगे। कहेंगे हम इससे पहले अपने घरों (यानी दुनिया में) अन्जामकार से डरा करते थे। पस अल्लाह ने हम पर इहसान किया और हमको अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचाया हम इससे पहले (यानी दुनिया में) उससे दुआ़एँ माँगा करते थे वह रहमत वाला मेहरबान है। [सू० तूर, रु० १ आ० २५-२८]

अहादीस

१ट्टे अंजाम की किसी को खबर नहीं

हज़्रत इब्नि मस्ऊ़द (र०) कहते हैं कि हम से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, और आप सच्चे और आप से ज़ियादः कौन सच्चा है कि इन्सान चालीस दिन अपनी माँ के पेट में नुत्फ़ः[1] रहता है। फिर चालीस दिन में ख़ून की फुतकी बनता है। फिर चालीस दिन में गोश्त का लोथड़ा बन जाता है। फिर फ़िरिश्ता भेजा जाता है, जो उसमें रूह फूँकता है। फिर चार बातों के लिखने का उसको हुक्म होता है। उसके (१) रिज़्क़[2] (२) उम्र (३) अ़मल के मुतअ़ल्लिक़ और यह कि (४) वह नेकबख़्त[3] होगा या बदबख़्त[4]। क़सम है उस ज़ात की कि जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। कोई जन्नतियों के अ़मल करता रहता है। यहाँ तक कि जन्नत में और उसमें एक हाथ का फ़ासला रह जाता है। तो अल्लाह का लिखा ग़ालिब आ जाता है। और वह जहन्नम के अ़मल करने लगता है और जहन्नम में दाख़िल होता है। और एक आदमी दोज़ख़ियों के काम करता रहता है। यहाँ तक कि उसके और दोज़ख़ के दर्मियान सिर्फ़ एक हाथ का फ़ासला रह जाता है। उस वक़्त अल्लाह का लिखा ग़ालिब आता है। वह जन्नत के अ़मल करने लगता है। और जन्नत में दाख़िल हो जाता है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ वीर्य २ रोज़ी, जीविका ३ भाग्यवान् ४ अभागा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३६९ जहन्नम का मन्ज़र[1]

हज्रत इब्नि मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि उस दिन जहन्नम को सत्तर हज़ार लगामों के साथ लाया जायेगा और हर लगाम के साथ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते होंगे जो उसको खींचते होंगे। [मुस्लिम]

३७० सबसे हल्का अज़ाब

हज्रत नुअ़मान (र०) बिन बशीर से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (स०) से सुना है कि क़ियामत के दिन दोज़खियों में सबसे कम्तर[2] अ़ज़ाब[3] उसको होगा जिसके पाँव के तलवों पर दो अँगारे रक्खे जायेंगे; उन दो अँगारों से उसका दिमाग़ पकेगा। [मुस्लिम]

और एक रिवायत है कि दोज़ख़ वालों में सबसे हल्के अ़ज़ाब वाला वह होगा जिसके दो जूते और दो तस्मे आग के होंगे जिनसे उसका दिमाग़ इस तरह पकेगा जैसे हाँडी उबलती है; और वह यह ख़याल करता होगा कि मुझसे ज़ियादः सख़्त किसी पर अ़ज़ाब नहीं हालाँकि वह सबसे हल्का अ़ज़ाब होगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

३७१ जहन्नम के अ़ज़ाब के दर्जे

हज्रत समुरः (र०) बिन जुन्दुब (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया आग उनमें से किसी के टख़्नों को पकड़ेगी और किसी के घुटनों को और किसी के कमर तक होगी और किसी की हँसली को पकड़ेगी। [मुस्लिम]

३७२ क़ियामत का पसीना

हज्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया लोग रब्बुल—आ़लमीन के पास खड़े होंगे। उनमें से बाज़ अपने पसीने में आधे कानों तक डूब जायेंगे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

३७३ अगर हक़ीक़तें हाल मालूम हो जाये

हज्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐसा ख़ुतबा फ़रमाया कि इससे पहले मैंने कभी नहीं सुना।

---

१ दृश्य २ हलका ३ पापों का दण्ड।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आपने फ़रमाया, जो मैं जानता हूँ अगर तुम जान लो† तो कम हँसो और ज़ियादः रो। असहाबे रसूलुल्लाह (स०) पर ऐसा गिर्यः[1] तारी हुआ कि उन्होंने अपने चेहरों को छुपा लिया।

और एक रिवायत में है कि आँहज़्रत (स०) को अपने असहाब के मुतअ़ल्लिक़ किसी बात की ख़बर पहुँची। आपने ख़ुतबा फ़रमाया।

फ़रमाया कि मुझ पर जन्नत व दोज़ख़ पेश की गयी। मैंने उस दिन की तरह बुराई-भलाई नहीं देखी अगर तुम जान लो जो मैं जानता हूँ तो ज़ियादः रो और कम हँसो। पस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के असहाब पर इससे ज़ियादः सख़्त दिन नहीं गुज़रा। अपने चेहरों को छुपा लिया और रोने से आवाज़ न निकलती थी।

३७४ सूरज का क़ुर्ब[2]

हज़्रत मिक़दाद (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है क़ियामत के दिन सूरज मख़्लूक़[3] से क़रीब कर दिया जायेगा। यहाँ तक कि उनसे एक मील§ के फ़ासला पर होगा। लोग अपने आमाल के बक़दर पसीने में होंगे। उनमें से कुछ ऐसे होंगे जिनका पसीना टख़्नों तक होगा; कुछ ऐसे होंगे जिनके घुटनों तक होगा; बाज़ ऐसे होंगे जिनके मुँह तक आ जायेगा। फिर आपने दस्ते मुबारक से मुँह की तरफ़ इशारः किया। [मुस्लिम]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया क़ियामत के दिन लोग पसीना-पसीना होंगे यहाँ तक कि उनका पसीना ज़मीन में सत्तर हाथ जायेगा और मुँह तक आ जायेगा। यहाँ तक कि कानों तक पहुँच जायेगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

३७८ जहन्नम की गहराई

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ थे। आपने एक धमाका सुना। फ़रमाया,

---

† मौत की सख़्तियों, क़ब्र की तकलीफ़ों, क़ियामत के हौलनाक मन्ज़र और दोज़ख़ की मुसीबतों की तरफ़ इशारः है।

§ सलीम बिन आ़मिर इसके रावी हैं। वह मिक़दाद से रिवायत करते हैं, कहा ख़ुदा की क़सम मैं नहीं समझता कि मील की मसाफ़त से आपकी क्या मुराद है। आया ज़मीन का मील या सलाई जिससे आँखों में सुर्मा लगाया जाता है।

---

१ रोना २ समीपता ३ सृष्टि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जानते हो यह क्या है। हमने अ़र्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ज़ियादः जानते हैं। आप (स़०) ने फ़रमाया, यह एक पत्थर है। जो दोज़ख़ में सत्तर साल से फेंका गया था। अब जाकर वह आग में गिरा है। यहाँ तक कि उसके पेटे में पहुँच गया जिसका तुमने धमाका सुना।

[मुस्लिम]

१०६ सदक़ा जहन्नम से बचा सकता है

हज़्रत अ़दी (र०) बिन हातिम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम में हर एक से अल्लाह बात करेगा। उसके और अल्लाह के दर्मियान कोई तरजुमान न होगा। जब वह अपनी सीधी जानिब देखेगा तो वही नज़र आयेगा जो आगे भेजा है। और बायें तरफ़ देखेगा तो वही नज़र आयेगा जो आगे भेज चुका और जब अपने आगे देखेगा तो उसके मुँह के सामने आग होगी। पस आग से बचो। अगरचिः एक खजूर के टुकड़े ही से क्यों न हो।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

१०७ खौफ़ ख़ुदा के अस्बाब

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो तुम नहीं देखते वह मैं देखता हूँ। आसमान चरचराता है। और उसको चरचराने का हक़ है। उसमें चार उंगल की भी जगह नहीं है मगर एक फ़िरिश्ता अपनी पेशानी अल्लाह तआ़ला के सामने सिज्दे की हालत में रक्खे है अगर तुम जान लो जो मैं जानता हूँ तो कम हँसो और ज़ियादः रो। और तुमको अपने घरों में बिस्तरों पर मज़ा न आये। तुम चीख़ते और चिल्लाते हुए मैदान में निकल जाओ।

[तिर्मिज़ी]

१०८ क़ियामत में चार सवाल

हज़्रत अबू बरज़ः! असलमी (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया किसी बन्दे के क़दम न हटेंगे जब तक कि (चार बातों के मुतअ़ल्लिक़) न पूछ लिया जायेगा। (१) उसकी उम्र के मुतअ़ल्लिक़ कि किस में फ़ना की। (२) अमल के मुतअ़ल्लिक़ कि क्या काम किये। (३) माल के मुतअ़ल्लिक़ कि कहाँ से कमाया और कहाँ ख़र्च किया और (४) जिस्म के मुतअ़ल्लिक़ कि किसमें पुराना किया।

[तिर्मिज़ी]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१२ ज़मीन की गवाही
१७९

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह आयत पढ़ी 'यौमअिजिन् तुहृदिद्सु अख़्बारहा' ‡ फ़रमाया, जानते हो इसकी ख़बरें क्या हैं। उन्होंने अ़र्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ज़ियादः जानते हैं। आपने फ़रमाया, वह हर बन्दे और बन्दी पर गवाही देगी जो कुछ उसकी पुश्त पर है। कहेगी कि फ़लाँ दिन ऐसा हुआ फ़लाँ रोज़ ऐसा हुआ। यही इसकी ख़बरें हैं।

[तिर्मिज़ी]

१३ क़ुर्बे क़ियामत
१८०

हज़्रत अबू सअ़ीद (र०) ख़ुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया मैं कैसे अ़ैश करूँ। सूर फूँकने वाला मुँह में सूर लिये है और इजाज़त पर कान लगाये है—कब फूँकने की इजाज़त हो कि फूँके। यह बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथियों को भारी मालूम हुई। आपने फ़रमाया 'हस्बुनल्लाहु निअ़मल्-वकील' कहो।

१४ क़ियामत का खटका
१८१

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिसको खटका लगा वह रात ही रात निकल जायेगा और जो निकल गया वह मन्ज़िल को पहुँच जायेगा। सुन लो अल्लाह का सौदा बहुत गराँ है। सुन लो अल्लाह का सौदा जन्नत‡‡ है।

[तिर्मिज़ी]

१६ मैदाने हश्र
१८२

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है कि लोग क़ियामत में नंगे पाँव और नंगे वदन जमा किये जायेंगे। मैंने कहा या रसूलल्लाह मर्द औरत सब, उनमें एक दूसरे को देखेंगे। आपने फ़रमाया, मुआ़मला ऐसा सख़्त होगा कि किसी को उसकी फ़िक्र न होगी।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

---

‡ उस दिन वह ख़बरें देगी।

‡‡ यह सौदा राहतें तलबी और तनें आसानी के साथ नहीं हो सकता इसके लिए जद्दुजिहद और बाज़ औक़ात ख़ून पसीना एक करने की ज़रूरत होती है।

मताअ़ें वस्ल जानाँ बस गराने सत
गर ईं सौदा बजाँ बूदे च बूदे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जानते हो यह क्या है। हमने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ज़ियाद: जानते हैं। आप (स०) ने फ़रमाया, यह एक पत्थर है। जो दोज़ख़ में सत्तर साल से फेंका गया था। अब जाकर वह आग में गिरा है। यहाँ तक कि उसके पेटे में पहुँच गया जिसका तुमने धमाका सुना।

[मुस्लिम]

३७६[९] सदक़ा जहन्नम से बचा सकता है

हज़्रत अदी (र०) बिन हातिम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम में हर एक से अल्लाह बात करेगा। उसके और अल्लाह के दर्मियान कोई तरजुमान न होगा। जब वह अपनी सीधी जानिब देखेगा तो वही नज़र आयेगा जो आगे भेजा है। और बायें तरफ़ देखेगा तो वही नज़र आयेगा जो आगे भेज चुका और जब अपने आगे देखेगा तो उसके मुँह के सामने आग होगी। पस आग से बचो। अगरचि: एक खजूर के टुकड़े ही से क्यों न हो।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

३७७[१०] खौफ़ॅ ख़ुदा के अस्बाब

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो तुम नहीं देखते वह मैं देखता हूँ। आसमान चरचराता है। और उसको चरचराने का हक़ है। उसमें चार उंगल की भी जगह नहीं है मगर एक फ़िरिश्ता अपनी पेशानी अल्लाह तआ़ला के सामने सिज्दे की हालत में रक्खे है अगर तुम जान लो जो मैं जानता हूँ तो कम हँसो और ज़ियाद: रो। और तुमको अपने घरों में बिस्तरों पर मज़ा न आये। तुम चीख़ते और चिल्लाते हुए मैदान में निकल जाओ।

[तिर्मिज़ी]

३७८[११] क़ियामत में चार सवाल

हज़्रत अबू बरज़: ! असलमी (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया किसी बन्दे के क़दम न हटेंगे जब तक कि (चार बातों के मुतअ़ल्लिक़) न पूछ लिया जायेगा। (१) उसकी उम्र के मुतअ़ल्लिक़ कि किस में फ़ना की। (२) अ़मल के मुतअ़ल्लिक़ कि क्या काम किये। (३) माल के मुतअ़ल्लिक़ कि कहाँ से कमाया और कहाँ ख़र्च किया और (४) जिस्म के मुतअ़ल्लिक़ कि किसमें पुराना किया।

[तिर्मिज़ी]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१२/३७९ ज़मीन की गवाही

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह आयत पढ़ी 'यौमअिज़िन् तुहद्दिसु अख़्बारहा' ‡ फ़रमाया, जानते हो इसकी ख़बरें क्या हैं। उन्होंने अ़र्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ज़ियादः जानते हैं। आपने फ़रमाया, वह हर बन्दे और बन्दी पर गवाही देगी जो कुछ उसकी पुश्त पर है। कहेगी कि फ़लाँ दिन ऐसा हुआ फ़लाँ रोज़ ऐसा हुआ। यही इसकी ख़बरें हैं। [तिर्मिज़ी]

१३/३८० क़ुर्बे क़ियामत

हज़्रत अबू सअ़ीद (र०) ख़ुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया मैं कैसे अ़ैश करूँ। सूर फूँकने वाला मुँह में सूर लिये है और इजाज़त पर कान लगाये है—कब फूँकने की इजाज़त हो कि फूँके। यह बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथियों को भारी मालूम हुई। आपने फ़रमाया 'हस्बुनल्लाहु निअ़मल्-वकील' कहो।

१४/३८१ क़ियामत का खटका

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिसको खटका लगा वह रात ही रात निकल जायेगा और जो निकल गया वह मन्ज़िल को पहुँच जायेगा। सुन लो अल्लाह का सौदा बहुत गराँ है। सुन लो अल्लाह का सौदा जन्नत§ है। [तिर्मिज़ी]

१६/३८२ मैदाने हश्र

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है कि लोग क़ियामत में नंगे पाँव और नंगे बदन जमा किये जायेंगे। मैंने कहा या रसूलल्लाह मर्द औरत सब, उनमें एक दूसरे को देखेंगे। आपने फ़रमाया, मुआ़मला ऐसा सख़्त होगा कि किसी को उसकी फ़िक्र न होगी। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

‡ उस दिन वह ख़बरें देगी।

§ यह सौदा राहतें तलबी और तनें आसानी के साथ नहीं हो सकता इसके लिए जद्दुजिहद और बाज़ औक़ात ख़ून पसीना एक करने की ज़रूरत होती है।

मताअ़ॅ वस्ल जानाँ बस गरानें सत
गर ईं सौदा बजाँ बूदे च बूदे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उम्मीद व रजा

आयात

क़ुल् या अ़िबादियल्लजीन अस्रफ़ू अ़ला' अन्फ़ुसिहिम् ला तक़्नतू मिर्रह्मतिल्लाहि त अिन्नल्लाह यग़्फ़िरुज्जुनूब जमीअ़न् त अिन्नहू हुवल्ग़फ़ूरुर्रहीमु ।

कह दो ऐ मेरे बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर (कुफ़्र व शिर्क करके) ज़्यादती की है अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद मत हो। बिल्यक़ीन अल्लाह तआ़ला तमाम गुनाहों को बख़्श देगा। बेशक वह बख़्शने वाला रहमत वाला है। [सू० ज़ुमरि, रु० ६ आ० ५३]

…व हल् नुजाज़ी' अिल्लल्-कफ़ूर।

क्या हम बदला देंगे मगर नाशुकरों को। [सू० सबा, रु० २ आ० १७]

…क़द् ऊहिय अिलैना' अन्नल्अ़जाब अ़ला मन् कज्जब व तवल्ला।

हमारी तरफ़ वहीय की गयी कि उस शख़्स पर अ़ज़ाब है जिसने झुटलाया और मुँह मोड़ा। [सू० ताहा, रु० २ आ० ४८]

…रह्मती वसिअ़त् कुल्ल शैअिन् त …।

मेरी रहमत हर चीज़ पर हावी है।

[सू० अऽराफ़ि, रु० १६ आ० १५६]

१८ सिद्क़ें दिल से ला इलाह इल्लल्लाहु कहना और तमाम नबियों और जन्नत व दोज़ख़ को बरहक़ समझना जन्नत के दरवाज़े की कुंजी है

हज़्रत उ़बादह (र०) बिन सामित से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिसने गवाही दी कि ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं, वह एक है, उसका कोई शरीक नहीं, और मुहम्मद (स०) उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। और हज़्रत ओ़सा (अ०) अल्लाह के बन्दे, रसूल और उसका कलिमः हैं। उसको मरयम की तरफ़ डाल दिया और उसकी रूह हैं। और जन्नत व दोज़ख़ हक़ हैं। तो अल्लाह उसको जन्नत में दाखिल करेगा। चाहे उसने जो अ़मल किये हों।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि जिसने गवाही दी कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद (स०) उसके रसूल हैं, तो अल्लाह ने उसपर दोज़ख़ हराम की।

६८४ अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का इनआम

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का इरशाद है कि जो भलाई करेगा उसको दस गुना सवाब मिलेगा। या उससे ज़ियादः। और जो बुराई करेगा तो उसकी जज़ा उसके मिस्ल होगी या मैं बख़्श दूँगा। और जो मुझसे एक बालिश्त क़रीब होता है मैं उससे एक हाथ क़रीब होता हूँ और जो मुझसे एक हाथ क़रीब होता है मैं उससे दो हाथ क़रीब होता हूँ और जो मेरी तरफ़ चलकर आता है मैं उसकी तरफ़ दौड़कर आता हूँ और जो मुझसे ज़मीन भर गुनाहों के साथ मिले लेकिन मेरा शरीक न ठहराया तो मैं उससे उतनी ही बख़्शिश के साथ मिलूँगा।
[मुस्लिम]

६८८ अल्लाह का शरीक न ठहराने वालों पर जन्नत वाजिब है

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि एक अऽराबी ने नबी (स०) की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह कौन सी दो चीज़ें वाजिब करने वाली हैं§। आपने फ़रमाया, जो इस हाल में मर गया कि अल्लाह के सिवा किसी को शरीक न ठहराया वह जन्नत में दाखिल होगा। और जो इस हाल पर मरा कि अल्लाह का शरीक ठहराया उस पर दोज़ख़ वाजिब होगी। [मुस्लिम]

६८६ आँ हज़्रत (स०) का खुशखबरी देना

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ऊँट पर सवार थे और हज़्रत मआज़ (र०) आपके पीछे थे। आपने फ़रमाया, ऐ मआज़! अर्ज़ किया, हाज़िर हूँ या रसूलल्लाह। फ़रमाया, ऐ मआज़! अर्ज़ किया, हाज़िर हूँ या रसूलल्लाह। फ़रमाया, ऐ मआज़! अर्ज़ किया, हाज़िर हूँ या रसूलल्लाह। फ़रमाया कोई बन्दः सच्चे दिल के साथ गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद (स०) उसके बन्दे और रसूल हैं। तो अल्लाह ने उसपर दोज़ख़ हराम की। मआज़ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या मैं इसकी ख़बर लोगों को दे

---

§ उस शख़्स को यह तो मालूम था कि दो ख़सलतें जन्नत व दोज़ख़ को वाजिब करने वाली हैं। मगर यह न मालूम था कि वह ख़सलतें कौन-कौन सी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूँ, जिससे वह ख़ुश हो जायें। आपने फ़रमाया, नहीं, वह भरोसा करने लगेंगे तो हज़्रत मआज़ (र०) ख़ामोश हो गये। लेकिन अपनी वफ़ात के वक़्त अिल्म छुपाने के गुनाह से डर कर लोगों को ख़बर दे दी।

३८७ सिद्क़ दिल से[1] 'ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि' कहना जन्नत में दाखिल करेगा

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि ग़ज़वए तबूक[2] के दिन लोगों पर फ़ाक़ों की नौबत आ गयी। लोगों ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! हमको इजाज़त दीजिए कि हम अपने ऊँटों को ज़िबह करके खायें और उनकी चर्बी लगायें। आपने इजाज़त दे दी। हज़्रत उमर (र०) आये और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! या रसूलल्लाह! अगर आपने ऐसा किया तो सवारी की कमी हो जायेगी। आप यह कीजिए कि उनके सामानों को मँगवाइये और उसमें उनके लिए अल्लाह तआला से बर्कत की दुआ कीजिए। शायद अल्लाह तआला उसमें बर्कत अता फ़रमाये। आपने फ़रमाया, हाँ, आपने एक चमड़ा मँगाया और उसको बिछा दिया; फिर उनके सामानों को मँगाया। कोई एक मुठ्ठी ज्वार लाया, कोई एक मुठ्ठी खजूर, और कोई एक टुकड़ा लाया। इस तरह चमड़े पर थोड़ा-बहुत जमा हो गया। फिर आपने बर्कत की दुआ की और फ़रमाया, अपने बर्तनों को भरो। लोगों ने भरना शुरू किया; यहाँ तक कि पूरे लश्कर ने अपने-अपने बर्तन भर लिये और इतना खाया कि सेर हो गये[3], और फिर भी कुछ बच रहा। आपने फ़रमाया, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद[4] नहीं और मैं उसका रसूल[5] हूँ। जो अल्लाह का बन्दा इन दोनों के साथ अल्लाह से इस हालत पर मिलेगा कि शक करने वाला न हो तो उसके लिए जन्नत वाजिब है। [मुस्लिम]

हज़्रत अुतबान (र०) बिन मालिक से रिवायत है कि मैं अपनी क़ौम बनी सालिम को नमाज़ पढ़ाता था। मेरे और उनके दर्मियान एक नाला था। जब बारिश होती थी तो उसको पार करके मस्जिद पहुँचना बहुत मुश्किल मालूम होता था। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मेरी बसारत[6] कम हो गयी। मेरे और मेरी क़ौम के दर्मियान एक नाला है जो बहता है। जब बारिश आती है तो मुझे उसके पार करने में बड़ी दिक़्क़त

---

१ शुद्ध हृदय से २ तबूक के धर्मयुद्ध में ३ पेट भर गया ४ पूज्य ५ सन्देष्टा, ईश्वर-दूत ६ दृष्टि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होती है। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे घर तशरीफ़ लाकर एक जगह नमाज़ पढ़ाएँ। फिर मैं उसी को अपनी नमाज़ की जगह बना लूँ। आपने फ़रमाया, अच्छा मैं इन्शाअल्लाह आऊँगा। दूसरे दिन रसूलुल्लाह (स०) और हज़्रत अबूबक्र (र०) ख़ूब दिन चढ़े तशरीफ़ लाये। रसूलुल्लाह (स०) ने अन्दर आने की इजाज़त चाही। मैंने अर्ज़ किया तशरीफ़ लाइए। आप तशरीफ़ लाये और बैठने से पहले पूछा, अपने घर में नमाज़ के लिए कौन सी जगह तजवीज़ की है। मैंने जिस जगह नमाज़ पढ़ाने का इरादः किया था उसी की तरफ़ इशारः किया। आप खड़े हो गये और तक्बीर[1] कही। हमने आपके पीछे सफ़ें[2] बाँधीं; आपने दो रक्अत नमाज़ पढ़कर सलाम फेरा। मैंने आपके लिए हरीरः तैयार कराया था इसलिए मैंने आपको तशरीफ़ रखने की ज़हमत दी। जब मुहल्ला वालों ने सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे घरों में तशरीफ़ रखते हैं तो लोग आने लगे। इस तरह बहुत लोग जमा हो गये। एक आदमी ने कहा कि मालिक[3] को क्या हुआ, मैं उनको यहाँ नहीं देखता। दूसरे साहब बोले वह तो मुनाफ़िक़ है, उसको अल्लाह और उसके रसूल से कोई मुहब्बत नहीं। आपने फ़रमाया, यह न कहो क्या तुम इसको नहीं देखते हो कि यह ला इलाह इल्लल्लाहु कहता है। और इसकी वजह से अल्लाह की रिज़ा[4] चाहता है। कहा अल्लाह और उसके रसूल ज़ियादः जानते हैं। लेकिन हम तो यही देखते हैं कि उसकी दोस्ती व मुहब्बत और सारा बोलना-चालना मुनाफ़िक़ों[5] से है। आपने फ़रमाया, जिसने अल्लाह की रिज़ा चाहते हुए ला इलाह इल्लल्लाहु कहा, अल्लाह ने उस पर दोज़ख़ हराम की। [बुख़ारी-मुस्लिम]

६८८ अल्लाह तआला माँ बाप से ज़ियादः शफ़ीक़[6] है

हज़्रत उमर (र०) बिन अल्ख़त्ताब से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में कुछ क़ैदी आये; उन क़ैदियों में एक औरत को देखा कि जिस बच्चे को देखती है तो दौड़ती है और उसको उठाकर चिमटा लेती है। आपने फ़रमाया, भला ऐसी चाहने वाली औरत अपने बच्चे को आग में डालने की रवादार हो सकती है? हमने अर्ज़ किया ख़ुदा की क़सम, नहीं। आपने फ़रमाया, अल्लाह को अपने बन्दों पर इससे ज़ियादः शफ़क़त[7] है, जितनी इस औरत को अपने बच्चे से है।

---

१ 'अल्लाहो अक्बर' कहना २ क़तारें, पंक्तियाँ ३ एक सहाबी (सत्संगी) का नाम ४ प्रसन्नता ५ पाखण्डियों ६ दयालु, दोस्त ७ प्यार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३८९ अल्लाह की रह्मत उसके ग़ुस्सा पर ग़ालिब[1] है

हज़्रत अबू हुरैरः! (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब अल्लाह तआला ने मख़लूक़[2] को पैदा किया तो किताब में जो उसके पास अर्श पर है लिख दिया—बेशक मेरी रह्मत मेरे ग़ुस्से पर ग़ालिब है। और एक रिवायत में है कि [मेरी सबक़त] मेरे ग़ुस्से पर सबक़त ले गयी। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि अल्लाह के लिए सौ रह्मतें हैं। निन्नानबे हिस्से अपने पास रक्खे और एक हिस्सा दुनिया में उतारा। उस एक हिस्से की बदौलत मख़लूक़ आपस में मुहब्बत करती है। यहाँ तक कि जानवर अपने बच्चे से अपना खुर इस डर से उठा लेता है कि उसके लग न जाये।

एक रिवायत में है कि अल्लाह के लिए सौ रह्मतें हैं। उसमें से एक हिस्सा जिन व इन्सान, जानवरों और कीड़ों में उतारा गया। उसी के सबब एक दूसरे पर नर्मी करते हैं, एक दूसरे का लिहाज़ करते हैं, और एक दूसरे पर रहम करते हैं, और उसी की वजह से जानवर अपने बच्चों पर नरमी करते हैं। अल्लाह तआला ने रह्मत के निन्नानबे हिस्से क़ियामत के लिए रक्खे हैं। क़ियामत में अपने बन्दों पर उसके ज़रीये रहम करेगा। [मुस्लिम]

एक रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने जिस दिन आसमान व ज़मीन को पैदा किया उसी दिन रह्मत को भी पैदा किया। उनमें एक रह्मत ज़मीन है जिसके सबब माँ अपने बच्चों पर रहम करती है और जानवर वग़ैरः एक दूसरे पर। जब क़ियामत का दिन होगा तो वह एक दुनिया की रह्मत भी निन्नानबे रह्मतों में मिला कर पूरी सौ कर लेगा।

३९० तौबः गुनाह का कफ़्फ़ारः[3] है

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—जब बन्दः कोई गुनाह करता है और कहता है, ऐ अल्लाह! मेरा गुनाह बख़्श दे, तो अल्लाह तआला फ़रमाता है, मेरे बन्दे ने गुनाह किया और उसको यक़ीन है कि उसका एक रब है जो गुनाह बख़्श भी देता है। और पकड़ता भी है। फिर वह गुनाह करता है और कहता है कि ऐ मेरे रब मुआफ़ कर दे।

---

१ अधिक प्रबल २ सृष्टि ३ प्रायश्चित्त।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मेरे बन्दे ने गुनाह किया और वह जानता है कि उसका एक रब है जो गुनाह मुआफ़ भी करता है और पकड़ता भी है। फिर वह गुनाह में मुब्तिला हो जाता है और कहता है कि ऐ अल्लाह दरगुज़र फ़रमा। तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मेरे बन्दे ने गुनाह किया और उसको अि़ल्म है कि उसका एक मालिक है जो ग़ल्ती से चश्मपोशी[1] भी फ़रमाता है। और सज़ा भी देता है। तो मैंने अपने बन्दे को मुआफ़ कर दिया, जो चाहेंछ करे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

६१ बख़्शिश चाहना बन्दगी[2] की दलील है

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उसकी क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर तुम गुनाह न करो तो अल्लाह तुमको उठा लेगा और एक ऐसी क़ौम को लायेगा जो गुनाह करेंगे और अल्लाह से बख़्शिश चाहेंगे तो अल्लाह उनको बख़्श देगा। [मुस्लिम]

हज़्रत अबू अय्यूब (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है कि अगर तुम गुनाह न करोगे तो अल्लाह तआ़ला ऐसी मख़लूक़ पैदा करेगा जो गुनाह करेगी। और अल्लाह उनको बख़्श देगा। [मुस्लिम]

६२ सच्चे दिल के साथ ला इलाह इल्लल्लाहु कहने वालों को जन्नत की बशारत[3]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) की ख़िदमत में हज़्रत अबूबक्र (र०) हज़्रत उमर (र०) और हम चन्द आदमी हाज़िर थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमारे पास से उठकर कहीं तश्रीफ़ ले गये; देर हो गयी और तश्रीफ़ नहीं लाये। हम डरे कि नसीबे दुश्मनान कहीं कोई ख़तरा तो पेश नहीं आया। हम सब घबराये और उठ खड़े हुए। सबसे पहले मैं ही घबराया। मैं रसूलुल्लाह (स०) की तलाश में निकला। तलाश करते-करते अन्सार के एक बाग़ की तरफ़ आया (आगे उन्होंने पूरी तफ़सील सुनाते हुए कहा कि) रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, जाओ जो तुम्हें बाग़ के पार मिले और सच्चे दिल के साथ गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं उसको जन्नत की बशारत दो। [मुस्लिम]

---

१ निगाह हटा लेता है २ इबादत, भक्ति ३ शुभ समाचार, ख़ुशख़बरी।

छ जो चाहे करे का मतलब यह है कि जब तक गुनाह के बाद तौबः करता रहे मैं उसको बख़्श दूँगा क्योंकि तौबः गुज़श्ता अ़मल को धो देती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

११/३६३ आँहज़रत (स०) का उम्मत के लिए बेक़रार होना

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र (र०) बिन अलआ़स से रिवायत है कि नबी (स०) ने इब्राहीम (अ०) का यह कहना दुहराया जो अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन मजीद में नक़ल फ़रमाया है:—

रब्बि अिन्नहुन्न अज़्लल्न कसीरम्-मिनन्नासि ज फ़मन् तबिअ़नी फ़अिन्नहू मिन्नी ज ...

ऐ परवरदिगार बेशक मअ़बूदानें बातिल ने बहुत लोगों को गुमराह किया पस जो मेरी इत्तिबाअ़ करेगा वह मुझसे है। [सू० इब्राहीम, रु० ६ आ० ३६]

फिर हज़रत ईसा (अ०) का क़ौल पढ़ा :—

अिन् तुअ़ज्जिबहुम् फ़अिन्नहुम् अ़िबादुक ज व अिन् तग़्फ़िर् लहुम् फअिन्नक अन्तल्-अ़ज़ीज़ुल्हकीमु।

अगर तू उन पर अज़ाब करे तो यह तेरे बन्दें हैं तुझे हर तरह इख़्तियार है। और अगर तू उनको बख़्श दे तो बेशक तू ज़बरदस्त हिकमत वाला है। [सू० माअिद: रु० १६ आ० ११८]

फिर आपने हाथ उठाये और फ़रमाया, अल्लाहुम्म† उम्मती-उम्मती और यह फ़रमाकर रो दिये। अल्लाह तआ़ला ने हज़्रत जिबरील (अ़) से फ़रमाया कि मुहम्मद (स०) के पास जाओ और पूछो कि आप क्यों रोये; हाँलाँकि तुम्हारा रब ख़ूब वाक़िफ़ है। जिबरील (अ०) आये और पूछा तो रसूलुल्लाह (स०) ने हज़्रत जिबरील (अ०) को अपने रंज का सबब बतलाया। अल्लाह तआ़ला तो जानता ही था, फ़रमाया, ऐ जिबरील! (अ०) मुहम्मद (स०) के पास जाओ और कहो कि अ़न्क़रीब तुम्हारी उम्मत[1] के बारे में हम ख़ुश कर देंगे और तुम्हें रंज न देंगे। [मुस्लिम]

१२/३६४ अल्लाह का हक़ बन्दों पर और बन्दों का हक़ अल्लाह पर

हज़्रत मआ़ज़ (र०) बिन जबल से रिवायत है कि मैं गधे पर रसूलुल्लाह (स०) के पीछे था। आपने फ़रमाया, ऐ मआ़ज़! क्या तुम जानते हो अल्लाह का बन्दों पर क्या हक़ है, और बन्दों का अल्लाह पर क्या हक़ है? मैंने अ़र्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल ज़ियाद: जानते

† ऐ अल्लाह मेरी उम्मत मेरी उम्मत।

१ अनुयायी समुदाय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैं। फ़रमाया, अल्लाह् का हक़ बन्दों पर यह है कि उसकी अ़िबादत करें, और उसके साथ किसी को शरीक न करें; और बन्दों का अल्लाह् पर यह हक़ है कि जिसने उसका शरीक न ठहराया हो उस पर अ़ज़ाब न करे। मैंने कहा या रसूलल्लाह! क्या मैं लोगों को ख़ुशख़बरी दे दूँ। फ़रमाया नहीं, वरना भरोसा कर लेंगे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

ह़ज़्रत बरा (र०) बिन आ़ज़िब से रिवायत है कि नबी (स़०) ने फ़रमाया मुसलमान से जब क़ब्र में पूछा जाता है वह गवाही देता है कि अल्लाह के सिवा कोई मऽबूद नहीं और मुहम्मद (स़०) उसके रसूल हैं। यही माने इस इरशाद के हैं।

युसब्बितुल्लाहुल्लज़ीन आमनूबिल्क़ौलिस्साबितिफ़िल्ह़यातिद्दुन्या व फ़िल्आख़िरति।

अल्लाह ईमानवालों को मज़बूत करता है। पक्की बात के साथ दुनिया की ज़िन्दगी और आख़िरत की ज़िन्दगी में§। [बुख़ारी-मुस्लिम]

१३२८ मोमिन को नेक कामों का अज्र दुनिया और आख़िरत में मिलेगा

ह़ज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि नबी (स़०) ने फ़रमाया कि काफ़िर जब कोई भलाई करता है तो उसको दुनिया में उसका कुछ न कुछ इनआ़म मिल जाता है। और मोमिन की भलाइयों का ज़ख़ीरः उसको आख़िरत में मिलेगा और दुनिया में भी उसको ताअ़त[1] पर रिज़्क़[2] मिलता है।

एक रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला किसी मोमिन[3] के साथ भलाई के मुआ़मले में कोई कमी नहीं फ़रमाता; दुनिया में भी देता है और आख़िरत में भी बदला देगा। लेकिन काफ़िर जब कोई भलाई अल्लाह के लिए करेगा तो उसको दुनिया में उसका फल मिल जायेगा; और आख़िरत में उसके लिए कोई नेकी न होगी जिसका बदला दिया जाये। [मुस्लिम]

§ यानी जिन लोगों ने सच्चे दिल से दुनिया में कलिमा पढ़ा और ईमान लाये और उस कलिमा ने उनके दिल में जड़ पकड़ ली तो ऐसे आड़े वक़्त पर भी कि ख़ुद उनके हवास बजा न होंगे, अल्लाह उनकी मदद फ़रमायेगा। और उनकी ज़बान से भी सच्ची बात निकलवायेगा।

१ इबादत, उपासना, भक्ति २ रोज़ी, जीविका ३ ईमानवाला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३६६ [१४] नमाज़ों की मिसाल

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, पाँच वक़्त की नमाज़ों की मिसाल रवाँ[1] और लबालब नहर की मिसाल है, जो तुममें से किसी के दरवाज़े पर हो; वह उस नहर से रोज़ पाँच मर्तबा ग़ुस्ल करता हो। [मुस्लिम]

३६७ [१६] चालीस मुवह्हिद[2] मुसलमानों की शफ़ाअ़त[3] मुर्दे के हक़ में क़ुबूल होगी

हज़्रत इब्नि अ़ब्बास (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (स०) से सुना है कि मुसलमान आदमी मर जाये और उसके जनाज़े पर ऐसे चालीस आदमी हों जो अल्लाह का शरीक न ठहराते हों तो शफ़ाअ़त[3] उसके हक़ में क़ुबूल फ़रमायेगा। [मुस्लिम]

हज़्रत इब्नि मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि हम लोग रसूलुल्लाह (स०) के साथ क़रीब चालीस अश्ख़ास[4] के एक ख़ैमा[5] में थे। रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, क्या तुम राज़ी हो कि चौथाई जन्नत वालों में हो? हमने कहा, हाँ। फ़रमाया, क्या तिहाई जन्नती होना पसन्द है? हमने कहा, हाँ। तो फ़रमाया, क़सम है उसकी कि जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद (स०) की जान है बेशक मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम निस्फ़ जन्नती हो। क्योंकि जन्नत में सिर्फ़ मुसलमान ही दाख़िल होंगे। और तुम्हारी निस्बत अहले शिर्क[6] में ऐसी है जैसे एक सफ़ैद बाल बैल की काली खाल में या एक काला बाल बैल की सुर्ख़ खाल में। [बुख़ारी-मुस्लिम]

३६८ [१५] बख़्शिशे एज़दी[7]

हज़्रत अबू मूसा (र०) अशअ़री से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन हर मुसलमान को एक यहूदी या नसरानी देगा और फ़रमायेगा कि यह तुम्हारा आग से फ़िदयः है और फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मुसलमान पहाड़ जैसे गुनाहों में लदेफँदे आयेंगे और अल्लाह तआ़ला उनको बख़्श देगा।

३६९ [१७] अल्लाह तआ़ला के अ़फ़्व व करम[8] की नज़र

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है कि क़ियामत के दिन मोमिन अल्लाह तआ़ला

---

१ बहती हुई २ एक ईश्वर को माननेवाला ३ नजात की सिफ़ारिश ४ व्यक्तियों ५ रावटी, तम्बू ६ बहुदेव-पूजकों ७ ईश्वरीय, ख़ुदाई ८ क्षमा और दया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से क़रीब किया जायेगा और वह उसपर अपनी रह्मत का साया करेगा। और उससे उसके गुनाहों का इक़रार लेगा। फ़रमायेगा, क्या तुम इस गुनाह को जानते हो? वह कहेगा, ऐ हमारे परवरदिगार! हम इसको जानते हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा, मैंने दुनिया में तुम्हारी सत्रपोशी[1] की और आज भी मैं तुमको बख़्शे देता हूँ। फिर नेकी का आमालनामः उसको देगा।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

४१८० नमाज़ गुनाहों का कफ़्फ़ारः[2] है

हज़्रत इब्नि मसऊ़द (र०) से रिवायत है कि एक शख़्स एक गुनाह करके अपने दिल में बहुत नादिम हुआ। वह आँहज़रत (स०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपसे उस गुनाह का ज़िक्र किया। इस मौक़ा पर यह आयत नाज़िल हुई। उस आदमी ने कहा यह हुक्म सिर्फ़ मेरे लिए है। आपने फ़रमाया, नहीं मेरी सारी उम्मत[3] के लिए है।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

…अक़िमिस्सलात तरफ़यिन्नहारि व ज़ुलफ़म्मिनल्लैलि त अिन्नल्-हूसनाति युज्हिब्नस्सय्यिआति त …।

नमाज़ को क़ायम करो दिन के दोनों सिरों पर और रात के कुछ हिस्सों में; बेशक नेक काम बुरे कामों को मिटा देते हैं।

[सू० हूद, रु० १० आ० ११४]

४१९१ रसूलुल्लाह (स०) के साथ नमाज़ पढ़ने से गुनाह मुआ़फ़ हो गया

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) की ख़िदमत में एक आदमी हाज़िर हुआ। अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं एक जुर्म का मुर्तकिब[4] हो गया हूँ। आप मुझपर हद क़ायम कीजिए। इतने में नमाज़ का वक़्त आ गया। उसने नबी (स०) के साथ नमाज़ पढ़ी। जब नमाज़ पूरी हो गयी तो अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं एक जुर्म का मुर्तकिब हुआ हूँ, पस अल्लाह तआ़ला का हुक्म मेरे बारे में नाफ़िज़ कीजिए[5]। आपने फ़रमाया, तुमने हमारे साथ नमाज़ पढ़ी? अ़र्ज़ किया, हाँ। फ़रमाया, बस तुम बख़्श दिये गये🞸।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

ॐ यह कोई ऐसा ही गुनाह था जैसा पिछली हदीस में सायल[6] नावाक़िफ़ियत से यह समझता था कि उस पर हदॅ शरई[7] क़ायम होगी वह नमाज़ से मुआ़फ़ हो गया।

---

१ ऐबों को दरगुज़र करना २ प्रायश्चित्त ३ जमात ४ अपराधी ५ लागू कीजिए ६ प्रश्नकर्ता ७ दीन की मर्यादा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२०/४०२ खाने और पीने पर अल्लाह की तारीफ़

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला ऐसे बन्दे से इतनी ही बात पर ख़ुश हो जाता है जो खाना खाये तो अल्लाह की तारीफ़ और शुक्र अदा करे और पानी पिये तो उसकी तारीफ़ और शुक्र अदा करे। [मुस्लिम]

२१/४०३ अल्लाह तआ़ला का मोमिन बन्दे की तौबः को चाहना

हज़्रत अबू मूसा (र०) अश्अ़री से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला रात को अपना हाथ फैलाता है ताकि दिन का गुनहगार तौबः करे; और अपना हाथ दिन को फैलाता है ताकि रात का गुनहगार तौबः करे यहाँ तक कि सूरज मग़्रिब से[1] निकले†।
[मुस्लिम]

२२/४०४ वज़ू और नमाज़ की ख़ासिय्यत

हज़्रत उमर (र०) बिन अ़बसः से रिवायत है कि मैं जाहिलीयत में गुमान करता था कि लोग गुमराही पर हैं। उनके पास कुछ भी हक़ व हिदायत नहीं है। और वह बुतों को पूजते हैं। फिर मैंने सुना कि मक्का में एक साहब आसमानी ख़बरें देते हैं। मैं अपनी सवारी पर बैठकर उनके पास आया। मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (स०) पोशीदः रहते हैं और आपकी क़ौम बड़ी गुस्ताख़ है। मैंने छुपे-चोरी आप से मिलने की तदबीर की; यहाँ तक कि मैं आपके पास पहुँच गया। मैंने अ़र्ज़ किया कि आप कौन हैं ? फ़रमाया, मैं नबी हूँ। मैंने कहा, नबी किसको कहते हैं ? फ़रमाया, मुझे अल्लाह ने भेजा है। मैंने अ़र्ज़ किया, किस चीज़ के साथ ? फ़रमाया, मुझको इस पैग़ाम के साथ भेजा है कि रिश्तों को जोड़ा जाये और बुतों को तोड़ा जाये; और अल्लाह को एक समझा जाये, उसके साथ किसी को शरीक न किया जाये। मैंने कहा आपके साथ कौन है ? फ़रमाया, आज़ाद और ग़ुलाम और उस दिन आपके साथ हज़्रत अबूबक्र (र०) और हज़्रत बिलाल (र०) थे। मैंने कहा, मैं आपकी पैरवी करना चाहता हूँ। आपने फ़रमाया इस वक़्त ऐसा करना तुम्हारे लिए बहुत मुश्किल है। क्या तुमको मेरे और लोगों के हाल की ख़बर नहीं ? जब सुनना कि मैं ग़ालिब[2] आ गया तो मेरे पास

---

† यानी दिन रात उसके लिए दरे इजाबत[3] यानी उसके अ़फ़्व[4] का दामन हर वक़्त फैला रहता है।

---

१ पश्चिम से २ प्रबल ३ अपनाने का द्वार ४ क्षमा का आँचल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आना । मैं अपने घर चला आया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मदीना तश्रीफ़ ले गये । जब आप मदीना पहुँच गये तो मैं लोगों से ख़बरें मालूम करने लगा । फिर मदीना के कुछ लोग आये । मैंने उनसे कहा, जो साहब मदीना तश्रीफ़ ले गये हैं । उनका क्या हाल है ? उन्होंने जवाब दिया, लोग उन पर टूटे पड़ते हैं । उनकी क़ौम ने उनके क़त्ल का इरादा किया था मगर कुछ न कर सके । यह सुनकर मैं मदीना आया और हाज़िर ख़िदमत हुआ । मैंने अर्ज़ किया आपने मुझे पहचाना ? फ़रमाया, तुम वही हो जो मक्का में मुझसे मिले थे । मैंने कहा या रसूलल्लाह ! जो अल्लाह तआ़ला ने आपको सिखलाया है, मुझे सिखलाइए । मैं उससे नावाक़िफ़ हूँ और मुझे नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ भी बतलाइए । आपने फ़रमाया, सुबह की नमाज़ पढ़ो, फिर ठहर जाओ, यहाँ तक कि सूरज निकल आये और बलन्द हो जाय । क्योंकि वह शैतान के दो सींगों के दर्मियान निकलता है । उस वक़्त काफ़िर उसको सिज्द: करते हैं । फिर नमाज़ पढ़ो । इसलिए कि नमाज़ के वक़्त रह्मत के फ़िरिश्ते मौजूद रहते हैं । फिर ठहर जाओ । जब साया नेज़े के बराबर हो जाये तो रुक जाओ इसलिए कि उस वक़्त दोज़ख़ दहकायी जाती है । फिर जब साया बढ़ने लगे (ज़वाल हो जाये) तो नमाज़ पढ़ो क्योंकि उस वक़्त भी रह्मत के फ़िरिश्ते मौजूद रहते हैं । यहाँ तक कि तुम अस्र पढ़ो । फिर सूरज के ग़ुरूब तक ठहर जाओ उस वक़्त शैतान दो सींगों के दर्मियान छुपता है । इस वक़्त काफ़िर उसको सिज्द: करते हैं । मैंने कहा, या नबिय्यल्लाह ! वज़ू के मुतअ़ल्लिक़ भी बतला दीजिए । आपने फ़रमाया, जब कोई शख़्स वज़ू का इरादा करता है तो कुल्ली करता है । नाक में पानी डालता है । फिर नाक साफ़ करता है । तो उसके चेहरे, मुँह और बाँसों से[1] गुनाह झड़ जाते हैं । फिर वह अपना चेहरा धोता है । उसके चेहरे की ख़ताएँ पानी के साथ उसकी दाढ़ी के किनारों से निकल जाती हैं । फिर अपने हाथ कुहनियों तक धोता है । तो उसके हाथ की ख़ताएँ पानी के साथ उसकी उँगलियों से निकल जाती हैं । फिर अपने सर का मस्ह[2] करता है तो उसके सर की ख़ताएँ पानी के साथ उसके बालों के किनारे से निकल जाती हैं । फिर वह अपने पाँव टख़नों तक धोता है, तो उसके पाँव की ख़ताएँ पानी के साथ उसकी उँगलियों से निकल जाती♦ हैं । फिर वह

♦ हाथ, पाँव, आँख, कान, नाक सबसे गुनाह हो सकते हैं । नाजायज़ चीज़ की तरफ़ हाथ बढ़ाना, उसकी तरफ़ पाँव से चलकर जाना, उसको आँख उठाकर देखना, नाजाइज़ बात को सुनना, नाजाइज़ ख़ुश्बू सूँघना, यह सब उन अअ्ज़ा[3] के गुनाह हैं जो

---

१ नाक की हड्डी २ वज़ू के समय सर पर गीला हाथ फेरना ३ अंगों ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नमाज़ पढ़ता है। उसमें अल्लाह की तारीफ़ और सना बयान करता है और ऐसी बुज़ुर्गी जिसका वह अह्ल[1] है। और अपने दिल को अल्लाह की तरफ़ यकसू कर देता है। तो वह अपनी ख़ताओं से इस तरह पाक व साफ़ हो जाता है जैसे लड़का पैदाइश के दिन। अम्र (र०) बिन अ़बसः ने यह हदीस अबू उमामः से बयान की। (अबू उमामः सहाबी थे) तो उन्होंने उनसे कहा, देखो क्या कहते हो, एक जगह पर इतना मर्तबा आदमी को दिया जायगा। अम्र (र०) ने कहा, ऐ अबू उमामः! समझकर कहो; मेरी उम्र बड़ी हो गयी और मेरी हड्डी कमज़ोर हो गयी, मौत मेरे क़रीब आ गयी। मुझे ज़रूरत नहीं कि मैं अल्लाह और उसके रसूल पर झूठ बोलूँ। अगर मैंने इसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से न सुना होता एक मर्तबा, दो मर्तबा, तीन मर्तबा (यहाँ तक कि सात तक गिन गये) तो मैं कभी न कहता; लेकिन मैंने इससे ज़ियादः इसको सुना है। [मुस्लिम]

हज़्रत अबू मूसा (र०) अश्अ़री से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया जब अल्लाह तआ़ला किसी उम्मत पर रहमत का इरादा करता है, तो उनके नबी को उनसे पहले अपने पास बुला लेता है और उनको इस उम्मत का पेशरव[2] बना देता है। और जब किसी उम्मत पर हलाकत[3] का इरादा करता है, तो उन पर उनके नबी की ज़िन्दगी में अ़ज़ाब भेजता है। और वह उसको मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं। उनकी आँखे उनकी हलाकत से ठण्डी करता है; इसलिए कि उन्होंने झुठलाया और उनके हुक्म की नाफ़रमानी[4] की। [मुस्लिम]

वज़ू के पानी के साथ धुलते और झड़ते जाते हैं। अलबत्ता इसका यक़ीन होना चाहिए कि वज़ू में यह ख़ासिय्यत है। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह ख़बर देना कि वज़ू में यह ख़ास्सः बरहक़ है। और वज़ू करते वक़्त उसका शौक़ और लालच होना चाहिए कि यह सग़ायर[5] जो सुबह से शाम तक बेख़बरी में होते रहते हैं, वज़ू में धुल जायें और इन गुनाहों से हम वज़ू करके पाक व साफ़ होकर उठें। इस नीयत, ख़्याल और ध्यान के साथ वज़ू होना चाहिए। इस तरह वज़ू में ख़ास नूरानियत[6] और रूहानियत[7] पैदा हो जायेगी।

---

१ अधिकारी, योग २ पथप्रदर्शक, अगुवा ३ विनाश ४ अवज्ञा ५ छोटे गुनाह ६ तेज ७ आत्मिक शान्ति (आध्यात्मिकता)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अल्लाह से उम्मीद

आयात

... व अुफ़व्विज़ु अम्‌री[1] अिलल्लाहि, अिन्नल्लाह बसीरुम्-बिल्‌अिबादि ।

मैं अपना मुआमला अल्लाह के सिर्पुद करता हूँ । बेशक अल्लाह तआला सब बन्दों का निगराँ है । [सू० मोमिन, रु० ५ आ० ४४]

फ़वक़ाहुल्लाहु सय्यिआति मा मकरू... ।

फिर ख़ुदा तआला ने उसी (मोमिन) को उनकी मुज़िर तदबीरों से बचा लिया । [सू० मोमिन, रु० ५ आ० ४५]

अहादीस

४०८ ख़ुदा तआला अपने बन्दे की तौबा से ऐसा ख़ुश होता है जैसे कोई खोई हुई चीज़ पाकर ख़ुश हो

हज्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल[1] फ़रमाता है कि मैं अपने बन्दे के गुमान के मुताबिक़ हूँ । मैं उसके साथ होता हूँ जहाँ वह मुझे याद करता है । और ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआला अपने बन्दे की तौबा से इससे ज़ियादः ख़ुश होता है जैसे कोई अपने खोये हुए ऊँट को किसी मैदान में पाले । और फ़रमाता है जो मुझसे एक बालिश्त क़रीब होता है मैं उससे एक हाथ क़रीब होता हूँ; और जो मुझसे एक हाथ क़रीब होता है मैं उससे दो हाथ क़रीब होता हूँ, जो मेरी तरफ़ चलकर आता है तो मैं उसकी तरफ़ दौड़कर आता हूँ । [बुख़ारी-मुस्लिम]

४०९ अल्लाह से हुस्नें ज़न रखना

हज्रत जाबिर (र०) बिन अ़ब्दुल्लाह से रिवायत है कि मैंने नबी (स०) से सुना है कि तुम अल्लाह तआला से हुस्नें ज़न रखते हुए[2] मरो । [मुस्लिम]

---

१ शक्तिशाली और महान् २ सौन्दर्य-स्वरूप का ध्यान रखते हुए ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४३०७ अल्लाह को पुकारने वाला और बख़्शिश चाहने वाला महरूम[1] नहीं रह सकता

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है, ऐ इब्नि आदम! अगर तू मुझे पुकारे और मुझसे जो उम्मीद रक्खे (तो) मैं तुझको बख़्श दूँगा, ख़्वाह तेरा कैसा ही अमल हो। मुझे परवाह नहीं, ऐ इब्नि आदम! अगर तेरे गुनाह आसमान तक पहुँच जायें और तू मुझसे बख़्शिश चाहे तो मैं बख़्श दूँगा। ऐ इब्नि आदम! अगर तू ज़मीन भर गुनाहों के साथ मेरे पास आये और मेरा शरीक न ठहराये तो मैं उसके बराबर मग़्फ़िरत[2] के साथ आऊँगा। [तिर्मिज़ी]

ख़ौफ़ व उम्मीद

आयात

… फ़ला यअ्मनु मक्रल्लाहि अिल्लल्क़ौमुल्ख़ासिरून।

सो (समझ रक्खो) ख़ुदा तआला की पकड़ बजुज़ उनके जिनकी शामत आ गयी हो कोई बेफ़िक्र नहीं होता।

[सू० अऽराफ़ि, रु० १२ आ० ६६]

ला यैअसु मिर्रौहिल्लाहि अिल्लल्-क़ौमुल्-काफ़िरून।

बेशक अल्लाह की रहमत से वही लोग नाउम्मीद होते हैं जो काफ़िर हैं। [सू० यूसुफ़, रु० १० आ० ८७]

यौम तब्यज़्ज़ु वुजूहुंव्व तस्वद्दु वुजूहुन् ज …।

उस रोज़ बऽज़ चेहरे सफ़ैद होंगे और बऽज़ चेहरे स्याह होंगे।

[सू० आलि अिम्रान, रु० ११ आ० १०६]

… अिन्न रब्बक सरीअुल् - अिक़ाबि ज सला व अिन्नहु लग़फ़ूरुर्रहीमुन्।

यक़ीनन तुम्हारा रब जल्द सज़ा देने वाला है। और वाक़अी बड़ी मग़्फ़िरत व मेहरबानी करने वाला भी है।

[सू० अनआमि, रु० २० आ० १६५]

---

१ निराश २ नजात, शान्ति।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अिन्नल्अब्रार लफ़ी नअ़ीमिन् ज (१३) व अिन्नल्फ़ुज्जार लफ़ी जह़ीमिन् (१४)।

बेशक नेक लोग आसाईश में होंगे और बदकार (यानी काफ़िर) दोज़ख़ में होंगे। [सू० अिनफ़तार रु० १ आ० १३-१४]

फ़अम्मा मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू ला (६) फ़हुव फ़ी अ़ीशतिर्-राज़ियतिन् त (७) व अम्मा मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू ला (८) फ़अुम्मुहू हावियतुन् त (९) व मा अद्राक मा हियह् त (१०) नारुन् ह़ामियतुन् (११)।

फिर वज़्नॅ अऽमाल के बाद जिस शख़्श का पल्ला (ईमान का) भारी होगा वह ख़ातिर ख्वाह आराम में होगा और जिस शख़्श का पल्ला (ईमान का) हल्का होगा तो उसका ठिकाना हावियः होगा और तुम जानते हो हावियः क्या चीज़ है। वह एक दहकती हुई आग है।

[सू० अल्क़ारिअः, रु० १ आ० ६-११]

अह़ादीस

४०८ अल्लाह की रह्मत और अ़ज़ाब को जान लेने पर मुसलमान उम्मीदवार और काफ़िर नाउम्मीद नहीं होता

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया अगर मोमिन अल्लाह के अ़ज़ाब को जान ले तो कभी कोई जन्नत की उम्मीद न करे। और अगर काफ़िर अल्लाह की रह्मत को जान ले तो कोई जन्नत से मायूस न हो§। [मुस्लिम]

४०९ अच्छे और बुरे मुर्दे की ख़्वाहिश

हज़्रत अबू सअ़ीद (र०) ख़ुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

§ यानी दोनों अपनी जगह पर इतनी ही जियादः हैं—अगर एक पहलू को देखा जाये तो दूसरा नज़र ही न आये। लेकिन मुसलमानों को दोनों रुख़ दिखाये गये हैं। 'नब्बिअ् अ़िबादी अन्नी अनल्ग़फ़ूरुर्रह़ीमु ला व अन्न अ़ज़ाबी हुवल्-अ़ज़ाबुल् अलीमु।' इस लिए उसका दिल ख़ौफ़ व रजा के बीच में रहता है।

[सू० ह़िज्र रु० ४ आ० ४९-५०]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब जनाज़ा रक्खा जाता है और लोग उसको उठाते हैं अगर मरने वाला नेक है तो कहता है आगे बढ़ाओ, आगे बढ़ाओ और अगर बुरा है तो कहता है ख़राबी हो हमें कहाँ लिये जाते हो। इन्सान के सिवा सब उसकी आवाज़ सुनते हैं। अगर वह सुने तो बेहोश हो जाये। [बुख़ारी]

४३१० जन्नत व दोज़ख़ इन्सान से बहुत ज़ियादः क़रीब हैं

हज़्रत इब्नि मस्‌अ़ूद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया जन्नत तुम्हारे जूते के तस्मे से ज़ियादः क़रीब है। और दोज़ख़ भी इसी तरह। [बुख़ारी]

अल्लाह के ख़ौफ़ और उसके शौक़ में रोना

आयात

व यख़िर्रून लिल्‌अज़्क़ानि यब्‌कून व यज़ीदुहुम् ख़ुशूअ़न्।

और ठोड़ियों के बल गिरते हैं रोते हुए और यह क़ुर्‌आन उनका ख़ुशूअ़ और बढ़ा देता है। [सू० बनीइस्राईल, रु० १२ आ० १०६]

अफ़मिन् हाजल्‌हृदीसि तऽजबून ला (५९) व तज़्हकून वला तब्‌कून। (६०)

सो क्या ऐसी बातें सुनकर भी तुम लोग इस कलाम (इलाही) से तअ़ज्जुब करते हो, हँसते हो और (ख़ौफ़ अ़ज़ाब से) रोते नहीं। [सू० नज्मि, रु० ३ आ० ५९-६०]

अहादीस

४३११ आँहज़्रत (स०) का क़ुर्‌आन सुनना और गिरयः फ़रमाना[1]

हज़्रत इब्नि मस्‌ऊद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया कि क़ुर्‌आन पढ़ो। मैंने कहा, मैं आपको

---

१ प्रेमाश्रु बहाना।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पढ़कर सुनाऊँ ? आप पर तो उतारा गया है। आपने फ़रमाया, मैं चाहता हूँ कि दूसरे से सुनूँ, तो मैंने सूरः निसा पढ़ी और जब इस आयत पर पहुँचा:—

"फ़कैफ़ अिजा जिअ्ना मिन् कुल्लि अुम्मतिम् बिशहीदिंव्व जिअ्ना बिक अ़ला हाउलाअि शहीदन्। (४१)"

[तो] आपने फ़रमाया अब बस करो। मैंने आपकी तरफ़† देखा तो आपकी आँखों से आँसू बह रहे थे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

४१२ दिल की सख़्ती और आँखों की ख़ुश्की का सबब बेख़बरी और नावाक़फ़ियत है

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐसा ख़ुतबा फ़रमाया कि मैंने उससे पहले कभी न सुना था। फ़रमाया, जो मैं जानता हूँ अगर तुम जान लो तो कम हँसो और ज़ियादः रो। असहाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने चेहरों को छुपा लिया और वह सिस्की ले रहे थे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह से डर के रोने वाले का दोज़ख़ में जाना इस तरह मुश्किल है जिस तरह दुहे हुए दूध का थन में वापस जाना। और अल्लाह के रास्ते का ग़ुबार और जहन्नम का धुवाँ जमा न होंगे‡। [बुख़ारी]

४१३ तनहाई[1] में अल्लाह की याद में रोने वाले पर साया

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिस दिन ख़ुदा के साये के सिवा किसी का साया न होगा सात आदमियों पर ख़ुदा अपना साया फ़रमायेगा :—

(१) मुन्सिफ़ बादशाह पर। (२) उस नौजवान पर जिसने अल्लाह की अिबादत में नश्व व नुमा[2] पायी। (३) उस आदमी पर जिसका दिल मस्जिद में अटका रहे। (४) वह दो आदमी जो

---

† ऐसा वक़्त होगा [तो क्या हाल होगा] जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लायें और तुम्हें उन सब पर गवाह बनायेंगे। [सू० निसा, रु० ६ आ० ४१]

‡ यानीजिसने अल्लाह के रास्ते का ग़ुबार उड़ाया और जिहाद व तब्लीग़ और दीन के रास्ते में उसके पाँव गर्द आलूद या कपड़े ग़ुबार आलूद हुए और रास्ता की ख़ाक व धूल उसको पहुँची तो उसको जहन्नम का धुवाँ नहीं पहुँच सकता।

---

१ एकान्त में २ निरीक्षण और शिक्षा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अल्लाह के लिए मुहब्बत करें, अलग हों तो ख़ुदा के लिए और मिलें तो ख़ुदा के लिए। (५) वह जिसको कोई एज़ाज़ और हुस्न वाली औ़रत बुलाये तो वह कहे कि मैं अल्लाह से डरता‡ हूँ। (६) वह आदमी जो इतना छुपा के सद्क़ा करे कि बायें हाथ तक को ख़बर न हो कि दायें हाथ ने क्या दिया। (७) वह आदमी जो अल्लाह को तनहाई में याद करे और उसकी आँखें अश्कबार[1] हों। [बुख़ारी-मुस्लिम]

४४७ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नमाज़ में रोना

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप नमाज़ में थे और आपके पेट से रोने की वजह से हाँडी की तरह आवाज़ निकल रही थी। [अबूदावूद, तिर्मिज़ी]

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उबइ बिन कअ़ब (र०) से फ़रमाया कि अल्लाह अ़ज्ज़ व जल्ल ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुमको 'लमयकुनिल्लज़ीन कफ़रू' पढ़कर सुनाऊँ। उबइ ने अ़र्ज़ किया ख़ुदा तआ़ला ने मेरा नाम लेकर फ़रमाया। बुख़ारी में यह भी अल्फ़ाज़ हैं—'अज़ुकिरतु अि़न्द रब्बिल्आ़लमीन'। (तर्जुमा) क्या रब्बुल्आ़लमीन के दरबार में मुझ जैसे हक़ीर बन्दे का ज़िक्र आया है। आपने फ़रमाया, हाँ। तो उबइ बिन कअ़ब (र०) रो दिये।

एक रिवायत में है कि उबइ बिन कअ़ब (र०) रोने लगे।

४४८ उम्मे ऐमन और हज़्रत अबूबक्र (र०) और हज़्रत उमर (र०) का सिलसिलएँ वहीय के बन्द हो जाने पर रोना

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि हज़्रत अबूबक्र (र०) ने हज़्रत उमर (र०) से (रसूलुल्लाह (स०) की वफ़ात के बाद) कहा कि चलो हज़्रत उम्मे ऐमन से मुलाक़ात करें, जैसे हुज़ूर (स०) करते थे। जब यह दोनों हज़्रात वहाँ पहुँचे तो वह रोने लगीं। दोनों ने अ़र्ज़ किया आप क्यों रोती हैं, क्या आपको अि़ल्म नहीं कि जो कुछ अल्लाह तआ़ला के पास है वह रसूलुल्लाह (स०) के लिए बेहतर है? वह बोलीं, मैं इस लिए नहीं रोती; मैं जानती हूँ कि जो अल्लाह के पास है वह रसूलुल्लाह (स०) के लिए बेहतर है। मैं तो इसलिए रोती हूँ कि 'वहीय'[2] आने

‡ यानी पाकदामनी में हज़्रत यूसुफ़ (अ़०) की मिसाल पेश करे।

१ प्रेमाश्रुपूर्ण २ ईश्वरीय संदेश, आयत।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का सिलसिला मुन्क़तिअ[1] हो गया। यह सुनकर वह दोनों भी उनके साथ रोने लगे। [मुस्लिम]

४९६ हज़्रत अबूबक्र (र०) की रक़ीक़ुल्क़ल्बी[2]

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) की अ़लालत[3] जब ज़ोर पकड़ गयी तो आपसे नमाज़ पढ़ाने के लिए अ़र्ज़ किया गया। आपने फ़रमाया, अबूबक्र (र०) से कहो, वह नमाज़ पढ़ायें। हज़्रत आ़यश: (र०) ने अ़र्ज़ किया अबूबक्र (र०) बड़े नर्म-दिल हैं। क़ुर्आन पढ़ने से उनका दिल बेक़ाबू हो जायगा। आपने फ़रमाया, अबूबक्र (र०) से कहो, नमाज़ पढ़ायें।

एक रिवायत में है कि हज़्रत आ़यश: (र०) ने आँ हज़्रत (स०) से कहा कि अबूबक्र (र०) जब आपकी जगह खड़े होंगे तो लोग उनकी आवाज़ भी रोने की वजह से न सुन सकेंगे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

४९७ हज़्रत अ़ब्दुर्रह्मान बिन औ़फ़ का खाना देखकर रोना और दुनिया की दौलत से डरना

हज़्रत इब्राहीम (र०) बिन अ़ब्दुर्रह्मान बिन औ़फ़ से रिवायत है कि अ़ब्दुर्रह्मान बिन औ़फ़ के सामने खाना रक्खा गया। वह रोज़े से थे। कहने लगे मुस्अ़ब (र०) बिन अ़ुमैर शहीद हो गये। और वह मुझसे बेहतर थे। इतना कपड़ा नहीं था कि वह उसमें कफ़नाये जायें, एक चादर थी। अगर सर ढाँका जाता तो पाँव खुल जाते और पाँव ढाँके जाते तो सर खुल जाता। उसके बाद दुनिया की दौलत की वह फ़रावानी[4] हुई जो आज हम देख रहे हैं, और वह कुछ हमें मिला कि हमी जानते हैं। हमें यह डर है कि कहीं भलाई की सब चीज़ें हमें यहीं दुनिया में न दे दी गयी हों (और आ़ख़िरत के लिए कुछ न रहा हो) फिर इतना रोये कि खाना छोड़ दिया। [बुख़ारी]

४९८ अल्लाह की महबूबतरीन[5] चीज़

हज़्रत अबू उमामा (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला को कोई चीज इतनी महबूब नहीं जितने दो क़तरे और दो निशान। दो क़तरों में से एक वह क़तरा जो अल्लाह के डर से गिरे। और दूसरा ख़ून का वह क़तरा जो अल्लाह की राह में बहाया जाये। और एक निशान क़दम वह जो

---

१ टूट गया २ कोमलहृदयता ३ बीमारी ४ अधिकता ५ सर्वाधिक प्रिय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अल्लाह के रास्ते में हो और दूसरा वह जो अल्लाह के फ़राइज़[1] में से किसी एक फ़र्ज़[2] के सिलसिले में लगे। [बुख़ारी]

फ़क्र व ज़ुह्द

आयात

अिन्नमा मसलुल्हूयातिद्दुन्या कमा'अिन् अन्ज़ल्नाहु मिनस्समा'अि फ़ख़्तलत बिही नबातुल्अर्ज़ि मिम्मा यअ्कुलुन्नासु वल्अन्आमु हूत्ता' अिज़ा' अख़ज़तिल्अर्ज़ु ज़ुख़्रुफ़हा वज़्ज़य्यनत् व ज़न्न अह्लुहा' अन्नहुम् क़ादिरून अ़लैहा' अताहा' अम्रुना लैलन् औ नहारन् फ़जअ़ल्नाहा हूसीदन् कअल्लम् तग़्न बिल्अम्सि कज़ालिक नुफ़स्सिलुल्आयाति लिक़ौमिय्यतफ़क्करून।

बस दुनयवी ज़िन्दगी की हालत तो ऐसी है जैसे हमने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस (पानी) से ज़मीन की नबातात जिनको आदमी और चौपाये खाते हैं, ख़ूब गुंजान होकर निकले। यहाँ तक कि जब वह ज़मीन अपनी रौनक का पूरा हिस्सा ले चुकी और उसकी ख़ूब ज़ेबाइश हो गयी और उस ज़मीन के मालिकों ने समझ लिया कि अब हम इस पर बिल्कुल क़ाबिज़ हो चुके। तो ऐसी हालत में दिन में या रात में उस पर हमारी तरफ़ से कोई हादिसः आ पड़ा जैसे पाला, ख़ुश्की या और कुछ। फिर हम इसी तरह साफ़-साफ़ बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो फ़िक्र करते हैं। [सू० यूनुस, रु० ३ आ० २४]

वज़्रिब् लहुम् मसलल्हूयातिद्दुन्या कमा'अिन् अन्ज़ल्नाहु मिनस्समा'अि फ़ख़्तलत बिही नबातुल्अर्ज़ि फ़अस्बह् हशीमन् तज़्रूहुर्रियाहु व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैअिम्मुक़्तदिरन् (४५) अल्मालु वल्बनून ज़ीनतुल्हूयातिद्दुन्या वल्बाक़ियातुस्सालिहातु ख़ैरुन् अ़िन्द रब्बिक सवाबंव्व ख़ैरुन् अमलन् (४६)।

---

१ ईश्वर के प्रति कर्तव्यों २ कर्तव्य।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उन लोगों से दुनयवी ज़िन्दगी की हालत बयान करो कि वह ऐसी जैसे आसमान से हमने पानी बरसाया फिर उसके ज़रीये से ज़मीन की नबातात ख़ूब गुंजान हो गयी हो फिर वह रेज़ः रेज़ः हो जाये, कि उसको हवा उड़ाये लिये फिरती हो। अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है। माल व औलाद तो दुनिया की रौनक़ है। और जो आमाल बाक़ी रहने वाले हैं, वह तुम्हारे रब के नज़दीक सवाब के एतिबार से भी हज़ार दर्जा बेहतर हैं। और उम्मीद के एतिबार से भी हज़ार दर्जा बेहतर हैं। [सू० कह्फ़ि, रु० ६ आ० ४५-४६]

अिऽलमू' अन्नमल् - हयातुद्दुन्या लअिबुंव्व लह्वुंव्व ज़ीनतुंव्व तफ़ाखुरुम्-बैनकुम् व तकासुरुन् फिल्अम्वालि वल्औलादि त कमसलि ग़ैसिन् अऽजबल्कुफ़्फ़ार नबातुहू सुम्म यहीजु फ़तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्म यकूनु हुतामन् त व फ़िल् आख़िरति अज़ाबुन् शदीदुन् ला ०'व मग़्फ़िरतुम्मिनल्लाहि व रिज़्वानुन् त व मल्-हयातुद्दुन्या' अिल्ला मताअुल्ग़ुरूरि।

तुम ख़ूब जान लो कि आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी महिज़ लहवुलइब[1] है और एक ज़ाहिर ज़ीनत और एक दूसरे पर फ़ख़्र[2] करना और माल-औलाद में एक दूसरे से ज़ियादः बतलाना है। जैसे मेंह बरसता है। उसकी पैदावार काश्तकारों को अच्छी लगती है। फिर वह खुश्क होती है। फिर उसको तुम ज़र्द देखते हो। फिर वह चूरा-चूरा हो जाती है। और आख़िरत में सख़्त अज़ाब है। और ख़ुदा की तरफ़ मग़्फ़िरत[3] और रिज़ामन्दी[4] है। और दुनयवी ज़िन्दगी तो महिज़ धोके का अस्बाब है [सू० हदीद, रु० ३ आ० २०]

ज़ुय्यिन लिन्नासि हुब्बुश्शहवाति मिनन्निसा'अि वल्बनीन वल्क़ना-तीरिल्मुक़न्तरति मिनज्जहबि वल्फ़िज़्ज़ति वल्ख़ैलिल्मुसव्वमति वल्अन्आमि वल्हर्सि त ज़ालिक मताअुल्हयातिद्दुन्या ज वल्लाहु अिन्दहू हुस्नुल्मआबि।

अक्सर लोगों को मुहब्बत मर्ग़ूब[5] चीज़ों से है। मसलन औरतें,

---

१ खेलकूद २ घमण्ड ३ नजात, मुक्ति ४ अंगीकार करना ५ मनपसंद।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बेटे और सोने-चाँदी के ढेर और नम्बर लगे हुए घोड़े या दूसरे मवाशी और ज़िराअत[1]। लेकिन यह सब इस्तेमाली चीज़ें दुनिया की ज़िन्दगी की हैं। और अंजामकार[2] की ख़ूबी तो अल्लाह ही के पास है।
[सू० आले अिम्रान, रु० २ आ० १४]

या[1] अय्युहन्नासु अिन्न वऽदल्लाहि हक़्क़ुन् फ़ला तग़ुर्रन्नकुमुल्-हयातुद्दुन्या वक़्फ़ः व ला यग़ुर्रन्नकुम् बिल्लाहिल्ग़रूरु।

ऐ ईमानवालो ! बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है। सो तुमको दुनिया की ज़िन्दगी धोके में न डाले। और न तुमको धोकाबाज़ शैतान अल्लाह से धोके में डाले। [सू० फ़ातिर, रु० १ आ० ५]

अल्हाकुमुत्तकासुरु ला (१) हत्ता ज़ुर्तुमुल्-मक़ाबिर त (२) कल्ला सौफ़ तऽलमून ला (३) सुम्म कल्ला सौफ़ तऽलमून त (४) कल्ला लौ तऽलमून अिल्मल्यक़ीनि त (५) लतरवुन्नल्-जहीम ला (६) सुम्म लतरवुन्नहा अैनल्यक़ीनि ला (७) सुम्म लतुस्अलुन्न यौमअिज़िन् अनिन्नअीमि (८)

दुनियावी साज़ व सामान पर फ़ख़्र करना तुमको आख़िरत से ग़ाफ़िल किये रखता है, यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तानों में पहुँच जाते हो। हरगिज़ नहीं, तुमको बहुत कब्र में जाते ही मालूम हो जायेगा। फिर दुबारा तुमको मुतनब्बिह[3] किया जाता है—हरगिज़ तुम्हारी यह हालत ठीक नहीं, अगर तुम यक़ीनी तौर पर इस बात को जान लेते। वल्लाह तुम लोग ज़रूर दोज़ख़ को देखोगे। वल्लाह तुम उसको ऐसा देखना देखोगे जो कि यक़ीन है। फिर और बात सुनो, उस रोज तुमसे सब निअ़मतों की पूछ होगी। [सू० तकासुर, रु० १ आ० १-८]

व मा हाजिहिल्-हयातुद्दुन्या[1] अिल्ला लह्वुंव्व लअिबुन् त व अिन्नद्दारल्-आख़िरत लहियल्हयवानु म लौ कानू यऽलमून।

और यह दुनयवी ज़िन्दगी (फ़ी नफ़्सिही[4]) बजुज़ लहवुलइब[5] के और कुछ नहीं। अस्ल ज़िन्दगी आलमें आख़िरत है। अगर उनको इसका अिल्म होता तो ऐसा न करते। [सू० अन्कबूत, रु० ७ आ० ६४]

---

१ खेती २ अंतिम पूर्ति ३ सचेत ४ स्वयं ही ५ खेलकूद।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहादीस

४१९ हुज़ूर (स़) का अपनी उम्मत के लिए दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत[1] से डरना

हज़्रत अम्र (र०) बिन औ़फ़ (र०) अन्सारी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़्रत अबू उबैदः (र०) बिन जर्राह को जिज़्यः[2] लेने के लिए बहरैन भेजा। वह बहरैन से माल लेकर आये। अन्सार से सुना कि हज़्रत अबू उबैदः (र०) आ गये। तो वह सुबह की नमाज़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ शरीक हो गये। जब आप नमाज से फ़ारिग़ हुए तो वह सामने आये। आप उनको देखकर मुस्कुराये और फ़रमाया, मेरा ख़्याल है कि तुमने सुन लिया, अबू उबैदः (र०) बहरैन से कुछ लाये हैं। उन्होंने कहा, जी हाँ। आपने फ़रमाया मुबारक हो और ख़ुशी की उम्मीद रक्खो। ख़ुदा की क़सम मैं तुम्हारे लिए फ़क़्र को नहीं डरता। लेकिन मुझे खौफ़ है कि तुम्हारे लिए भी दुनिया इसी तरह न फैला दी जाये जैसे तुमसे अगलों के लिए फैलाई गयी थी। तो जैसे उनको हलाक किया,৩ तुमको भी कहीं न हलाक कर दे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अबू सअ़ीद (र०) ख़ुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मिम्बर पर तशरीफ़ रखते थे और हम सब आपके गिर्द बैठे थे। आपने फ़रमाया, मुझे यह डर रहता है कि कहीं मेरे बाद तुमपर दुनिया की आराइश और उसकी ज़ीनत खोल न दी जाये। [बुख़ारी-मुस्लिम]

और उन्हीं से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स़०) ने फ़रमाया, दुनिया सरसब्ज़ और मीठी है। अल्लाह तआ़ला तुमको इसमें जानशीन बनायेगा। फिर वह देखेगा कि तुम क्या करते हो; तो दुनिया और औरतों से डरना। [मुस्लिम]

४२० आँ हज़्रत (स़०) की दुआ़

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! अस्ली ज़िन्दगी तो आख़िरत की ज़िन्दगी है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

৩ यह अन्देशा सही निकला। मुसलमानों की बरबादी फ़क़्र व तंगदस्ती से नहीं हुई बल्कि दुनिया की मुहब्बत, दौलत की हविस[3] और ज़िन्दगी में बेहद इन्हिमाक[4] और ख़ुद फ़रामोशी[5] की वजह से। हर ज़माने में मुसलमानों का असली मर्ज़ यही है।

---

१ सजावट व शोभा २ धर्मकर या सुरक्षाकर ३ लालसा ४ लीन होना ५ अपने को भूल जाना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४२१ मय्यत[1] के साथ तीन चीज़ें जाती हैं

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मय्यत के साथ तीन चीज़ें जाती हैं। उसका माल, उसके घर वाले। और उसके आमाल। दो चीज़ें पलट आती हैं। (१) घर वाले और (२) माल पलट आते हैं। (३) अ़मल बाक़ी रहता है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

४२२ दोज़ख-जन्नत का मन्ज़र[2] देखकर दुनिया की मुसीबत व राहत भूल जाना

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन दुनिया के सबसे ज़ियादः आराम पाने वाले को लाया जायेगा, जो दोज़ख़ी होगा। उसको आग में एक ग़ोता दिया जायेगा फिर कहा जायेगा कि ऐ इब्नि आदम! क्या तूने कभी कोई भलाई देखी? क्या किसी भलाई का तेरे पास कभी गुज़र हुआ? वह कहेगा, ऐ परवरदिगार! कभी नहीं। फिर दुनिया के सबसे ज़ियादः मुसीबतज़दा को लाया जायेगा, जो जन्नती होगा। उसको जन्नत में एक ग़ोता देकर कहा जायेगा, दुनिया में क्या कभी तुझ पर तकलीफ़ की कोई साअ़त[3] गुज़री? वह कहेगा, ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने कभी कोई तकलीफ़ नहीं देखी, और न किसी मुसीबत से दो चार हुआ[4]। [मुस्लिम]

४२३ आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की बेहक़ीक़ी[5]

हज़्रत मस्तूरद इब्नि शद्दाद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ऐसी ही निस्बत है जैसे समन्दर में कोई अपनी उँगली डाले और देखे कि इस पर क्या तरी लगी रह गयी? [मुस्लिम]

४२४ अल्लाह के नज़दीक दुनिया की हक़ीक़त[6]

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) का एक बाज़ार से गुज़र हुआ, और लोग आपके दायें-बायें थे। एक मरी हुई कनकटी बकरी के पास से गुज़रे, उसके कान पकड़ के उठाया और फ़रमाया, तुम इसको एक दिरहम के बदले लेना चाहते हो? लोगों ने अ़र्ज़ किया कि हम इसको किसी चीज़ के बदले लेना नहीं चाहते। हम इसको

---

१ शव, लाश २ दृश्य ३ साइत, घड़ी ४ सामना हुआ ५ असत्यता, असारता ६ यथार्थता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेकर क्या करेंगे ? आपने फ़रमाया, क्या तुम्हारी ख़्वाहिश है कि यह तुमको मिल जाये ? उन्होंने अर्ज़ किया, वल्लाह ! अगर यह ज़िन्दा भी होती तो ऐबदार होती; यह तो मरी हुई है। आपने फ़रमाया, जितनी हक़ीर[1] तुम्हारी नज़र में यह है, ख़ुदा की नज़र में दुनिया इससे कहीं ज़ियादः हक़ीर है। [मुस्लिम]

४२८ दौलत के साथ सुलूक

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मदीना की पथरीली जगह में चल रहा था। उहद पहाड़ सामने आया। आपने फ़रमाया, ऐ अबू ज़र (र०) ! मैंने अर्ज़ किया, हाज़िर हूँ या रसूलल्लाह ! फ़रमाया, मुझे यह पसन्द नहीं कि मेरे पास उहद के बराबर सोना हो, और मुझ पर तीन दिन गुज़र जायें, और मेरे पास उससे एक दीनार भी बच रहे। हाँ, बस इतना कि मैं क़र्ज़ के लिए रोक लूँ, या यह कि उसको अल्लाह के बन्दों में तक़्सीम करूँ इस तरह, इस तरह; और इस तरह अपने दायें-बायें और पीछे इशारा फ़रमाया@। फिर आगे चले और फ़रमाया जो आज बड़े दौलतमन्द हैं, कल क़ियामत के दिन बे-बिज़ाअत[2] होंगे, मगर वही जो माल को इस तरह तक़्सीम करें; फिर अपने दायें, बायें और पीछे इशारा फ़रमाया, और फ़रमाया कि ऐसे लोग बहुत कम हैं। फिर आपने इर्शाद फ़रमाया, तुम इसी जगह रहना, जब तक मैं न आ जाऊँ यहाँ से न हटना। फिर आप रात की तारीकी[3] में कहीं तश्रीफ़ ले गये। यहाँ तक कि नजरों से ओट हो गये। इतने में मैंने एक बलन्द आवाज़ सुनी; मुझे ख़ौफ़ हुआ कि कोई नयी बात तो नहीं पेश आयी। मैंने आपके पास जाने का इरादा कर लिया, मगर आपकी बात याद आ गयी कि यहाँ से न हटना। इस ख़्याल के आते ही मैं ठहर गया। थोड़ी देर में आप तश्रीफ़ ले आये। अर्ज़ किया कि मैंने एक आवाज़ सुनी थी, जिससे मैं डर गया था, और पूरा क़िस्सा कह सुनाया। आपने फ़रमाया, तुमने सुना था ? मैंने अर्ज़ किया, जी हाँ। फ़रमाया, वह जिबरील (अ०) थे। मुझे ख़बर दी है कि तुम्हारी उम्मत में अगर कोई इस हाल पर मर जाये कि उसने शिर्क न किया हो तो वह जन्नत में दाख़िल होगा। मैंने कहा अगरचि वह बदकार हो और चोर हो ? फ़रमाया, अगरचि वह बदकार या चोर हो। [बुख़ारी]

१ तुच्छ २ असमर्थ, लाचार ३ अँधेरे।

@ यानी दोनों हाथों से भर-भर के दाहने बायें आगे और पीछे लुटाऊँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, अगर मेरे पास उहद के पहाड़ के बराबर सोना हो तो मैं इस हालत पर तीन रातें गुज़ारना पसन्द नहीं करता। हाँ सिर्फ़ इतना कि क़र्ज़ के काम आ सके। [बुख़ारी-मुस्लिम]

४२६ आदमी अपने से कम को देखे

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अपने से कम दर्जा वालों को देखो, बड़े दर्जे वालों को न देखो। इसका नतीजा यह होगा कि तुम अल्लाह की निअ़मत को हक़ीर न समझोगे§। [मुस्लिम]

४२७ रूपया पैसा का बन्दः

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, दीनार व दिरहम का बन्दः[1] और शाल-दोशाला का परस्तार हलाक[2] हो। अगर इसको यह चीज़ें दे दी जायें तो राज़ी होता है, वरना नाराज़ हो जाता है। [बुख़ारी]

४२८ अहले सुफ़्फ़ः की हालत

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि मैंने अहले सुफ़्फ़[3] के सत्तर आदमियों को देखा। उनमें से कोई ऐसा न था कि उसके पास ओढ़ने-बाँधने के लिए पूरा कपड़ा होता। किसी के पास सिर्फ़ चादर होती थी, किसी के पास सिर्फ़ तहबन्द जिसको वह अपनी गर्दनों में बाँध लेते थे। वह किसी के निस्फ़ पिंडली तक पहुँचता और बाज़ के टख़नों तक; वह अपने हाथ से पकड़े रहते थे कि कोई बरहना[4] न देखे। [बुख़ारी]

४२९ दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना है

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

---

§ इस ज़माने में अमल बिल्कुल ख़िलाफ़ है। दौलत और एजाज़[5] के मुआमले में अपने सामने बलन्द नमूना रक्खा जाता है। और उसकी रीस की जाती है। नतीजा यह होता है कि अपनी हालत ख़्वाह कितनी तरक़्क़ी कर जाये, हक़ीर ही मालूम होती है, और तबीअ़त हमेशा कुढ़ती ही रहती है।

---

१ पुजारी २ मरे के समान ३ नमाज़ की क़ितार में खड़े होने वाले ४ नंगा ५ प्रतिष्ठा, सम्मान।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अ़लैहि व सल्लम ने मेरा शाना[1] पकड़कर फ़रमाया, मोमिन के लिए दुनिया कैदख़ाना है और काफ़िर के लिए बाग़ो-बहार है। [मुस्लिम]

१२/४५० दुनिया में मुसाफ़िरों की सी ज़िन्दगी गुज़ारो

हज़्रत इब्नि उमर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मेरा शाना पकड़कर फ़रमाया, दुनिया में इस तरह रहो जैसे एक मुसाफ़िर या राहगीर। और हज़्रत इब्नि उमर (र०) अक्सर फ़रमाते कि शाम हो तो सुबह का इन्तिज़ार न करो; सुबह हो तो शाम का इन्तिज़ार न करो। मर्ज़ से पहले सिहत[2] की और मौत से पहले ज़िन्दगी को ग़नीमत समझो। [बुख़ारी]

१३/४५१ खुदा और मख़लूक़ की महब्बूबियत[3] का नुस्ख़ः

हज़्रत सह्ल बिन सअ़द (र०) से रिवायत है कि एक आदमी नबी (स०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझे ऐसा अ़मल बतलाइए जिसको इख़्तियार करूँ तो अल्लाह तआ़ला मुहब्बत करने लगे; और लोग भी मुझसे मुहब्बत करें। आपने फ़रमाया, दुनिया के बारे में ज़ुहद[4] इख़्तियार करो, अल्लाह तआ़ला तुमसे मुहब्बत करेगा। और जो लोगों के पास है उसकी तमअ़[5] न करो, बेफ़िक्र[6] और ग़नी[7] हो जाओगे। लोग तुमसे मुहब्बत करने लगेंगे। [इब्नि माजः]

१४/४५२ भूक से रसूलुल्लाह (स०) की हालत

हज़्रत नुअ़मान (र०) बिन बशीर से रिवायत है कि हज़्रत उमर (र०) बिन अल्ख़त्ताब ने एक रोज़ लोगों की दौलत और फ़ारिग़ुल्बाली[8] का ज़िक्र किया, फिर कहने लगे कि रसूलुल्लाह (स०) भूक से झुक जाते और दुहरे हो जाते थे। ख़राब खजूर भी पेट भरने के लिए न मिलती थी। [मुस्लिम]

१५/४५३ हुज़ूर ने वफ़ात[9] के वक़्त क्या छोड़ा

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह (स०) की वफ़ात हुई तो मेरे घर में कोई चीज़ न थी कि उसको कोई जानदार खाले; सिवाय थोड़े से जौ के जो दीवारगीरी पर पड़े हुए थे। मैं उसको

१ कन्धा २ रोग से पहले स्वास्थ्य ३ ईश्वर और दुनिया के लोगों की प्रेम-प्राप्ति ४ संयम, परहेजगारी ५ लालसा, लोभ ६ निश्चिन्त ७ निस्पृह, बेनियाज़ ८ सम्पन्नता ९ मृत्यु।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खाती रही और ज़ियाद: दिन तक खाती रही। मगर जब मैंने उसको नापा तो वह ख़त्म हो गये। [तिर्मिज़ी]

हज़्रत उम्मुल मोमिनीन जुवैरिय्य: (र०) के भाई उमर (र०) बिन अल्हारिस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने अपनी वफ़ात के वक़्त दिरहम, दीनार, लौण्डी, ग़ुलाम, कुछ नहीं छोड़े; मगर एक सफ़ेद ख़च्चर जिसपर आप सवार होते थे और हथियार और ज़मीन जिसको मुसाफ़िरों के लिए सदक़ा कर दिया था। [बुख़ारी]

१६/४९७ हज़्रत मुस्अ़ब (र०) बिन उ़मैर को पूरा कफ़न भी मयस्सर न हुआ

हज़्रत ख़ब्बाब (र०) बिन अलअरत से रिवायत है कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ अल्लाह के लिए हिजरत की, पर बाज़ तो ऐसे थे कि उन्होंने अपनी नेकी का कोई फल (दुनिया) में न पाया। वह मुस्अ़ब बिन उमैर थे।† जब उहद के दिन शहीद हुए तो एक कम्बल छोड़ा था। जब हम उनका सर ढाँकते तो पाँव खुल जाते और पाँव ढाँकते तो सर खुल जाता। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमको हुक्म दिया कि हम उनके सर को छुपा दें और पाँव पर इज़्ख़र‡ रखा दें। और हममें से बाज़ ऐसे हैं जो इन मेहनतों के पक्के हुए फल मज़े से खा रहे हैं। [बुख़ारी-मुस्लिम]

१७/४९८ अल्लाह के नज़दीक दुनिया की हक़ीक़त मच्छर के पर के बराबर भी नहीं

हज़्रत सह्ल (र०) बिन सअ़्द (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अगर दुनिया अल्लाह के नज़दीक मच्छर के पर के बराबर भी हक़ीक़त रखती तो काफ़िर को उससे एक घूँट पानी न पिलाता। [तिर्मिज़ी]

१८/४९९ खालिस दुनिया अल्लाह की रह्मत से दूर है

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है—दुनिया अल्लाह की रह्मत से दूर और उसकी

‡ यह एक क़िस्म की ख़ुश्बूदार घास है।

† यह मुस्अ़ब बिन उमैर अपनी माँ बड़े लाडले थे। जिस वक़्त मक्का में सवार होकर निकलते तो आगे पीछे ग़ुलाम होते थे और जिस्म पर दो सौ की पोशाक होती थी। इस्लाम लाये तो इस ऐश व आराम को लात मारी और इस शान से जान दी कि फ़राग़त[1] से कफ़न भी न मिला। रज़ियल्लाहु अ़न्हुम व रज़ू अ़न्हु।

[1] आराम से, पूरी तौर पर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हर चीज़ अल्लाह की रह्‌मत से दूर है, सिवाये अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र[1] के और जो इससे मुतअ़ल्लिक़[2] है और सिवाय अ़िल्म सिखाने और सीखने वाले♦ के। [तिर्मिज़ी]

४१७ हुजूर का जायदादें बनाने का सहाबः (र०) को मना करना

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन मस्ऊ़द से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जायदादें न बनाओ तुमको दुनिया की रग़बत हो जायेगी। + [तिर्मिज़ी]

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र बिन अलआ़स से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमारे पास से गुज़रे और हम अपने एक छप्पर की मरम्मत कर रहे थे। आपने फ़रमाया, मैं देखता हूँ कि मौत इससे भी ज़ियादः क़रीब है। [अबुदावूद-तिर्मिज़ी]

४१८ माल फ़ित्नः है

हज़्रत कअ़ब (र०) बिन अ़याज़ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है, हर उम्मत के लिए एक फ़ित्नः था। और मेरी उम्मत का फ़ित्नः माल है। [तिर्मिज़ी]

♦ दरअसल जिस चीज़ की निस्बत[3] अल्लाह से नहीं है वह मुरदार[4] है और अल्लाह की रह्‌मत से दूर है; बिल्कुल जैसे कोई जानवर ग़ैरुल्लाह[5] के नाम पर ज़िबह किया गया हो। और जिस चीज़ की निस्बत अल्लाह से हो जाये, उसकी रिज़ा[6] की नीयत हो। वह सरासर अ़िबादत और रह्‌मत है। दुनिया की तमाम चीज़ों को इसपर क़यास कर लो। अगर महिज़ पेट भरना, तन ढाँकना, ऐश व आराम, फ़ख़्र व ग़ुरूर, जाह व एज़ाज़[7] मक़सूद[8] है तो वह अल्लाह की रह्‌मत से दूर है। अगर अल्लाह के हुक्म की तामील, बीवी बच्चों के हुक़ूक़ की अदायगी और ताअ़त व अ़िबादत[9] की क़ुव्वत हासिल करना मक़सूद है तो यह ऐन ताअ़त व अ़िबादत है। ग़रज़ दुनिया की जिस चीज़ में नूर[10] और रूह[11] पैदा होती है वह अल्लाह से तअ़ल्लुक़ और निस्बत की बिना पर; वरना हर चीज़ बेनूर व बेरूह है।

+ ऐसी चीज़ से रसूलुल्लाह (स०) ने सहाबा[12] (र०) को रोका है जिससे वह दुनिया में फँस जायें और जिहाद व क़ुरबानी[13] उनके लिए मुश्किल हो जाये। जायदाद व जागीर की यही खासियत है।

१ जप २ सम्बन्धित ३ सम्बन्ध ४ निष्प्राण ५ बिना अल्लाह का नाम लिये ६ प्रसन्नता-प्राप्ति ७ सम्मान-प्रतिष्ठा ८ अभीष्ट ९ उपासना व भक्ति १० तेज ११ चैतन्यता १२ मक्का से हिज्रत में आये हुए, सत्संगी १३ धर्मयुद्ध व त्याग-बलिदान।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४३९ [२१] ज़िन्दगी की असली ज़रूरतें

हज़्रत उसमान (र०) बिन अफ़्फ़ान से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, इब्नि आदम के लिए तीन चीज़ों के सिवा कुछ हक़ नहीं है—रहने के लिए घर, बदन ढाँकने के लिए कपड़ा, खाने के लिए रोटी और पानी। [तिर्मिज़ी]

४४० [२२] अपने माल में इन्सान का असली हिस्सा

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन शिख़्ख़ीर से रिवायत है कि मैं नबी (स०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप **'अल्हाकुमुत्तकासुरु'** तिलावत फ़रमा रहे थे। फ़रमाया, आदमी कहता है, मेरा माल—मेरा माल। ऐ आदम के बेटे! तेरे माल से इसके सिवा क्या है? जो तूने खाया, फ़ना किया; जो पहना, पुराना किया। या सदक़ा किया तो उसको आख़िरत के लिए ज़ख़ीर:[1] बना लिया। [मुस्लिम]

४४१ [२३] आँ हज़्रत से मुहब्बत करना फ़क़्र के लिए तैयार होना है

हज़्रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया, मैं आपसे मुहब्बत करता हूँ। आपने फ़रमाया, देखो क्या कहते हो? उसने कहा ख़ुदा की क़सम मैं आपसे मुहब्बत करता हूँ। (तीन मर्तबा कहा)। आपने फ़रमाया, अगर तुम मुझसे मुहब्बत करते हो तो फ़क़्र के लिए तैयार हो जाओ। बेशक जो मुझसे मुहब्बत करता है तो फ़क़्र उसके पास सैलाब से भी ज़ियाद: तेज पहुँचता है। [तिर्मिज़ी]

४४२ [२४] भूके भेड़िये से ज़ियाद: आदमी के लिए माल की हिर्स[2] ख़तरनाक है

हज़्रत कअ़ब (र०) बिन मालिक से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, दो भूके भेड़िये बकरियों के गल्ले में छोड़ दिये जायें और उनका सत्तियानास करें तो वह इतने ख़तरनाक नहीं जितनी आदमी के दीन के लिए दौलत व अ़िज़्ज़त की हिर्स ख़तरनाक होती है। [तिर्मिज़ी]

४४३ [२५] हुज़ूर (स०) को दुनिया को सराये फ़ानी समझना

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन मस्ऊ़द से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक चटाई पर आराम फ़रमाया। उससे

---

१ सञ्चित २ लालसा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आपके पहलुवों पर निशान पड़ गये। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम आपके लिए कोई नर्म बिस्तर न तैयार कर दें? आपने फ़रमाया, मुझे दुनिया से क्या मतलब! मैं दुनिया में उस सवार की तरह हूँ जो एक दरख़्त के नीचे साया ले, फिर चला जाये, और उसको छोड़ दे। [तिर्मिज़ी]

२६/४४४ फ़ुक़रा[1] उमरा से बहुत पहले जन्नत में दाखिल होंगे

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, फ़ुक़रा उमरा से पाँच सौ साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे। [तिर्मिज़ी]

हज़्रत इब्नि अब्बास (र०) और अिमरान (र०) बिन अल्हुसैन से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, मैंने जन्नत का मुआयना किया तो देखा कि अक्सर उसमें फ़ुक़रा हैं। और दोज़ख़ को देखा तो ज़ियादःतर औरतें देखीं§। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत उसामः बिन ज़ैद (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, मैं जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा हुआ, देखा तो उसमें अक्सर मसाकीन[2] थे। और दौलतमन्द रोक दिये गये थे। और दोज़ख़ वालों को दोज़ख़ की तरफ़ हुक्म दे दिया गया था। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२७/४४८ अल्लाह के सिवा हर चीज़ बेहक़ीक़त[3] है

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, सबसे अच्छी बात जो एक शाअिर की ज़बान से अदा हुई है, (यह मिसरा है।) जो लबीद (शाअिर) ने कहा है, सुन लो! अल्लाह के सिवा हर चीज़ बातिल (बेहक़ीक़त) है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

§ आँ हज़्रत (स०) ने औरतों के एक मजमे में वजह बयान फ़रमायी कि तुम नाशुक्री बहुत करती हो। अगर कोई किसी औरत के साथ उम्र भर इहसान करे, फिर ज़रा सी कमी उससे हो जाये, तो वह औरत सारी उम्र के इहसानात और सुलूक पर पानी फेर देती है और कहती है कि आज तक तुमने कोई भलाई नहीं की।

---

१ दरवेश, धन से आसक्ति न रखनेवाले २ ग़रीब ३ मिथ्या, भ्रम।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फ़ाक़ा, तंगी और क़नाअ़त[1] की फ़ज़ीलत[2] और नफ़सपरस्ती[3] की बुराई

आयात

फ़ख़लफ़ मिम्बअ्दिहिम् ख़ल्फ़ुन् अज़ाअुस्सलात व्वत्तबअुश्शहवाति फ़सौफ़ यल्क़ौन ग़य्यन् ला (५९) इल्ला मन् ताब व आमन व अमिल सालिहन् फ़अुलाइक यद्ख़ुलूनल्जन्नत व ला युज़्लमून शैअन् ला (६०)

फिर उनके बाद (बाज़े) ऐसे नाख़लफ़ पैदा हुए जिन्होंने नमाज़ को बरबाद किया और नफ़सानी ख़्वाहिशात की पैरवी की। सो यह लोग अन्क़रीब आख़िरत में ख़राबी देखेंगे। हाँ मगर जिसने तौबा करली और ईमान ले आया और नेक काम करने लगा सो यह लोग जन्नत में जायेंगे और उनका ज़रा नुक़सान न किया जायेगा।

[सू० मर्यम, रु० ४ आ० ५९-६०]

फ़ख़रज अला क़ौमिही फ़ी ज़ीनतिही त क़ालल्लज़ीन युरीदूनल्-ह़यातद्दुन्या या लैत लना मिस्‌ल मा ऊतिय क़ारूनु इन्नहू लज़ू ह़ज़्ज़िन् अज़ीमिन् (७९) व क़ालल्लज़ीन ऊतुल्‌इल्म वैलकुम् सवाबुल्लाहि ख़ैरुल्लिमन् आमन व अमिल सालिहन्… ।

फिर एक बार ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि वह अपनी आराइश (और शान) से अपनी बिरादरी के सामने निकला। जो लोग उसकी बिरादरी में दुनिया के तालिब थे कहने लगे, क्या ख़ूब कि हमको भी वह साज़ व सामान मिलता जैसा क़ारून[4] को दिया गया है। वाक़ई वह बड़ा साहबे नसीब[5] है। और जिन लोगों को दीन की फ़हिम[6] अ़ता हुई थी वह (उन हरीसों[7] से) कहने लगे कि अरे तुम्हारा सत्तियानास हो, तुम इस दुनिया पर क्या ललचाते हो। अल्लाह तआ़ला के घर का सवाब इस दुनियावी कर्रु फ़र्र[8] से हज़ार दर्जा बेहतर है। उस शख़्स के लिए जो ईमान लाये और नेक अमल करे। [सू० क़सस़, रु० ८ आ० ७९-८०]

सुम्म लतुस्‌अलुन्न यौमअिज़िन् अनिन्नअ़ीमि ।

---

१ संतोष २ श्रेष्ठता ३ विषय-भोग का सेवन ४ क़ारून का खज़ाना प्रसिद्ध है ५ भाग्यवान ६ समझ ७ लोलुपों ८ शान-शौक़त ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फिर और बात सुनो कि उस रोज़ तुम सबसे निअ़मतों की पूछ होगी। [सू० तकासुर रु० १ आ० ८]

मन् कान युरीदुल्आजिलत अ्ज्जल्ना लहू फ़ीहा मा नशा'उ लिमन् नुरीदु सुम्म जअ़ल्ना लहू जहन्नम ज यस्लाहा मज़्मूमम्-मद्हूरन्।

जो शख़्स दुनिया (के नफ़े) की नीयत रक्खेगा हम ऐसे शख़्स को दुनिया में जितना चाहेंगे जिसके वास्ते चाहेंगें फ़िलहाल दे ही देंगे। फिर उसके लिए जहन्नम तजवीज़ करेंगे। वह उसमें बदहाल, (राँदए दरगाह[1]) होकर दाख़िल होगा। [सू० बनी इस्राईल, रु० २ आ०१८]

अहादीस

४४६ अहलें बैत (र०) ने दो दिन मुतवातिर सेर होकर[2] नहीं खाया

हज़्रत आयशाः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के घर वाले दो दिन मुतवातिर जौ की रोटी से सेर न हुए, हत्ताकि आपकी वफ़ात हो गयी। [बुख़ारी-मुस्लिम]

४४७ दो दो महीने हुज़ूर (स़०) के घर में आग नहीं जलती थी

हज़्रत उ़रवः (र०) से रिवायत है कि हज़्रत आयशः (र०) कहती थीं, ख़ुदा की क़सम ऐ मेरे भांजे, हम चाँद को देखते थे एक चाँद फिर दूसरा चाँद, फिर तीसरा; तीन चाँद दो महीने में और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के घरों में आग नहीं जलती थी। मैंने कहा ऐ ख़ाला! फिर आप कैसे जिन्दगी गुज़ारती थीं? फ़रमाया, दो चीज़ों पर। खजूर और पानी पर। बाज़ अन्सार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पड़ोसी थे। उनके पास दूध देनेवाले जानवर होते थे। वह रसूलुल्लाह (स़०) को दूध भेजते तो हमलोग भी पीते थे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

४४८ हज़्रत अबू हुरैरः (र०) का हुज़ूर (स़०) का ख़्याल करके दावत को रद कर देना

हज़्रत सओ़दुल मुक़्बिरी (र०) से रिवायत है कि हज़्रत अबू हुरैरः (र०) कुछ लोगों के पास से गुज़रे, उनके पास भुनी हुई बकरी थी।

१ जन्नत या पुण्यात्माओं की जगह से निकाला हुआ २ तृप्त होकर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उन्होंने उनको बुलाया। उन्होंने इन्कार किया और कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुनिया से वफ़ात पा गये और जौ तक कि रोटी से सेर[1] न हुए। [बुख़ारी-मुस्लिम]

४७९ आँ हज़्रत (स०) की गुज़रान

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वफ़ात हो गयी। न चौकी पर खाना खाया न चपाती खायी। [बुख़ारी]

एक रिवायत में है कि भुनी हुई बकरी आँख से कभी देखी नहीं।

हज़्रत नुअ़मान (र०) बिन बशीर से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नहीं देखा कि आप बड़े खजूर ही से पेट भर सकते। [मुस्लिम]

४८० भूक का ग़लबः और एक अन्सारी की ज़ियाफ़त

हज़्रत सुहल बिन सऽद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नबुव्वत के ज़माने से लेकर इन्तिक़ाल फ़रमाने तक मैदा नहीं देखा। उन लोगों ने पूछा, क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में छलनियाँ नहीं थीं। बोले नहीं, आपकी वफ़ात हो गयी मगर छलनियाँ नहीं देखीं। पूछा, बग़ैर छाने जौ कैसे खाते थे? बोले, हम जौ को पीसकर फूँकते थे तो चोकर उड़ जाता था और आटे को गूँध लेते थे। [बुख़ारी]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) एक दिन या रात को बाहर तशरीफ़ लाये। हज़्रत अबूबक्र (र०) और हज़्रत उमर (र०) भी बाहर थे। आपने फ़रमाया, क्यों बाहर निकले? दोनों हज़्रात ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! भूक के सबब से। आपने फ़रमाया, उसकी क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मैं भी इसी वजह से निकला हूँ।

फिर आपने फ़रमाया, खड़े रहो। वह दोनों आपके साथ रहे। फिर एक अन्सार के पास आये। मालूम हुआ कि वह इस वक़्त घर पर नहीं हैं। उनकी बीवी ने ख़ुशआमदेद कहा। आपने फ़रमाया तुम्हारे शौहर कहाँ हैं? कहा, मीठा पानी लेने गये हैं। इतने में अन्सारी आ गये। आपको और आपके दोनों साथियों को देखकर अर्ज़ किया, अलहम्दुलिल्लाह! आज के दिन मुझसे ज़ियादः अच्छे मेहमान रखनेवाला कोई नहीं। फिर घर जाकर एक खजूर की गौद ले आये, जिसमें गद्दर ख़ुश्क

---

१ तृप्त।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और पक्के खजूर थे। अर्ज़ किया, नोश फ़रमाइए; फिर एक छुरी ली। आपने फ़रमाया, देखना दूध देने वाली बकरी ज़िबह न करना। उन्होंने एक बकरी ज़िबह की। आपने बकरी का गोश्त और खजूर खाये। पानी पिया। यहाँ तक कि सेर[1] हो गये और सेराब[2] हो गये। आपने हज़्रत अबूबक्र (र०) और हज़्रत उमर (र०) से फ़रमामा, क़सम है उसकी जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि तुमसे क़ियामत के दिन इन निअ़मतों के मुतअ़ल्लिक़ सवाल होगा। भूक ने तुमको तुम्हारे घरों से निकाला और तुम निअमत खाकर ही पलटे। [मुस्लिम]

४६१ एक सहाबी की तक़रीर

हज़्रत ख़ालिद (र०) बिन अ़मर अलअ़द्वी से रिवायत है कि अुतबः बिन ग़ज़वान (यह बसरे के हाकिम थे) ने तक़रीर की। अल्लाह की तारीफ़ की सना[3] के बाद कहा अम्मा बऽदु दुनिया ने जुदाई का एलान किया और तेज़ चली और अब इसमें कुछ तलछट, बर्तन के तलछट की तरह बाक़ी रह गया। इसको इसका मालिक जमा करता है। और तुम ऐसी जगह जानेवाले हो जिसका ज़वाल[4] नहीं। पस तुम भलाइयों के साथ जाओ। हमने सुना है कि पत्थर जहन्नम में गिराया जायेगा, तो वह सत्तर साल में भी उसकी थाह न पायेगा। ख़ुदा की क़सम वह गहरी दोज़ख़ आदमियों से भरी जायेगी। क्या तुमको हैरत है? और हमने सुना है कि जन्नत् के दरवाज़े के एक बाज़ू से दूसरे बाज़ू की चौड़ाई चालीस साल की राह है। और उस पर ऐसा दिन आयेगा कि हुजूम[5] से बिल्कुल भरा होगा। मुझे आज याद है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ हम सात आदमी थे। और हमारे पास खाने को कुछ नहीं होता था। दरख़्त के पत्ते चबाते थे, यहाँ तक कि हमारे मसूढ़े ज़ख़्मी हो जाते थे। मैंने एक चादर ली, उसके दो टुकड़े किये। एक टुकड़ा मैंने बाँधा और दूसरा सऽद (र०) बिन मालिक ने। अब हममें से आज कोई ऐसा नहीं जो शहर पर हाकिम न हो। अल्लाह से पनाह चाहता हूँ कि मैं अपने नज़दीक बड़ा हूँ और अल्लाह के नज़दीक हक़ीर[6] हूँ। [मुस्लिम]

४७२ लिबास जिसमें रसूलुल्लाह (स०) ने वफ़ात पाई

हज़्रत अबू मूसा अशअ़री (र०) से रिवायत है कि हज़्रत आयशः (र०) ने एक चादर और एक तहबन्द निकाल कर दिखाया और फ़रमाया रसूलुल्लाह (स०) ने इन्हीं दो कपड़ों में वफ़ात पायी। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ तृप्त २ संतुष्ट ३ स्तुति ४ विनाश, पतन ५ जन-समूह ६ तुच्छ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४८८ सहाबा (र०) ने पत्ते खा-खाकर जिहाद किया

हज़्रत सऽद (र०) बिन अबी वक़्क़ास से रिवायत है कि मैं पहला अरब हूँ जिसने अल्लाह के रास्ते में तीर चलाया। हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ लड़ते थे। जब खाने को कुछ न होता था तो हबला@ के और बबूल के पत्ते खाते थे। यहाँ तक कि हमारा पाख़ाना बकरी की मेंगनी की तरह बिल्कुल ख़ुश्क होने लगा था।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

४८९ आँ हज़्रत (स०) की दुआ

हज़्रत अबू हुरैरा (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! आले मुहम्मद को बक़दरे ज़रूरत रिज़्क़ दे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

४९० हज़्रत अबू हुरैरः (र०) की भूक व नाताक़ती और आँ हज़्रत (स०) की फ़िरासत[1] व ज़ियाफ़त[2]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) फ़रमाते हैं कि क़सम है उस ज़ात की जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, मैं भूक की शिद्दत से ज़मीन पर अपना पेट लगा लेता था। और पेट पर पत्थर बाँध लेता था। एक दिन भूक की बेताबी से मैं गुज़रगाह पर बैठ गया। नबी (स०) उधर से गुज़रे। मुझे देखा तो मुस्कुराये मेरे चेहरे से भूक और नक़ाहत[3] को ताड़ लिया और जो दिल में था समझ गये। फिर फ़रमाया, अबू हुरैरः (र०)! मैंने अर्ज़ किया, हाज़िर हूँ या रसूलल्लाह! फ़रमाया, मेरे साथ आओ। मैं आपके पीछे चला। आप घर तशरीफ़ ले गये और मेरे लिए इजाज़त चाही। जब मुझे इजाज़त मिली तो मैं गया। देखा दूध का एक प्याला रक्खा है। आपने फ़रमाया, यह कहाँ से आया। लोगों ने कहा कि फ़लाँ साहब या फ़लाँ ख़ातून ने आपको हदयः[4] भेजा है। आपने फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरः (र०)! मैंने अर्ज़ किया, हाज़िर हूँ या रसूलल्लाह! फ़रमाया, अहले सुफ़्फ़ः को बुलाओ§। मुझ पर यह बात बहुत गिराँ[5] गुज़री।

@ एक जंगली दरख़्त है।

§ अहले सुफ़्फ़ः इस्लाम के मेहमान थे; उनका कोई ठिकाना नहीं था। न घर था न माल और न कोई सहारा था। जब आँ हज़्रत (स०) के पास सद्क़ा का माल आता तो आप उनको भेजते थे, और उसको नोश नहीं फ़रमाते थे। और जब हदयः आता था तो आप भी नोश फ़रमाते थे और उनको भी शरीक करते थे।

---

१ कुशाग्रबुद्धि २ अतिथि-सत्कार ३ निर्बलता, शिथिलता ४ भेंट ५ असह्य, भारी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैंने अपने दिल में कहा, यह दूध अहलें सुफ़्फ़ः को क्या काफ़ी होगा ? मैं पीने का ज़ियादः मुस्तहक़[1] हूँ कि कुछ क़ुव्वत आये। वहरहाल उनको बुलाया। वह लोग आये और इजाज़त के वाद अपनी-अपनी जगह बैठ गये। आपने फ़रमाया, अबू हुरैरः (र०)! मैंने अर्ज़ किया, हाज़िर हूँ या रसूलल्लाह ! फ़रमाया, यह लो और उनको दो। हज़्रत अबू हुरैरः (र०) कहते हैं कि मुझे उम्मीद न थी कि दूध मुझे भी मिलेगा। मगर अल्लाह और उसके रसूल की ताअ़त[2] से कोई चारा न था। मैंने लिया और एक आदमी को दिया। उसने पिया यहाँ तक कि सेराब[3] हो गया और प्याला पलटा दिया। मैं इसी तरह नौबत ब नौबत पिलाता हुआ हुज़ूर (स०) तक पहुँचा। और पूरी जमात सेराव हो चुकी। आपने प्याला लिया और अपने मुबारक हाथों पर रखकर मेरी तरफ़ देखा और मुस्कुराये। फिर फ़रमाया, अबू हुरैरः (र०) ! मैंने अर्ज़ किया, हाज़िर हूँ या रसूलल्लाह। फ़रमाया, हम और तुम वाक़ी रहे। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! आपने सच फ़रमाया। फ़रमाया, बैठो और पियो। मैं बैठ गया और पीने लगा। आपने फ़रमाया, पियो। मैंने पिया। आप बराबर यही फ़रमाते रहे कि पियो। मैंने कहा, उसी की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ नबी बनाकर भेजा है, अब पीने की गुन्जाइश नहीं है। आपने फ़रमाया, मुझे दिखाओ। मैंने आपको प्याला दिया, आपने अल्लाह की तारीफ़ की और बिस्मिल्लाह पढ़कर बचा हुआ नोश फ़रमा लिया। [बुख़ारी]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) ही फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मिंबर और हज़्रत आयशः (र०) के हुजरे के दर्मियान गिर पड़ता था और ग़शी तारी हो जाती थी; लोग आते थे और मेरी गर्दन पर पाँव रख देते थे†। वह समझते थे कि मैं मजनूँ[4] हूँ। हालाँकि मैं मजनूँ नहीं था। भूक की वजह से मेरी हालत मजनूनों की सी हो जाती थी। [बुख़ारी]

४९६ जौ के लिए रसूलुल्लाह (स०) की ज़िर्रः रिहन[5] रक्खी हुई थी

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के वफ़ात के वक्त आपकी एक ज़िर्रः किसी यहूदी के पास तीस साअ़ जौ पर रिहन रक्खी हुई थी। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ पात्र, अधिकारी २ बन्दगी ३ तृप्त ४ विक्षिप्त, दीवाना ५ गिरवीं।

---

† उस जमाने में मजनूँ का इलाज ऐसा ही होता था कि गर्दन पर पाँव रखकर दबाते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की एक ज़िर्रः जौ पर रिहन रक्खी थी। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास जौ की रोटी और चिकटी हुई चर्बी लेकर गया और आप फ़रमाते थे कि मुहम्मद (स०) के नौ घरों में किसी घर में सुबह व शाम के लिए एक साअ़[1] भी नहीं है।

४८७ अहलॅ सुफ़्फ़ः की गुज़रान

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि मैंने सत्तर अहलॅ सुफ़्फ़ः को देखा। उनमें से कोई ऐसा न था कि उसके पास ओढ़ने-बाँधने को पूरा कपड़ा हो, चादर होती थी या तहबन्द। वह अपनी गर्दनों में उसको गिरह देकर बाँध लेते थे। किसी के निस्फ़ पिंडली तक पहुँचती थी और बाज़ के टख़नों तक। वह इस ख़तरे से उसको समेट लेते थे कि लोग उनको नंगे बदन न देखें। [बुख़ारी]

४८८ रसूलुल्लाह (स०) का बिस्तर

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का बिस्तर चमड़े का होता था, और उसमें खजूर के रेशे भरे होते थे। [बुख़ारी]

४८९ सहाबा (र०) किराम की गुज़रान

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे। एक अन्सारी ने आपको सलाम किया, और फिर पीछे फिर गये। रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, ऐ भाई! मेरे भाई सऽद बिन अुबादः कैसे हैं? अर्ज़ किया, अच्छे हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुममें से कौन-कौन उनकी इयादत[2] को चलेगा? फिर आप खड़े हो गये। आपके साथ हम भी खड़े हो गये। हम कुछ ऊपर दस आदमी थे। न हमारे पास जूते थे, न मोज़े थे, न टोपियाँ, और न कुर्ते थे। लोग यूँ ही इस संगलाख़[3] ज़मीन पर चल खड़े हुए यहाँ तक कि उनके पास आये तो जो लोग उनके पास बैठे थे वह हट गये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और हम लोग उनसे क़रीब हो गये। [मुस्लिम]

४९० उम्मत के तब्क़े

हज़्रत अिम्रान (र०) बिन अल्हुसैन से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

१ लगभग तीन सेर २ ख़ैर सल्लाह लेने ३ कँकरीली-पथरीली।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुममें सबसे अच्छी वह नस्ल है जो इस वक़्त मेरे साथ मौजूद है। फिर जो इनके बाद आनेवाली नस्लें हैं। फिर जो उनके बाद आनेवाली नस्लें हैं। हज़्रत अिम्रान (र०) कहते हैं कि मुझे याद नहीं आपने दो मर्तबा फ़रमाया या तीन मर्तबा। फ़िर उनके बाद ऐसे लोग आयेंगे जो गवाही देंगे♦, हालाँकि उनसे गवाही नहीं तलब की जायेगी। और ख़ियानत[1] करेंगे और एतिबार न किया जायेगा। और नज़र[2] मानेंगे लेकिन पूरा न करेंगे। और उनमें मोटापा ज़ाहिर होगा§। [बुख़ारी-मुस्लिम]

४६१ खर्च करने के उसूल

हज़्रत अबू उमामः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ आदम के बेटे! अगर तू फ़ाज़िल चीज़ें ख़र्च कर डालेगा तो तेरे लिए बेहतर होगा। और अगर तू उसे रोक रक्खेगा तो यह तेरे लिए बुरा होगा। हाँ बक़दरें ज़रूरत रखने पर तुझे कोई मलामत न की जायेगी। और पहले उस शख़्स से इब्तिदा कर जिसका तू कफ़ील[3] है। [बुख़ारी]

४६२ दुनिया की ख़ुशनसीबी

हज़्रत उबैदुल्लाह (र०) बिन मुह्सिन से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो शख़्स अपने घर में इत्मीनान से है, तन्दुरुस्ती और उसके पास पूरे दिन की रोज़ी है, तो गोया दुनिया का पूरा ऐश और ज़िन्दगी की सब निअमतें उसको हासिल हैं। [तिर्मिज़ी]

हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र बिन अलआस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, वह बड़ा ख़ुशनसीब है जिसको इस्लाम की दौलत नसीब हुई; और उसके पास बक़दर ज़रूरत रिज़्क़[4] भी है। अल्लाह ने जो कुछ उसको अता फ़रमाया उसपर उसको क़ानिअ[5] बना दिया। [मुस्लिम]

हज़्रत फ़ुज़ालः (र०) बिन उबैद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ख़ुशनसीब है वह जिसको इस्लाम

♦ यानी झूठी गवाही बड़े शौक़ से देंगे।

§ यानी बड़े नाज़-परवरदः तन-आसान और राहत-तलब होंगे; बैठे-बैठे खाने और आराम की ज़िन्दगी गुज़ारने से फ़रबही और मोटापा पैदा।

---

१ ग़बन २ मन्नत ३ पोषक ४ रोज़ी ५ आत्मसंतोषी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की तौफ़ीक़ मिली, और उसको बक़दरॆ ज़रूरत ज़िन्दगी का सामान हासिल है, और वह उसपर क़ानिअ् है। [तिर्मिज़ी]

४६६ १८ रातों का फ़ाक़:

हज़्रत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके घर वाले मुतवातिर कई रातें ख़ाली पेट गुज़ारते थे कि रात का खाना मैस्सर न आता था। और उनकी रोटियाँ जौ की होती थीं। [तिर्मिज़ी]

४६४ १९ फ़ाक़: की फ़ज़ीलत[1]

हज़्रत फ़ुजाल: (र०) बिन उबैद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब लोगों को नमाज़ पढ़ाते तो लोग भूक की वजह से नमाज़ में गिर-गिर पड़ते और वह असहाबॆ सुफ़्फ़: थे। देहाती कहते थे कि यह मजनूँ हैं। जब आप नमाज़ पूरी करते और उनकी तरफ़ फिरते तो फ़रमाते कि अगर तुमको मालूम हो जाये कि अल्लाह तआला के यहाँ तुमको क्या-क्या निअमतें मिलेंगी तो तुम अपनी इस हालत (फ़क़्र व तंगी[2]) को और भी पसन्द करने लगो। [तिर्मिज़ी]

४६८ २० आदमी के लिए कितना खाना ज़रूरी है

हज़्रत मिक़दाद बिन मअदी करिब (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि आदमी ने किसी बर्तन को पेट से बदतर नहीं भरा। आदम के बेटे को इतना खाना काफ़ी है कि उसकी पीठ सीधी रहे। अगर उसके बाद भी कुछ ज़रूरी है तो एक तिहाई उसके खाने के लिए और एक तिहाई उसके पीने के लिए और एक तिहाई उसकी साँस के लिए। [तिर्मिज़ी]

४६६ २१ सादगी व जफ़ाकशी[3]

हज़्रत अयास (र०) बिन सअलब: अल्अन्सारी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों ने एक दिन रसूलुल्लाह

अस्ल चीज़ जो ज़िन्दगी को तल्ख़[4] और दुनिया को दोज़ख़ का नमूना बनाती है और हर वक़्त बेचैन रखती है वह दौलत व एज़ाज़ की बढ़ी हुई हिर्स व हविस है जो किसी हद पर जाकर रुकती नहीं। हदीस में जिसको दुनिया का ऐश कहा गया है वह इस वक़्त लाखों इन्सानों को हासिल है। मगर फिर भी आराम नहीं क्योंकि आख़िरी चीज़ यानी क़नाअत[5] नहीं है।

---

१ श्रेष्ठता २ दीनता, दरिद्रता ३ परिश्रम ४ कड़ुई ५ सब्र, संतोष।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने दुनिया का ज़िक्र किया। आपने फ़रमाया, सुनो सुनो, सादगी ईमान है। [अबू दावूद]

४६६७ जिहाद में ग़ैबी दावत[1]

हज़्रत जाबिर (र०) बिन अ़ब्दुल्लाह (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने क़ुरैश के क़ाफ़ले से मुक़ाबले के लिए भेजा। और हज़्रत अबू अुबैदः (र०) को हमारा अमीर किया और एक थैला खजूर का ज़ादॅ राह दिया। हज़्रत अबू अुबैदः (र०) रोज़ हमको एक-एक खजूर देते थे। इसके सिवा और कुछ था ही नहीं। लोगों ने अर्ज़ किया, आप लोग कैसे एक-एक खजूर पर बसर करते थे? कहा, हम उसको इस तरह चूसते थे जैसे बच्चा चूसता है। फिर उसपर पानी पी लेते थे तो हमको एक दिन और एक रात तक काफ़ी होता था। और दरख़्त पर लकड़ी मारकर पत्ते गिरा लेते, फिर पानी से घिस कर खाते थे। एक दिन समन्दर के किनारे-किनारे चले तो हमको समन्दर के किनारे पर एक बड़ा टीला दिखाई दिया। जब उसके पास पहुँचे तो देखा कि वह एक जानवर है, जिसको अम्बर कहते हैं। हज़्रत अबू उ़बैदः (र०) बोले, यह मुरदार है। और कहा कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के भेजे हुए हैं और अल्लाह के रास्ते में हैं और तुम सब मुज़्तर[2] (मजबूर व परेशान हो गये,) पस खाओ। हम उसको एक महीना तक खाते रहे और हम सब तीन सौ थे। हम लोग उसको खाकर मोटे हो गये। उसकी आँखों में घड़ा डिबोकर चर्बी निकालते थे। और गाय के टुकड़ों की तरह उसके टुकड़े काटते थे। हज़्रत अबू उ़बैदः (र०) ने फ़ौज से तेरह आदमी लिये, उसकी आँख के गढ़े में बिठा दिया और उसकी पसलियों में से एक पसली लेकर उसको खड़ा किया। फिर एक बड़े ऊँट पर कजावः[3] कसकर उसको उसके नीचे से गुज़ार दिया। हमने नाश्ते के लिए पार्चे बनाये फिर मदीना आये। जब हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आये और आपसे इसका ज़िक्र किया तो आपने फ़रमाया, वह तुम्हारा रिज़्क़[4] था। अल्लाह ने तुमको दिया था। अगर तुम्हारे पास उसका कुछ गोश्त हो तो हमको खिलाओ। फिर हमने आपको भेजा तो आपने खाया। [मुस्लिम]

४६६८ एक दावत में रसूलुल्लाह (स०) के एजाज़[5] से खाने में बर्कत

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि हम ख़न्दक़ खोद रहे थे।

---

१ दैवी आहार, ईश्वर की ओर से प्राप्त भोजन २ बेचैन ३ ऊँट की काठी ४ आहार ५ चमत्कार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक सख़्त पत्थर आ गया। लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आये और अर्ज़ किया कि ख़न्दक़ में एक सख़्त पत्थर आ गया है। आपने फ़रमाया, मैं उतरूँगा। और आपके पेट में भूक की वजह से पत्थर बँधा था; तीन दिन से हम लोगों ने कुछ नहीं खाया था। नबी (स०) ने एक कुदाल ली और पत्थर पर ऐसा मारा कि उसको बालू की तरह रेज़ः रेज़ः कर दिया। फिर मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से घर जाने की इजाज़त तलब की। आपने इजाज़त दी तो मैं घर आया और अपनी बीवी से कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ऐसी हालत देखी कि मुझसे सब्र न हो सका। तुम्हारे पास कुछ है? बोलीं, मेरे पास कुछ जौ है और एक छोटा बकरी का बच्चा है। मैंने बच्चे को ज़बह किया और बीवी ने जौ पीसा। मैंने गोश्त के टुकड़े काटकर हाँडी में डाले और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास उस वक़्त आया कि हाँडी चूल्हे पर चढ़ चुकी थी और क़रीब तैयारी के थी। और आँटा भी गूँध चुका था। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! थोड़ा सा खाना तैयार कराया है, आप तशरीफ़ ले चलिए और अपने साथ दो चार आदमियों को भी लेते चलिए। आपने फ़रमाया, कितना खाना है? मैंने बताया। आपने फ़रमाया बहुत है और अच्छा है। अपनी बीवी से कह दो कि हाँडी न उतारें और रोटी उस वक़्त तक न पकायें जब तक मैं न आ जाऊँ। फिर आपने फ़रमाया, खड़े हो। तो मुहाजिरीन और अन्सार खड़े हो गये। मैं घर गया और बीवी से कहा, अरी नेकबख़्त! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ ला रहे हैं, और आपके साथ मुहाजिरीन व अन्सार भी हैं। बीवी ने कहा क्या तुमसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूछा था? मैंने कहा हाँ। (इतने में आप तशरीफ़ ले आये) फ़रमाया, आओ, दाख़िल होते जाओ, फ़िक्र न करो। फिर रोटी के टुकड़े करके उसपर गोश्त रखने लगे। जब हाँडी से निकाल चुकते तो हाँडी और तन्नूर[1] को ढक देते थे। फिर अपने साथियों की तरफ़ बढ़ाते थे; फिर निकालते थे। बराबर तोड़ते और डालते रहे, यहाँ तक कि वह सब सेराब[2] हो गये और बच भी गया। आपने फ़रमाया, तुम भी खाओ, और लोग आज बहुत फ़ाक़े से हैं, उनको भी भेजो।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

एक रिवायत में है कि हज़रत जाबिर (र०) ने कहा, जब ख़न्दक़ खोदी जा रही थी मैंने नबी (स०) को सख़्त भूक की हालत में देखा। मैं अपनी बीवी के पास आया और कहा, तुम्हारे पास कुछ है? मैंने नबी (स०) को बहुत भूक की हालत में देखा (है)। तो उन्होंने एक थैला निकाला।

१ तन्दूर २ तृप्त।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसमें एक साअ् जौ थे; और घर में एक छोटा बकरी का बच्चा था। उसको ज़बह किया और जौ को पीसा और वह मेरे फ़ारिग़ होने तक फ़ारिग़ हो गयीं। उसको टुकड़े करके हाँडी में डाला। फिर मैं रसूलुल्लाह (स०) की तरफ़ चला। मेरी बीवी ने कहा मुझे शरमिन्दः न करना‡। मैं आया और आपके कान में चुपके से कहा कि या रसूलल्लाह! हमने एक जानवर ज़बह किया है और एक साअ् जौ भी पीसे हैं। पस आप भी चलिए और कुछ लोग और भी। रसूलुल्लाह (स०) ने पुकारा, ऐ ख़न्दक़वालो! जाबिर (र०) ने दावत की है, तुम सब आओ। फिर नबी (स०) ने फ़रमाया, न हाँडी उतारना और न रोटी पकाना जब तक मैं न आ जाऊँ। मैं आया और रसूलुल्लाह (स०) लोगों के आगे-आगे तशरीफ़ ला रहे थे। मेरी बीवी मुझे बुरा-भला कहने लगीं। मैंने कहा कि मैंने आँ हज़्रत (स०) से वही अर्ज़ किया था जो तुमने कहा था। मैंने आँटा निकाला। आपने लुआबॅ-दहन[1] उसमें डाला और बरकत की दुआ की। फिर हाँडी में भी लुआबॅ दहन डालकर बरकत की दुआ की और मेरी बीवी से फ़रमाया, रोटी पकानेवाले को बुलाओ, तुम्हारे साथ वह भी रोटी पकाये; और हाँडी न उतारना, चूल्हे पर ही से निकालते रहो। खानेवाले एक हज़ार थे। ख़ुदा की क़सम सबने खा लिया और बच भी गया। वह लोग चले गये। और हमारी हाँडी वैसी ही खदखदा रही थी। और रोटी भी वैसी ही पक रहीं थीं।

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि हज़्रत अबू तलहः (र०) ने हज़्रत उम्मॅ सुलैम से कहा, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आवाज़ॅ मुबारक सुनी है। कमज़ोर है। मैं समझता हूँ भूक की वजह से है। तुम्हारे पास कुछ है? बोलीं, हाँ। फिर जौ की रोटियाँ निकालीं, उनको अपने दोपट्टः के एक कोने में लपेटकर मेरे बग़ल में छुपा दीं। और बाक़ी हिस्से का मेरे सर पर अमामः बाँध दिया। और रसूलुल्लाह (स०) की ख़िदमत में पहुँचा। आप उस वक़्त लोगों के साथ मस्जिद में तशरीफ़-फ़रमा थे। मैं आपके क़रीब खड़ा हो गया। आपने फ़रमाया, क्या तुमको अबू तलहः (र०) ने भेजा है। मैंने कहा, जी हाँ। आपने फ़रमाया, खड़े हो और चलो। और मैं आपसे पहले चला और पहुँचकर अबू तलहः (र०) को ख़बर दी कि हुज़ूर (स०) लोगों के साथ तशरीफ़ ला रहे हैं। हज़्रत अबू तलहः (र०) ने कहा, ऐ उम्मॅ सुलैम!

‡ यानी मजमएँ आम में दावत का एलान करो और एक दम से बहुत से आदमी आ जायें। खाना थोड़ा है। नाहक़ मुझे शरमिन्दः होना पड़े।

१ थूक, मुखस्राव।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रसूलुल्लाह (स़०) लोगों के साथ तशरीफ़ ला रहे हैं। और हमारे यहाँ इतना खाना नहीं कि उनको काफ़ी हो। उन्होंने कहा, अल्लाह और उसके रसूल ज़ियादः जानते हैं। फिर हज़्रत अबू तलहः (र०) पेशवाई को आगे बढ़े और हज़्रत (स़०) को अपने साथ लाये। आपने फ़रमाया, ऐ उम्मॅ सुलैम! जो कुछ तुम्हारे पास हो लाओ। तो वह वही रोटियाँ लायीं। आपने फ़रमाया, इनको तोड़ो। उन्होंने तोड़ा और उसपर वजाए सालन के घी निचोड़ दिया। और रसूलुल्लाह (स़०) ने उसमें वरकत की दुआ की। और फ़रमाया, बारी-बारी से दस-दस को इजाज़त दो, तो उनको इजाज़त दी। वह आते गये और खाते गये। यहाँ तक कि सेर[1] हो गये; और वह सत्तर या अस्सी आदमी थे।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

एक रिवायत में है कि दस आते थे और दस जाते थे। और उनमें से कोई नहीं बचा जो न दाख़िल हुआ हो, न खाया हो और न सेर हुआ हो। और जब खाने को देखा तो वह उसी तरह था जैसा खाना शुरू करने से पहले था।

और एक रिवायत में है कि दस-दस ने मिलकर खाया। यह अस्सी आदमियों की जमात थी। फिर रसूलुल्लाह (स़०) ने खाना नोश फ़रमाया। और आपके बाद आपके घर वालों ने। फिर बच गया। और एक रिवायत में है कि बचा हुआ अपने हमसायों[2] को पहुँचाया।

और एक रिवायत में हज़्रत अनस (र०) का बयान है कि एक दिन मैं रसूलुल्लाह (स़०) के पास आया और आपको आपके साथियों के पास बैठा हुआ पाया। आपके पेट में पट्टी बँधी थी। मैंने आपके बाज़ साथियों से पूछा कि रसूलुल्लाह (स़०) ने पेट में पट्टी किस लिए बाँधी है? लोगों ने कहा, भूक की वजह से। मैं हज़्रत अबू तलहः (र०) के पास आया, (वह उम्मॅ सुलैम के शौहर थे), और अर्ज़ किया, ऐ बाप, मैंने रसूलुल्लाह (स़०) को देखा, आपके पेट पर पट्टी बँधी थी। लोगों से सबब पूछा। मालूम हुआ कि भूक की वजह से। हज़्रत अबू तलहः (र०) मेरी माँ के पास आये और पूछा तुम्हारे पास कुछ खाने को है? उन्होंने कहा, कुछ रोटियों के टुकड़े हैं और खजूरें। अगर रसूलुल्लाह (स़०) तन्हा[3] तशरीफ़ लाये तो हम उनको सेर कर देंगे; और अगर लोगों के साथ तशरीफ़ लाये तो कमी पड़ जायगी। उसके बाद पूरा क़िस्सा बयान किया (जो ऊपर गुज़रा)।

---

१ तृप्त २ समीपियों, साथियों ३ अकेले।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क़नाअ़त[1]

आयात

व मा मिन् दा'ब्बतिन् फ़िल्अर्ज़ि अिल्ला अलल्लाहि रिज़्क़ुहा ।

और कोई जानदार ज़मीन पर चलने वाला ऐसा नहीं कि उसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो । [सू० हूद, रु० १ आ० ६]

लिल्फ़ुक़रा'अिल्लजीन अुह्सिरू फ़ी सबीलिल्लाहि ला यस्ततीअ़ून ज़र्बन् फ़िल्अर्ज़ि ज यह्सबुहुमुल्जाहिलु अग़्निया'अ मिनत्त-अफ़्फ़ुफ़ि ज तऽरिफ़ुहुम् बिसीमाहुम् ज ला यस्अलूनन्नास अिल्हाफ़न् ط ... ।

(सदक़ात) अस्ल हक़ उन हाजतमन्दों का है जो अल्लाह की राह में मुक़य्यद[2] हो गये हों । (और इसी वजह से) वह लोग कहीं मुल्क में चलने फिरने का इमकान नहीं रखते । (और) नावाक़िफ़ उनको तवन्गर[3] ख़ियाल करता है उनके सवाल से बचने के सबब से, (अलबत्ता) तुम उनको उनके तर्ज़ से पहचान सकते हो । (फ़क्र व फ़ाक़ा) से चेहरे पर असर ज़रूर आ जाता है । और वह लोगों से लिपट कर नहीं मांगते । [सू० बक़र, रु० ३७ आ० २७३]

वल्लजीन अिजा' अन्फ़क़ू लम् युस्रिफ़ू व लम् यक़्तुरू व कान बैन ज़ालिक क़वामन् ।

और वह जब ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूलख़र्ची करते हैं और न तंगी करते हैं । इस (इफ़रात तफ़रीत) के दर्मियान एअ़तिदाल-पर[4] होता है । [सू० फ़ुर्क़ानि, रु० ६ आ० ६७]

व मा ख़लक़्तुल्जिन्न वल्अिन्स अिल्ला लियऽबुदूनि (५६) मा' अुरीदु मिन्हुम्मिर्रिज़्क़िंव्व मा'अुरीदु अंय्युत्अिमूनि (५७) ।

और मैंने जिन और इन्सान को इसी वास्ते पैदा किया है कि मेरी अिबादत किया करें । मैं उनसे (मख़लूक़ की) रिज़्क़रसानी[5] की दरख़्वास्त नहीं करता और न दरख़्वास्त करता हूँ कि वह खिलाया करें । [सू० ज़ारियाति, रु० ३ आ० ५६-५७]

---

१ तुष्टि, संतोष २ अल्लाह की राह में क़ैद यानी बंधे हों ३ ताक़तवर
४ औसत दर्जे का ५ सृष्टि की गुज़र बसर के प्रबन्ध का ।

अहादीस

४६९/१ ग़नी वह है जो दिल का ग़नी है[१]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, दौलत व इस्तिग़ना[२] माल की कसरत से नहीं होता। दौलत दिल की दौलत है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अब्दुल्लाह बिन उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ख़ुशनसीब है वह, जो इस्लाम लाया और ज़रूरत भर सामान रखता है। और जो कुछ अल्लाह ने उसको दिया उसपर वह क़ानिअ[३] है। [मुस्लिम]

४७०/२ एक सहाबी का किसी से कुछ न लेने का अहिद और उसकी पाबन्दी

हज़्रत हकीम (र०) बिन हिज़ाम से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया, आपने मुझे दिया, मैंने फिर माँगा, आपने दिया और फ़रमाया, ऐ हकीम, यह माल सरसब्ज़ है। जो इसको बेपरवाही[४] के साथ लेगा तो इसमें बरकत होगी। और जो नफ़्स की तमअ[५] के साथ लेगा तो बरकत न होगी। और यह ऐसी मिसाल है कि एक आदमी खाता है और सेर[६] नहीं होता और ऊँचा हाथ नीचे हाथ से बेहतर§ है। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! उस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ नबी बनाकर भेजा है। मैं ज़िन्दगी भर आपके बाद किसी से कुछ शै लेकर उसके माल में कमी न करूँगा।

हज़्रत अबू बक्र (र०) अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में हज़्रत हकीम (र०) को बुलाते थे और उनको कुछ देना चाहते थे तो वह इन्कार करते थे। फिर हज़्रत उमर (र०) ने अपने ज़मानॅ ख़िलाफ़त में उनको दिया। उन्होंने उनसे भी इन्कार किया। हज़्रत उमर (र०) ने कहा, ऐ मुसलमानो! मैं तुमको हकीम के मुआमले में गवाह करता हूँ कि मैं इनको वह हक़ देता हूँ जो मालॅ ग़नीमत में इनके लिए रखा है। और यह इन्कार करते हैं।

हज़्रत हकीम (र०) ने नबी (स०) के बाद वफ़ात पाने तक किसी से कुछ नहीं लिया। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ धनी २ रईसत ३ संतुष्ट ४ निस्पृह भाव से ५ लोलुपता ६ तृप्त

---

§ यानी इहसान करनेवाला ममनून होने वाले से और देनेवाला लेनेवाले से अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

७३१ हज़्रत अबू मूसा (र०) का अपने जिहाद का तज़किरः करके पशीमान[1] होना

हज़्रत अबू बरदः (र०) से रिवायत है कि अबू मूसा (र०) अश्अ़री फ़रमाते हैं कि एक ग़ज़्वः[2] में हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ गये। एक ऊँट था उसपर यके बाद दीगरे सवार होते थे। लोगों के पाँव में सूराख़ हो गये, और मेरे पाँव के तो नाख़ून तक गिर गये थे। तो हम लोगों ने पैरों पर चीथड़े बाँध लिये। इसलिए उस ग़ज़्वः का नाम ज़ातुर्रिक़ाअ़[3] रख दिया। हज़्रत अबू बरदः (र०) कहते है कि यह वाक़िअ़: बयान करके अबू मूसा (र०) को अफ़सोस हुआ कि मैंने यह तज़किरः क्यों किया। गोया उन्होंने अपने नेक अमल को ज़ाहिर करना नापसन्द किया। [बुख़ारी-मुस्लिम]

७३२ दिल के ग़नी

हज़्रत अ़म्र (र०) बिन तग़लिब से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास माल या क़ैदी आये। आपने इस तरह तक़सीम किया कि बाज़ को दिया और बाज़ को नहीं दिया। बाद में आपको ख़बर मिली कि जिनको नहीं दिया वह नाराज़ हैं। आपने अल्लाह की तारीफ़ और सना बयान की; फिर फ़रमाया, ख़ुदा की क़सम मैं बाज़ को देता हूँ और बाज़ को नहीं। वह मुझे ज़ियादः महबूब है उस शख़्स से जिसको देता हूँ। लोगों को उस वक़्त देता हूँ जब उनके दिलों में घबराहट और बेचैनी पाता हूँ; जिनको नहीं देता, उनको इस इतमीनान पर नहीं देता कि अल्लाह तआ़ला ने उनका दिल ग़नी कर दिया है और ख़ैर रक्खी है। उन्हीं में अ़मर बिन तग़लिब हैं। अ़मर बिन तग़लिब कहते हैं, ख़ुदा की क़सम मुझे हुज़ूर (स०) की यह बात सुर्ख़ ऊँटों से ज़ियादः महबूब है♦। [बुख़ारी]

७३३ ऊँचा हाँथ नीचे हाथ से बेहतर है

हज़्रत हकीम (र०) बिन हिज़ाम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऊँचा हाथ नीचे हाथ से बेहतर है। और ख़र्च की इब्तिदा उससे करो जिसके तुम ज़िम्मेदार हो और बेहतर सदक़ा वह है जो अपने लिए बक़दरे ज़रूरत रखकर दिया जाये।

♦ सुब्हानल्लाह क्या इख़्लास[4] है।

---

१ लज्जित १ धर्मयुद्ध ३ चीथड़ों वाला ४ निष्कपट प्रेम।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और जो ख़ुद्दार[1] रहना चाहेगा, अल्लाह उसको ख़ुद्दार रक्खेगा। जो ग़नी[2] रहना चाहेगा, अल्लाह उसको ग़नी रक्खेगा† । [मुस्लिम]

$४\overset{६}{३}४$ पीछे पड़कर सवाल करना

हज़्रत मआ़विय: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, लग-लिपट कर न माँगो। ख़ुदा की क़सम अगर तुममें से कोई मुझसे कुछ माँगेगा और मैं उसको नाराज़ होकर दूँगा तो उसमें बरकत न होगी। [मुस्लिम]

$४\overset{७}{३}८$ किसी से सवाल न करने पर बैअ़त

हज़्रत औ़फ़ (र०) बिन मालिक अशजिई़ से रिवायत है कि हम आठ नौ आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे। आपने-फ़रमाया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हाथ पर बैअ़त क्यों नहीं करते ? हमने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! हम तो आपके हाथ पर अभी अभी बैअ़त कर चुके हैं। फिर आपने फ़रमाया, तुम लोग रसूलुल्लाह से बैअ़त क्यों नहीं करते ? हमने अपने हाथ फैला दिये और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! हम तो आपके हाथ पर बैअ़त कर चुके हैं, अब किस बात पर करें। आपने फ़रमाया, इस बात पर कि अल्लाह की अ़िबादत करोगे। उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओगे। पाँचों नमाज़ का ख़याल रक्खोगे, अल्लाह की इताअ़त[3] करोगे, और एक बात चुपके से कही वह यह कि लोगों से कुछ न माँगोगे। (रावी कहते हैं) मैंने उन्हीं में से बाज़ों को देखा है कि अगर उनका कोड़ा भी गिर जाता था तो वह किसी से उठाने को नहीं कहते थे, कि यह भी सवाल में दाख़िल है। [मुस्लिम]

$४\overset{८}{७}९$ सायल के[4] चेहरे पर क़ियामत में गोश्त न होगा

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, बाज़ आदमी बराबर सवाल करते रहते हैं। यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला के सामने ऐसी हालत में हाज़िर होंगे कि उनके चेहरे पर गोश्त का टुकड़ा न होगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०)

१ ग़ैरतमन्द २ दानी ३ आज्ञापालन ४ माँगनेवाले।

† यानी जो शख़्स चाहेगा कि उसको किसी के सामने दस्तें सवाल दराज़ पेश करने की ज़रूरत पेश न आये तो अल्लाह उसकी ख़्वाहिश पूरी फ़रमायेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मिम्बर पर तशरीफ़ लाये। सदक़ा और सवाल से बचने को फ़रमाया और फ़रमाया, ऊँचा हाथ नीचे हाथ से बेहतर है, ऊँचा हाथ नीचे हाथ से बेहतर है। ऊँचा हाथ देने और नीचा हाथ लेनेवाला होता है।
[बुख़ारी-मुस्लिम]

४७७ जमा करने के लिए माँगना

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो लोगों से जमा करने के लिए माँगता है वह आग की चिनगारी माँगता है। उसको इख़्तियार है ज़ियादः चिनगारियाँ जमा कर ले या कम। [मुस्लिम]

४७८ माँगने की इजाज़त कब है

हज़्रत समुरः (र०) बिन जुन्दुब से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, सवाल आदमी के चेहरे को छील देता है। मगर यह कि आदमी मुसलमान हाकिम से माँगे और ज़रूरत पर माँगे। [तिर्मिज़ी]

४७९ अल्लाह के सामने अपनी ज़रूरियात पेश करना

हज़्रत इब्नि मस्ऊ़द (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, किसी शख़्स को कोई फ़ाक़ा पेश आये, अगर वह उस फ़ाक़े को लोगों के सामने पेश करे तो उसका फ़ाक़ा ज़ाइल[1] न होगा और अगर अल्लाह के सामने पेश करेगा तो उसको जल्द या बदेर रिज़्क़ अता होगा।
[अबू दावूद-तिर्मिज़ी]

४८० सवाल न करने पर जन्नत की ज़िम्मेदारी

हज़्रत सौबान (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, जो इस बात का अ़हिद कर ले कि मैं लोगों से किसी क़िस्म का सवाल न करूँगा तो मैं उसके लिए जन्नत का ज़िम्मेदार हूँ। मैंने कहा, मैं (ऐसा करूँगा) फिर मैंने किसी से कुछ नहीं माँगा। [अबू दावूद]

४८१ सवाल किसके लिए जाइज़ है

हज़्रत क़ुबैसः (र०) से रिवायत है कि मैंने कुछ माल की

---

१ व्यर्थ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ज़िम्मेदारी अपने सर[1] ली थी। मैं रसूलुल्लाह (स०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपसे इस बारे में सवाल किया। आपने फ़रमाया, इतना ठहरो कि सदक़ा का माल आ जाये, तो मैं तुमको दूँगा। फिर फ़रमाया, ऐ क़ुबैसः (र०) सवाल तीन आदमियों के अलावः किसी को जाइज़ नहीं। (१) ऐसा आदमी जो किसी बात का ज़िम्मेदार हो तो उसको माँगना जाइज़ है। मगर इतना जो उसकी ज़रूरत को काफ़ी हो। (२) ऐसा शख़्स जिसको कोई सख़्त हादिसा या माली नुक़सान पहुँचा हो तो उसको इस क़दर माँगना जाइज़ है जिसमें गुज़र-बसर कर सके, या यह फ़रमाया कि ज़िन्दगी बसर करने का सामान उसको मिल जाये। (३) ऐसा आदमी कि जिसको सख़्त ज़रूरत पेश आये और उसकी क़ौम के तीन मुअ़तबर[1] आदमी कहें कि यह सख़्त हाजतमन्द है, तो उसको माँगना जाइज़ है। इसके सिवा हर एक पर सवाल हराम है। जो माँगकर खाये वह हराम खा रहा है।

$४८^{१५}_{२}$ मिस्कीन व ग़रीब कौन है

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, वह मिस्कीन[2] नहीं है जो लोगों के पास एक लुक़्मः या दो लुक़्मः, एक खजूर या दो खजूरों के लिए आये जाये। मिस्कीन वह है जिसके पास इतना न हो जो उसके लिए काफ़ी हो और लोगों को उसके हाल की ख़बर भी न हो कि उसको सदक़ा दे। और वह मजमे में खड़ा होकर शर्म व ग़ैरत की वजह से सवाल भी न कर सके§।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

$४८^{१६}_{३}$ बे-माँगे मिले तो लेना जाइज़ है

हज़्रत सालिम अपने वालिद अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (र०) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (स०) मुझे कुछ देते तो मैं अर्ज़ करता कि मुझसे ज़ियादः जो मुहताज हो उसको दीजिए। आप फ़रमाते, इसको ले लो; जब तुम्हारे पास ऐसा माल आये जिसमें तुम्हारा दिल नहीं लगा था और न तुमने माँगा था तो उसको ले लिया करो और बढ़ाओ। अपने

---

† यानी किसी जंग के मौक़े पर फ़रीक़ैन में सुलह के लिए कुछ रक़म तय हुई थी, उसकी ज़िम्मेदारी मैंने ली थी।

§ वह शरीफ़ व सफ़ैदपोश बड़ी मुसीबत में होता है। जो ख़ुद सवाल न कर सके, न लोगों को उसके हाल की ख़बर हो, वही सबसे ज़ियादः क़ाबिले इमदाद[3] है।

---

१ प्रतिष्ठित २ दीन-दरिद्र ३ सहायता के योग्य।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस्तेमाल में लाओ, चाहे सदक़ा करो; और जो ऐसा न हो तो उसके पीछे अपना दिल न लगाओ। हज़्रत सालिम कहते हैं कि हज़्रत अब्दुल्लाह किसी से कुछ नहीं माँगते थे। मगर जो देता था उसको वापस भी नहीं करते थे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

अपने हाथ की मेहनत कमाई से खाना

आयत

फ़अिज़ा क़ुज़ियतिस्सलातु फ़न्तशिरू फ़िल्अर्ज़ि वब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिल्लाहि...

फिर जब नमाज़ (जुमा) पूरी हो जाये तो (उस वक़्त तुमको इजाज़त है कि) तुम ज़मीन पर चलो-फिरो और ख़ुदा की रोज़ी तलाश करो। [सू० जुमुअति, रु० २ आ० १०]

अहादीस

४८४ मेहनत व मज़दूरी की फ़ज़ीलत[1]

हज़्रत ज़ुबैर (र०) बिन अ़वाम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कोई अपनी रस्सी लेकर पहाड़ पर आये और लकड़ी का एक बोझ अपनी पीठ पर लाद लाये, उसको बेचे, अल्लाह उसकी वजह से बक़दरे ज़रूरत दे दे तो यह उसके लिए उससे बेहतर है कि वह लोगों से माँगता फिरे; लोगों की ख़ुशी पर मौक़ूफ़[2] है दें या न दें। [बुख़ारी]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो लकड़ी का एक बोझ अपनी पीठ पर लाद लाये तो यह उसके लिए उससे बेहतर है कि लोगों से सवाल करे; और वह दें या न दें। [बुख़ारी]

४८८ बड़े-बड़े पैग़म्बर अपने हाथ की कमाई से खाते थे

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

१ श्रेष्ठता २ निर्भर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हज़्रत दावूद (अ़०) अपने हाथ से काम करके खाते थे। [बुख़ारी]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हज़्रत ज़करया (अ़०) बढ़ई का काम करते थे। [मुस्लिम]

हज़्रत मिक़दाम (र०) बिन मअ़दी करिब से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, किसी ने इससे बेहतर खाना कभी नहीं खाया कि आदमी अपने हाथ की मेहनत का खाये। बेशक अल्लाह के नबी दावूद (अ़०) अपने हाथ से काम करके खाते थे। [बुख़ारी]

जूद व सख़ावत[1]

आयात

…व मा अन्फ़क़्तुम मिन् शौइन् फ़हुव युख़्लिफ़ुहू …

अरे जो चीज़ तुम (मवाक़िअ़ हुक्मे इलाही में) ख़र्च करोगे सो वह (अल्लाह तआ़ला) उसका एवज़ देगा। [सू० सबा, रु० ५ आ० ३६]

…व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़लिअन्फ़ुसिकुम् व मा तुन्फ़िक़ून इल्लब्तिग़ाअ वज्हिल्लाहि व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिंय्युवफ़्फ़ इलैकुम् व अन्तुम् ला तुज़्लमून।

और (ऐ मुसलमानो) जो कुछ तुम ख़र्च करते हो अपने फ़ायदे की ग़र्ज़ से करते हो और तुम और किसी ग़र्ज़ से ख़र्च नहीं करते बजुज़ रज़ाजूई ज़ाते पाक हक़ तआ़ला के और नीज़ जो कुछ माल ख़र्च कर रहे हों, सब (यानी इसका सवाब) पूरा-पूरा तुमको मिलेगा। और तुम्हारे लिए इसमें ज़रा कमी न की जायेगी। [सू० बक़र, रु० ३७ आ० २७२]

… व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़इन्नल्लाह बिहीं अ़लीमुन्।

और जो माल तुम ख़र्च करोगे हक़ तआ़ला को उसकी इत्तिलाअ़ ख़ूब मिलेगी। [सू० बक़र, रु० ३७ आ० २७३]

---

१ दान-पुण्य।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहा़दीस

४८६ रश्क[1] का मौक़ा

हज्ऱत इब्नि मस्ऊ़द (र०) से रिवायत है कि नबी (स़०) ने फ़रमाया, क़ाबिलॅ रश्क दो ही तरह के आदमी हैं। एक वह जिसको अल्लाह तआ़ला माल दे और वह अल्लाह की राह में लुटाये; और दूसरा वह जिसको अल्लाह हिकमत दे तो वह लोगों के दर्मियान फ़ैसला करे और सिखलाये। [बुख़ारी-मुस्लिम]

४८७ आदमी का अपना माल

हज्ऱत इब्नि मस्ऊ़द (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुममें से किसको अपने माल से ज़ियाद: अपने वारिस का माल पसन्द है। लोगों ने कहा, या रसूलल्लाह! सबको अपना माल महबूब है। आपने फ़रमाया, आदमी का अपना माल वही है जो उसने आगे भेजा❋ और उसके वारिस का माल वह है जो पीछे रक्खा†। [बुख़ारी]

४८८ खजूर का टुकड़ा भी आग से बचा सकता है

हज्ऱत अ़दी (र०) बिन हातिम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, (दोज़ख की) आग से बचो कुछ नहीं तो एक खजूर का टुकड़ा ही देकर। [बुख़ारी-मुस्लिम]

४८९ आपने कभी सवाल रद नहीं किया

हज्ऱत जाबिर (र०) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (स़) ने कभी किसी के सवाल पर "नहीं" का लफ़्ज़ नहीं फ़रमाया।

४९० ख़र्च करने से माल में बर्कत

हज्ऱत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हर सुबह को दो फ़िरिश्ते उतरते हैं। एक कहता है, ऐ अल्लाह! ख़र्च करनेवालों को निअ़मुल्बदल[2] अ़ता फ़रमा। दूसरा कहता है, ऐ अल्लाह! बख़ील[3] को तबाह और बरबाद कर। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ ईर्ष्या २ बदले में वैसा ही ३ सूम।

❋ यानी नेक अ़मल करके आख़िरत में ज़ख़ीर: बनाया है।

† यानी माल व दौलत जायदाद जो तर्क: में छोड़ी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है, ऐ आदम के बेटे ! ख़र्च कर, तुझ पर भी ख़र्च किया जायेगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

४६१ इस्लाम की बात

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन उमर से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा कि इस्लाम में कौन सी ख़ूबी है। आपने फ़रमाया, खाना खिलाओ और सलाम करो जिसको जानते हो और न जानते हो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) ही से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, चालीस बातें हैं। उन सबसे बलन्द बकरी का अ़तीयः@[1] है। जो कोई इन ख़सलतों पर सवाब की उम्मीद‡ और उसके वादे की तस्दीक़ में अ़मल करेगा तो अल्लाह उसको जन्नत में दाख़िल करेगा। [बुख़ारी]

४७२ फ़ाज़िल चीज़ का ख़र्च कर देना बाअ़िसे बर्कत है

हज़्रत अबू उमामः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स़) ने फ़रमाया, ऐ इब्नि आदम ! अगर तू अपने बचे हुए माल को ख़र्च कर डालेगा तो यह तेरे लिए बेहतर होगा। और अगर तू उसको बचा बचा कर रक्खेगा तो यह तेरे हक़ में बुरा होगा। और बक़दरे ज़रूरत रोकने पर तुझे कोई मलामत न करेगा। और ख़र्च की इब्तिदा उस शख़्स से कर जिसका तू कफ़ील[2] है। और ऊँचा हाथ नीचे हाथ से बेहतर है। [मुस्लिम]

४८३ फ़क़्[3] से निडर होकर सख़ावत

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से इस्लाम के बाद जिस किसी ने सवाल किया, आपने ज़रूर दिया। एक आदमी ने आपसे सवाल किया, आपने दो पहाड़ों के दर्मियान

@ यानी बहुत से छोटे-छोटे ख़ैर और सवाब के काम हैं। उनमें सबसे बड़ा काम यह है कि किसी को बकरी दे दे कि उसके दूध पर बसर करे। इसके नीचे और बहुत से काम हैं।

‡ सवाब की उम्मीद और अल्लाह ने जो वादा फ़रमाया है, उसका यक़ीन, यही आमाल की रूह है, जो मामूली से मामूली काम को फ़र्श से अर्श[4] तक पहुँचा देता है।

---

१ दान, बख़्शिश २ सरपरस्त ३ कंगाली ४ ज़मीन से आसमान।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जितनी बकरियाँ थीं सब इनायत फ़रमायीं। वह अपनी क़ौम की तरफ़ पलटा और कहा ऐ क़ौम, मुसलमान हो जाओ। बेशक रसूलुल्लाह अ़लैहि व सल्लम ऐसा देते हैं कि फ़क्र से भी नहीं डरते। ओर बाज़ आदमी दुनिया के लिए इस्लाम लाते थे लेकिन जल्द ही इस्लाम उनको दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से महबूब हो जाता था। [मुस्लिम]

हज़्रत उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक मर्तबा तक़सीम किया। मैंने कहा या रसूलल्लाह! इनसे ज़ियादः और लोग मुस्तहक़ हैं। आपने फ़रमाया, यह लोग मुझसे सख़्ती से सवाल करते हैं। अगर मैं इनको न दूँ तो मुझे बख़ील[1] कहें और मैं बुख़्ल[2] करनेवाला नहीं हूँ। [मुस्लिम]

हज़्रत ज़ुबैर (र०) बिन मुतअ़िम से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ हुनैन से वापस आ रहा था। कुछ देहाती आपसे लिपट गये और माँगने लगे। यहाँ तक कि आप मजबूर होकर एक बबूल तक आ गये और आपकी चादर अटक गयी। आप ठहर गये और फ़रमाया, मुझे मेरी चादर दे दो। अगर मेरे पास इन ख़ारदार काँटों के बराबर भी चौपाये होते तो मैं तुम्हारे दर्मियान तक़सीम कर देता। तो फिर तुम मुझे बख़ील, झूटा और बुज़दिल न पाते। [बुख़ारी]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, सदक़े ने किसी का माल नहीं घटाया। जब बन्दः किसी की ख़ता मुआ़फ़ करता है तो अल्लाह उसकी अिज़्ज़त ज़ियादः कर देता है। और जो अल्लाह के लिए तवाज़ो[3] और इज्ज़ इख़्तियार करता है तो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल[4] उसको और बलन्द करता है। [मुस्लिम]

४२६४ सदक़ा माल को कम नहीं करता

हज़्रत उमर (र०) बिन सअ़्द (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते थे, तीन बातों पर मैं क़सम खाता और तुमको बताता हूँ, उसको याद रक्खो। (१) सदक़ा करने से किसी का माल नहीं घटता। (२) मज़लूम बन्दः जब सब्र करता है तो अल्लाह उसकी अिज़्ज़त ज़ियादः करता है। (३) और जो बन्दः दस्तँ सवाल दराज़[5] करता है तो अल्लाह तआ़ला उसपर फ़क्र[6] का दरवाज़ा खोल देता है। और याद रक्खो दुनिया में चार क़िस्म के लोग हैं। (१) एक

---

१ कंजूस २ कंजूसी ३ सम्मान ४ सम्मान-प्रतिष्ठा ५ बेतहाशा माँग करता रहता है ६ दरिद्रता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह जिसको अल्लाह ने माल भी दिया है और अिल्म भी। वह अिल्म की वजह से अपने परवरदिगार से डरता है। क़राबतदारों[1] के साथ सुलूक करता है। अल्लाह का हक़ जानता है। वह मर्तबे में सबसे अफ़ज़ल है। (२) दूसरा वह आदमी जिसको अल्लाह ने अिल्म दिया लेकिन माल नहीं दिया। वह सच्ची नीयत के साथ उसकी ख़्वाहिश रखता है। और कहता है, ऐ काश! अगर मुझे भी फ़लाँ की तरह माल मिलता तो मैं भी उसी की तरह दाद[2] व दिहिश[3] से काम लेता। और अज्र का मुस्तहक़ होता। पस दोनों का अज्र बराबर§ है। (३) तीसरा वह जिसको अल्लाह ने माल दिया लेकिन अिल्म से महरूम रक्खा वह जिहालत से माल को बेजा तरीक़े पर ख़र्च करता है, अल्लाह से नहीं डरता। यह नहीं जानता कि अल्लाह का क्या हक़ है, बन्दों का क्या हक़ है। वह बहुत बुरा है। (४) चौथा वह है जो माल और अिल्म दोनों से महरूम है। वह कहता है काश जैसे फ़लाँ को दौलत मिली मुझको भी मिलती तो मैं भी उस दौलतमन्द की तरह ख़र्च करता और ऐश व अिश्रत में ज़िन्दगी बसर करता। पस यह दोनों गुनाह में बराबर हुए।

[तिर्मिज़ी]

६१० जो अल्लाह के रास्ते में ख़र्च हो जाये वह महफ़ूज़ है

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि मैंने एक बकरी ज़िबह की। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कुछ बाक़ी है? मैंने अर्ज़ किया एक बाज़ू बाक़ी है। आपने फ़रमाया, इस बाज़ू‡ के सिवा सब बाक़ी है।

[तिर्मिज़ी]

६११ ख़ुदा का यकसाँ सुलूक

हज़्रत असमा (र०) बिन्त अबू बक्र सिद्दीक़ (र०) से रिवायत है कि मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया ख़र्च कर, गिन-गिनकर न रख, वरना तुझे भी ख़ुदा गिन-गिनकर देगा। और बाँध-बाँधकर न रख, वरना तुम पर भी रिज़्क़[4] बाँध दिया जायेगा।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ समीपियों, सगों २ दान ३ देना ४ रोज़ी, जीविका।

---

§ उस अल्लाह के बन्दे ने अल्लाह की राह में ख़र्च करके सवाब हासिल किया और दूसरे ने अच्छी नीयत करके अज्र कमाया। ग़र्ज़ दोनों बराबर हो गये। नीयत के बाब में गुज़र चुका है कि आमाल का दार व मदार नीयत पर है।

‡ यानी जो अल्लाह के रास्ते में गया वह ही महफ़ूज़ है, और जो खाया गया वह गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४९३ सख़ावत से कशाइश[1] और बुख़्ल[2] से तंगी[3]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) फ़रमाते थे, बुख़्ल करनेवाले और ख़र्च करनेवाले की मिसाल ऐसी है जैसे दो आदमी हैं। उनके वदन पर लोहे की ज़िर्हें हैं। उनकी हँसली की हड्डी तक हैं। ख़र्च करनेवाला जब ख़र्च करता है तो उसकी ज़िर्ह: उसके वदन पर ढीली हो जाती है, यहाँ तक कि उसकी उँगलियों तक पहुँच जाती है, और उसके निशानें क़दम को मिटा देती है। और बुख़्ल करने वाला जब किसी चीज के ख़र्च का इरादा नहीं करता तो ज़िर्ह: के हल्क़े अपनी जगह पर लिपट जाते हैं। वह कुशादा करना चाहता है और वह कुशादा नहीं होते। [बुख़ारी-मुस्लिम]

४९८ सदक़े की बर्कत

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो अच्छी कमाई से खजूर के बराबर सदक़ा करता है अल्लाह तआ़ला उसको क़ुबूल ही फ़रमाता है और उसको अपने सीधे हाथ से लेकर‡ उसको उस शख़्स के लिए (जिसने सदक़ा किया) बढ़ाता है। जैसे तुम अपने बछेड़े को बढ़ाते हो यहाँ तक कि वह (सदक़ा) पहाड़ के बराबर हो जाता@ है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

४९९ सदक़ा की वजह से ख़ास इनायतें इलाही

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया कि एक आदमी किसी मैदान में जा रहा था कि अब्र[4] से एक आवाज़ सुनी कि फ़लाँ के बाग़ को सेराब कर। वह बादल चला और एक रेतीली जगह को सेराब किया। एक नाला पानी से लबालब भर गया। मैं पानी के पीछे हो लिया। एक आदमी बाग में खड़ा फावड़े से पानी को उलच रहा है। मैंने उससे कहा अल्लाह के बन्दे, तेरा क्या नाम है ? तो उसने वही नाम बताया जिसको मैंने अब्र से सुना था। फिर उसने पूछा कि मेरा नाम तुमने क्यों दर्याफ़्त किया ? मैंने कहा उस अब्र से जिसका यह पानी है एक आवाज़ सुनी थी। तुम्हारा नाम लेकर कोई कहता था कि

१ बढ़ती २ कंजूसी ३ घटती ४ बादल।

‡ यानी क़दरदानी के साथ।

@ क़ुर्आन मजीद में है "यम्हक़ुल्लाहुर्रिबा व युर्बिस्सदक़ाति" (तर्जुमा) अल्लाह तआ़ला सूद के रुपये को मलियामेट कर देता है; और ज़कात, सदक़ा को बढ़ाता और परवरिश करता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फ़लाँ के बाग़ को सेराब कर। तुम ऐसा कौन सा काम करते हो जिसकी वजह से तुम पर ऐसी इनायत हुई ? उसने कहा, तुमने पूछा तो मुझे बताना ही पड़ा। बात यह है कि ज़मीन की जो पैदावार होती है उसके तीन हिस्से करता हूँ। एक हिस्सा सदक़ा करता हूँ, दूसरा अपने बाल-बच्चों की ख़ूराक के लिए रख छोड़ता हूँ। और तीसरा फिर इसी खेती में लगा देता हूँ। [मुस्लिम]

बुख़्ल[1] व हिर्स[2] की मुमानिअत व मज़म्मत[3]

आयात

व अम्मा मम्बख़िल वस्तग़ना (८) व कज़्ज़ब बिल्-हुस्ना (९) फसनुयस्सिरुहू लिल्‌अुस्‌रा (१०) व मा युग़्नी अन्हु मा लुहू अिज़ा तरद्दा (११)।

और जिसने (हक़ूक़ वाजिब:) से बुख़्ल किया और (बजाये ख़ुदा के डरने के ख़ुदा से) बेपरवाई बरती और अच्छी बात (यानी इस्लाम को) झुटलाया तो हम उसको तकलीफ़ के चीज़ के लिए सामान दे देंगे। और उसका माल उसके कुछ काम न आयेगा, जब वह बरबाद होने लगेगा। [सू० लैलि, रु० १ आ० ८-११]

... व मंय्यूक़ शुह्ह नफ़्सिही फ़अुलाअिक हुमुल्मुफ़्लिहून।

जो शख़्स नफ़सानी हिर्स[4] से महफ़ूज़ रहा (ऐसे ही लोग आख़िरत में) फ़लाह पानेवाले हैं। [सू० तग़ाबुनि, रु० २ आ० १६]

अहादीस

८०० ज़ुल्म व हिर्स दुनिया की चीज़ें हैं

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ज़ुल्म से डरो। ज़ुल्म क़ियामत के दिन तारीकियाँ[5] होंगी। और हिर्स व बुख़्ल से बचो। बुख़्ल व हिर्स ने तुमसे पहलों को हलाक किया। उनको इस बात पर आमादा किया कि वह अपने ख़ून बहायें और हराम को जाइज़ कर लें। [मुस्लिम]

---

१ कंजूसी २ लोलुपता ३ रोक व निन्दा ४ काम-लोलुपता ५ अँधेरियाँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ईसार[1] व ग़मख़्वारी[2]

आयात

··· व युअ्सिरून अ़ला अन्फ़ुसिहिम् व लौ कान बिहिम् ख़सासतुन् ···

और अपने ऊपर मुक़द्दम रखते हैं अगरचि उन पर फ़ाक़ा ही हो ।
[सू० ह़श्रि, रु० १ आ० ६]

व युत्ञिमूनत्तत्ञाम अ़ला हुब्बिही मिस्कीनंव्व यतीमंव्व असीरन् ।

और वह लोग (महिज़) ख़ुदा की मुहब्बत से ग़रीब और यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं । [सू० दह्रि, रु० १ आ० ८]

अह़ादीस

८०१ एक अन्सारी का ईसार

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक आदमी हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, मैं बहुत भूका हूँ । आपने अपनी किसी बीवी के पास कहला भेजा, जो कुछ खाना हो भेज दो । उन्होंने अर्ज़ किया उसी की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ नबी बनाकर भेजा है, मेरे पास सिवा पानी के कुछ नहीं है । फिर आपने दूसरी बीवी के पास कहला भेजा । उन्होंने भी इसी तरह जवाब दिया । यहाँ तक कि सब ने यही जवाब दिया कि जिसने आपको हक़ के साथ नबी बनाकर भेजा है उसी की क़सम मेरे पास सिवा पानी के कुछ नहीं है । आपने फ़रमाया, इस रात में कौन मेहमानी कर सकता है । एक अन्सारी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! मैं । फिर उनको अपने घर ले गये । अपनी बीवी से कहा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मेहमान की ख़ातिर करो ।

एक रिवायत में है कि अपनी बीवी से पूछा, कुछ है ? वह बोली, नहीं, सिर्फ़ बच्चों का खाना है । कहा, उनको किसी तरह बहला लो । जब रात को खाना माँगें तो उनको बहलाकर सुला देना । जब हमारे मेहमान आयें तो चिराग़ बुझाकर उनके साथ खाने पर बैठ जाना और

---

१ अपना हित छोड़कर परमार्थ २ सहानुभूति ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उन पर ज़ाहिर करना कि हम भी खा रहे हैं। ग़र्ज़ कि उन्होंने इस सूरत से मेहमान को खिलाया। और ख़ुद सारी रात फ़ाक़े से गुज़ार दी। जब सुब्ह को रसूलुल्लाह (स॰) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने फ़रमाया, तुमने जो कुछ अपने मेहमान के साथ मुआमला किया है अल्लाह को बहुत पसन्द आया। [बुख़ारी-मुस्लिम]

८०२ खाने में बर्कत

हज़्रत अबू हुरैरः (र॰) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, दो आदमियों का खाना तीन आदमियों को काफ़ी होता है। और तीन का खाना चार को काफ़ी होता है।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत जाबिर (र॰) से मर्वी[1] है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, एक का खाना दो को, और दो का खाना चार को और चार का खाना आठ को काफ़ी हो जाता है। [मुस्लिम]

८०३ फ़ाज़िल चीज़ मुस्तहक़[2] का हक़ है

हज़्रत अबू सअ़ीद (र॰) ख़ुदरी से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ सफ़र में थे। एक आदमी अपनी सवारी पर आया और दायें-बायें देखने लगा। आपने फ़रमाया, जिसके पास सवारी ज़रूरत से ज़ियादः हो वह उस आदमी को दे जिसको हाजत हो। और जिसके पास ज़ादे राह[3] ज़रूरत से ज़ायद हो वह उसको दे जिसके पास न हो। इस तरह माल की बहुत सी क़िस्मों का ज़िक्र फ़रमाया, तो हम समझे कि हममें से किसी के लिए फ़ाज़िल चीज में हक़ नहीं है। [मुस्लिम]

८०४ रसूलुल्लाह (स॰) ने ज़रूरत का कपड़ा तक उतार कर दे दिया

हज़्रत सहल (र॰) बिन सअ़्द (र॰) से रिवायत है कि एक औरत नबी (स॰) की ख़िदमत में एक चादर लाई और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! इसको अपने हाथ से बुनकर लायी हूँ कि आपको पहनाऊँ। आपने क़ुबूल कर लिया। आपको ज़रूरत भी थी। आप उसकी तहबन्द बाँधकर हमारे मजमे में तश्रीफ़ लाये। एक साहब बोले, कितनी अच्छी है। इसको आप हमें दे दीजिए। आपने फ़रमाया, अच्छा; फिर उसी मजलिस में बैठ गये। थोड़ी देर के बाद तश्रीफ़ ले गये और तहबन्द लपेटकर उनको भेज दी। लोगों ने कहा, तुमने बहुत बुरा किया।

१ रिवायत २ अधिकारी, सुपात्र ३ रास्ते के लिए खाने का सामान।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रसूलुल्लाह (स॰) को ज़रूरत थी, आप पहने हुए थे। तुमने माँग लिया हालाँकि तुम जानते हो कि आप किसी का सवाल रद नहीं करते। उन्होंने कहा, मैंने इस लिए नहीं माँगा कि पहनूँ, बल्कि इसलिए माँगा है कि मेरा क़फ़न इसी का हो। हज़्रत सहल (र॰) कहते हैं कि वह चादर उनके कफ़न ही के काम आयी। [बुख़ारी]

८०८ अपना-अपना खाना साथ जमा कर देना

हज़्रत अबू मूसा (र॰) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स॰) ने फ़रमाया, क़बील: अशअ़रवालों की आदत है, जब किसी ग़ज़्व:[1] या मदीना में उनका खाना चुक जाता या ख़त्म होने के क़रीब होता है तो जो कुछ सबके पास होता है उसको एक कपड़े पर जमा करते हैं। ख़्वाह किसी के पास कम हो या ज़ियाद:। फिर उसको मिलाकर आपस में बराबर तक़सीम कर लेते हैं। आपने यह कहकर फ़रमाया कि वह मुझसे हैं और मैं उनसे हूँ। [बुख़ारी-मुस्लिम]

दीन का शौक़ रह्मत व बर्कत की हिर्स

आयात

… व फ़ी ज़ालिक फ़ल्यतना फ़सिल्मुतनाफ़िसून ॥।

और हिर्स करनेवालों को ऐसी ही चीज़ (जन्नत) की हिर्स[2] करना चाहिए। [सू॰ मुतफ़्फ़िफ़ीन, रु॰ १ आ॰ २६]

अहादीस

८०९ एक नौ उम्र सहाबी का शौक़ और समझ

हज़्रत सहल (र॰) बिन सअ़द (र॰) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स॰) की ख़िदमत में पीने की क़िस्म की कोई चीज़ हाज़िर की गयी। आपने उससे थोड़ा पिया। आपकी दाहिनी जानिब एक साहबज़ादे थे और बायें तरफ़ बूढ़े लोग थे। आपने साहबज़ादे से फ़रमाया, क्या तुम मुझको इजाज़त देते हो कि मैं उनको दे दूँ♦ (बूढ़ों की तरफ़ इशारा)।

१ धर्मयुद्ध २ लालसा।

♦ लड़के से पूछने की ज़रूरत यों पेश आयी कि अस्ल हक़दार दायें तरफ़वाला ही होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साहबज़ादे ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! मैं आपके झूटे में अपने सिवा किसी को तरजीह[1] नहीं दे सकता, तो आपने उनके हाथ पर रख दिया। (रावी कहते हैं वह इब्नि अब्बास (र०) थे।) [बुख़ारी-मुस्लिम]

८०६ हज़्रत अय्यूब (अ०) को अल्लाह के अ़तीय:[2] की क़दर

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, हज़्रत अय्यूब (अ०) बरहना[3] ग़ुस्ल कर रहे थे और आप पर सोने की टिड्डियाँ गिर रही थीं। आप उनको अपने कपड़ों में भरने लगे। उनके परवरदिगार अ़ज़्ज़: जल्ल: ने पुकारा, अय्यूब ! क्या मैंने तुमको इससे ग़नी नहीं किया§। अय्यूब (अ०) ने कहा, हाँ, क़सम है तेरी इज़्ज़त की, मैं तेरी बर्कत से मुस्तग़नी[4] नहीं हो सकता‡।

शुक्रगुज़ार दौलतमन्द

आयात

फ़अम्मा मन् अ़ऽ्ता वत्तक़ा ला (५) व सद्दक़ बिल्हुस्ना ला (६) फ़सनुयस्सिरुहू लिल्युस्रा ु (७)।

सो जिसने (अल्लाह की राह में माल) दिया और अल्लाह से डरा और अच्छी बात (यानी मिल्लतॅ इस्लाम) को अच्छा समझा तो हम उसको राहत की चीज़ के लिए सामान दे देंगे। [सू० लैलि, रु० १ आ० ५७]

व सयुजन्नबुहल्अत्क़ ला (१७) अ्ल्लज़ी युअ्ती मा लहू यतज़क्का ज (१८) व मा लिअहदिन् अ़िन्दहू मिन् निऽमतिन् तुज्ज़ा ला (१९) अिल्लब्तिग़ाअ वज्हि रब्बिहिल्-अऽ्ला ज (२०) व लसौफ़ यर्ज़ा (२१)।

और उससे ऐसा शख़्स दूर रक्खा जायेगा जो बड़ा परहेज़गार है। और अपना माल (महिज़) इस ग़र्ज़ से देता हूँ कि (गुनाहों से) पाक हो

---

२ वरीयता ३ बख़्शिश ४ नंगे ५ निरपेक्ष।

---

§ यानी इतनी दौलत दे चुका हूँ कि सोने की टिड्डियाँ जमा करने की ज़रूरत नहीं।

‡ यानी मुझे तेरे फ़ज़्ल व बर्कत की ज़रूरत बाक़ी है। मैं इसको तेरा फ़ज़्ल और अ़तीय: समझ कर ले रहा हूँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाये और बजुज़ अपने आलीशान परवरदिगार की रज़ाज़ूई के कि यही उसका मक़सूद है। उसके ज़िम्मे किसी का इहसान नहीं था, कि उस देने से उसका बदला उतारना (मक़सूद हो) और अन्क़रीब यह शख़्स ख़ुश हो जायेगा (यानी आख़िरत में ऐसी-ऐसी निअ़मतें मिलेंगी)।

[सू० लैलि, रु० १ आ० १७-२१]

अिन् तुब्दुस्सदक़ाति फ़निअ़िम्मा हिय ॥ व अिन् तुख़्फ़ूहा व तुअ्तूहल्फ़ुक़राअ फ़हुव ख़ैरुल्लकुम् ॥ व युकफ़्फ़िरु अ़न्कुम् मिन् सय्यिआतिकुम् ॥ वल्लाहु बिमा तअ़मलून ख़बीरुन्।

अगर तुम इन सदकों को ज़ाहिर करके दो तब भी अच्छी बात है। और अगर उनका इख़फ़ा करो और फ़क़ीरों को दे दो तो यह इख़फ़ा तुम्हारे लिए ज़ियादः बेहतर है। और अल्लाह तआ़ला (उसकी बर्कत से) तुम्हारे (कुछ) गुनाह दूर कर देगा। और अल्लाह तुम्हारे कामों की ख़ूब ख़बर रखता है। [सू० बक़र, रु० ३७ आ० २७१]

लन्तनालुल्बिर्र हत्ता तुन्फ़िक़ू मिम्मा तुहिब्बून ॥ ८ व मा तुन्फ़िक़ू मिन् शैअिन् फ़अिन्नल्लाह बिही अ़लीमुन्।

तुम ख़ैरे कामिल को कभी न हासिल कर सकोगे, जब तक अपनी महबूब चीज़ को न ख़र्च करोगे। और जो कुछ भी ख़र्च करोगे अल्लाह उसको ख़ूब जानता है। [सू० आलि अिम्रान, रु० १० आ० ९२]

अहादीस

८०७ क़ाबिले रश्क[1] लोग

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन मस्ऊ़द (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, रश्क के क़ाबिल दो आदमी हैं। एक वह जिसे अल्लाह ने दौलत दी, वह बेहतर तरीक़े पर ख़र्च करता× है। दूसरा वह शख़्स है कि अल्लाह ने उसको हिकमत दी, वह उसके ज़रीये बेहतर फ़ैसला करता है, और लोगों को सिखलाता है।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया,

× यानी अल्लाह की राह में क़राबतदारों[2], यतीमों[3] और मिस्कीनों[4] पर।

१ इर्ष्या २ सम्बन्धियों ३ अनाथों ४ दीन-दरिद्रों।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रश्क दो आदमियों पर करना चाहिए। एक वह शख़्स जिसे अल्लाह ने क़ुर्आन का इल्म दिया; वह उसपर दिन व रात अमल करता है। दूसरा वह जिसे अल्लाह ने दौलत दी, वह उसको रात व दिन बेहतर तरीक़े पर ख़र्च करता है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

८०८ ग़रीब व दौलतमन्द सहाबा की मुसाबक़त[1]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि ग़रीब मुहाजिरीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया मालदार बड़े-बड़े दर्जे और बाक़ी रहनेवाली निअ़मत ले गये। आपने फ़रमाया, यह क्या ? अर्ज़ किया, जैसे हम नमाज़ पढ़ते हैं, वह भी पढ़ते हैं। हम रोज़े रखते हैं, वह भी रखते हैं। लेकिन वह सदक़ा करते हैं, हम नहीं कर सकते। वह ग़ुलाम आज़ाद करते हैं, हम नहीं कर सकते। आपने फ़रमाया, मैं तुमको ऐसी बात न बताऊँ कि तुम आगे बढ़नेवालों को पालो, और पीछे रह-जानेवालों से आगे बढ़ जाओ, और बग़ैर तुम्हारे जैसा किये कोई तुमसे अफ़ज़ल[2] नहीं हो सकता। अर्ज़ किया फ़रमाइए। फ़रमाया, हर नमाज़ के पीछे तेंतीस-तेंतीस बार सुब्हानल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, अल्लाहु अक्बर पढ़ लिया करो। यह सुनकर वह चले गये और कुछ दिनों के बाद फिर हाज़िर होकर अर्ज़ किया, मालदार भी वही करने लगे, जो हम करते हैं। आपने फ़रमाया, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, जिसपर चाहता है करता है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

मौत की याद

आयात

कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाअिक़तुल्मौति व अिन्नमा तुवफ़्फ़ौन अुजूरकुम् यौमल्क़ियामति फ़मन् ज़ुह्ज़िह अ़निन्नारि व अुद्ख़िलल्जन्नत फ़क़द् फ़ाज़ व मल्हयातुद्दुन्या अिल्ला मताअुल्ग़ुरूरि।

हर जान को मौत का मज़ा चखना है। और तुमको पूरा बदला तुम्हारी क़ियामत के दिन मिलेगा। तो जो शख़्स दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया सो पूरा कामयाब हुआ। और दुनियावी ज़िन्दगी तो कुछ भी नहीं मगर सिर्फ़ धोके का सौदा है।

[सू० आलि अिम्रान, रु० १९ आ० १८५]

---

१ होड़ २ श्रेष्ठ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

…व मा तद्री नफ़्सुम्मा जातक्सिबु ग़दन् ‌त व मा तद्री नफ़्सुम्-बिअय्यि अर्ज़िन् तमूतु त … ।

कोई शख़्स नहीं जानता कि कल को क्या करेगा और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा ।

[सू० लुक़मान, रु० ४ आ० ३४]

…अिज़ा जा'अ अजलुहुम् फ़ला यस्तअ्ख़िरून साअ़तंव्व ला यस्तक़्दिमून ।

जब उनका वह मुअ़य्यन[1] वक़्त आ पहुँचता है तो (उस वक़्त) एक साअ़त[2] न पीछे हट सकते हैं और न आगे सरक सकते हैं ।

[सू० यूनुस, रु० ५ आ० ४६]

या' अय्युहल्लज़ीन आमनू ला तुल्हिकुम् अम्वालुकुम् व ला' औलादुकुम् अ़न् ज़िक्रिल्लाहि ज व मंय्यफ़्अ़ल् ज़ालिक फ़अुला'अिक हुमुल्ख़ासिरून (९) व अन्फ़िक़ू मिम्मा रज़क़्नाकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्तिय अहदकुमुल्मौतु फ़यक़ूल रब्बि लौ ला' अख़्ख़र्तनी' अिला' अजलिन् क़रीबिन् ला फ़अस्सद्दक़ व अकुम्मिनस्सालिहीन (१०) व लंय्युअख़्ख़िरल्लाहु नफ़्सन् अिज़ा जा'अ अजलुहा त वल्लाहु ख़बीरुम्बिमा तअ्मलून (११)

ऐ ईमानवालो ! तुमको तुम्हारे माल और औलाद अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न करने पायें और जो ऐसा करेगा तो वह लोग नाकाम रहने-वाले हैं। और जो कुछ हमने तुमको दिया है उसमें से इससे पहले ख़र्च कर लो कि तुममें किसी की मौत आ खड़ी हो और वह बतौर (तमन्ना व हस्रत) कहने लगे कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझको और थोड़े दिनों की मुहलत क्यों न दी कि मैं ख़ैर व ख़ैरात कर लेता, और नेक काम करने वालों में शामिल हो जाता । और अल्लाह तआ़ला किसी शख़्स को जब कि उसकी मीआ़द (उम्र की) ख़त्म होने पर आ जाती है हरगिज़ मुहलत नहीं देता । और अल्लाह को तुम्हारे सब कामों की ख़बर है । (वैसी ही जज़ा के मुस्तहक़ होंगे) । [सू० मुनाफ़िक़ून, रु० २ आ० ६-११]

हत्ता' अिज़ा जा'अ अहदहुमुल्मौतु क़ाल रब्बिर्जिअ़ूनि ला (९९) लअ़ल्ली' अअ्मलु सालिहन् फ़ीमा तरक्तु कल्ला त अिन्नहा

---

1 नियत, मुक़र्रर 2 मुहूर्त, घड़ी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कलिमतुन् हुव क़ा'अिलुहा त व मिंव्वरा'अिहिम् बर्ज़ख़ुन् अिला यौमि युब्असून (१००) फ़अिज़ा नुफ़िख़ फ़िस्सूरि फ़ला' अन्साब बैनहुम् यौमअिज़िंव्व ला यतसा'अलून (१०१) फ़मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू फ़अुला'अिक हुमुल्मुफ़्लिहून व मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू फ़अुला'अिकल्लज़ीन ख़सिरू' अन्फ़ुसहुम् फ़ी जहन्नम ख़ालिदून ज (१०३) तल्फ़हु वुजूहहुमुन्नारु व हुम् फ़ीहा कालिहून (१०४) अलम् तकुन् आयाती तुत्ला अलैकुम् फ़कुन्तुम् बिहा तुकज्जिबून (१०५) क़ालू रब्बना ग़लबत् अलैना शिक़्वतुना व कुन्ना क़ौमन् ज़ा'ल्लीन (१०६) रब्बना' अख़्रिज्ना मिन्हा फ़अिन् अुद्ना फ़अिन्ना ज़ालिमून (१०७) क़ालख़्सअू फ़ीहा व ला तुकल्लिमूनि (१०८) अिन्नहू कान फ़रीक़ुम्मिन् अिबादी यक़ूलून रब्बना' आमन्ना फ़ग़्फ़िर्लना वर्हम्ना व अन्त ख़ैरुर्राहिमीन ज सला (१०९) फ़त्तख़ज़्तुमूहुम् सिख़्रिय्यन् हत्ता' अन्सौकुम् ज़िक्री व कुन्तुम् मिन्हुम् तज़्हकून (११०) अिन्नी जज़ैतुहुमुल्-यौम बिमा सबरू' ला अन्नहुम् हुमुल्फ़ा'अिज़ून (१११) क़ाल कम् लबिस्तुम् फ़िल्अर्ज़ि अदद सिनीन (११२) क़ालू लबिस्ना यौमन् औ बअ्ज़ यौमिन् फ़स्अलिल्-आ'द्दीन (११३) क़ाल अिल्लबिस्तुम् अिल्ला क़लीलल्लौ अन्नकुम् कुन्तुम् तअ्लमून (११४) अफ़हसिब्तुम् अन्नमा ख़लक़्नाकुम् अबसंव्व अन्नकुम् अिलैना ला तुर्जअून (११५)

यहाँ तक कि जब उनमें (किसी के सर पर) मौत आ (खड़ी) होती है तो उस वक़्त कहता है, ऐ मेरे रब! मुझको (दुनिया में) फिर वापस फेर दे ताकि जिसको मैं छोड़ आया हूँ उसमें जाकर फिर नेक काम करूँ। हरगिज़ ऐसा नहीं होगा। यह उसकी एक बात ही बात है जिसको यह कहे जा रहा है। और उन लोगों के आगे एक (चीज़) आड़ की आनेवाली है। (इससे मौत मुराद है)। क़ियामत के दिन जब सूर फूँका जायेगा तो जो बाहमी रिश्ते-नाते थे वह न रहेंगे और न कोई किसी को पूछेगा। सो जिस शख़्स का पल्ला भारी होगा तो ऐसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोग कामयाब होंगे, और जिस शख़्स का पल्ला हल्का होगा सो यह वह लोग होंगे जिन्होंने अपना नुक़सान किया, वह जहन्नम में हमेशा के लिए रहेंगे। और उनके चेहरों को आग झुलसाती होगी। और इसमें उनके मुँह बिगड़े होंगे। क्यों, क्या तुमको मेरी आयतें पढ़कर सुनाई नहीं जाया करती थीं और तुम उनको झुटलाया करते थे? वह कहेंगे कि ऐ हमारे रब! वाक़ई हमारी बदबख़्ती ने हमको घेर लिया था और बेशक हम गुमराह लोग थे। ऐ हमारे रब! हमको इस जहन्नम से निकाल दे फिर अगर दोबारा ऐसा करें तो बेशक हम क़ुसूरवार हैं। इरशाद होगा कि इसी में राँदे हुए पड़े रहो और मुझसे बात मत करो। मेरे बन्दों में एक गरोह था जो हमसे कहते थे ऐ हमारे परवरदिगार! हम ईमान ले आये सो हमको बख़्श दे और हम पर रहमत फ़रमा; तू सब रहम करनेवालों से बढ़कर रहम करनेवाला है। सो तुमने उनका मज़ाक़ उड़ाया, यहाँ तक उस मश्ग़ला ने तुमको हमारी याद भी भुला दी। और तुम उनसे हँसी किया करते थे। मैंने आज उनको उनके सब्र का यह बदला दिया कि वह ही कामयाब हुए। इरशाद होगा (कि अच्छा यह बतलाओ) कि तुम बरसों के एतिबार से कितनी मुद्दत ज़मीन पर रहे होगे। वह जवाब देंगे एक दिन या उससे भी कम रहे होंगे, और सच यह है कि हमको याद नहीं, सो गिननेवालों से पूछ ले। इरशाद हुआ कि थोड़ी ही मुद्दत रहे लेकिन क्या ख़ूब होता कि तुम समझते। हाँ, तो क्या तुमने यह ख़याल किया था कि हमने तुमको मुहमल ख़ाली अज़ हिकमत पैदा किया था? और तुम हमारी तरफ़ न पलटाये जाओगे?

[सू० मुअ्मिनून, रु० ६ आ० ६६-११५]

अलम् यअ्नि लिल्लज़ीन आमनू अन् तख़्शअ़ क़ुलूबुहुम् लिज़िक्-रिल्लाहि व मा नज़ल मिनल्हक़्क़ि ला व ला यकूनू कल्लज़ीन अूतुल्किताब मिन् क़ब्लु फ़ताल अ़लैहिमुल्अमदु फ़क़सत् क़ुलूबुहुम् त व कसीरुम्मिन्हुम् फ़ासिक़ून।

क्या ईमानवालों के लिए इस बात का वक़्त नहीं आया कि उनके दिल ख़ुदा की नसीहत और जो दीने हक़ नाज़िल हुआ है उसके सामने झुक जायें और उन लोगों की तरह न हो जायें जिनको इनके क़ब्ल किताब मिली, फिर उन पर ज़माना दराज़ हो गया तो उनके दिल ख़ूब सख़्त हो गये। और बहुत से उनमें काफ़िर हैं।

[सू० हदीद रु० २ आ० १६]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहादीस

८०९[१] मुसाफ़िराना ज़िन्दगी

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मेरा शाना पकड़कर फ़रमाया, दुनिया में इस तरह रहो जैसे मुसाफ़िर या रहगीर। हज़्रत उमर (र०) कहा करते थे कि जब शाम हो तो सुब्ह का इन्तिज़ार न करो और सुब्ह हो तो शाम का इन्तिज़ार न करो। सेहत में मरज़ और ज़िन्दगी में मौत के लिए सामान कर लो। [बुख़ारी]

८१०[२] वसिय्यत लिखी हुई रखनी चाहिए

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, किसी मुसलमान को यह मुनासिब नहीं कि उसके पास कोई चीज़ वसिय्यत के लायक़ हो और वह दो रातें इस हाल पर गुज़ार दे कि वसिय्यत लिख कर न रक्खी हो§। [बुख़ारी-मुस्लिम]

और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि आपने तीन रातें फ़रमाया। हज़्रत इब्नि उमर (र०) कहते हैं जब से मैंने इसको रसूलुल्लाह (स०) से सुना है एक रात भी मैंने बग़ैर वसिय्यत के नहीं गुज़ारी।

८११[३] इन्सान की मिसाल

हज़्रत इब्नि मस्ऊ़द (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक मुरब्बअ़ शक्ल की लकीर खींची और उसकी हद से एक और लकीर खींची जो दूसरी हद से बाहर निकल गयी और बीच की लकीर के पहलू में चन्द छोटी लकीरें खींचीं। फिर फ़रमाया, यह इन्सान है, और जो इसको घेरे हुए है, यह उसकी मौत है। और यह बड़ी जो हद से आगे निकल गयी है यह इन्सान की उम्मीद है। और छोटी लकीरें जो पहलू में हैं यह हादिसात[1] जो इन्सान को नौबत ब नौबत पेश आते रहते हैं। अगर एक मुसीबत ने छोड़ा तो दूसरी ने आ दबोचा। एक आफ़त से छुटकारा मिला तो दूसरी गले पड़ी। [बुख़ारी]

---

§ इसलिए कि मौत का कोई एतिबार नहीं। यह भी नहीं मालूम कि कुछ कहने-सुनने का भी मौक़ा मिलेगा या नहीं। इसलिए अपने ऊपर जो कुछ क़र्ज़ हो, अमानतें हों या अलावा मीरास के तिहाई माल में जो कुछ लेना-देना हो, वह आदमी के पास लिखा हुआ रहना चाहिए। मुसलमान को दूसरों के मुक़ाबले में उस वक़्त के लिए ज़ियादः और हर वक़्त तैयार रहना चाहिए।

---

१ दुर्घटनाएँ, विपत्तियाँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नक़्शा यह है:—

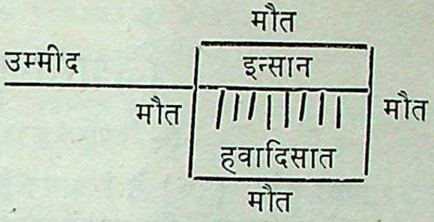

८४१२ अमल न करनेवालों को किस चीज़ का इन्तिज़ार है

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, नेक अमल में सात चीज़ों से पहले जल्दी करो। क्या तुम ऐसे फ़क्र का इन्तिज़ार करते हो जो भुला देने वाला हो। या ऐसी दौलत का जो सरकश बना देने वाली हो। या ऐसे मर्ज़ का जो बिगाड़ देने वाला हो। या ऐसे बुढ़ापे का जो अक़्ल खो देने वाला हो। या ऐसी मौत का जो अचानक आ जाने वाली हो। या दज्जाल का? पस बुरा ग़ायब है जिसका इन्तिज़ार किया जाता है। या क़ियामत का, तो क़ियामत सख़्त और तल्ख़ है। [तिर्मिज़ी]

८६१३ मौत को ज़ियादः याद करो

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, लज़्ज़तों को मिटा देनेवाली को ज़ियादः याद करो (यानी मौत को)। [तिर्मिज़ी]

८६१४ मौत और क़ियामत की याद

हज़्रत उबई (र०) बिन कअ़ब (र०) से रिवायत है कि जब एक तिहाई रात गुज़र जाती तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम खड़े होते और फ़रमाते, लोगो! अल्लाह को याद करो। कपकपा देनेवाली आने वाली है। मौत अपने मुतअ़ल्लिक़ात के साथ आ गयी। मौत अपने सामान के साथ आ गयी। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं आपके लिए अक्सर दुआ करता हूँ। और मैं अपनी दुआ में कितना हिस्सा आपके लिए रक्खूँ? आपने फ़रमाया, जितना चाहो। मैंने कहा चौथाई? फ़रमाया, जितना चाहो। अगर इससे ज़ियादः करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने कहा, आधा? फ़रमाया, जितना चाहो। अगर इससे ज़ियादः करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने कहा, दो तिहाई? फ़रमाया, जो चाहो अगर इससे ज़ियादः करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने कहा, मैं सबका सब आपके लिए कर दूँ? फ़रमाया, तुम्हारी फ़िक्रें दूर हो जायेंगी और तुम्हारे गुनाह बख़्श दिये जायेंगे। [तिर्मिज़ी]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ज़ियारतॅ-क़ुबूर[1]

८९८ ज़ियारतॅ क़ुबूर की इजाज़त

हज़्रत बुरैदः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैंने तुमको क़ब्रों की ज़ियारत से रोका था। अब तुमको इजाज़त देता हूँ। [मुस्लिम]

एक रिवायत में है जो क़ब्रों की ज़ियारत करना चाहे वह कर ले इसलिए कि क़ब्रें आख़िरत को याद दिलाती हैं।

८९९ मक़बरे में जाकर क्या कहे

हज़्रत आयशः (र०) फ़रमाती हैं कि जब मेरी बारी होती तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आख़िरी शब में बक़ीअ़ तशरीफ़ ले जाते और फ़रमाते, अस्सलामुअ़लैकुम् दार क़ौमिम्मुअ्मिनीन व अताकुम् मातू अदून ग़दम्मुअज्जलून व अिन्ना अिन्शा'अल्लाहु बिकुम् ला हिक़ून अल्लाहुम्मग़्फ़िर्लिअह्लि बक़ीअल् ग़र्क़द्‡। [मुस्लिम]

हज़्रत बुरैदः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) लोगों को ज़ियारतॅ क़ुबूर के वक़्त यह दुआ पढ़ने को फ़रमाते थे, अस्सलामु अ़लैकुम् अह्लद्दियारि मिनल् मुअ्मिनीन व अिन्ना अिन्शा'अल्लाहु बिकुम् लाहिक़ून असअलुल्लाह लना व लकुमुल् आफ़ियत ♦। [मुस्लिम]

हज़्रत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) मदीना में कुछ क़ब्रों के पास से गुज़रे। आपने अपना मुबारक चेहरा उनकी तरफ़ किया और फ़रमाया, अस्सलामु अ़लकुम् या अह्लल् क़ुबूरि यग़्फ़िरुल्लाहु लना व लकुम् अन्तुम् सलफ़ुना व नह्नु बिल् असरि §। [तिर्मिज़ी]

‡ ऐ मुसलमान बस्ती वालो! सलाम हो! तुम्हारे पास आ गया जिसका तुमसे वादा किया गया है। कल वह तुम्हारे सामने आ जायेगा। हम भी तुमसे अगर अल्लाह ने चाहा मिलनेवाले हैं। ऐ अल्लाह! बक़ीअ़वालों को बख़्श दे।

♦ तुम पर सलामती हो ऐ मुसलमान बस्ती वालो! अल्लाह ने अगर चाहा तो हम भी तुमसे मिलनेवाले हैं। और हम अल्लाह से अपने और तुम्हारे लिए आफ़ियत[2] की दुआ करते हैं।

§ सलामती हो तुमपर ऐ क़ब्र के रहनेवालो! हम अल्लाह से अपने और तुम्हारे लिए बख़्शिश चाहते हैं। तुम हमसे आगे गुज़र गये और हम तुम्हारे पीछे आ रहे हैं।

१ क़ब्रों (समाधियों) की ज़ियारत (यात्रा, दर्शन) २ शान्ति।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

८१७ मुसीबतों पर मौत की तमन्ना नहीं करना चाहिए
ज़िन्दगी फ़ायदे से ख़ाली नहीं

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मौत की कोई भी आर्ज़ू[1] न करे। अगर वह नेक है तो मुमकिन है कि उम्र के इज़ाफ़ः से उसकी नेकियों में इज़ाफ़ः होता रहे। और अगर बुरा है तो शायद वह तौबः करके अल्लाह को राज़ी कर ले। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, कोई मौत की आर्ज़ू[1] न करे। और मौत से पहले मौत की दुआ न करे। इसलिए कि जब मर जायेगा तो उसके अमल मुन्क़तिअ[2] हो जायेंगे। और मोमिन की उम्र जितनी ज़ियादः होगी भलाइयों में इज़ाफ़ा[3] होता रहेगा।

८१८ मौत की दुआ का सही तरीक़ा

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुसीबत के वक़्त भी कोई मौत की तमन्ना न करे। अगर बेकहे चारा न हो तो कहे। अल्लाहुम्म अह्यीनी मा कानतिल् हयातु ख़ैरल्ली व तवफ़्फ़नी अिजा कानतिल् वफ़ातु ख़ैरल्लीं✡। [बुख़ारी-मुस्लिम]

८१९ मौत की दुआ की मुमानिअत

हज़्रत क़ैस बिन अबू हाज़िम (र०) फ़रमाते हैं कि हम ख़ब्बाब बिन अलअरत की अयादत[4] के लिए गये। उन्होंने मर्ज़ के इज़ाल:[5] के लिए सात जगह दग़वाया था। हमसे कहने लगे कि हमारे साथी गुज़र गये, उनको दुनिया ने कोई नुक़सान नहीं पहुँचाया और हमको दुनिया इस तरह हासिल हो रही है कि तामीरात[6] के काम में लगाने के सिवा कोई सर्फ़ ही नहीं समझ में आता। अगर नबी (स०) मौत की दुआ करने से मना न फ़रमाते तो मैं मौत की दुआ करता। जब हम दूसरी मर्तबा उनसे मिले तो वह अपने घर की दीवार उठा रहे थे। कहने लगे, मुसलमान जिस चीज़ में ख़र्च करता है अज्र मिलता है, मगर इस मिट्टी के ख़र्च पर नहीं। (यानी मकान वग़ैरः के बनाने पर)। [बुख़ारी-मुस्लिम]

✡ ऐ अल्लाह! मुझको ज़िन्दा रख जब तक मेरे लिए ज़िन्दगी बेहतर है। और मुझको मौत दे अगर मेरे लिए मौत बेहतर है।

---

१ अभिलाषा, प्रार्थना २ रुक जायेंगे ३ बढ़ती ४ रोगी की मिज़ाजपुर्सी ५ निवारण ६ इमारत वग़ैरः बनाना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इहतियात[1] और वरा[2]

आयात

…व तह्सबूनहु हय्यिनन् क़ इला ०व हुव अिन्दल्लाहि अज़ीमुन् ।

और तुम उसको हल्की बात समझ रहे थे हालाँकि वह अल्लाह के नज़दीक बहुत भारी बात है। [सू० नूरि, रु० २ आ० १५]

अिन्न रब्बक लबिल्मिर्सादि ।

बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता घात में है। [सू० फ़ज्रि रु० १ आ० १४]

अहादीस

८२० मुश्तबिः[3] चीज़ों के क़रीब होना हराम में मुब्तिला कर देता है

हज़्रत नुअमान (र०) बिन बशीर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हलाल भी ज़ाहिर है, हराम भी ज़ाहिर है। और इन दोनों के दर्मियान मिलती-जुलती चीज़ें हैं। बहुत से लोग नहीं जानते। पस जो शुब्हात[4] से बचा उसने अपने दीन और आबरू को बेदाग़ रक्खा, और शुब्हात में पड़ गया वह हराम में पड़ गया। उस चरवाहे की तरह जो अपने जानवरों को रखत@ के गिर्द चराता है। क़रीब है कि जानवर रखत चर लें। सुन लो हर बादशाह के लिए एक रखत है। सुन लो अल्लाह की रखत उसके गुहर्रमात[5] हैं। सुन लो जिस्म में गोश्त का एक लोथड़ा है। अगर वह अच्छा है तो सारा जिस्म अच्छा है, अगर वह बिगड़ा तो सारा जिस्म बिगड़ गया। वह दिल है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

८२१ रसूलुल्लाह (स०) की सदक़ा के माल से इहतियात

हज़्रत अनस से रिवायत है कि नबी (स०) ने रास्ते में एक खजूर

@ बादशाह या रईस चरागाह का कुछ हिस्सा अपने लिए मख़सूस कर लें तो वह 'रखत' कहलायी जाती है।

---

१ सावधानी २ संयम, परहेज़गारी ३ संदिग्ध, ग़ैरयक़ीनी ४ संदिग्ध बातों से ५ मना, रोके हुए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाया तो फ़रमाया, अगर मुझे इसका डर न होता कि कहीं यह सदक़ा का न हो तो मैं खा लेता। [बुख़ारी-मुस्लिम]

८ ३/२२ नेकी और गुनाह की तारीफ़

हज़्रत नव्वास (र०) बिन समआ़न से रिवायत है कि नबी (स़०) ने फ़रमाया, नेकी अच्छा इख़्लाक़ है। और गुनाह वह है जो दिल में खटके और तबीअत उस बात को नापसन्द करे कि लोग उसके गुनाह को जान लें। [मुस्लिम]

हज़्रत वाबिस्स: (र०) बिन मऽबद से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने फ़रमाया, तुम नेकी के बारे में सवाल करने आये हो? मैंने अर्ज़ किया, जी हाँ। फ़रमाया, अपने दिल से पूछो। नेकी वह है जिससे नफ़्स मुतमइन[1] हो। और गुनाह वह है जो नफ़्स में खटके और सीना में तरद्दुद[2] हो, अगरचि: लोग तुमको मशविर: भी दें। [अ़हमद]

८ ४/२३ मसल: की तहक़ीक़ के लिए सफ़र और हराम से इहतियात

हज़्रत उक़ब: (र०) बिन हारिस से रिवायत है कि उन्होंने अबू वहाब (र०) की बेटी से शादी की। एक औरत आयी और बोली मैंने तुम्हें भी दूध पिलाया और जिससे तुमने शादी की है उसको भी। उक़ब: (र०) ने कहा, मुझे तो ख़बर नहीं कि तुम मेरी रज़ाई़ माँ[3] हो और न कभी तुमने मुझसे बतलाया। फिर वह मदीना में आँ हज़रत (स़०) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपसे अर्ज़ किया। आपने फ़रमाया, अब कुछ नहीं हो सकता, अब तो तुमसे बतला दिया गया है। पस उक़ब: (र०) उनसे जुदा हो गये, और उस औरत ने दूसरे से शादी कर ली। [बुख़ारी]

८ ६/२४ जिससे दिल में खटक पैदा हो छोड़ दो

हज़्रत हसन (र०) बिन अ़ली (र०) से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का फ़रमाना याद है कि उस चीज़ को छोड़ दो जिससे तुम्हारे दिल में खटक पैदा हो। [तिर्मिज़ी]

८ ६/२८ हज़्रत अबू बक्र (र०) का मुश्तबि: चीज़ से क़ै करना

हज़्रत आ़यशः (र०) से रिवायत है कि हज़्रत अबू बक्र (र०) का एक ग़ुलाम था। वह अपनी कमाई से कुछ हिस्सा हज़्रत अबू बक्र (र०)

---

१ हृदय संतुष्ट हो २ बेचैनी ३ दूध पिलाने के कारन माँ के दर्जे पर।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के लिए निकालता था जिसको वह खाते थे। एक दिन कोई चीज़ लाया और उसको उनके सामने पेश किया। हज़्रत अबू बक्र (र०) खाने लगे। ग़ुलाम ने कहा, आप जानते हैं, क्या है? हज़्रत अबू बक्र (र०) ने कहा क्या है? वह बोला मैंने जाहिलिय्यत में एक आदमी के लिए फ़ाल[1] निकाली थी। और मैं फ़ाल निकालना तो जानता न था सिर्फ़ धोका दिया था। अब वह मुझे मिला और यही दिया जो आप खा रहे हैं। हज़्रत अबू बक्र (र०) ने जो कुछ खाया था हाथ डालकर सब क़ै कर डाली। [तिर्मिज़ी]

८६६ हज़्रत उमर (र०) की इहतियात और बारीक-बीनी[2]

हज़्रत नाफ़िअ़ (र०) से रिवायत है कि उमर (र०) बिन ख़त्ताब ने मुहाजिरीनँ अव्वलीन[3] के लिए चार-चार हज़ार मुक़र्रर किये, और अपने बेटे के लिए तीन हज़ार पाँच सौ। लोगों ने कहा कि यह भी तो मुहाजिर हैं। आपने इनके लिए क्यों कम मुक़र्रर किया। हज़्रत उमर (र०) ने कहा, इनको तो इनके बाप ने हिजरत कराई; यह उनके बराबर किस तरह हो सकते हैं जिन्होंने ख़ुद हिजरत की। [बुख़ारी]

८६७ गुनाह के डर से मुबाह[4] को छोड़ देना

हज़्रत अ़तय: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, बन्द: उस वक़्त तक मुत्तक़ी[5] के दर्जे को नहीं पहुँच सकता जब तक कि गुनाह से बचने की ख़ातिर मुबाह को न छोड़े। [तिर्मिज़ी]

फ़ित्न:[6] के ज़माने में गोश:नशीनी[7]

आयत

फ़फ़िर्रू[1] अिलल्लाहि ꣸ अिन्नी लकुम् मिन्हु नज़ीरुम्मुबीनुन्।

तो तुम अल्लाह ही की तरफ़ दौड़ो, मैं तुम्हारे (समझाने) के वास्ते अल्लाह की तरफ़ से खुला डरानेवाला हूँ।

[सू० ज़ारियाति, रु० ३ आ० ५०]

---

१ शकुन २ सूक्ष्म दृष्टि ३ शुरू में हिजरत को गये हुए देशत्यागी सहाबा ४ जाइज़, विहित ५ संयमी ६ उपद्रव ७ एकान्तवास।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहादीस

८२८ ख़ुदातरस दिल का ग़नी लोगों से पोशीदः

हज़्रत सऽद (र०) बिन अबी वक़्क़ास से रिवायत है कि मैंने नबी (स०) से सुना है कि अल्लाह तआ़ला उस बन्दे से मुहब्बत करता है जो मुत्तक़ी हो, ग़नी† हो, और छुपा हुआ हो । [मुस्लिम]

हज़्रत अबू सई़द (र०) ख़ुदरी से रिवायत है कि एक आदमी ने नबी (स०) से अर्ज़ किया कि सबसे बेहतर कौन लोग हैं । आपने फ़रमाया, जो अल्लाह के रास्ते में अपनी जान व माल के साथ जिहाद करे। कहा, फिर कौन ? फ़रमाया, वह शख़्स जो आदमियों से अलग किसी घाटी में तन्हा[1] रहे और अल्लाह की अ़िबादत करता रहे ।
[बुख़ारी-मुस्लिम]

एक रिवायत में है कि अल्लाह से डरे और लोगों को अपने (यानी उनके) शर[2] से बचाये ।

८२९ अपने दीन की हिफ़ाज़त

हज़्रत अबू सई़द (र०) ख़ुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क़रीब है कि लोगों के माल में सबसे ज़ियादः बेहतर बकरियाँ हों जिनको लेकर अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिए पहाड़ की चोटी या बारिश की जगह पनाह ले । [बुख़ारी]

८३० बकरियाँ चराना पैग़म्बरों की सुन्नत[3] है

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला ने जितने नबी भेजे हैं। सबने बकरियाँ चराई हैं। सहाबा (र०) ने अर्ज़ किया, आपने भी ? फ़रमाया, हाँ। मैं मक्का वालों की बकरियाँ कुछ पैसों पर चराया करता था । [बुख़ारी]

८३१ सबसे बेहतर ज़िन्दगी

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, लोगों में सबसे बेहतर उसकी ज़िन्दगी है जो अपने घोड़े की लगाम अल्लाह की राह में थामे है। जब कोई धमाका या घबराहट की आवाज़ सुनता

---

† यानी दिल का ग़नी (निस्पृह) हो जैसे कि एक सही हदीस में आया है ।

---

१ अकेला २ बदी, बुराई ३ पदचिह्नों पर चलना ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है तो उसकी पीठ पर बैठ जाता है और शहादत या मौत के ठिकाने तलाश करता है। या वह आदमी जो कुछ बकरियाँ लेकर किसी घाटी या किसी वादी में बैठ जाये, पूरी नमाज़ पढ़ता हो, ज़कात देता हो, और अपने परवरदिगार की अिबादत करता हो। यहाँ तक कि मौत आ जाये, वह सबसे बेहतर है।

मआशिरत[१] व इख़्तिलात[२]

लोगों से मिलना, जुलना, जुमा जमात और ख़ैर के मवाक़िअ और मज्लिसों में शरीक होना, मरीज़ की इयादत करना, जनाज़े के साथ चलना, मुहताजों की मदद करना, जाहिलों को हिदायत करना, और दूसरे नेक कामों में शिरकत करना (जो महिज़ लोगों के मिलने-जुलने ही से अन्जाम पाते हैं) अफ़ज़ल[३] है। यही तरीक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अम्बियायें किराम, ख़ुलफ़ायें राशिदीन, सहाबा, ताबिअीन, और उलमायें मुस्लिमीन का था। और यही अइम्म:[४] व फ़ुक़हा[५] का मस्लक[६] है। और यही इस आयत का मफ़्हूम[७] है। वतआवनू अलल्बिर्रि वत्तक़्वा। (एक दूसरे की नेकी और परहेज़गारी पर इमदाद करो)। इसके अलावा दूसरी आयात भी इस मज़मून की हैं।

(जामिअ़किताब इमाम नववी)

तवाज़ुअ[८] और अहले ईमान की खातिरदारी व एज़ाज़[९]

आयात

वख़्फ़िज़् जनाहक लिमनित्तबअक मिनल्मुअ्मिनीन ॥।

और उन लोगों के साथ तुम (मुशिफ़क़ाना) फ़िरोतनी से[१०] पेश आओ जो मुसलमानों में दाख़िल होकर राह चलें।

[सू० शुअरा रु० ११ आ० २१५]

---

१ नागरिकता, सामाजिकता २ मेलजोल ३ श्रेष्ठ ४ इमाम ५ तरीक़ा ६ मतलब ७ आशय ८ सम्मान ९ प्रतिष्ठा १० नम्रभाव से।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

या' अय्युहल्लज़ीन आमनू मंय्यर्तद्द मिन्कुम् अन् दीनिही
फ़सौफ़ यअ्तिल्लाहु बिक़ौमिंय्युह़िब्बुहुम् व युह़िब्बूनहु' ला
अज़िल्लतिन् अलल्मुअ्मिनीन अअ़िज़्ज़तिन् अलल्काफ़िरीन ...

ऐ मुसलमानो, जो शख़्स तुममें से अपने दीन से फिर जाये तो अल्लाह तआला बहुत जल्द ऐसी क़ौम को पैदा करेगा जिनसे अल्लाह तआला को मुहब्बत होगी और मुसलमानों पर मेहरबान होंगे और काफ़िरों पर सख़्त होंगे। [सू० मा'अिदः, रु० ८ आ० ५४]

या' अय्युहन्नासु अिन्ना ख़लक़्नाकुम् मिन् ज़करिंव्व अुन्सा व
जअ़ल्नाकुम् शुअूबंव्व क़बा'अिल लितआरफ़ू, अिन्न अक्रमकुम्
अिन्दल्लाहि अत्क़ाकुम् ...

ऐ लोगो ! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया। और तुमको मुख़्तलिफ़ क़ौमें और मुख़्तलिफ़ ख़ानदान बनाया ताकि एक दूसरे को शिनाख़्त कर सको। अल्लाह के नज़दीक शरीफ़ वही है जो सबसे ज़ियादः परहेज़गार है। [सू० हुजुराति, रु० २ आ० १३]

...फ़ला तुज़क्कू' अन्फ़ुसकुम्, हुव अ‌ऽलमु बिमनित्तक़ा।

पस मत पाक कहो अपनी जानों को (बस) तक़्वा वालों को वही ख़ूब जानता है। [सू० नज्मि, रु० २ आ० ३२]

व नादा' अस्ह़ाबुल्अ‌ऽराफ़ि रिजालंय्यऽरिफ़ूनहुम् बिसीमाहुम् क़ालू
मा' अग़्ना अन्कुम् जम्अुकुम् व मा कुन्तुम् तस्तक्बिरून (४८)
अहा'अुला'अिल्लज़ीन अक़्सम्तुम् ला यनालुहुमुल्लाहु बिरह़्मतिन्,
अुद्ख़ुलुल्जन्नत ला ख़ौफ़ुन् अलैकुम् व ला' अन्तुम् तह़्ज़नून (४९)

और अहले आराफ़ बहुत आदमियों को जिनको कि उनके क़ियाफ़े[1] से पहचानेंगे, पुकारेंगे, कहेंगे कि तुम्हारी जमाअत और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना तुम्हारे कुछ काम न आया। क्या यह वही हैं जिनकी निस्बत तुम क़समें खा खाकर कहा करते थे कि उन पर अल्लाह तआला रहमत न करेगा। उनको यह हुक्म हो गया है कि जन्नत में जाओ तुम पर न कुछ अन्देशः है और न तुम मग़्मूम[2] होगे। [सू० अ‌ऽराफ़ि, रु० ६ आ० ४८-४९]

---

१ चेहरा, आकार-प्रकार २ दुखित।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अह़ादीस

८[१]३२ तवाज़ुअ़ का हुक्म

हज़्रत अ़याज़ (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला ने मेरी तरफ़ 'वहीय' भेजी कि एक दूसरे के साथ फ़िरोतनी[१] और तवाज़ुअ[२] के साथ पेश आओ। न कोई किसी पर फ़ख़्र करे न सरकशी। [मुस्लिम]

८[२]३३ तवाज़ुअ़ से अल्लाह तआ़ला अ़िज़्ज़त देता है

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, सदक़ा[३] किसी का माल नहीं घटाता। और जब बन्दह किसी की ख़ता मुआफ़ कर देता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी अ़िज़्ज़त बढ़ा देता है। और तवाज़ुअ़ करने से दर्जा बलन्द करता है। [मुस्लिम]

८[३]३४ बच्चों को सलाम

हज़्रत अनस (र०) कुछ बच्चों के पास से गुज़रे तो उनको सलाम किया और फ़रमाया, नबी (स़०) ऐसे ही किया करते थे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

८[४]३५ रसूलुल्लाह (स़०) की तवाज़ुअ़

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि मदीना की कोई लौन्डी आती और मुहम्मद (स़०) का दस्तॅ मुबारक पकड़कर जहाँ चाहती ले जाती। [बुख़ारी]

८[५]३६ घरवालों की ख़िदमत

हज़्रत असवद (र०) बिन यज़ीद से रिवायत है कि मैंने हज़्रत आ़यशः (र०) से पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम घर में क्या-क्या करते थे। उन्होंने कहा घरवालों की ख़िदमत में लगे रहते थे। और जब नमाज़ का वक़्त आता तो तश्रीफ़ ले जाते थे। (बुख़ारी)

८[६]३७ ख़ुतबा छोड़कर एक आ़मी[४] के पास आना और उसको तालीम देना

हज़्रत तमीम (र०) बिन उसैद से रिवायत है कि मैं नबी (स़०) की ख़िदमत में पहुँचा। आप ख़ुतबा फ़रमा रहे थे। मैंने अर्ज़ किया

१ विनम्रता २ सम्मान ३ दान, ख़ैरात ४ आम (सामान्य) आदमी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

या रसूलल्लाह ! मैं एक मुसाफ़िर आदमी हूँ। दीन के मुतअल्लिक़ कुछ सवाल करने आया हूँ और मैं दीन के मुतअल्लिक़ कुछ नहीं जानता। पस आपने ख़ुतबा छोड़ दिया और मेरे पास तशरीफ़ लाये। आपके लिए एक कुर्सी लायी गयी आप उस पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और मुझे वही सिखलाने लगे जो उनको अल्लाह ने सिखलाया था। फिर ख़ुतबा की तरफ़ मुतवज्जिः हुए और उसको पूरा किया। [मुस्लिम]

८३८ खाने में तवाज़ुअ़

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम खाना नोश फ़रमाते थे तो अपनी तीन उँगलियाँ चाट लेते थे। हज़्रत अनस (र०) कहते हैं कि आपने फ़रमाया, तुममें से किसी का कोई लुक़्मः गिर जाये तो वह उठा ले और साफ़ करके खा ले। उसको शैतान के लिए न छोड़े। और हुक्म दिया है कि प्याला साफ़ कर लिया करो। इसलिए कि तुमको ख़बर नहीं तुम्हारे किस खाने में बर्कत है। [मुस्लिम]

८३९ हदय:[1] क़ुबूल करने में तवाज़ुअ़

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, अगर कोई एक दस्त या एक पाये की दावत करे तो मैं क़ुबूल कर लूँ। या कोई एक पाये या एक दस्त हदय: करे तो मैं क़ुबूल कर लूँ। [बुख़ारी]

८४० दुनिया की जो चीज़ सरबलन्द[2] होगी उसका नीचा होना ज़रूरी है

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की एक ऊँटनी थी उसका नाम अज़्बा था। कोई ऊँट उससे आगे न बढ़ने पाता। एक दिन एक देहाती आया और अपनी एक छोटी सी ऊँटनी पर बैठा। वह आपकी ऊँटनी पर सबक़त[3] ले गयी। मुसलमानों पर यह बात शाक़ गुज़री। आप समझ गये। फ़रमाया, अल्लाह ने इसका ज़िम्मा लिया है कि दुनिया की जो चीज भी दूसरों से ऊँची होगी उसको नीचा करेगा।

---

१ भेंट २ उत्कर्ष पर, ऊँची ३ आगे निकल जाना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग़ुरूर[1] और ख़ुदपसन्दी[2]

आयात

तिल्कद्दारुल् आख़िरत्तु नज्अलुहा लिल्लजीन ला युरीदून अ़ुलुव्वन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़सादन् ط वल्आक़िबत्तु लिल्मुत्तक़ीन।

यह आ़लमे आख़िरत हम उन ही लोगों के लिए ख़ास करते हैं जो दुनिया में न बड़ा बनना चाहते हैं और न फ़साद करना और नेक नतीजा मुन्तक़ी लोगों को मिलता है। [सू० क़सस़, रु० ६ आ० ८३]

…व ला तम्शि फ़िल्अर्ज़ि मरहृन् ط …

और ज़मीन पर इतराकर मत चलो। [सू० लुक़्मान, रु० २ आ० १८]

व ला तुसऽ्अ़िर् ख़द्दक लिन्नासि व ला तम्शि फ़िल्अर्ज़ि मरहृन् ط अिन्नल्लाह ला युहि़ब्बु कुल्ल मुख़्तालिन् फ़ख़ूरिन् ج।

और लोगों से अपना रुख़ मत फेर और ज़मीन पर इतराकर न चल। बेशक अल्लाह तआ़ला किसी तकब्बुर[3] करने वाले, फ़ख़्र करनेवाले को पसन्द नहीं करता। [सू० लुक़्मान, रु० २ आ० १८]

अिन्न क़ारून कान मिन् क़ौमि मूसा फ़बग़ा अ़लैहिम् ط व आतैनाहु मिनल्कुनूज़ि मा' अिन्न मफ़ातिहृहु लतनू'अु बिल्अ़ुस्बत्ति अुलिल्क़ुव्वत्ति ق अिज् क़ाल लहु क़ौमुहु ला तफ़्रहृ अिन्नल्लाह ला युहि़ब्बुल्फ़रिहृीन (७६) वब्तग़ि फ़ीमा' आताकल्लाहुद्दारल्-आख़िरत्त व ला तन्स नसीबक मिनद्दुन्या व अहृसिन् कमा' अहृसनल्लाहु अिलैक व ला तब्ग़िल्फ़साद फ़िल्अर्ज़ि ط अिन्नल्लाह ला युहि़ब्बुल्मुफ़्सिदीन (७७) क़ाल अिन्नमा' अूतीतुहु अ़ला अ़िल्मिन् अ़िन्दी ط अवलम् यऽलम् अन्नल्लाह क़द् अह्लक मिन् क़ब्लिहृी मिनल्क़ुरूनि मन् हुव अशद्दु मिन्हु क़ुव्वत्तंव्व अक्सरु जम्अ़न् ط व ला युस्अलु अ़न् ज़ुनूबिहिमुल्मुज्रिमून (७८)

---

१ अहंकार, घमण्ड २ अपने ही को श्रेष्ठ समझना ३ घमण्ड।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फ़ख़रज अ़ला क़ौमिही फ़ी ज़ीनतिही त क़ालल्लज़ीन युरीदूनल्हयावद्दुन्या यालैत लना मिस्ल मा' ऊतिय क़ारूनु ला अिन्नहू लज़ू हज़्ज़िन् अ़ज़ीमिन् (७९) व क़ालल्लज़ीन ऊतुल्अ़िल्म वैलकुम् सवाबुल्लाहि ख़ैरुल्लिमन् आमन व अ़मिल सालिहन् ज व ला युलक़्क़ाहा' अिल्लस्साबिरून (८०) फ़ख़सफ़्ना बिही व बिदारिहिल्अर्ज़ क़िफ़ फ़मा कान लहू मिन् फ़िअतिंय्यन्सुरूनहू मिन् दूनिल्लाहि क़ व मा कान मिनल्मुन्तसिरीन (८१) व अस्बहल्लज़ीन तमन्नौ मकानहू बिल्अम्सि यक़ूलून वैकअन्नल्लाह यब्सुतुर्रिज़्क़ लिमंय्यशा'उ मिन् अ़िबादिही व यक़्दिरु ज लौ ला' अम्मन्नल्लाहु अ़लैना लख़सफ़ बिना त वैकअन्नहू ला युफ़्लिहुल्काफ़िरून (८२)

बेशक क़ारून, मूसा (अ०) की बिरादरी से था। वह (कसरतें माल[1] की वजह से) उन लोगों के मुक़ाबले में तकब्बुर करने लगा। और (उसके माल की कसरत इतनी थी) हमने उसको इस क़दर ख़ज़ाने दिये थे कि उन की कुंजियाँ कई-कई ज़ोर आवर शख़्सों को गराँबार[2] कर देती थीं। जब उसकी बिरादरी ने उससे कहा कि तू इतरा मत, वाक़ई अल्लाह तआ़ला इतराने वालों को पसन्द नहीं करता और जो तुझको ख़ुदा ने दे रक्खा है उसमें आ़लमे आख़िरत की भी जुस्तुजू[3] कर और दुनिया से अपना हिस्सा (आख़िरत में ले जाना) फ़रामोश मत कर और जिस तरह ख़ुदाए तआ़ला ने तेरे साथ इहसान किया है, तू भी बन्दों के साथ इहसान कर और दुनिया में फ़साद का ख़्वाहाँ[4] मत हो। बेशक अल्लाह तआ़ला अहलें फ़साद को पसन्द नहीं करता। क़ारून ने कहा, यह सब तो मुझको मेरी ज़ाती हुनरमन्दी से मिला है। क्या इस (क़ारून) ने यह न जाना कि अल्लाह तआ़ला इससे पहले गुज़िश्तः उम्मतों में ऐसे ऐसों को हलाक कर चुका है जो क़ुव्वत (माली) में (भी) इससे कहीं बढ़े हुए थे और मजमा[5] (भी) उनका (इससे) ज़ियादः था और अहलें जुर्म से उनके गुनाहों का (तहक़ीक़ करने की ग़र्ज़ से) सवाल न करना पड़ेगा। फिर वह अपनी आराईश से अपनी बरादरी के सामने निकला। जो लोग दुनिया के तालिब थे (गो मोमिन हों) कहने लगे क्या ख़ूब होता कि हमको

१ धनाधिक्य २ बोझ से भारी ३ यत्न, तलाश ४ फ़साद फैलानेवाला ५ जत्था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी वह साज़ व सामान मिला होता जैसा क़ारून को मिला है। वाक़ई वह बड़ा साहबे नसीब है। और जिन लोगों को (दीन) की फ़हम[1] अता हुई थी वह (इन हरीसों[2] से) कहने लगे अरे तुम्हारा सत्तियानास हो (तुम इस दुनिया पर क्या ललचाते हो) अल्लाह तआ़ला के घर का सवाब इस दुनियावी कर्र व फ़र से हज़ार दर्जा बेहतर है। उस शख्स के लिए जो ईमान लाये और नेक अमल करे और उन्हीं को मिलता है। जो सब्र करने वाले हैं। फिर हमने क़ारून को मय उसकी महिलसरा के धँसा दिया। सो कोई ऐसी जमाअत न थी जो उसको अल्लाह के अज़ाब से बचा लेती और न वह ख़ुद ही अपने को बचा सका। और कल जो लोग उस जैसे होने की तमन्ना करते थे वह आज कहने लगे, बस जी! यों मालूम होता है कि अल्लाह अपने बन्दों में से जिसको चाहे ज़ियादः रोज़ी देता है। और (जिसको चाहे) तंगी से देने लगता है। अगर हम पर अल्लाह तआ़ला की मेहरबानी न होती तो हमको भी धँसा देता। बस जी, मालूम हुआ कि काफ़िरों को फ़लाह[3] नहीं होती।

[सू० क़सस़ि, रु० ८ आ० ७६-८२]

अहादीस

८४१ मुतकब्बिर[4] जन्नत में न आयेगा; तकब्बुर[5] क्या है?

हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन मस्ऊ़द (र०) से रिवायत है कि नबी (स़०) ने फ़रमाया, जिस शख्स के दिल में राई के बराबर भी तकब्बुर होगा वह जन्नत में न दाखिल होगा। किसी ने कहा, आदमी अच्छे कपड़े और अच्छे जूते पसन्द करता है। फ़रमाया, अल्लाह नफ़ासत और सुथराई को पसन्द करता है। तकब्बुर तो हक़ बात न मानना और लोगों को हक़ीर समझना है। [मुस्लिम]

८४२ मुतकब्बिर को बद्दुआ़

हज़्रत सलमः (र०) बिन अकवअ़ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने एक आदमी अपने बायें हाथ से खा रहा था। आपने फ़रमाया, सीधे हाथ से खाओ। वह बोला नहीं खा सकता। आपने फ़रमाया, न खा सको (उसके ग़ुरूर ने यह बात कहलायी थी)। फिर वह अपना सीधा हाथ मुँह की तरफ़ कभी न उठा सका।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ समझ २ इर्ष्या करनेवालों ३ सफलता ४ अहंकारी ५ अहंकार।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

८८३ अहले जहन्नम

हज़्रत हारिसः (र०) बिन वहब से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है; क्या मैं तुमको दोज़ख़ वालों की ख़बर दूँ? उसमें सब सर्कश[1], बख़ील[2] और मुतकब्बिर[3] हैं। [बुख़ारी-मुस्लिम]

८८४ अहले जहन्नम और अहले जन्नत

हज़्रत अबू सईद (र०) ख़ुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जन्नत और दोज़ख़ में बहिस हुई। दोज़ख़ ने कहा मुझमें सर्कश और मुतकब्बिर हैं। जन्नत ने कहा, मुझमें कमज़ोर और मसाकीन[4] हैं। अल्लाह तआला ने दोनों के दर्मियान फ़ैसला किया। फ़रमाया, जन्नत तू मेरी रहमत है। तेरे ज़रीये मैं जिस पर चाहूँगा रहम करूँगा। और दोज़ख़ से ख़िताब किया कि तू मेरा अज़ाब है। तेरे ज़रीये जिस पर चाहूँगा अज़ाब करूँगा। और तुम दोनों का भरना मेरे ज़िम्मे है। [मुस्लिम]

८८८ तकब्बुर से टखने से नीचा पायजामा और उस पर वईद[5]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उस पर नज़र न फ़रमायेगा जो बड़ाई के ख़याल से पायजामा को लटका कर इतराता चलता है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन अल्लाह तआला तीन आदमियों से न बात करेगा, न उनको पाक करेगा, न उनकी तरफ़ देखेगा। और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। (१) बूढ़ा बदकार (२) झूठा बादशाह (३) गदायें मुतकब्बिर@।

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का इरशाद है कि इज़्ज़त मेरी तहबन्द है और बड़ाई मेरी चादर§ है। जिसने इन दोनों में से किसी को खींचा उस पर मैं अज़ाब करूँगा। [मुस्लिम]

@ जिसके तकब्बुर के लिए कोई ज़ाहिरी सबब और वजह भी न हो।

§ यानी इज़्ज़त व किब्रियाई[6] मेरी ख़ास चीज़ें हैं, जो अपनी किब्रियाई मनवायेगा वह गोया मेरी ख़ास चीज़ों पर दस्तदराज़[7] है।

---

१ उद्दण्ड २ कंजूस ३ अहंकारी, घमण्डी ४ दीन ५ सज़ा की धमकी ६ ईश्वर के प्रति सम्मान ७ अन्याय से हड़प लेने वाला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८६६ मुतकब्बिर इतराने वाला ज़मीन में धँस गया

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, एक आदमी अच्छे लिबास और सर में कंघी किये हुए इतराई हुई चाल से चल रहा था और यह अन्दाज़ उसको बहुत अच्छा मालूम हो रहा था। उसको अल्लाह ने धँसा दिया। वह ज़मीन में क़ियामत के दिन तक धँसता रहेगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

८६७ मुतकब्बिर का हश्र[1] सर्कशों के साथ होगा

हज़्रत सलमः (र०) बिन अकवअ् से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, आदमी बराबर तकब्बुर करता रहता है, यहाँ तक कि सर्कशों में लिख लिया जाता है। पस उसको भी वही पहुँचता है जो उनको पहुँचा। [तिर्मिज़ी]

अच्छे अख़्लाक़[2]

आयात

व अिन्नक लअ़ला ख़ुलुक़िन् अ़ज़ीमित्।

बेशक तुम अख़्लाक़ॅ हसना[3] के अअ़ला पौमाने पर हो।

[सू० क़लमि, रु० १ आ० ४]

…वल्काज़िमीनल्ग़ैज़ वल्आ़फ़ीन अ़निन्नासि ॰ वल्लाहु युहि़ब्बुल्-मुह्सिनीन ॰।

और ग़ुस्सा के ज़ब्त करने वाले लोगों से दरगुज़र करनेवाले अल्लाह तआ़ला ऐसे नेककारों को महबूब[4] रखता है।

[सू० आलि अिमरान, रु० १४ आ० १३४]

अहादीस

८६८ रसूलुल्लाह (स) की सिफ़त[5]

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अख़्लाक़ सबसे बेहतर हैं। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ अन्त २ शिष्टाचार ३ श्रेष्ठ शिष्टाचार ४ प्रेमपात्र ५ गुण।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि मैंने दीबा[1] और रेशम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुबारक हथेली से ज़ियाद: नर्म नहीं छुवा और कभी कोई ख़ुशबू रसूलुल्लाह (स०) की ख़ुशबू से ज़ियाद: अच्छी नहीं सूँघी। और मैंने आपकी दस बरस ख़िदमत की; आपने कभी उफ़ नहीं फ़रमाया और न किसी काम के करने या न करने पर आपने कभी फ़रमाया, कि यह क्यों न किया या क्यों किया। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत सअ़ब (र०) बिन जुसाम: से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक गोरख़र[2] हदय: पेश किया[3]। आपने उसको वापस फ़रमा दिया। जब मेरे चेहरे की हालत देखी तो फ़रमाया, मैं इसको न वापस करता मगर मैं एहराम[4] बाँधे हूँ। [बुख़ारी-मुस्लिम]

खुशखुल्क़ी[5] का दर्जा

हज़्रत उवास (र०) बिन समआ़न से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से नेकी और गुनाह के मुतअ़ल्लिक़ सवाल किया। आपने फ़रमाया, नेकी अच्छे अख़्लाक़ हैं और गुनाह वह है जो सीने में खटक पैदा करे। और आदमी उसको नापसन्द करे कि लोग उसके गुनाह पर मुत्तला[6] हों। [मुस्लिम]

हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन उमर बिन अलआ़स से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सहवन या इरादतन भी फ़ुह्श[7] बात न निकालते थे और फ़रमाते थे कि तुममें सबसे बेहतर वह है जिसके अख़्लाक़ अच्छे हैं। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अबू दरदा (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, मोमिन बन्दे की मीज़ान में अच्छे अख़्लाक़ से ज़ियाद: कोई चीज़ वज़नी न होगी। और अल्लाह तआ़ला फ़ुह्श बकनेवाले बदज़बान आदमी से नफ़रत करता है। [तिर्मिज़ी]

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अर्ज़ किया गया कि किस सबब से लोग जन्नत में दाख़िल होंगे। आपने फ़रमाया, अल्लाह के ख़ौफ़ व इह्तियात और

---

१ एक विशेष रेशमी वस्त्र २ जंगली गधा ३ भेंट किया ४ हज के समय प्रवेश करने के दो वस्त्र (चादरें) ५ सुशीलता ६ सूचना पावें, जानें ७ गाली।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ख़ुशख़ुल्क़ी से। अर्ज़ किया गया दोज़ख़ में ज़ियादःतर किस वजह से लोग जायेंगे। फ़रमाया हरामख़ोरी और बदकारी† से।

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कि कामिलतर[1] ईमान उसका है जिसके अख़्लाक़ अच्छे हों और तुममें अच्छा वह है जो अपनी बीवियों से हुस्नें सुलूक से पेश आये। [तिर्मिज़ी]

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि मैंने नबी (स०) से सुना है मोमिन अच्छे अख़्लाक़ के ज़रीये पै दर पै रोज़े रखने वाले और आ़बिद का दर्जा पा लेता है। [अबूदावूद]

हज़्रत अबू उमामः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं उस शख़्स के लिए जन्नत के सामने एक घर का ज़ामिन होता हूँ जिसने हक़ पर होते हुए भी झगड़ा छोड़ दिया और उस शख़्स के लिए जन्नत के अन्दर मैं एक घर का ज़ामिन हूँ जिसने झूठ छोड़ दिया, अगरचि वह मज़ाक़न बोलता था। और उस शख़्स के लिए जन्नत की बलन्दी में एक घर का ज़ामिन हूँ जिसके अख़्लाक़ अच्छे हों। [अबूदावूद]

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन मुझे सबसे ज़ियादः पसन्दीदः और मुझसे सबसे ज़ियादः क़रीब वह होंगे जो अच्छे अख़्लाक़ वाले हैं। और मुझे सबसे ज़ियादः नापसन्द और सबसे ज़ियादः मुझसे दूर होंगे वह (जो) ज़ियादः बातूनी, चर्ब ज़बान और तसन्नुअ़ से[2] बात करने-वाले मुतकब्बिरꣳ होंगे। [तिर्मिज़ी]

बुर्दबारी, सन्जीदगी और नर्मी

आयात

...वल्काजिमीनल्ग़ैज़ वल्आ़फ़ीन अ़निन्नासि, वल्लाहु युहिब्बुल्-मुह्सिनीन।

† यानी ज़बान और शर्मगाह की बेएहतियाती[3] और उन गुनाहों के सबब से जो इन दोनों से तअल्लुक़ रखते हों।

ꣳ रसूलुल्लाह (स०) ने ख़ुद यह तश्रीह फ़रमायी।

१ पूर्णता से अधिक निकट २ बनावटी ३ असावधानी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और ग़ुस्से को ज़ब्त करनेवाले और लोगों से दरगुज़र करनेवाले, अल्लाह ऐसे नेककारों को महबूब[1] रखता है।
[सू० आलि अिमरान, रु० १४ आ० १३४]

ख़ुजिल्‌अ़फ़्व वअ्मुर् बिल्‌अ़ुर्फ़ि व अ़्‌रिज़् अ़निल्‌जाहिलीन।

मुआफ़ी इख़्तियार करो नेकी का हुक्म दो और जाहिलों से एराज़ करो[2]।
[सू० अ़्‌राफ़, रु० २४ आ० १६६]

व ला तस्‌तविल्‌ह़सनतु व लस्सय्यिअतु ॰ अिद्‌फ़ऽ बिल्लती हिय अह्सनु फ़अिजल्लज़ी बैनक व बैनहु अ़दावतुन् कअन्नहु वलिय्युन् ह़मीमुन् (३४) व मा युलक़्क़ाहा अिल्लल्लज़ीन सबरू ॰ व मा युलक़्क़ाहा अिल्ला ज़ूह़ज़्ज़िन् अ़ज़ीमिन् (३५)।

और नेकी-बदी बराबर नहीं होती (बल्कि हर एक का असर जुदा है) नेक बरताव से बदी को टाल दो फिर यकायक तुममें और जिस शख़्स में अदावत थी वह ऐसा हो जायगा जैसा कोई दिली दोस्त होता है। और यह बात उन्हीं लोगों को नसीब होती है जो बड़ा साहबे नसीब है।
[सू० ह़ामी'म् सजदः, रु० ५ आ० ३४-३५]

व लमन् सबर व ग़फ़र अिन्न ज़ालिक लमिन् अ़ज़्मिल्‌अुमूरि।

और जो शख़्स सब्र करे और मुआफ़ कर दे, यह अलबत्ता हिम्मत के कामों में से है।
[सू० शूरा, रु० ४ आ० ४३]

अह़ादीस

८८० ख़ुदा की दो पसन्दीदः[3] ख़स्लतें[4]

हज़्रत इब्नि अ़ब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अशवह़ अ़ब्दुल क़ैस§ से फ़रमाया, तुममें दो ख़स्लतें

§ अशवह़ अब्दुल क़ैस का नाम मुन्ज़िर बिन हारिस था। अ़ब्दुल क़ैस का वफ़्द[5] जो मदीना पहुँचा तो फ़ौरन ही ख़िदमतें नबवी में हाज़िर हो गया। अशवह़ मन्ज़िल के पास ठहर कर, नहा धोकर अच्छे कपड़े पहिन कर हुज़ूरे नबवी में आये। आपने उनको अपने क़रीब जगह दी। ह़दीस मुन्दर्जः बाला इसी मौक़े पर इर्शाद फ़रमायी थी।

१ प्रेमपात्र २ उपेक्षा करो, बचो ३ प्रिय ४ स्वभाव, आदतें ५ प्रतिनिधि-मण्डल, डेलीगेशन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैं जिनको अल्लाह तआला पसन्द फ़रमाता है। बुर्दबारी[१] और सुकून व सन्जीदगी[२]। [मुस्लिम]

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, अल्लाह तआला नर्म है। और नर्मी[३] को पसन्द फ़रमाता है। और जो नर्मी पर अता फ़रमाता है[४] सख़्ती पर और इसके अलावा किसी चीज़ पर नहीं अता फ़रमाता। [मुस्लिम]

हज़्रत आयशः (र०) नबी (स०) से रिवायत करती है कि जिस चीज़ में नर्मी होती है उसको ज़ीनत दे देती है। और जिस चीज़ से निकल जाती है उसको बुरा कर देती है। [मुस्लिम]

८८२१ तुम सख़्ती के लिए नहीं भेजे गये हो

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि एक देहाती ने मस्जिद में पेशाब कर दिया, लोग बिगड़ने लगे। आँहज़्रत (स०) ने फ़रमाया, इसको छोड़ दो और इसके पेशाब पर एक बड़ा डोल पानी का बहा दो। और तुम सख़्ती[५] के लिए नहीं भेजे गये हो। इसलिए भेजे गये हो कि आसानी[६] पैदा करो। [बुख़ारी]

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, आसानी पैदा कोर। सख़्ती न करो। बशारत दो[७] नफ़रत[८] न दिलाओ। [बुख़ारी-मुस्लिम]

८८३२ दुरुश्त ख़ू[९]

हज़्रत जरीर (र०) बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है, जो नर्मी से महरूम[१०] रहा वह हर भलाई से महरूम रहा। [मुस्लिम]

८८४३ गुस्सा करने की वसिय्यत

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि एक आदमी ने नबी (स०) से अर्ज़ किया मुझे वसिय्यत कीजिए। आपने फ़रमाया, ग़ुस्सा न करो। उसने कई बार यही कहा, मुझे वसिय्यत कीजिए और आप बार-बार यही फ़रमाते रहे कि ग़ुस्सा न करो। [बुख़ारी]

---

१ सहनशीलता २ शाँति-संतोष ३ मृदुलता, सदयता ४ पुरस्कृत करता है ५ कठोरता ६ सरलता ७ शुभ संवाद पहुँचाओ ८ घृणा ९ कठोर स्वभाव १० वञ्चित।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८८४ छुरी को तेज़ कर लो ताकि ज़बीह:[१] को तकलीफ़ न हो

हज़्रत शद्दाद बिन औस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स़०) ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला ने हर काम को अच्छे तरीक़े पर करना, ज़रूरी किया है। जब्र तुम क़त्ल करो तो भलाई से क़त्ल करो और जब तुम ज़बह करो तो भलाई के साथ ज़बह करो। अपनी छुरी को तेज़ कर लो ताकि ज़बीह: को तकलीफ़ न हो। [मुस्लिम]

८८८ दो कामों में रसूलुल्लाह (स़०) आसान बात इख़्तियार फ़रमाते[२]

हज़्रत आयश: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स़०) को जब दो कामों में इन्तिख़ाब[३] का मौक़ा होता जो गुनाह न हों तो आसान काम इख़्तियार फ़रमाते‡। और अगर गुनाह होता तो सबसे ज़ियाद: आप उससे दूर रहते और अपने नफ़्स के लिए कभी इन्तिक़ाम[४] नहीं लिया। अगर अल्लाह की हुरमतों में कोई बात हुई तो अल्लाह के लिए इन्तिक़ाम लिया। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत इब्नि मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स़०) ने फ़रमाया, मैं तुमको ख़बर देता हूँ उसकी जो आग पर हराम होगा या जिसपर आग हराम होगी। हर ग़रीब बेआज़ार[५] नर्म ख़ू,[६] नर्म रौ[७]। [तिर्मिज़ी]

---

‡ रसूलुल्लाह (स़०) को अल्लाह तआ़ला ने आला दर्जे की सलामतरवी और सलामतें फ़ितरत अ़ता फ़रमायी थी। और आपको उम्मत के लिए नमूना और मुक़्तिदा बनाया था। इसलिए आप दो कामों में से जो जायज़ हों और उनमें दीनी हैसियत से कोई फ़र्क़ न हो हमेशा वह काम इख़्तियार फ़रमाते जो मुक़ाबलतन ज़ियाद: आसान हो। यह फ़ितरत की सिहत[८] और मिज़ाज के ऐतिदाल[९] की दलील है। ख़्वाहमख़्वाह की मुश्किल-पसन्दी और बेज़रूरत टेढ़ा रास्ता इख़्तियार करना कज-दिमाग़ी[१०] या मिजाज की बेएतिदाली का सुबूत है।

---

१ बलिदान किये जाने वाले को २ ग्रहण करते ३ चुनाव ४ प्रतिशोध, बदला ५ कष्ट न देनेवाला ६ कोमल स्वभाव ७ विनम्र ८ स्वस्थ स्वभाव ९ शान्त स्वभाव १० टेढ़ी बुद्धि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुआफ़ी और जाहिलों से इअ़राज़

आयात

ख़ुज़िल्‌अ़फ़्व वअ्मुर् बिल्‌अ़ुर्फ़ि व अऽरिज़् अ़निल्-जाहिलीन ।

मुआफ़ी इख़्तियार करो और नेकी का हुक्म दो और जाहिलों से एराज़ करो[1] । [सू० अऽराफ़ि, रु० २४ आ० १६६]

…फ़स्‌फ़हिस्सफ़्हल्‌जमील ।

सो तुम ख़ूबी के साथ दरगुज़र करो । [सू० हिज्रि, रु० ६ आ० ८५]

…वल्‌यऽफ़ू वल्‌यस्‌फ़हू, अला तुहिब्बून अंय्यग़्फ़िरल्लाहु लकुम्, …

और चाहिए कि मुआफ़ कर दें और दरगुज़र करें क्या तुम यह बात नहीं चाहते कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कुसूर मुआफ़ कर दे । [सू० नूरि, रु० ३ आ० २२]

…वल्‌आ़फ़ीन अ़निन्नासि, वल्लाहु युहिब्बुलमुह्‌सिनीन । ।

और लोगों से दरगुज़र करने वाले, अल्लाह ऐसे नेककारों को पसन्द करता है । [सू० आलि अ़िमरान, रु० १४ आ० १३४]

व लमन् सबर व ग़फ़र अिन्न ज़ालिक लमिन् अ़ज़्मिल्‌उमूरि ।

और जो शख़्स सब्र करे और मुआफ़ कर दे अलबत्ता यह हिम्मत के कामों में से है । [सू० शूरा, रु० ४ आ० ४३]

अहादीस

८८६ नबी (स०) का अफ़ू[2] से दरगुज़र

हज़्रत आयशः (र०) ने नबी (स०) से दर्याफ़्त फ़रमाया, क्या आप पर उहद के दिन से ज़ियादः सख़्त कोई दिन गुज़रा है। आपने फ़रमाया, मुझे तुम्हारी क़ौम से बहुत कुछ बरदाश्त करना पड़ा है। सबसे ज़ियादः अक़्बः का दिन था । मैंने अ़ब्द या लैल बिन अ़ब्द कुलाल को दावतें इस्लाम दी । उसने मेरी बात क़ुबूल नहीं की । मैं अपने हाल में इस फ़िक्र और रंज में चला जा रहा था क़र्न सआलुब में पहुँच कर

१ बचो २ मुआफ़ी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुझे इहसास हुआ कि मैं कहाँ हूँ। सर उठाया तो एक बादल था जो मुझ पर साया किये हुए था। मैंने जो नज़र डाली तो उसमें जिबरील नज़र आये। मुझे पुकारा और कहा, अल्लाह तआ़ला ने आपका फ़रमाना सुना और आपकी क़ौम का जवाब सुना तो आपकी तरफ़ पहाड़ों का फ़िरिश्ता भेजा है। अब आप जो चाहें इन्हें हुक्म दें। फिर पहाड़ों के फ़िरिश्ते ने मुझे पुकारा "ऐ मुहम्मद (स़०) अल्लाह तआ़ला ने आपका सवाल सुना और आपकी क़ौम का जवाब सुना। मैं पहाड़ों का फ़िरिश्ता हूँ मुझे मेरे परवरदिगार ने भेजा है। अब आप अपने मआमले में जो चाहें हुक्म दें। अगर आपका इरशाद हो तो मैं इन दो पहाड़ों के दर्मियान उनको पीस दूँ"। आपने फ़रमाया नहीं। मैं उम्मीद करता हूँ कि उनमें अल्लाह तआ़ला ऐसे लोग पैदा करेगा जो उसकी अिबादत करेंगे। और उसका शरीक न ठहरायेंगे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

८८७ किसी को हुज़ूर (स़०) ने नहीं मारा और न अपने लिए बदला लिया

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किसी को अपने हाथ से नहीं मारा। न किसी औरत को और न ग़ुलाम को सिवाये यह कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद करें और आपको कभी किसी से तकलीफ़ पहुँचती तो तकलीफ़ पहुँचाने वाले से बदला न लेते। मगर हाँ, जब अल्लाह की हुर्मतों में कोई बेहुर्मती करता तो आप अल्लाह के लिए बदला लेते। [मुस्लिम]

८८८ हिल्म[1] व आ़ली ज़र्फ़ी[2]

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि मैं नबी (स़०) के साथ जा रहा था। आप मोटे किनारे की नजरानी[3] चादर ओढ़े हुए थे। एक देहाती आपसे मिला और चादर पकड़कर आपको बड़े ज़ोर से खींचा। मैंने देखा कि आपके काँधे पर चादर के खींचने से निशान पड़ गये थे। बोला ऐ मुहम्मद (स़०) मुझे उस माल से दीजिए जो आपको अल्लाह ने दिया है। आपने उसकी तरफ़ देखा और मुस्कराये, फिर उसको देने का हुक्म दिया। [बुख़ारी-मुस्लिम]

८८९ पैग़म्बरों का अमल

हज़्रत इब्नि मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि नबी (स़०) एक नबी की हिकायत बयान फ़रमा रहे थे। हुज़ूर (स़०) के बयान करने का मन्ज़र[4] इस वक़्त भी मेरी आँखों के सामने है। उनपर अल्लाह का

---

१ सहनशीलता २ उदारता ३ नजरान की बनी ४ दृश्य।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुरूद और सलामती हो। फ़रमाया, उनकी क़ौम उनको इस क़दर मारती थी कि ख़ून आलूदः कर देती थी। और वह अपने चेहरे से ख़ून पोछते जाते थे। और कहते जाते थे ऐ अल्लाह ! इनको बख़्श दे। यह जानते नहीं। [बुख़ारी-मुस्लिम]

८६० पहलवान कौन है ?

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, पहलवान वह नहीं है जो किसी को पछाड़ दे। पहलवान वह है जो ग़ुस्सा के वक़्त अपने नफ़्स को क़ाबू में रक्खे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

८६१ बुराई करने वालों के साथ भलाई करने की फ़ज़ीलत[1]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि एक आदमी नबी (स०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मेरे क़राबतदार हैं। मैं उनसे रिश्ता जोड़ता हूँ, वह काटते हैं। मैं उनके साथ भलाई करता हूँ, वह मेरे साथ बुराई करते हैं। मैं बुर्दबारी[2] करता हूँ वह मुझपर सख़्ती करते हैं। आपने फ़रमाया, जो कुछ तुम कहते हो अगर यह सही है तो उनके मुँह में ख़ाक डालते हो। जब तक तुम्हारा यह रवय्यः[3] रहेगा अल्लाह की मदद तुम्हारे साथ रहेगी। [मुस्लिम]

दीन की बेहुर्मती और ख़िलाफ़ शरअ़ काम पर ग़ज़ब और जलाल

८६२ निहायततवील इमामत पर हुज़ूर (स०) की नाराज़गी

हज़्रत अबू मस्ऊ़द (र०) बदरी से रिवायत है कि एक आदमी नबी (स०) की ख़िदमत बाबर्कत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मैं फ़लाँ आदमी की वजह से सुबह की नमाज़ में पिछड़ जाता हूँ, इसलिए कि वह नमाज़ को बहुत तूल देते हैं। मैंने उस दिन से ज़ियादः आपको नसीहत में ग़ुस्सा करते नहीं देखा। आपने फ़रमाया, ऐ लोगो ! तुम वहशत पैदा करने वाले हो। ख़बरदार ! जब तुममें से कोई लोगों की इमामत करे तो नमाज़ मुख़्तसर कर दे। और अपने पीछे वालों को देखे कि उनमें बूढ़े भी हैं, बच्चे भी हैं और हाजतमन्द[4] भी। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ श्रेष्ठता २ सहन ३ आचरण ४ जरूरतवाले, मुहताज।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

८६३ ख़िलाफ़ें शरअ् अम्र[1] पर नाराज़गी और मलामत[2]

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ्लैहि व सल्लम किसी सफ़र से तशरीफ़ लाये। मैंने चबूतरे पर एक बारीक पर्दा छोड़ रक्खा था जिस पर तस्वीरें थीं। आपने जब उसको देखा तो फाड़ डाला। फ़रमाया, ऐ आयशः (र०) अल्लाह का अज़ाब क़ियामत के दिन उन लोगों पर सख़्त होगा जो अल्लाह की सिफ़तें ख़ल्क़ में मुशाबिहत पैदा करने की कोशिश करते[3] हैं। [बुख़ारी-मुस्लिम]

८६४ चोरी की सज़ा के बारे में सिफ़ारिश पर नाराज़गी

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि क़बीलः मख़्ज़ूम की एक औरत ने चोरी की। क़ुरैश को उसकी बड़ी फ़िक्र हुई। उन्होंने कहा, इसके बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ्लैहि व सल्लम से कौन सिफ़ारिश कर सकता है। लोगों ने कहा, सिवा उसामः (र०) के कोई जुरअत नहीं कर सकता। इसलिए कि वह रसूलुल्लाह (स०) के महबूब हैं। हज़्रत उसामः (र०) ने रसूलुल्लाह (स०) से शिफ़ारिश की। आपने फ़रमाया कि तुम अल्लाह की हदों में सिफ़ारिश करते हो। फिर आप खड़े हो गये और फ़रमाया, अगली उम्मतों को इसी बात ने हलाक किया[4] कि जब कोई शरीफ़ चोरी करता तो उसको छुपा देते और अगर रज़ील करता तो उस पर हद क़ायम करते। क़सम ख़ुदा की अगर मुहम्मद (स०) की बेटी फ़ातिमा (र०) चोरी करे तो उसका भी हात काट दूँगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

८६८ मस्जिद में गन्दगी पर नाराज़गी

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ्लैहि व सल्लम ने क़िबला के सामने थूक को देखा। आप पर बहुत गराँ गुज़रा और आपके चेहरए मुबारक तक से ज़ाहिर हो गया। फिर आप खड़े हो गये और दस्तें मुबारक से उसको खुर्चा और फ़रमाया, जो कोई नमाज़ में खड़ा होता है तो वह अपने परवरदिगार से सरगोशी करता है। उसका परवरदिगार उसके और क़िबला के दर्मियान होता है। तो क़िबला के सामने न थूकना चाहिए। बायें तरफ़ या पाँव के पीछे थूकें। फिर आपने अपनी चादर का एक कोना लेकर उसमें थूका और उसको कोने से दबा कर फ़रमाया, या इस तरह करो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ शास्त्रविरुद्ध विषय २ भर्त्सना ३ ईश्वर की सृष्टि की नक़ल या बराबरी करना चाहते हैं ४ नष्ट किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रिआया के साथ नर्मी और ख़ैरख़्वाही का हुक्म

आयात

वख़्फ़िज़् जनाहूक लिमनित्तबअ्क मिनल्मुअ्मिनीन ।

और उन लोगों के साथ (मुश्फ़िक़ाना)[1] फ़िरोतनी[2] से पेश आओ जो मुसलमानों में दाख़िल होकर तुम्हारी राह चलें ।

[सू० शुअरा, रु० ११ आ० २१५]

अिन्नल्लाह यअ्मुरु बिल्‌अ़द्‌लि वल्‌अिह्‌सानि व ईता'अि जिल्क़ुर्बा व यन्हा अ़निल्फ़ह्‌शा'अि वल्मुन्करि वल्बग़्यि ‌ यअ़िज़ुकुम् लअ़ल्लकुम् तज़क्करून ।

बेशक अल्लाह तआला एतिदाल इहसान और अहलॅ क़राबत को देने का हुक्म देता है। और खुली बुराई और मुत्लक़[3] और ज़ुल्म करने से मना करता है। और तुमको इसलिए नसीहत करता है कि तुम नसीहत क़ुबूल करो ।

[सू० नह्‌लि, रु० १३ आ० ९०]

अहादीस

रअिय्यत[4] के मुतअल्लिक़ सवाल

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुममें का हर शख़्स अपनी जगह पर हाकिम है। उससे उसकी रअिय्यत के मुतअल्लिक़ सवाल किया जायेगा। इमाम अमीर है, अपनी रअिय्यत (यानी मुक़तदियों[5]) के मुतअल्लिक़ उससे सवाल किया जायेगा। आदमी अपने अह्‌ल का हाकिम है, उससे रअिय्यत (यानी घर वालों) के मुतअल्लिक़ पूछ होगी। औरत अपने शौहर के घर की मालिका है, उसके मुतअल्लिक़ उससे बाज़पुर्स होगी। ख़ादिम अपने आक़ा के माल का निगहबान है, उससे उसके मुतअल्लिक़ सवाल होगा। ग़रज़ तुममें का हर एक साहबॅ रअिय्यत है। उसकी रअिय्यत के मुतअल्लिक़ उससे सवाल होगा।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत मअक़िल (र०) बिन यसार से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है, अल्लाह तआला जिस बन्दे के

---

१ दोस्ताना २ नर्मी ३ निरंकुश ४ जनता, अधीन ५ अनुयायी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिपुर्द किसी रअिय्यत को करे और वह उस रअिय्यत को धोके में रक्खे हुए मर जाय तो अल्लाह तआ़ला उसपर जन्नत हराम कर देगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

एक रिवायत में है कि ख़ैरख़्वाही के साथ उनकी हिफ़ाज़त न करे तो वह जन्नत की खुश्बू न पायेगा।

और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि किसी अमीर के सिपुर्द मुसलमानों का कोई काम हो और वह उनके लिए फ़लाह[1] व बहबूदी[2] की फ़िक्र न करे तो वह उनके साथ जन्नत में न जायेगा।

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि मैंने नबी (स०) से अपने इसी घर में सुना है कि ऐ अल्लाह! जो मेरी उम्मत के किसी काम पर हाकिम हो और उनपर सख़्ती करे तो तू भी उसपर सख़्ती फ़रमा। और जो मेरी उम्मत के किसी पर हाकिम हो और उनसे नर्मी से पेश आये तो तू भी नर्मी से पेश आ। [मुस्लिम]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, बनी इस्राईल में बराबर अंबिया आते रहे। एक नबी की वफ़ात होती थी तो उनके बाद दूसरे नबी तश्रीफ़ ले आते; लेकिन मेरे बाद कोई नबी न होगा।

अन्क़रीब मेरे बाद बहुत ख़ुलफ़ा होंगे। लोगों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! फिर आप हमको क्या हुक्म देते हैं। आपने फ़रमाया, जिससे पहले बैअ़त करो उसको निभाओ। फिर पहला फिर पहला और उनको उनका हक़ दो और अपने हक़ का मुतालबा अल्लाह से करो। उनसे उसके मुतअल्लिक़ सवाल करेगा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत आ़यद बिन अम्र (र०), उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियादः के पास आये और कहा ऐ मेरे बेटे! मैंने रसूलुल्लाह (स०) से सुना है कि बुरा हाकिम तोड़ने वाला है। तो बचो, ऐसा न हो कि तुम उनमें से हो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अबू मरयम (र०) अल्अज़्दी ने हज़्रत मुआवियः (र०) से फ़रमाया, मैंने रसूलुल्लाह (स०) से सुना है कि अल्लाह तआ़ला जिसके सिपुर्द मुसलमानों का काम करे और वह उनकी ज़रूरतों, हाजतों और फ़क़्र पर मुत्तलिअ़ न हो, उनसे छुपता रहे, तो अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसकी हाजतों, ज़रूरतों और उसके फ़क़्र पर मुत्तलिअ़ न होगा। यह सुनकर हज़्रत मुआवियः (र०) ने दो आदमी लोगों की ज़रूरतें मालूम करने के लिए मुक़र्रर कर दिये। [अबूदावूद, तिर्मिज़ी]

---

१ कल्याण, नजात २ बेहतरी, भलाई।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आदिल हाकिम

आयात

अिन्नल्लाह यअ्मुरु बिल्अ़द्लि वल्अिह्सानि व ईताअि जिल्क़ुर्बा व यन्हा अ़निल्फ़ह्शाअि वल्मुन्करि वल्बग़्यि ॰ यअिजुकुम् लअ़ल्लकुम् तजक्करून।

बेशक अल्लाह तआ़ला एतिदाल, इहसान और अहलें क़राबत को देने का हुक्म देता है। और खुली बुराई और मुतलक़ ज़ुल्म करने से मना करता है। और तुमको इसलिए नसीहत करता है कि तुम नसीहत क़ुबूल करो। [सू० नह्लि, रु० १३ आ० ६०]

…व अक़्सितू ॰ अिन्नल्लाह युह़िब्बुल्मुक़्सितीन।

और इन्साफ़ करो, बेशक अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसन्द करता है। [सू० हुजुराति, रु० १ आ० ६]

अहादीस

मुन्सिफ़ हाकिम पर ख़ुदा का साया

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, सात आदमी हैं जिनपर अल्लाह तआ़ला अपना साया करेगा। जिस दिन उसके साये के सिवा और किसी का साया न होगा। (१) मुन्सिफ़ हाकिम (२) जवान सालिह जिसने अल्लाह की अिबादत ही में नश् व नुमा पायी (३) ऐसा आदमी जिसका दिल मस्जिद में अटका रहे। (४) वह दो आदमी जो आपस में अल्लाह के लिए मुहब्बत करें। मिलें तो अल्लाह की रज़ा के लिए और जुदा हों तो उसी की ख़ुशी के लिए (५) वह आदमी कि जिसको कोई एज़ाज और हुस्नवाली औरत बुलाये और वह कहे कि मैं ख़ुदा से डरता हूँ। (६) ऐसा आदमी जो सदक़ा इस क़दर छुपाके दे कि सीधे हाथ के ख़र्च की बायें हाथ को ख़बर न हो। (७) एक वह आदमी कि जो तनहाई में अल्लाह को याद करे तो उसकी आँखों से आँसू जारी हो जायें। [बुख़ारी-मुस्लिम]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८६८ मुन्सिफ़ हाकिमों का क़ियामत में एज़ाज़

हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र बिन अलआस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अद्ल[1] करनेवाले नूर के मिम्बर पर होंगे। वह जो अपनी हुकूमत में, अपने घरों में और जो काम उनके सिपुर्द हुआ हो उसमें अद्ल करें। [मुस्लिम]

८६९ बेहतरीन अमीर व हाकिम व बदतरीन अमीर व हाकिम

हज़्रत औफ़ (र०) बिन मालिक से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि तुम्हारे सबसे बेहतर अमीर वह हैं कि तुम उनसे मुहब्बत करो, वह तुमसे मुहब्बत करें; तुम उनके लिए दुआ करो, वह तुम्हारे लिए दुआ करें। और तुम्हारे बुरे अमीर वह हैं कि तुम उनसे बुग़्ज़ रक्खो, वह तुमसे बुग़्ज़ रक्खें; तुम उनपर लानत करो, वह तुमपर लानत करें। हमने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह हम उनसे क्यों न लड़ें। आपने फ़रयाया, नहीं, जब तक वह तुममें नमाज़ क़ायम करें। नहीं, जब तक वह तुममें नमाज़ क़ायम करें। [मुस्लिम]

हज़्रत अयाज़ (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (स०) से सुना है कि तीन आदमी जन्नत के अह्ल[2] होंगे। (१) मुन्सिफ़ बादशाह जिसको इन्साफ़ की तौफ़ीक़ मिली हो। (२) ऐसा आदमी जो क़राबत-दार मुसलमान के लिए रहमदिल और नर्म दिल हो। (३) वह आदमी जो सवाल से बचे अगरचिः कसीरुल औलाद[3] हो। [मुस्लिम]

हाकिम की इताअ़त[4] ख़िलाफ़-शरअ़ उमूर के अ़लावा[5] ज़रूरी है

आयात

आ'अय्युहल्लजीन आमनू' अतीअुल्लाह व अतीअुर्रसूल व अुलिल्अम्रि मिन्कुम् ...

ऐ ईमानवालो! तुम अल्लाह का कहना मानो और रसूल का कहना मानो और तुममें जो लोग अहिले हुकूमत हैं उनका भी। [सू० निसा, रु० ८ आ० ५६]

१ इंसाफ़ २ पात्र, अधिकारी ३ बहुसन्तान वाला ४ आज्ञापालन ५ शास्त्र-विरुद्ध होने पर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अह़ादीस

८७० गुनाह के मआमले में इताअत फ़र्ज़ नहीं

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, मुसलमान पर सुनना और मानना लाज़िम है। ख़्वाह पसन्द हो या नापसन्द हो मगर यह कि गुनाह का हुक्म दिया जाये। अगर गुनाह का हुक्म दिया जाये तो न सुनो और न इताअत करो।
[बुख़ारी-मुस्लिम]

क़ुदरत की शर्त

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि जब हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुनने और मानने पर बैअ़त करते थे तो आप हमसे फ़रमा देते थे, उन हुकमों में जिनकी तुम्हारे अन्दर ताक़त हो।
[बुख़ारी-मुस्लिम]

बाग़ी और जमाअत से कनारा कश के लिए वओ़ीद[1]

हज़्रत इब्नि उमर (र०)से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (स०) से सुना है कि जिसने इताअत से हाथ उठा लिया वह क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला से ऐसी हालत पर मिलेगा कि उसके पास कोई दलील न होगी। और जो बग़ैर किये हुए मरा वह जाहिलिय्यत की मौत मरा। [मुस्लिम]

एक रिवायत में है जो जमाअत से जुदा होके मरा वह जाहिलिय्यत की मौत मरा।

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, सुनो और इताअत करो, अगरचिः तुम पर एक हब्शी ग़ुलाम ही अमीर हो और उसका सर मुनक़्क़े♦ की तरह हो। [बुख़ारी]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, कि तुम पर सुनना और मानना वाजिब है। तंगी हो या आसानी, ख़ुशी हो या नाख़ुशी, ख़ुदग़र्ज़ी हो या ज़ियादती। [मुस्लिम]

फ़ितनः के ज़माना में हुक्म

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन उमर (र०) से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह (स०) के साथ किसी सफ़र में एक जगह उतरे। कोई अपना

♦ यानी ह़क़ीर कम और बे-बिज़ाअत शख़्स हो।

1 सज़ा का वादा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ख़ेमा दुरुस्त करने लगा और कोई अपने चौपाये की देखभाल में मसरूफ़ हुआ। इतने में रसूलुल्लाह (स०) की तरफ़ से पुकारने वाले ने नमाज़े जमाअत के लिए आवाज़ दी। तो हम सब रसूलुल्लाह (स०) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आपने फ़रमाया, कि मुझसे पहले जितने नबी आये हैं उन सब पर वाजिब था कि उम्मत को ऐसी बेहतर बात बतलायें और डराएँ जिसको वह जानते हों और इस उम्मत के लिए शुरू में आफ़िय्यत रख दी गयी है और पिछलों को बुलायें और ऐसे उमूर जिनको तुम बुरा जानते हो पहुँचेंगे। एक फ़ितना आयेगा जो दूसरे फ़ितने को हक़ीर कर देगा। फिर एक फ़ितना ऐसा आयेगा कि मोमिन कहेगा यह मेरी हलाकत का बाअिस है। मगर वह दौर जायेगा, दूसरा फ़ितना आयेगा तो मोमिन कहेगा यही है, यही है। पस जो आग से निजात हासिल करना चाहे और जन्नत में दाख़िल होने की तमन्ना हो वह इस हाल पर मरे कि अल्लाह और रोज़ँ आख़िरत पर यक़ीन रखता हो और लोगों के साथ वही मुआमला करे जो अपने लिए पसन्द करता है। और जो बक़दरँ ताक़त इमाम के हाथ पर बैअ़त करे। उनके हाथ पर अपना हाथ मारे, फिर अगर दूसरा आदमी आये और अपना ताबिअ करने पर झगड़े तो उसकी गर्दन मार दे। [मुस्लिम]

हज़्रत वायल (र०) बिन हजर से रिवायत है कि सलमः (र०) बिन यज़ीद ने रसूलुल्लाह (स०) से अर्ज़ किया, अगर हमारे हुक्काम ऐसे हों जो अपना हक़ माँगें और हमारा हक़ न दें तो आपका क्या हुक्म है। आपने मुँह फेर लिया। फिर उन्होंने अर्ज़ किया तो आपने फ़रमाया, सुनो और इताअत करो। जो वह करेंगे उसके वह ज़िम्मेदार होंगे और जो तुम करोगे उसके तुम ज़िम्मेदार होगे।

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरे बाद ख़ुदग़र्ज़ी व बेइन्साफ़ी देखने में आयेंगी। और ऐसी बातें वजूद में आयेंगी जिनको तुम नापसन्द करते हो। लोगों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! फिर आप हमको क्या हुक्म देते हैं। आपने फ़रमाया, जिसका तुम पर हक़ है अदा करो; और जो तुम्हारा हक़ है वह अल्लाह से माँगो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

मुसलमान अमीर व ख़लीफ़ः की इताअत

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, जिसने मेरी इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की; जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की, और जिसने अमीर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की इताअत की उसने मेरी इताअत की; जिसने अमीर की नाफ़रमानी की उसने मेरी नाफ़रमानी की। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, किसी अमीर की बात नापसन्द हो तो उसको चाहिए कि सब्र करे। अगर वह उसकी इताअत से एक बालिश्त भी निकला तो वह जाहिलीयत की मौत मरा। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अबू बक्र (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (स०) से सुना है कि जिसने अमीर की तौहीन की उसको अल्लाह तआला ज़लील करेगा। [तिर्मिज़ी]

अुहदः और हुकूमत

आयात

तिल्कद्दारुल्आख़िरतु नज्अलुहा लिल्लज़ीन ला युरीदून अुलुव्वन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़सादन्, वल्आक़िबतु लिल्मुत्तक़ीन।

यह आलमें आख़िरत हम उन ही लोगों के लिए ख़ास करते हैं जो दुनिया में न बड़ा बनना चाहते हैं और न फ़साद करना। और नेक नतीजा मुत्तक़ी[1] लोगों को मिलता है। [सू० क़सस़, रु० ६ आ० ८३]

अहादीस

उहदः की तलब न करो

हज़्रत अब्दुर्रहमान (र०) बिन समरः से रिवायत है कि मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अब्दुर्रहमान! हुकूमत की ख़्वाहिश न करो। अगर तुमको बग़ैर तलब के मिल जायेगी तो तुम्हारी मदद की जायेगी। और अगर माँगे से मिली तो तुम उसके सिपुर्द कर दिये जाओगे। और जब किसी बात पर क़सम खाओ फिर उससे बेहतर कोई बात पाओ तो उसको इख़्तियार कर लो और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारः दे दो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

१ संयमी, सदाचारी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कमज़ोर आदमी हुकूमत की ज़िम्मेदारी न ले

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अबू ज़र (र०) मेरा ख़याल है कि तुम कमज़ोर हो, मैं तुम्हारे लिए वही चाहता हूँ जो अपने लिए चाहता हूँ। देखो, तुम दो पर भी हुकूमत की ज़िम्मेदारी क़ुबूल न करना और यतीम का माल अपनी सिपुर्दगी में न लेना। [मुस्लिम]

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! मुझे आप हाकिम बना दीजिए। आपने मेरे शाने पर हाथ मारा और फ़रमाया, ऐ अबू ज़र ! तुम कमज़ोर हो। हुकूमत क़ियामत में रुसवाई और निदामत का सामान है; सिवाये उसके जो इसको उसके हक़ के साथ ले और अपने फ़राईज़ॅ हुकूमत[1] बख़ूबी अदा करे। [मुस्लिम]

हुकूमत की हिर्स[2] का अन्जाम

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुममें हुकूमत की हिर्स पैदा होगी। और वह क़ियामत में नदामत[3] का सामान बन जायेगी। [बुख़ारी]

लाइक़ और नेक मुआविन[4] इन्तिख़ाब करना चाहिए[5]

आयत

अल्अख़िल्ला'उ यौमअिज़िम्बअ़्ज़ुहुम् लिबअ़्ज़िन् अ़दुव्वुन् अिल्लल्मुत्तक़ीन।

तमाम दोस्त एक दूसरे के दुश्मन हो जायेंगे बजुज़ ख़ुदा से डरने वालों के§। [सू० ज़ुख़रुफ़ि, रु० ६ आ० ६७]

§ यानी जिनकी दोस्ती दुनिया में ख़ुदग़र्ज़ी और हुकूमत के साज़बाज़ के तौर पर थी और उन्होंने एक दूसरे से नाजाइज़ फ़ायदः उठाया, वह दोस्ती क़ियामत में अदावत बन जायेगी; और जो लोग महिज़ अल्लाह के लिए और दीन के रास्ते में एक-दूसरे से ख़ुलूस रखते थे, अपनी दोस्ती में कोई अम्र ख़िलाफ़ॅ शरअ पसन्द न करते थे, उनकी दोस्ती बरक़रार रहेगी। और क़ियामत में भी फले-फूलेगी।

१ शासन के कर्तव्यों २ लोभ, लिप्सा ३ लज्जा, पछतावा ४ सहायक ५ चुनना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहादीस

अच्छे और बुरे मुशीरकार[1]

हज़्रत अबू सअ़ीद (र०) व अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला ने जिसको नबी बनाया या ख़लीफ़ाः, उसके लिए दो तरह के मुअ़तमद और राज़दार होते हैं। एक उसको नेकी का हुक्म देता है और उस पर आमादा करता है। और मासूम वह है जिसको अल्लाह बचाये। [बुख़ारी]

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला जब किसी हाकिम के साथ भलाई का इरादा करता है तो उसको अच्छा और दियानतदार वज़ीर देता है, कि अगर वह भूल जाये तो उसको याद दिलाये; और अगर याद हो तो उसकी मदद करे। और जब किसी हाकिम के साथ बुराई का इरादा करता है तो उसको बुरा वज़ीर देता है कि अगर वह भूल जाये तो याद न दिलाये, अगर याद हो तो उसकी मदद न करे। [अबूदावूद]

उ़हदः के ख़्वाहिशमन्द[2] को ऊ़हदः न देना चाहिए

हज़्रत अबू मूसा (र०) अशअ़री से रिवायत है कि मैं नबी (स़०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मेरे साथ मेरे ख़ान्दान के दो आदमी और थे। उनमें से एक ने अर्ज़ किया कि जो हुकूमत अल्लाह तआ़ला ने आपके सिपुर्द की है उसमें हमें भी कोई उ़हदः दीजिए। फिर दूसरे ने भी यही कहा। आपने फ़रमाया, हम उ़हदा और हुकूमत उसको नहीं देते जो उसका तालिब[2] हो या जिसको उसकी हिर्स[3] हो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

शर्म व हया

हया ईमान की बात है

हज़्रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक अन्सारी के पास से गुज़रे। वह अपने भाई को शर्म व हया के बारे में नसीहत कर रहा था। (यानी इतनी शर्म न करना चाहिए)। आपने फ़रमाया, इसको छोड़ दो, हया ईमान से है।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ सलाहकार २ इच्छुक ३ लालसा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हया सरासर ख़ैर है

हज़्रत अिम्रान (र०) बिन हुसैन से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हया सिवाये ख़ूबी के कुछ नहीं लाती। [बुख़ारी-मुस्लिम]

एक रिवायत में है कि हया सरासर ख़ैर है।

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ईमान की कुछ ऊपर सत्तर शाख़ें हैं। उनमें सबसे बड़ा दर्जा लाइलाह इल्लल्लाहु कहने का है। और अदना काम रास्ते से तकलीफ़ की चीज़ को हटा देना है। और हया ईमान की एक शाख़ है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

रसूलुल्लाह (स०) की हयादारी

हज़्रत अबू सअ़ीद (र०) ख़ुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) पर पर्दानशीन लड़कियों से ज़ियादः शर्म थी। जब कोई बात आपको नापसन्द होती थी तो हम आपके तेवर से पहचान लेते थे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

रज़ादारी

आयात

…व औफ़ू बिल्अ़ह्दि ج अिन्नल्अ़ह्द कान मस्ऊलन्।

और अहिद को पूरा करो, बेशक अहिद की बाज़ पुर्स होने वाली है। [सू० बनी इस्राईल, रु० ४ आ० ३४]

अहादीस

इफ़शाए राज़[1]

हज़्रत अबू सअ़ीद (र०) ख़ुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क़ियामत में अल्लाह के यहाँ बदतरीन दर्जा उस आदमी का होगा जो औरत के साथ और औरत उसके साथ बाहम बेतकल्लुफ़ हों, फिर वह मर्द उसका राज़ फैलाये।

१ राज़ को फैलाना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राज़दारी[1] की एक मिसाल

हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन उमर (र०) से रिवायत है कि हज़्रत उमर (र०) ने फ़रमाया, जब हफ़्सः (र०) बेवा हुईं तो मैं उस्मान (र०) से मिला और कहा कि अगर तुम चाहो तो हफ़्सः (र०) का निकाह तुम्हारे साथ कर दूँ। उन्होंने कहा, मैं इस मुआमले पर ग़ौर करूँगा। मैं कई रातें इन्तिज़ार करता रहा। फिर वह मुझसे मिले और फ़रमाया, मेरा ख़याल है कि अभी शादी न करूँ। फिर मैं अबूबक्र (र०) से मिला और अर्ज़ किया अगर आप चाहें तो आपका निकाह हफ़्सः (र०) से कर दूँ। उन्होंने भी कोई जवाब न दिया। मेरे दिल में उसमान (र०) से ज़ियादः उनसे शिकायत आयी। इसमें कई दिन गुज़र गये। फिर नबी (स०) ने हफ़्सः (र०) का पैग़ाम भेजा। मैंने हज़्रत (स०) से उनका निकाह कर दिया। एक दिन अबूबक्र (र०) मुझसे मिले और बोले तुमने हफ़्सः (र०) का निकाह मुझसे करना चाहा था, मैंने जवाब नहीं दिया था। तुम्हें शायद रंज हुआ हो। मैंने कहा, हाँ। फ़रमाया, बात यह है कि रसूलुल्लाह (स०) का ख़ुद ऐसा ख़याल था। और यह आपका राज़ था जिसको मैंने इफ़्शा करना न चाहा। मेरी ख़ामोशी की यही वजह थी। अगर उनका तज़किरः न फ़रमाते तो मैं क़ुबूल कर लेता। [बुख़ारी]

हज़्रत फ़ातिमा (र०) की राज़दारी

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवियाँ आपके पास बैठी थीं। इतने में हज़्रत फ़ातिमः (र०) आयीं। उनकी चाल बिल्कुल आँहज़्रत (स०) से मिलती थी। जब आपने उनको देखा तो ख़ुशआमदेद कहा और फ़रमाया, मेरी बेटी, अच्छा हुआ तुम आ गयीं। फिर अपने दायें या बायें तरफ़ बिठा लिया और चुपके से एक बात कही तो वह रोने लगीं, और बहुत रोयीं। जब आपने उनकी घबराहट देखी तो फिर चुपके से एक बात कह दी तो वह हँस दीं। मैंने फ़ातिमः (र०) से कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बीवियों के होते हुए भेद ज़ाहिर करने में तुमको मख़्सूस किया और फिर तुम रोती हो। फिर जब रसूलुल्लाह (स०) बाहर तशरीफ़ ले गये तो मैंने कहा, तुमसे रसूलुल्लाह (स०) ने क्या फ़रमाया? हज़्रत फ़ातिमः (र०) ने कहा, भला मैं रसूलुल्लाह (स०) का भेद ज़ाहिर कर सकती हूँ? जब आपकी वफ़ात हो गयी तो मैंने उनको अपने हक़ का वास्ता दिलाते हुए क़सम दिलायी कि जो कुछ तुमसे

१ गोपनीयता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया था, बतलाओ। हज़्रत फ़ातिमा (र०) ने कहा हाँ, अब बतलाऊँगी। बात यह है कि रसूलुल्लाह (स०) ने पहली मर्तबा चुपके से बात कही थी वह यह थी कि जिब्रील (अ०) हर साल एक मर्तबा क़ुर्आन शरीफ़ दुहराते थे और इस साल दो मर्तबा दुहराया, इससे मैं समझता हूँ कि मेरी वफ़ात क़रीब है। पस तुम अल्लाह से डरो और सब्र करो। मैं तुम्हारे लिए अच्छा पेशरौ[1] हूँ। यह सुनकर मैं रोने लगी। जब आपने मेरी घबराहट देखी तो दूसरी बात चुपके से यह कही कि क्या तुम राज़ी हो कि इस उम्मत की औरतों की सरदार बनो, तो मैं हँस दी। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अनस (र०) की राज़दारी

हज़्रत साबित (र०) से रिवायत है कि हज़्रत अनस (र०) ने मुझसे फ़रमाया कि हम लड़कों के साथ खेल रहे थे। इतने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये और हमें सलाम किया। फिर अपनी किसी हाजत[2] के लिए आपने मुझे भेजा। मुझे उस काम के करने में देर लगी। जब मैं अपनी माँ की तरफ़ पलटा तो उन्होंने देर होने की वजह पूछी। मैंने कहा मुझे रसूलुल्लाह (स०) ने किसी ज़रूरत से भेजा था। बोलीं, क्या ज़रूरत थी। मैंने कहा वह राज़✱ है। मेरी माँ ने कहा, रसूलुल्लाह (स०) के राज़ की ख़बर किसी को न देना। फिर हज़्रत अनस (र०) ने मुझसे फ़रमाया, साबित (र०) अगर मैं यह राज़ किसी से बताना चाहता तो तुमको बताता। [मुस्लिम]

ईफ़ा[3] अ़हिद[4] और वादे का पास

आयात

…व औफ़ू बिल्अ़ह्‌दि ज अिन्नल्अ़ह्‌द कान मस्ऊलन्।

और अह्‌द को पूरा करो, बेशक अह्‌द की बाज़ पुर्स होगी।

[सू० बनी इस्राईल, रु० ४ आ० ३४]

✱ हज़्रत अनस (र०) उस वक़्त बच्चे थे और आँहज़्रत (स०) की खिदमत करते थे। मगर इस क़दर समझदार और पुख़्त:कार थे और आँहज़्रत (स०) से ऐसा तअल्लुक़ था कि आपकी बात माँ से भी नहीं कही।

१ पथ प्रदर्शक, अगुआ २ जरूरत ३ वचन प्रतिपालन ४ प्रतिज्ञा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

व औफ़ू बिअ़ह्दिल्लाहि अिज़ा आ़हत्तुम्...

और तुम अल्लाह के अह्द को पूरा कर लो जब कि तुम उसको अपने ज़िम्मे कर लो। [सू० नह्लि, रु० १३ आ० ६१]

या'अय्युहल्लज़ीन आमनू' औफ़ू बिल्अ़ुक़ूदि ...

ऐ ईमानवालो! अह्दों को पूरा करो। [सू० माअिद:, रु० १ आ० १]

या'अय्युहल्लज़ीन आमनू लिम तक़ूलून मा ला तफ़्अ़लून (२)

कबुर मक़्तन् अ़िन्दल्लाहि अन् तक़ूलू मा ला तफ़्अ़लून (३)

ऐ ईमानवालो! ऐसी बातें क्यों कहते हो जो करते नहीं हो। ख़ुदा के नज़दीक यह बहुत नाराज़ी की बात है कि ऐसी बात कहो जो करो नहीं। [सू० स़फ़्फ़ि, रु० १ आ० २-३]

अह़ादीस

वादा खिलाफ़ी मुनाफ़िक़[1] की निशानी है

हज़्रत अबू हुरैर: (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स़०) ने फ़रमाया, मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं। (१) जब बात कहे झूठ कहे। (२) वादा करे तो उसके ख़िलाफ़ करे। (३) अमानत[2] रखाई जाये तो ख़ियानत[3] करे।

और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि अगरचि: वह भी रखता हो, और अपने को मुसलमान भी समझता हो।

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र (र०) बिन अलआ़स से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसमें चार ख़सलतें हों वह ख़ालिस मुनाफ़िक़ है। और जिसमें इनमें की एक ख़सलत होगी तो वह भी निफ़ाक़ ही की ख़सलत है, जब तक उसको छोड़ न दे। अलामतें यही हैं। जब बात कहे झूठ कहे, वादा करे वफ़ा न करे, अमानत में ख़ियानत करे, और जब लड़े तो गाली दे।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अबू बक्र (र०) का रसूलुल्लाह (स़०) के वादे को पूरा करना

हज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि मुझसे नबी (स़०) ने वादा फ़रमाया कि अगर बहरैन का माल आया (दोनों हाथों को मिला के

१ पाखण्डी २ धरोहर ३ अपहरण, ग़बन।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फ़रमाया) इस तरह, इस तरह और इस तरह दूँगा। लेकिन बहरैन का माल आने से पहले हुज़ूर की वफ़ात हो गयी। जब बहरैन का माल आया तो हज़्रत अबू बक्र (र०) ने हुक्म दिया और मुनादी करायी कि जिसका रसूलुल्लाह (स०) की तरफ़ से कोई वादा क़र्ज़ हो वह मेरे पास आये। तो मैं उनके पास गया और अर्ज़ किया कि रसूलुल्लाह (स०) ने मुझसे इस तरह इरशाद फ़रमाया था तो हज़्रत अबू बक्र (र०) ने एक मुट्ठी भर कर मुझको दिया। मैंने गिना तो पूरे पाँच सौ थे। फिर उन्होंने मुझसे कहा कि दो मुट्ठी और लो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

अच्छी आदत[1] और मामूल[2] की पाबन्दी

आयात

…अिन्नल्लाह ला युग़य्यिरु मा बिक़ौमिन् हूत्ता युग़य्यिरू मा बिअन्फ़ुसिहिम् ┬ …

वाक़िअी अल्लाह तआ़ला किसी क़ौम की (अच्छी) हालत में तग़य्युर[3] नहीं करता जब तक वह ख़ुद अपनी हालत† को न बदल दें। [सू० रऽदि, रु० २ आ० ११]

व ला तकूनू कल्लती नक़ज़त् ग़ज़्लहा मिम्बऽदि क़ुव्वतिन् अन्कासन् ┬ …

और तुम उस औरत की तरह न हो जिसने अपना ऊन काते पीछे तार-तार करके नोच डाला। [सू० नह्लि, रु० १३ आ० ६२]

…व ला यकूनू कल्लज़ीन अूतुल्किताब मिन् क़ब्लु फ़तृाल अ़लैहिमुल्-अमदु फ़क़सत् क़ुलूबुहुम् ┬ …

और उन लोगों की तरह न हो जिनको इनके क़ब्ल किताब मिली थी। जब ज़माना दराज़ हो गया और (तौबा न की) फिर उनके दिल ख़ूब ही सख़्त हो गये। [सू० ह़दीदि, रु० २ आ० १६]

---

† इससे यह मालूम होता है कि अगर किसी शख़्स या क़ौम की सीरत व अख़्लाक़ व आमाल अच्छे हैं। और अल्लाह की उन पर मेहरबानी है, तो जब तक वह ख़ुद अपनी सीरत व अख़्लाक़ में कोई तबदीली न पैदा करे अल्लाह अपनी रहमत का सिलसिला उसके सर से न उठायेगा। और यही इस बाब का मक़सद है।

---

१ स्वभाव २ नित्यकर्म ३ परिवर्तन, उलट-पलट।

CC-0: Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

…फ़मा रअ़ौहा हक़्क़ रिआ़यतिहा ० …

सो उन्होंने उस (रहबानियत[1]) की पूरी-पूरी रिआयत[2] न की।
[सू० हदीद, रु० ४ आ० २७]

अह़ादीस

रात की अिबादत को कुछ दिन करके छोड़ देना बुरा है

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (र०) बिन अलआ़स से रिवायत है कि मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अ़ब्दुल्लाह (र०)! तुम उस शख़्स की मानिन्द न होना कि रात को अिबादत करता था फिर कुछ दिनों बाद छोड़ दिया। [बुख़ारी-मुस्लिम]

गुफ़्तुगू[3], वाज़[4] व नसीहत[5] के आदाब[6]

आयात

…वख़्फ़िज़् जनाहक लिल्मुअ्मिनीन।

और मुसलमानों पर शफ़क़त रक्खो। [सू० हिज्र, रु० ६ आ० ८८]

…व लौ कुन्त फ़ज़्ज़न् ग़लीज़लक़ल्बि लन्फज़्ज़ू मिन् हौलिक ० …

अगर तुम तुन्द-ख़ू और सख़्त-तबीअत हुए तो यह सब तुम्हारे पास से मुन्तशिर हो जायेंगे। [सू० आलॅ अिमरान, रु० १७ आ० १५६]

अह़ादीस

कलमए ख़ैर ही दोज़ख से हिजाब बन सकता है

हज़्रत अ़दी (र०) बिन हातिम से रिवायत है कि फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने, आग से बचो। अगरचि: एक खजूर का टुकड़ा ही देकर। अगर वह भी मैस्सर न हो तो अच्छी बात ही कहो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ आजीवन ब्रह्मचर्य २ गुंजाइश ३ वार्तालाप ४ धर्मोपदेश ५ शिक्षा ६ शिष्टाचार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अच्छी बात कहना सदक़ा है

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अच्छी बात कहना सदक़ा है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

खन्दःपेशानी[1] से मिलना कुछ कम सवाब की बात नहीं

हज़्रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, किसी नेकी को भी हक़ीर[2] न समझो। अपने भाई से ख़न्दःपेशानी से मिलना भी कुछ कम न समझो, यह भी नेकी है। [मुस्लिम]

साफ़ और वाज़िह तरीके पर बात करनी चाहिए

अहादीस

रसूलुल्लाह (स०) की आदतें मुबारक

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) जब कोई बात फ़रमाते थे तो तीन मर्तबा दुहराते थे ताकि लोग समझ लें। और जब लोगों के पास से गुज़र होता तो उनको तीन मर्तबा सलाम करते थे। [बुख़ारी]

रसूलुल्लाह (स०) का अन्दाज़ गुफ़्तुगू

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) बात ठहर-ठहर कर और खोलकर बयान फ़रमाते थे, जो सुनता था समझ लेता था। [अबू दावूद]

ज़रूरी बात के लिए लोगों को ख़ामोश कराना

हज़्रत जुरैर (र०) बिन अ़ब्दुल्लाह से रिवायत है कि मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हज्जतुलवदाअ़ में फ़रमाया कि लोगों को ख़ामोश करो। फिर फ़रमाया, मेरे बाद काफ़िर न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारने लगो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

---

१ प्रसन्नवदन २ तुच्छ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोगों के उकता जाने के ख़याल से नाग़ा करके तक़रीर करना

हज़्रत अबू वायल (र०) से रिवायत है कि इब्नि मस्ऊद (र०) हर जुमेरात को एक मर्तबा वाज़ कहते थे। एक साहब बोले, ऐ अब्दुर्रहमान, हमें ख़्वाहिश है कि हर रोज़ वाज़ फ़रमाया कीजिए। फ़रमाया, मैं तुम्हारे उकता जाने के ख़्याल से ऐसा नहीं करता। मैं इसी लिए नाग़ा नाग़ा से वाज़ कहता हूँ, जैसे रसूलुल्लाह हमारे उकता जाने के ख़याल से कुछ दिन बीच करके वाज़ फ़रमाते थे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

लाँबी नमाज़ और मुख़्तसर ख़ुतबा

हज़्रत अम्मार बिन यासिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे, आदमी का नमाज़ को दराज़ करना और ख़ुतबा का मुख़्तसर करना उसकी दीनी समझ की दलील है। पस नमाज़ लाँबी करो और ख़ुतबा मुख़्तसर करो। [मुस्लिम]

मुअस्सिर तर्ज़ तालीम[1] और शफ़क़तआमेज़ नसीहत[2]

हज़्रत मुआविय: (र०) बिन हकम से रिवायत है कि मैं नबी (स०) के साथ नमाज़ पढ़ रहा था। जमात के किसी आदमी ने छींका तो मैंने 'यरहमुकल्लाहु' कहा। सब मुझे घूरने लगे। मैंने कहा, आख़िर बात क्या है। तुम मुझे क्यों घूरते हो, तो वह अपने ज़ानुवों[3] पर हाथ मारने लगे। जब मैंने यह देखा तो समझा कि वह मुझे ख़ामोश कराना चाहते हैं। जब हुज़ूर (स०) ने सलाम फेरा, मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान। मैंने आप से बेहतर तालीम देनेवाला नहीं देखा, न आपसे पहले न आपके बाद। क़सम ख़ुदा की न आपने मुझे बुरा कहा, न मारा, न गाली दी। आपने फ़रमाया, यह नमाज़ है। इसमें बातचीत करना मुनासिब नहीं, यह तो तस्बीह[4] है, तक्बीर[5] है और क़ुर्आन का पढ़ना है। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! जाहिलिय्यत का ज़माना अभी ताज़ा है। इस्लाम को आये अभी कुछ दिन हुए हैं। हममें बाज़ ऐसे हैं जो नजूमियों के पास जाते हैं। आपने फ़रमाया, तुम न जाना। मैंने अर्ज़ किया, कुछ ऐसे हैं जो बदशुगूनी लेते हैं। फ़रमाया, यह चीज़ ऐसी है जिसको वह अपने सीनों में पाते हैं। तुम इससे बाज़ रहो। [मुस्लिम]

---

१ प्रभावशाली दीक्षाप्रणाली २ सहानुभूतिपूर्ण शिक्षा ३ घुटनों ४ जप
५ सर्वोपरि अल्लाह का ध्यान।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वक़ार[1] व सुकून[2]

आयात

व अ़िबादुर्रह़्मानिल्लज़ीन यम्शून अ़लल्अर्ज़ि हौनंव्व अिज़ा ख़ात़ब हुमुल्जाहिलून क़ालू सलामन् ।

और अल्लाह के बन्दे वह हैं जो ज़मीन पर आहिस्ता चलते हैं और जब उनसे बेसमझे लोग मुख़ातब होते हैं तो वह कहते हैं साहब-सलामत । [सू० अल्फ़ुर्क़ान्, रु० ६ आ० ६३]

...व मंय्युअ़ज्जिम् शअ़ाअिरल्लाहि फअिन्नहा मिन् तक़्वल्क़ुलूबि ।

जो शख़्स इन निशानियों का पूरा लिहाज़ रक्खेगा तो उनका यह लिहाज़ रखना ख़ुदाए तआ़ला से दिल के साथ डरने से होता है । [सू० ह़ज्जि, रु० ४ आ० ३२]

अह़ादीस

रसूलुल्लाह (स़०) का तबस्सुम[3]

हज़्रत आयशः (र०) फ़रमाती हैं कि मैंने कभी भी हुज़ूर (स़०) को ऐसा हँसता हुआ नहीं देखा कि आपका कव्वा नज़र आ जाये । हुज़ूर (स़०) सिर्फ़ मुस्कुरा देते थे ।

नमाज़ के लिए वक़ार व सुकून के साथ आये

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स़०) फ़रमाते थे, ज़ब जमाअ़त खड़ी हो जाये तो दौड़कर न आओ । और जितनी नमाज़ पाओ, पढ़ लो । जो फ़ौत हो जाये, उसको पूरा कर लो । [बुख़ारी-मुस्लिम]

एक रिवायत में है कि जो नमाज़ का क़स्द करता है वह नमाज़ ही में शुमार होता है ।

तेज़ी करना नेकी नहीं

हज़्रत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि अ़रफ़ः[4] के दिन हम रसूलुल्लाह (स़०) के साथ जा रहे थे । इतने में सख़्त डाँटने, मारने

---

१ गम्भीरता २ धैर्य ३ मुस्कान ४ अरबी जिलहिज्जः महीने का नवाँ दिन, जिस दिन हज होता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और ऊँटों के बिलबिलाने की आवाज़ रसूलुल्लाह (स०) ने सुनी। आपने अपने कोड़े से उनकी तरफ़ इशारा करके फ़रमाया, लोगो! सुकून इख़्तियार करो। तेज़ी करना नेकी नहीं।

मेहमानों की तवाज़ुअ़

आयात

हल् अताक हूदीसु ज़ैफ़ि अिब्राहीमल्मुक्रमीन (२४) अिज़् दख़लू अ़लैहि फ़क़ालू सलामन् क़ाल सलामुन् क़ौमुम्मुन्करून (२५) फ़राग़ अिला अह्लिही फ़जा'अ बिअ़िज्लिन् समीनिन् (२६) फ़क़र्रबहू अ़िलैहिम् क़ाल अला तअ्कुलून (२७)

क्या इब्राहीम के मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमानों की बात तुम तक पहुँची है, जब कि वह (मेहमान) उनके पास आये फिर उनको सलाम किया। इब्राहीम ने भी (जवाब में) कहा, सलाम, (और कहने लगे कि) अन्जान लोग मालूम होते हो फिर अपने घर की तरफ़ चले और एक फ़र्बः बछड़ा (तला हुआ) लाये, उनके पास (यानी सामने रक्खा) और कहा आप लोग क्यों नहीं खाते।

[सू० जारियाति, रु० २ आ० २४-२७]

व जा'अहू क़ौमुहू युह्रअ़ून अिलैहि व मिन् क़ब्लु कानू यअ्मलूनस्सय्यिआति क़ाल या क़ौमि हा'उला'अि बनाती हुन्न अत्हरु लकुम् फ़त्तक़ुल्लाह व ला तुख़्ज़ूनि फ़ी ज़ैफ़ी अलैस मिन्कुम् रजुलुर्रशीदुन्।

और उनकी क़ौम उनके पास दौड़ी हुई आयी और पहले से नामाक़ूल हर्कतें किया ही करते थे। कहा, ऐ मेरी, क़ौम यह मेरी बेटियाँ मौजूद हैं। वह तुम्हारे (नफ़्स की कामरानी के) लिए (अच्छी) ख़ासी हैं। अल्लाह से डरो और मेरे मेहमानों में मुझको फ़ज़ीहत मत करो। क्या तुममें कोई भलामानुस आदमी नहीं।

[सू० हूद, रु० ७ आ० ७८]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहादीस

मेहमान का इक्राम[1] मोमिन पर लाज़िम है

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, जो अल्लाह और रोज़ॆ आख़िरत पर ईमान रखता है वह अपने मेहमानों की अिज़्ज़त करे। जो अल्लाह और रोज़ॆ आख़िरत पर ईमान रखता है वह अच्छी बात कहे, वरना ख़ामोश रहे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अबू शुरैह (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (स०) से सुना है कि जो अल्लाह और रोज़ॆ आख़िरत पर ईमान रखता हो वह अपने मेहमान की अिज़्ज़त करे और उसका इनआ़म दे। हमने कहा, या रसूलल्लाह! इसका इनआ़म क्या है? आपने फ़रमाया, एक रात पुर-तकल्लुफ़ मेहमानी करे। और मेहमानी तीन दिन की है। अगर इससे ज़ियादः करे तो सदक़ा है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि मुसलमान को जाइज़ नहीं कि वह अपने भाई के यहाँ इतना ठहरे कि उसको गुनहगार कर दे। लोगों ने कहा, या रसूलल्लाह! गुनहगार कैसे करेगा। फ़रमाया, उसके पास इस क़दर ठहरा कि उसकी ज़ियाफ़त के लिए कुछ न रहा।

बशारत और मुबारकबाद

आयात

…फ़बश्शिर् अ़िबादि ला (१७) अ्ल्लज़ीन यस्तमिअ़ूनल्क़ौल फ़यत्तबिअ़ून अह्सनहू ط…

मेरे उन बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना दो जो इस कलाम को कान लगा कर सुनते हैं और उसकी अच्छी बातों पर अमल करते हैं।

[सू० ज़ुमरि, रु० २ आ० १७-१८]

युबश्शिरुहुम् रब्बुहुम् बिरह्मतिम्मिन्हु व रिज़्वानिंव्व जन्नातिल्-लहुम् फ़ीहा नअ़ीमुम्मुक़ीमुन्।

उनका रब उनको बशारत देता है अपनी तरफ़ से बड़ी रहमत और रज़ामन्दी और (जन्नत के) ऐसे बाग़ों की कि उनके लिए उसमें दाईमी नेमत होगी। [सू० तौबा, रु० ६ आ० २१]

---

१ सत्कार, कृपाएँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

…व अब्शिरू बिल्जन्नतिल्लती कुन्तुम् तूअदून ।

और तुम जन्नत (के मिलने) पर ख़ुश रहो जिसका तुमसे (पैग़म्बरों की मअ़रिफ़त) वअ़दः किया गया है ।

[सू० हामी'म सज्दः, रु० ४ आ० ३०]

फ़बश्शर्नाहु बिग़ुलामिन् ह़लीमिन् ।

हमने उनको एक हलीमुलमिज़ाज फ़रज़न्द की बशारत दी ।

[सू० सा'फ़्फ़ाति, रु० ३ आ० १०१]

व लक़द् जा'अत् रुसुलुना' अिब्राहीम बिल्बुश्रा…

और हमारे भेजे हुए फ़िरिश्ते (बशक्लें बशर) इब्राहीम (अ़०) के पास बशारत लेकर आये ।

[सू० हूद, रु० ७ आ० ६६]

वम्रअतुहू क़ा'अिमतुन् फ़ज़हिकत् फ़बश्शर्नाहा बिअिस्ह़ाक़ ला व मिंव्वरा'अि अिस्ह़ाक़ यअ़्क़ूब ।

उनकी बीवी खड़ी सुन रही थीं पस हँसी सो हमने उनको मुकर्रर बशारत दी इस्हाक़ की और इस्हाक़ के पीछे यअ़क़ूब की ।

[सू० हूद, रु० ७ आ० ७१]

फ़नादत्हुल्-मला'अिकतु व हुव क़ा'अिमुंय्युसल्ली फ़िल्मिह्राबि ला अन्नल्लाह युबश्शिरुक बियह्या…

पस पुकार के कहा उनसे फ़िरिश्तों ने और वह खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे मेहराब में कि अल्लाह तअ़ाला तुमको यह्या (के पैदा होने) की बशारत (ख़ुशख़बरी) देता है ।

[सू० अिम्रान, रु० ४ आ० ३६]

अिज् क़ालतिल्मला'अिकतु या मर्यमु अिन्नल्लाह युबश्शिरुकि बिकलिमतिम्मिन्हुस्मुहुलमसीहु अ़ीसब्नु मर्यम वजीहन् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति व मिनल्मुक़र्रबीन ला ।

और जब फ़िरिश्तों ने कहा, ऐ मरयम बिला शक अल्लाह तअ़ाला तुमको एक कलिमः की बशारत देता है । जो मिन्जानिब अल्लाह है । उसका नाम (व लक़ब) मसीह अ़ीसा बिन मरयम होगा । बा-आबरू होंगे दुनिया में और आख़िरत में मिन्जुमलः मुक़रबीन के होंगे ।

[सू० अिम्रान, रु० ५ आ० ४५]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहादीस

हज़्रत ख़दीजः (र०) के हक़ में बशारत

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन अबी औफ़ा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़्रत ख़दीजः (र०) को जन्नत में एक मोती के घर की बशारत दी जिसमें न शोर व ग़ुल होगा और न तकान।

हज़्रत अबू बक्र (र०) व उमर (र०) व उसमान (र०) को जन्नत की बशारत

हज़्रत अबू मूसा (र०) अशअ़री से रिवायत है कि मैं अपने घर से वज़ू करके निकला। और यह तय कर लिया कि आज मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ रहूँगा। फिर मस्जिद में आया और नबी (स०) के मुतअल्लिक़ पूछा, लोगों ने कहा कि फलाँ जगह तश्रीफ़ ले गये हैं। तो मैं आँहज्रत (स०) के नक़्शे क़दम पर चला और आपके मुतअल्लिक़ पूछता जाता था। यहाँ तक कि हुज़ूर (स०) अरीस के कुएँ पर पहुँचे। मैं दरवाज़े पर बैठ गया। जब आपने अपनी हाजत से फ़राग़त पायी और वज़ू किया तो मैं आपके पास खड़ा हो गया। हुज़ूर (स०) कुएँ की जगत पर पाँव लटकाये बैठे थे और पिन्डलियाँ खोल दी थीं। मैंने सलाम किया और पलट के दरवाज़े पर बैठ गया और इरादा किया कि आज रसूलुल्लाह (स०) का दरबान बनूँगा। इतने में हज्रत अबू बक्र (र०) आये और उन्होंने दरवाज़े को खटखटाया। मैंने कहा कौन? बोले अबू बक्र (र०)। मैंने कहा ज़रा ठहरिए। फिर हुज़ूर (स०) से जाकर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह अबू बक्र (र०) इजाज़त चाहते हैं। आपने फ़रमाया, इजाज़त दे दो, और जन्नत की बशारत भी दो। मैं आया और अबू बक्र (र०) से अर्ज़ किया आइए, आपको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जन्नत की बशारत देते हैं। वह आये और आपकी सीधी जानिब जगत पर बैठ गये और कुएँ में पाँव लटका दिये और पिण्डली खोल दीं जैसे हुज़ूर (स०) ने किया था। फिर मैं पलट कर अपनी जगह बैठ गया। मैं अपने भाई को छोड़ आया था। वह वज़ू कर रहे थे, मेरे पीछे आने वाले थे। मैंने कहा, अगर अल्लाह तआ़ला फ़लाँ के साथ (फ़लाँ से अपना भाई मुराद है) भलाई का इरादा करेगा तो उसको ले आयेगा। नागाह किसी ने दरवाज़े को हरकत दी। मैंने कहा, कौन? बोले उमर (र०) बिन् अलख़त्ताब, मैंने कहा ज़रा तवक़्क़ुफ़ कीजिए। फिर मैंने हुज़ूर को आकर सलाम किया और अर्ज़ किया। उमर (र०) आये हैं। इजाज़त चाहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आँहज़्रत (स०) ने फ़रमाया, इजाज़त दे दो और जन्नत की बशारत भी दो। मैं पलटा और कहा आइए और आपको रसूलुल्लाह (स०) जन्नत की बशारत देते हैं। वह आये और आपके बायें तरफ़ जगत पर बैठ गये। और अपने पाँव कुएँ में लटका दिये। फिर मैं पलट कर अपनी जगह बैठ गया और दिल में कहने लगा, अल्लाह तआ़ला अगर फ़लाँ के साथ (भाई मुराद है) भलाई का इरादा करेगा तो उनको ले आयेगा। फिर दरवाज़ा थपथपाने की आवाज़ आयी। मैंने कहा कौन? बोले उसमान (र०) बिन अफ़्फ़ान। मैंने अर्ज़ किया ज़रा रुक जाइए। फिर मैं आपके पास आया और ख़बर दी कि उसमान (र०) आये हैं और इजाज़त चाहते हैं। आपने फ़रमाया, इजाज़त दो और एक आज़माइश के साथ जो उनको पहुँचेगी जन्नत की बशारत दो। मैं आया और बोला आइए आपको आँहज़्रत (स०) जन्नत की बशारत देते हैं एक आज़माइश के साथ जो आपको पहुँचेगी। वह आये तो कुएँ की जगत भर चुकी थी। वह उन हज़्रात के सामने दूसरी जानिब♦ बैठे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

एक रिवायत में है कि मुझको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दरवाज़े की हिफ़ाज़त का हुक्म दिया और उसमान (र०) को जब मैंने जन्नत की बशारत दी तो उन्होंने अल्लाह की तारीफ़ की और बोले अल्लाह मददगार है।

मुवह्हिद को जन्नत की बशारत

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि हज़्रत अबू बक्र (र०) व हज़्रत उमर (र०) और भी कुछ लोग रसूलुल्लाह (स०) के गिर्द बैठे थे। नागाह रसूलुल्लाह (स०) हमारे पास से उठकर तश्रीफ़ ले गये और देर लगायी। हम लोग डरे कि नसीबें दुश्मनाँ कोई हादिसः न पेश आया हो और सबसे पहले मैं डरा और आँहज़्रत (स०) की फ़िक्र में निकला, तलाश करते-करते बनी नज्जार (अन्सार) के बाग़ में आया और दरवाज़ा ढूँढ़ता रहा लेकिन पता न चला। इतने में एक नाला देखा जो बाग़ के बीच में दाख़िल होता था और बाहर कुएँ से निकल जाता था।

♦ हज़्रत सअ़ीद (र०) बिन अलमुसय्यिब ने (जो जलीलुल क़दर ताबिअ़ी थे) फ़रमाया कि इससे उन हज़्रात की क़ुबूर[1] की तरफ़ इशारा है कि आँहज़्रत (स०) हज़्रत अबू बक्र (र०) व हज़्रत उमर (र०) एक जगह आराम फ़रमा रहे हैं और हज़्रत उसमान (र०) अलाहिदः मदफ़ून[2] हैं।

१ क़बरें २ दफ़न।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और छोटा-सा था। मैं सिमट गया और उसी नाले से होता हुआ हुज़ूर (स०) के पास पहुँचा। आपने फ़रमाया, अबू हुरैरः (र०)! मैंने कहा जी या रसूलल्लाह! फ़रमाया, क्या बात है, कैसे आये? मैंने कहा, आप हमारे पास से उठकर तशरीफ़ ले गये और देर लगायी। हम लोग डरे कि कहीं कोई बात न पेश आयी हो। इसलिए हम लोग घबरा गये और अव्वल मैं घबराया, फिर मैं आपको तलाश करते हुए यहाँ पहुँचा और ऐसा सिमटा जैसे लोमड़ी सिमटती है। और लोग मेरे पीछे आ रहे हैं। आपने फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरः (र०)! यह मेरे दोनों जूते लो और उन दोनों जूतों के साथ जाओ; जो तुमको उस बाग़ के पीछे मिले और अपने दिल के यक़ीन के साथ गवाही दे कि सिवा ख़ुदा के कोई माबूद नहीं, उसको जन्नत की बशारत दो। (उसके बाद पूरा वाक़िआ सुनाया)।

[मुस्लिम]

हज़्रत अम्र (र०) बिन अलआ़स की इन्तिक़ाल के वक़्त गुफ़्तुगू

हज़्रत इब्नि शुमासः (र०) से रिवायत है कि हम अम्र (र०) बिन अलआ़स के पास आये। वह एहतिज़ार[1] व नज़अ़[2] की हालत में थे। बहुत रोये और अपना मुँह दीवार की तरफ़ कर लिया। उनके बेटे ने कहा, अब्बा जान, क्या आप को रसूलुल्लाह (स०) ने इस इस तरह की बशारत नहीं दी। (दो बार कहा) तो वह उनकी तरफ़ मुतवज्जिः हुए और बोले, मेरे नज़दीक इस गवाही से बढ़कर कोई चीज़ नहीं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद (स०) अल्लाह के रसूल हैं। मुझपर तीन हालतें गुज़री हैं। एक वह वक़्त था कि मैं अपने दिल को टटोलता था और मुझसे ज़ियादः रसूलुल्लाह (स०) से बुग़्ज़ रखनेवाला कोई न था। और किसी को मुझसे ज़ियादः इसकी ख़्वाहिश न थी कि अगर क़ुदरत पाऊँ तो आपको शहीद कर दूँ। अगर मैं उसी हाल पर मर जाता तो दोज़ख़ी होता। फिर अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम से मेरे दिल को ज़ीनत बख़्शी। मैं रसूलुल्लाह (स०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि अपना हाथ फैलाइए ताकि मैं बैअ़त करूँ। आपने दस्तें मुबारक फैलाया तो मैंने अपना हाथ समेट लिया। आपने फ़रमाया, ऐ अम्र (र०) यह क्या? मैंने अर्ज़ किया, मैं शर्त चाहता हूँ। आपने फ़रमाया, किस तरह की शर्त चाहते हो। मैंने कहा, शर्त यह कि मैं बख़्श दिया जाऊँ। आपने फ़रमाया, क्या तुम नहीं जानते कि इस्लाम से गुज़िश्तः गुनाह यक क़लम मुआ़फ़ हो जाते हैं और हिजरत से अगली ख़ताएँ यकसर धुल जाती हैं और हज से तमाम पिछली ग़लतियाँ

---

१ मृत्यु-समीप २ प्राणान्त।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और मअ़सिय्यतें[1] मुआफ़ हो जाती हैं। अब मुझे रसूलुल्लाह (स़०) से ज़ियाद: कोई महबूब न था, न आपसे ज़ियाद: किसी की इज़्ज़त मेरी निगाह में थी। मैं इज़्ज़त व ताज़ीम की वजह से हुज़ूर (स़०) को नज़र भर कभी नहीं देखता था। अगर कोई मुझसे फ़रमाइश करता कि आपका हुलया बयान करूँ तो मैं नहीं बयान कर सकता था। इसलिए कि मैंने आपको नज़र भर कभी देखा ही नहीं। अगर मैं उसी हालत में मर जाता तो मेरा गुमान है कि मैं जन्नती होता। अब बाज़ ऐसे काम मेरे सिपुर्द हुए कि मैं नहीं जानता कि इसके बारे में मेरा क्या हाल हो। (हुकूमत व ज़िम्मेदारियाँ) अगर मैं मर जाऊँ तो मेरे साथ कोई रोनेवाली न हो और न आग हो। जब तुम मुझे दफ़न करना तो मुझपर थोड़ी-थोड़ी मिट्टी डालना, फिर मेरी क़ब्र के गिर्द इतनी देर खड़े रहना जितनी देर में एक ऊँटनी ज़बह होकर तक़सीम हो जाती है; ताकि मैं तुम्हारे खड़े रहने तक मानूस[2] हो जाऊँ और देखूँ कि मैं अपने परवरदिगार के क़ासिदों को क्या जवाब देता हूँ।

[मुस्लिम]

रुख़सत और वसिय्यत

आयात

व वस्सा बिहा अिब्राहीमु बनीहि व यऽक़ूबु ॰ या बनिय्य अिन्नल्लाहस्तफ़ा लकुमुद्दीन फ़लातमूतुन्न अिल्ला व अन्तुम्मुस्लि-मून ॰ (१३२) अम् कुन्तुम् शुहदाअ अिज् हज़र यऽक़ूबल्मौतु ला अिज् क़ाल लिबनीहि मा तऽबुदून मिम्बऽदी ॰ क़ालू नऽबुदु अिलाहक व अिलाह आबाअिक अिब्राहीम व अिस्माओील व अिस्हाक़ अिलाहंव्वाहिदन् ॰ व नह्नु लहू मुस्लिमून (१३३)

और उसी का हुक्म कर गये हैं। इब्राहीम (अ़०) अपने बेटों को और (इसी तरह) यऽक़ूब (अ़०) भी। मेरे बेटो! अल्लाह ने इस दीन को तुम्हारे लिए मुन्तख़ब फ़रमाया है। तुम बजुज़ इस्लाम के और किसी चीज़ पर जान न देना। क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जिस वक़्त यऽक़ूब (अ़०) का आख़िरी वक़्त आया और जिस वक़्त उन्होंने अपने बेटों से पूछा कि तुम लोग मेरे बाद किस चीज़ की परिस्तिश करोगे? उन्होंने

१ पाप-पुञ्ज २ घबराहट दूर हो जाय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(बिलइत्तिफ़ाक़) जवाब दिया कि उसकी परिस्तिश करेंगे जिसकी आप और आपके बुज़ुर्ग (हज़्रात) इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ परिस्तिश करते आये हैं। यानी वही माबूद वहदहु लाशरीक है। हम उसी की इताअ़त पर क़ायम रहेंगे। [सू० बक़र, रु० १६ आ० १३२-१३३]

अहादीस

घर को रुख़सत करते वक़्त वसिय्यत

हज़्रत मालिक (र०) बिन अलहुवैरिस से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह (स०) की ख़िदमत में हाज़िर हुए, और हम सब कमउम्र थे। हम लोगों ने आँहज़्रत (स०) की ख़िदमत में बीस रातें गुज़ारीं। उसके बाद हम सबको अपने घर जाने का इश्तियाक़[१] हुआ। रसूलुल्लाह (स०) निहायत रहमदिल और नर्मदिल थे। आपको ख़याल हुआ कि हमको अपना घर याद आ रहा है। हमसे पूछा कि अपने घरवालों में किसी को छोड़ आये हो। हम लोगों ने बतलाया। आपने फ़रमाया, अपने घर जाओ और उनमें रहो। उनको सिखाओ और उनको हुक्म दो और नमाज़ पढ़ो। फ़लाँ नमाज़ ऐसे वक़्त पढ़ो और फ़लाँ नमाज़ ऐसे वक़्त। जब नमाज़ का वक़्त आये तो तुममें कोई अज़ान दे। और तुममें बड़ा इमामत करे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

आँहज़्रत (स०) की हज़्रत उमर (र०) से दुआ की ख़्वाहिश

हज़्रत उमर (र०) बिन अलख़त्ताब से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (स०) से उ़मरः† की इजाज़त चाही। आपने इजाज़त दी और फ़रमाया, ऐ मेरे भाई! अपनी दुआ़ में हमको न भूलना। हज़्रत उमर (र०) कहते हैं कि मुझे इस बात से इतनी ख़ुशी हुई कि अगर पूरी दुनिया मुझे उसके एवज़ में मिलती तो ख़ुश न होता।

एक रिवायत में है कि ऐ मेरे भाई अपनी दुआ़ओं में मुझे शरीक करना। [अबू दावूद-तिर्मिज़ी]

† उ़मरः छोटा हज है। एक फ़र्क़ यह है कि उ़मरः साल में हर वक़्त हो सकता है बख़िलाफ़ हज के कि सिर्फ़ अय्यामें हज में होता है। दूसरे यह कि उ़मरः में मिना व अ़रफ़ात जाना नहीं होता। इहराम बाँधकर तवाफ़ और सफ़ा व मर्वः के दर्मियान सअ़ी यह उ़मरः है।

१ उत्कण्ठा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रुख़सती कलिमात

हज़्रत सालिम (र०) बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि जब कोई सफ़र का इरादा करता था तो हज़्रत अब्दुल्लाह बिन उमर (र०) उससे फ़रमाते थे कि तुम मुझसे क़रीब हो ताकि मैं तुमको रुख़सत करूँ, जैसे रसूलुल्लाह (स०) हमको रुख़सत करते थे तो फ़रमाते थे कि तुम्हारे दीन, तुम्हारी अमानतों और तुम्हारे काम के नतीजों को अल्लाह के हवाले करता हूँ।
[तिर्मिज़ी]

हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन यज़ीद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) जब किसी लश्कर के रुख़सत करने का इरादा करते थे तो फ़रमाते थे कि तुम्हारे दीन, तुम्हारी अमानतों और तुम्हारे कामों के अन्जाम को अल्लाह के हवाले करता हूँ।
[अबू दावूद]

रुख़सत की दुआ

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि एक आदमी नबी (स०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मैंने सफ़र का इरादा किया है। आप मुझे ज़ादे राह दीजिए। आपने फ़रमाया, अल्लाह तुमको तक़्वे का ज़ादे राह दे। अर्ज़ किया, और कुछ! फ़रमाया, तुम्हारे गुनाह बख़्श दे। कहा, और ज़ियादः कीजिए। फ़रमाया, तुम्हारे लिए भलाई आसान कर दे जहाँ भी तुम हो।
[तिर्मिज़ी]

मश्वुरः[1] और इस्तिख़ारः[2]

आयात

…व शाविर्हुम् फ़िल्-अम्रि ज …

और उनसे ख़ास ख़ास मौक़ों पर मश्वुरः लेते रहा करना।

[सू० आलि इम्रान, रु० १७ आ० १५६]

…व अम्रुहुम् शूरा बैनहुम् ु …

और उनका हर काम आपस के मश्वुरः से होता है।

[सू० शूरा, रु० ४ आ० ३८]

१ मंत्रणा, सलाह २ शुभकामना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अह़ादीस

इस्तिख़ारः की दुआ

ह़ज़्रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमारे हर काम में इस्तिख़ारः (भलाई तलब करना) की इस तरह तालीम देते थे; जैसे क़ुर्आन की सूरत की, और फ़रमाते थे कि जब तुमसे किसी को किसी काम की फ़िक्र हो दो रक्अ़त नफ़्ल[1] पढ़े, फिर कहेगें।

अल्लाहुम्म अिन्नी अस्तख़ीरुक बिअ़िल्मिक व अस्तक़्दिरुक बिक़ुद्रतिक व अस्अलुक मिन् फ़ज़्लिकल्अ़ज़ीमि फ़अिन्नक तक़्दिरु व ला' अक़्दिरु व तअ़्लमु व ला' अअ़्लमु व अन्त अ़ल्लामुल्ग़ुयूबि अल्लाहुम्म अिन् कुन्त तअ़्लमु अन्न हाज़ल्अम्र ख़ैरुल्ली फ़ी दीनी व मअ़्शियती व अ़ाक़िबति अम्री (औ) अ़ाजिलि अम्री व आजिलिहि फ़अक़्दिर्हु ली व यस्सिर्हु ली सुम्म बारिक्ली फ़ीहि व अिन् कुन्त तअ़्लमु अन्न हाज़ल्अम्र शर्रुल्ली फ़ी दीनी व मअ़ीशती व अ़ाक़िबति अम्री (औ) अ़ाजिलि अम्री व आजिलिही फ़अस्रिफ़्हु अ़न्नी व अस्रिफ़्नी अ़न्हु व अक़्दिर् लियल्ख़ैर हैसु कान सुम्म अर्ज़ीन बिहि।

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरे अ़िल्म के ज़रीये से ख़बर चाहता हूँ और तेरी क़ुदरत के ज़रीये से क़ुदरत, और तुझसे सवाल करता हूँ तेरी बड़ी मेहरबानी से इसलिए कि तू क़ुदरत रखता है और मुझे क़ुदरत नहीं, तू जानता है। और मुझे अ़िल्म नहीं, ऐ अल्लाह! अगर तू जानता है कि यह काम (काम का नाम ले) मेरे ह़क़ में मेरे दीन व दुनिया और मेरे अन्जाम (या) देर व सवेर के लिहाज़ से बेहतर है तो इसको मेरे लिए मुक़द्दर फ़रमा दे। और अगर तू जानता है कि यह काम मेरे लिए मेरे दीन व दुनिया और अन्जाम (या) देर व सवेर के लिहाज़ से अच्छा नहीं तो इसको मुझसे फेर दे और मुझे इससे बाज़ रख। और मेरी बेहतरी मुक़द्दर कर, जहाँ हो फिर मुझे उसपर राज़ी कर दे। फिर अपनी ह़ाजत का नाम ले। [बुख़ारी]

---

1 अतिरिक्त नमाज़ जो सवाब के लिए पढ़ी जाय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अच्छे कामों में दाहिने हाथ का इस्तिअ़माल

अह़ादीस

हज़्रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सीधे हाथ को पाकी और खाने वग़ैरः में, और बायें हाथ को पायख़ाना और नाक वग़ैरः साफ़ करने में इस्तिअ़माल फ़रमाते थे।

[अबू दावूद]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब कोई जूता पहने तो पहले दाहिने पाँव में पहने और उतारे तो पहले बायें से उतारे ताकि पहिनने में अव्वल दायाँ हो और उतारने में आख़िर हो।

[बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम कपड़े पहनो या वज़ू करो तो दायें जानिब से शुरू करो।

[अबू दावूद-तिर्मिज़ी]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क़ुर्आन शरीफ़ [हिन्दी]

बीस साल की मुसल्सल अिल्मी मिह्नत के बाद देवनागरी रस्मुल्ख़त में क़ुर्आन शरीफ़ का मतन (मूल आयतें) व हिन्दी तर्जुमा व तफ़्सीरी नोट्स छप कर अवाम की पेश-नज़र है। इसमें मिलते-जुलते हुरूफ़ मसलन ज़ाल ज़े, ज़ाद, ज़ो वग़ैरः को अलाहदः मुमताज़ करते हुए रुमूज़ औक़ाफ़ (विरामाविराम चिह्न) व दीगर अलामतें, ग़रज़ कि शास्त्रीय अरबी पद्धति पर इमकानी सूरत में सही तिलावत (पाठ) का पूरा इह्तियात मुहय्या किया गया है। हर सफ़ा पर क़ुर्आन शरीफ़ के असली ख़तयाने अरबी ख़त में इन्तहाई सही ब्लाक भी देकर नक़्स की गुन्जाइश ही ख़त्म कर दी गई है। अलावा, मौलाना सय्यद अबुल हसन अली अल्हसनी अल्मदनी जनाब अली मियाँ साहब ने इस हिन्दी क़ुर्आन शरीफ़ पर 'पेश लफ़्ज़' लिख कर मिह्नत को ज़ीनत बख़्शी है। हद्यः महज़् ३५·००। ३) डाक ख़र्च।

पारः अम्म (मतन)—पठनविधि और संकेताक्षरी सहित। बच्चों के पाठ के लिए १·००। पारः अलम्, सयक़ूलु, तिलकर्रुसुलु, लन्तना, वल्मुह्सनातु, लायहिब्बुल्लाहु, वअिज़ा समिऊ, वलौअन्नना, क़ालल्मलअु और वऽलमू—प्रत्येक ·६० में। पंजपारः १—५ व ६—१० मय क़ायदः सजिल्द—हद्यः चार- चार रुपये।

हिन्दी में कुछ इस्लामी जीवनचरित्र

पैग़म्बरे इस्लाम, ००·४० — हज़रत अबूबकर, ००·६०

हज़रत उमर, ००·६० — हज़रत उस्मान, ००·६०

हज़रत अली ००·६०।

'अरब' एक संक्षिप्त इतिहास—मूल्य ८·०० मात्र, डाक ख़र्च १·५० अलग।

☞ आर्डर के साथ कम से कम ५·०० पेशगी ज़रूर भेजिए।

प्राप्तिस्थान—भुवन वाणी

४०५/१२८ चौपटियाँ रोड, लखनऊ–३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जपुजी तथा सुखमनी साहब

श्री जपुजी सुखमनी साहब (गुरुमुखी) का मूल पाठ तथा ख़ानबहादुर ख़्वाज: दिलमुहम्मद साहब द्वारा रचित अति ललित उर्दू-पद्यानुवाद— इन दोनों का देवनागरी लिपि में लिप्यन्तरण। मूल्य ४·०० डाक ख़र्च १·२५ प्रथक्।

ज़ादे सफ़र—हिन्दी रूपान्तर—अनुपम हदीसों का संग्रह। मूल्य १०·००

वाणी सरोवर

(अपने ढंग का निराला त्रैमासिक पत्र)

इस पत्र में हिन्दी, उर्दू, अरबी, फ़ारसी, संस्कृत, पारसी, बंगला, ओड़िया, मराठी, गुरुमुखी, तमिळ, मलयाळम, असमी, गुजराती, तेलुगु, कन्नड, सिन्धी, कश्मीरी और नेपाली के अनुपम ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद तथा देवनागरी लिपि में उनका मूल पाठ धारावाहिक प्रकाशित हो रहा है। वार्षिक शुल्क १०·०० मात्र। पाली, प्राकृत आदि का धारावाहिक कार्यक्रम भी शीघ्र ही अपनाया जायगा।

नवीन ग्राहक बननेवाले सज्जनों को सन् १९७० से १९७२ तक का शुल्क ३०·०० और इसी प्रकार वर्ष १९७३ के लिए १०·०० अर्थात् ४०·०० चार वर्ष के लिए भेजना उनके हित में होगा। बीते हुए वर्षों के अंक न मँगाने पर धारावाहिक चलनेवाले पहले से शुरू अनेक ग्रंथ उनके संग्रहालय में अपूर्ण रह जायँगे।

जनवरी १९७३ के अंक से 'श्रीगुरुग्रंथ साहिब' हिन्दी-व्याख्या-सहित तथा 'रामचरितमानस' संस्कृत-पद्यानुवाद-सहित का प्रकाशन आरंभ हुआ है।

प्रा० स्थान—भुवन वाणी ट्रस्ट ४०५/१२८ चौपटियाँ रोड, लखनऊ—३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यन्त्रस्थ तथा कार्याधीन चल रहे सानुवाद लिप्यन्तरित ग्रंथ :–

		अनुमानित पृष्ठ
१	मैथिली—चन्द्रा रामायण सानुवाद	८००
२	मराठी—श्री संत एकनाथ भावार्थ रामावण	३०००
३	तेलुगु—पोतन्न भागवतसु स्कन्ध—१०-१२ (१३वीं शती)	१०००
४	ओड़िआ—जगमोहन बलरामदास रामायण	१०००
५	फ़ारसी—सिर्रे अक्बर खण्ड—२-३	६००
६	,, मुल्ला मसीही रामायण	५००
७	नागरी उर्दू-हिन्दी—विश्वनागरी उर्दू-हिन्दी कोश	१२००
८	कन्नड—तोरवे रामायण (१६वीं शती)	९००
९	अरबी—बुख़ारी शरीफ़ (ल. कि. घ.)	३०००
१०	,, क़ौरानिक कोश वर्णानुक्रम (,,)	३००
११	,, क़ुर्आन शरीफ़ तफ़सीर माजिदी अरबी तथा नागरी लिपि में क़ुर्आन का मूल पाठ व माजिदी साहब कृत अनुवाद तथा वृहस् भाष्य पारः ६-३० (ल.कि.घ.)	६०००
१२	हिब्रू—बाइविल् ओल्ड् टेस्टमेण्ट् } मूल हिब्रू, अरामी, ग्रीक, उनका तथा अंग्रेज़ी अनु० का नागरी-लिप्यन्तर तथा हिन्दी अनुवाद	३०००
१३	ग्रीक— ,, न्यू टेस्टमेण्ट् }	
१४	उर्दू—मर्सियः मीर अनीस	१६००
१५	गुरमुखी—श्री दसम गुरूग्रन्थ साहिब (गुरूगोविंदसिंह जी कृत) सेंची ३,४	२०००
१६	तमिऴ—सुब्रह्मण्य भारती का साहित्य नागरी लिप्यन्तरण एवं गद्य-पद्य हिन्दी अनुवाद	१५००
१७	कोंकणी—ख्रीस्त पुराण (मूल तथा हिन्दी अनु०)	१०००
१८	संस्कृत—वाल्मीकि रामायण (मूल तथा हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद)	५०००